

चरित्र निर्माण
के
नैतिक पथ

भाग-1

सुरेद्रमोहन डण्डिया

चरित्र निर्माण के नैतिक पथ

भाग-1



सुरेद्रमोहन डण्डिया

प्रकाशक
राजस्थान प्रकाशन
त्रिपोलिया बाजार
जयपुर-2
सस्करण
प्रथम 1988

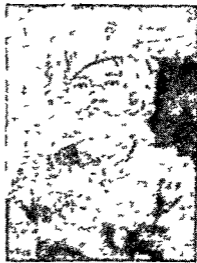
रम्पोजिंग ।
जनरल रम्पोजिंग एजेंसी
विद्यमपोल बाजार
जयपुर-3
मूल्य ।
50 00

मूद्रक ।
बी.एन. प्रिण्टर्स
गोधरी का घाटा
जयपुर-3

समर्पण

पूज्य पितामह

पूज्य पिताजी



श्री चादूलाल जी डण्डिया
(1868 1952)

श्री गंदोलाल जी डण्डिया
(1894 1965)

प्रातः स्मरणीय पूज्य पितामह एव पूज्य पिताजी की पुनीत स्मृति म
उनके ऋणो से उद्धार होने के लघु प्रयत्न स्वरूप उनके ही
आशीर्वाद एव प्रेरणा से प्राप्त धान की एक किरण
स्वरूप यह पुस्तक सादर सविनय समर्पित ।

प्राक्कथन

यह पुस्तक क्यों और कैसे लिखी गई है—

आज देश की जो स्थिति चल रही है उसकी सभी अनुभव करते हैं। हमारी भावी सत्तति चरित्र से भ्रष्ट होती जा रही है। वे प्राध्यात्मिक, मानसिक व शारीरिक दृष्टि से पतन की ओर बढ़ रही है। स्थिति बड़ी गम्भीर है, इसको सभी अनुभव करते हैं, कुछ उपाय भी किए गए हैं परंतु कोई ठोस काय सामने नहीं आ रहा है जिसकी उपलब्धि हमारे सामने हो।

इस स्थिति में सुधार के लिए आज से तीन वर्ष पूर्व मैंने चरित्र निर्माण योजना पर काय करने का निश्चय किया। विद्वानों ने इस सम्बन्ध में जो किया उसका अध्ययन किया। चरित्र निर्माण से सम्बन्धित लेख जो पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए उन्हें पढ़ डाला। ध्यान सम्बन्धी शिविर में भी मैं सम्मिलित हुआ गोष्ठियों में भी इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किए अतः मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि चरित्र निर्माण योजना की रूपरेखा बनाय जावे तथा उसका जयपुर नगर के विभिन्न महाविद्यालय, हायरसकण्डरी व सैकण्डरी विद्यालया में क्रियात्मक रूप से प्रयोग किया जावे। विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों को चरित्र निर्माण के लिए कुछ नियम दिए और उनको इसके पालन के लिये विभिन्न प्रकार से प्रोत्साहित किया। उनके जो परिणाम निकले, उसके आधार पर इस योजना को आगे बढ़ाया। समय समय पर इसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन व संवर्धन किये गए। जब जब भी मैं विद्यालयों में इस योजना पर अध्यापको, विद्यार्थियों तथा उनके सरक्षकों व जनसाधारण से विचार विमर्श करता तो यह प्रश्न बार बार उठाया जाता कि इस विषय पर कोई ऐसी पुस्तक हो जिसमें चरित्र निर्माण सम्बन्धी समस्त पहलुओं पर प्रकाश डाला गया हो इसी भावना से प्रेरित होकर तथा उस भावना की पूर्ति के लिए यह पुस्तक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। यह पुस्तक किसी बन्द कमरे की उपज नहीं है और न यह कोई चरित्र निर्माण के विषय में बौद्धिक प्रवचन ही है। विद्यालय, युवको, प्रौढों व जनसाधारण ने अपने जीवन को कैसे श्रेष्ठ बनाया, इस अनुभव पर संक्षिप्त एवं धाराप्रवाह लिखने का प्रयास किया है। साथ ही यह बात निश्चित है कि यह पुस्तक व्यावहारिक है।

विज्ञान सफल परिणामों का एक संकलन है। उसी प्रकार यह पुस्तक भी आपके सर्वांगीण जीवन को सुनी बनाने के लिए सफल और प्रभावी नुस्खा का

एक सकलन है। इस पुस्तक में आपको कोई नई बात नहीं मिलेगी किंतु आपको ऐसी बातें भी बताई जायेंगी जिनका चरित्र निर्माण के लिए व्यवहार नहीं हुआ है। चरित्र निर्माण का अर्थ आज तक यह भी लगाया गया है कि सत्य, इमानदारी, शिष्टाचार, दान, तप आदि मूल्यों को बतला दिया जाय परंतु पूरा जीवन जीने के लिये जो भी हमसे सम्बंधित है उनका वास्तविक ज्ञान क्या प्राप्त किया जावे व उहें अपने जीवन में कस उतारा जाय। सुप्रसिद्ध जर्मन नाटककार गेटे ने 'चरित्र और प्रतिभा' का पारस्परिक सम्बंध तिरपित करत हुए लिखा है कि प्रतिभा का विकास एकांत में होता है पर चरित्र का विकास सत्कार व व्यवहार के बीच होता है। 'हम सत्कार में रहते हैं तो इसके इतने जितनी भी बातें आवेंगी चाह वह जीवन यात्रा हो, स्वास्थ्य हो, धर्म से सम्बंधित व्याख्याएँ हों, नीति हो उनको समझना पड़ेगा व उनकी व्याख्या करते हुए दुःखों से ऊपर उठकर अच्छी बातों का ग्रहण करना पड़ेगा तब ही चरित्र का श्रेष्ठ निर्माण होगा जो जीवन का अंतिम ध्येय होगा।

हमें नई बातों की जानकारी की आवश्यकता नहीं रहती बल्कि एक पूरा जीवन जीने के लिए हम पहले से ही पर्याप्त बातें जानते हैं। हमने सभी धर्मों व दस लक्षण, सरमन ज्ञान की माउंट सप्त दशम, वेद ज्ञान, गीता, तत्वाथ सूत्र, अनेकान्त, बौद्ध धर्म के अष्टांग, यम, नियम, अज्ञानवाद, गुरु ग्रंथ साहब आदि पढ़े हैं। बालका, युवकों व प्रौढ़ों के बारे में पढ़ा है, व्यावहारिक स्तर के बारे में जाना है, स्वास्थ्य के लिये जानकारी प्राप्त की है, अज्ञानता पर भी निगाह है परंतु हमारी कठिनाई अज्ञानता न टाकर रहता है। इस पुस्तक का उद्देश्य यह भी है कि पुरातन एवं मूलभूत सिद्धांतों को फिर से लिखा जाय, उसकी व्यवस्था की जावे उसमें जो रहस्य छिपा है उसका स्पष्ट किया जावे, उसका प्रवाह निश्चित किया जाव तथा आज के सभ्यता में उसकी वातावरण के अनुकूल बनाया जावे। और जड़ता मिटा कर उन सत्यों के लिये जनसाधारण को प्रेरित किया जावे। आपन यह पुस्तक यह बात पढ़ने के लिये नहीं ली कि यह कस लिखी गई है बल्कि आप इसकी व्यावहारिकता देखना चाहते हैं तो इस ध्यानपूर्वक पढ़ जाइए। इसको पढ़ लेने के पश्चात् आपकी समस्याओं का समाधान स्वतः ही होगा तथा आपको नई शक्ति एवं प्रेरणा मिलेगी।

अंत में मरा यह निवेदन है कि पुस्तक के प्रत्येक भाग से सम्बंधित बिन्दुओं पर मनन व विचार के पश्चात् जो जीवन के व्यवहार में लाया जा सकता है उस व्यवहार में लाइय। आपको जो अनुभव हुआ है उसको अपने सम्बंधियों व मित्रों को सुनाइय उस पर गहनता से सोचिये व सभाओं में विचार विमर्श कीजिए। ऐसा करने से निश्चित रूप में भविष्य के लिए आपको दिशा निर्देश मिलेगा। आज

आप इन समय जिस स्थिति में हैं, उसमें आगे अपने को सुन्दर स्थिति में पावेंगे तथा आप में चरित्र निर्माण के लिये उत्तरोत्तर बलवती इच्छा उत्पन्न होगी । विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए इसमें अमूल्य सुझाव हैं । उन्हें यदि क्या भी नव नव शिक्षा के अन्तर् में नियमित रूप से पठन कराया जावे, विचार विमर्श ही और इसमें आधार पर उनकी दैनिक प्रवृत्तियों पर निगाह रगकर समय समय पर सुधार के लिए अच्छे अध्यापकों द्वारा सुझाव दिया जाय तो निश्चित रूप से विद्यार्थियों के जीवन में महान् सुखद परिवर्तन आवेगा ।

प्रस्तुत पुस्तक दो भाग में है । प्रथम भाग में सम्यक् जीवन, व्यावहारिक गुण के पथ हैं । द्वितीय भाग में धार्मिक महिष्णुता, स्वास्थ्य रक्षा व अन्तर्विक्रम के पथ हैं । प्रत्येक पथ के अन्तर्गत विभिन्न मोपाना में विषय से सम्बन्धित बहुत स माय विद्वानों और मनीषियों की पुस्तकों से सहायता ली गई है और उनके मतों को यथास्थान दिया गया है व उनके नाम भी दिए गए हैं ।

दैनिक समाचार पत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित विचारात्मक लेख, आचार्यों के भाषण, कतिपय स्वदेशी व विदेशी विद्वानों की पुस्तकों में स लेखों का यथास्थान समुचित उपयोग किया है । इन सभी से मैंने अपने ज्ञान में वृद्धि कर इस पुस्तक के लिखने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता ली है, उन सब का मैं हृदय से अत्यन्त आभारी हूँ । लेखक व प्रकाशक जिनका नाम इस पुस्तक में छपने से रह गया है उसके लिए मुझे खेद है ।

इस पुस्तक में किसी की भी आलोचना तथा मतभेद से बचन का पूरा प्रयास किया गया है । मुद्रण की त्रुटियों का सुधारन का भी यथासम्भव प्रयास किया है तथापि कमियां का रहना स्वाभाविक है, इसलिए शुद्धिपत्र भी सलग्न किया है । पाठकों और शिक्षकों से निवेदन है कि रचनात्मक आलोचना और सुझाव देकर इस पुस्तक की कमियां तथा दोषों की ओर ध्यान आकर्षित करने की कृपा करें । अगले संस्करण में इन सुझावों के आधार पर सुधार कर दिया जावेगा ।

मैं उन सभी महानुभावों तथा मेरे मित्रों को धन्यवाद देता हूँ तथा आभार स्वीकार करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक का लिखन में प्रारम्भ से ही प्रेरणा व समय समय पर अमूल्य सुझाव दिए हैं । श्री विजयबिहारी माधुर, पूर्व आचार्य, शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, राजस्थान व सदस्य टिंडीकेट राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर का नाम विशेष उल्लेखनीय है । श्री राजे द्रबुमार जसोरिया सचालक

राजस्थान प्रकाशन, जयपुर भी घयवाद के पात्र हैं जिन्होंने इससे मुद्रण व प्रकाशन में विशेष रुचि लेकर इस पुस्तक को प्रकाशित किया है।

मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती उमरावदेवी डण्डिया का भी घयवाद देना अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने अपने समुचित गुणों के साथ मेरे जीवन सघष में अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक वहन किया व चरित्र निर्माण व क्षेत्र में काम करने के लिए सदैव प्रेरित किया जिससे फलस्वरूप प्रस्तुत पुस्तक रचना सम्भव हो सकी।

अन्त में यह लिखना प्रासंगिक होगा कि वर्तमान पुस्तक की रचना का मूल बीज लेखक के विचार क्षेत्र में "मन के विकारों" के निदान के माध्यम से चरित्र निर्माण के रूप में प्रारम्भ हुआ था तथा इस शुभ कार्य हेतु एलाचाय (भव आचाय) महामायवर मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज का आशीर्वाद लेखक को निम्न प्रकार प्राप्त हुआ था।

"मनुष्यों के लिए देहज दोषों के चिकित्सालय बहुत हैं, इसी प्रकार शब्दांशुशासन के व्याकरण की शिक्षा पद्धति भी देश में है परन्तु मानसिक दोषों (रागों) पर मिथ्यात्व ग्रंथि या नून गडता नष्ट निवारण के केंद्र भी होना परम आवश्यक है। अतः आपको इन विधि में कार्यक्रम में सफलता मिले, यह हमारा आशीर्वाद है।"

ह० एलाचाय विद्यानन्द

पुस्तक लेखन के प्रारम्भ के पश्चात् इस का विषय क्षेत्र शनैः शनैः विकसित होकर वर्तमान रूप में सम्पन्न हुआ। जा बीज आचाय प्रवर के आशीर्वाद से प्रस्फुटित, पुष्पित एवं फलवित होकर बहुआयामी वक्ष के रूप में विकसित हुआ, वह सुविज्ञ पाठकों के लाभाय प्रस्तुत है।

शिक्षक और शिक्षार्थी वगैरे विद्वान् नागरिक बंधुओं को यह पुस्तक समर्पित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हा रही है।

गुरुतन्त्र दिवस

26 जनवरी 1988

सुरेन्द्र निकुंज, (फोन 69369)

ज्योति भाग, बापू नगर, जयपुर

—सुरेन्द्र मोहन डण्डिया

विषय-सूची

प्रथम भाग

धरित्र का अर्थ	1
नैतिक पथ	4
ध्यावहारिक जीवन में आचरण	7

प्रथम पथ

सम्यक् जीवन	9-123
प्रथम सोपान—आत्म्यावस्था	10-45
वशानुक्रम व वातावरण का महत्व	10
बच्चा के बारे में माता पिता के लिए सुभाव	18
कुपोषण से बच्चों में रोग	21
प्रारम्भिक अवस्था में बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा	26
पठन में विद्युद्भेदन के कारण (नत्र दोष व हवसाना)	27
शिक्षण में बच्चा की धूनताएँ	32
कुटोवो का निराकरण (बाएँ हाथ से लिखना व गालियाँ)	33
बालकों को शिष्टाचार सिखावें	36
बाल अपराध	40
बच्चे धपने बडा के बारे में क्या सोचते हैं	41
बच्चों के बारे में माता पिता के लिए सूचनाएँ	44
द्वितीय सोपान—युवावस्था	46-93
सुपुत्र व सुपुत्री	47
युवा व उनकी स्थिति	49
यौन और प्रकृति	52
हिप्पीवाद	54
मादक दवाइयो से प्रसिप्त विदेशी युवक	57
निशोरावस्था की समस्याएँ व निराकरण	60
यौन शिक्षा और सन्तति नियमन	61
नशीले पदार्थों का कुसेवन	67
कुसग के दुष्परिणाम व अच्युती सगत	71
शिक्षा की दुष्प्रवृत्ति नकल	76

कायरत विद्यार्थी ससद	78
कोई क्या कहेगा ? से युवका में सेवा का अभाव	80
युवको द्वारा योग्यतानुकूल व्यवसाय का चुनाव	83
युवको का कतव्य	87
माता पिता के कतव्य बोध का मूल्यांकन	90
युवको के स्मरण योग्य गायन	93
तृतीय सोपान—महिलाओं की स्थिति तथा सुधार	94-178
प्राचीन भारतीय सभ्यति में स्त्री	94
महिलाओं की कानूनी अधिकार	98
दहेज का दानव	102
महिलाओं द्वारा पश्चिम के समाज का अनुकरण	104
विवाह दो शरीरों का पवित्र मल	107
सुखी दम्पति	111
चतुर्थ सोपान—वृद्धावस्था	115-123
बुढ़ापा व मनोभ्रम विकार	116
जवानों को कैसे कायम रखा जाय	117
बुढ़ों के लिये उपयोगी मुझ व	123
द्वितीय पथ	
ध्यावहारिक गुण	124-168
प्रथम सोपान - विश्व को भारत की देन	125-135
विविधता में एकता	128
स्वदेश भक्ति	132
द्वितीय सोपान — व्यवहार कुशलता व मनुष्य स्वभाव	136-168
मनुष्य स्वभाव में सतुलन व अति से विकृतियाँ	139
अधविश्वास	148
तृतीय सोपान—आचरण की अथ विशेषताएँ	151-168
सत्याचरण,	151
समय की पवित्री	155
बात करने का ढंग	158
प्रश्नमा करें, समयानुसार विचार कर लें	160
सकारात्मक दृष्टिकाएँ रखें	165
मध्य बीजिए, परोपकारी बनिए	166
Words of Wisdom Learn & act accordingly	168

चरित्र का अर्थ

मनुष्य की विशेषता उसके चार चरित्र में है। मनुष्य का आदर, पद, धन व गच्छे वेश में उत्पन्न होने के कारण भी होता है किंतु यह कुछ ही समय तक रहता है। धनी का आदर भी स्वाध्वश ही होता है परंतु वह भी चरित्र के बिना स्थायी नहीं होता। रावण पूरा विद्वान व पंडित था। कहते हैं कि इंद्र और कुबेर उसके द्वार पर खड़े रहते थे परंतु उनको आदर नहीं मिल सका क्योंकि उसमें चरित्र का अभाव था।

मनुष्य का मन उद्यान भूमि की तरह है। अगर उसकी पूरी तरह चौकसी नहीं की जावेगी तो लम्बी लम्बी घास और कँटीले पेड़ अपने आप उग आने की सम्भावना है। इसी प्रकार यदि चरित्र पालन का ध्यान नहीं रखा जावेगा तो उसके बिगड़ जाने में कुछ भी समय नहीं लगेगा। टीले पर चढ़ने में कठिनाई मालूम होती है लेकिन उतरने में कोई कठिनाई सामने नहीं आती। चरित्र के अभाव में 'अग्नीष्वा वित्तत क्षीणो वृत्तस्तु हताहत अर्थात् धन में हीन निधन नहीं है अपितु चरित्र के ही अभाव में मनुष्य मरा हुआ है।

यह चरित्र है क्या? चरित्र उन गुणों का समूह है जो हमारे व्यावहारिक जीवन में सबंध रखते हैं। पाश्चात्य मनीषियों ने चरित्र की विशेषताओं पर अच्छा प्रवाण डाला है। चरित्र की परिभाषा करते हुए प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अरस्तु ने कहा है—चरित्र हमारे आचरण से उद्भूत जीवन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। सुप्रसिद्ध अंग्रेजी निबंधकार इममन ने सत्य रिलायंस (Self Reliance) शीर्षक अपने एक निबंध में लिखा है "चरित्रवान की एक ऐसी बग पहेंली है जिसे बाण स दाँए दाग से बाए और ऊपर नीचे या निरखे जस पड़ा जाय एक ही बग बियाग का भूचित करता है" कहने का तात्पर्य यह है कि चरित्रवान व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति में सम रहता है कभी विचलित नहीं होता।

इममन कहते हैं कि चरित्र वह वस्तु है जो असफलता के बाद भी ज्यों का त्यों बना रहता है।

2/चरित्र निर्माण के नैतिक पथ

सुप्रसिद्ध जमन (नाट्य)कार गटे न चरित्र और प्रतिभा का पारस्परिक सम्बन्ध निरूपित करने हुए लिखा है प्रतिभा का विकास एकान्त में होता है पर चरित्र का विकास सतत व ब्रह्मचर्य के बीच होता है।”

ठीकरा से जुआ खेल रहे एक बालक का सुप्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने एक बार डाटा था। इस पर उस बालक ने प्लेटो में निवेदन किया था, मैं तो पसो में जुआ नहीं खेलता सबक पर बिजये मूल्यहीन ठीकरा से जुआ खेल रहा हूँ, यदि इस मामूली बात पर व्यथ ही मुझे डाँटते है।” उहान गम्भीर हात हुए कहा “बुरी वस्तुआ की आदत डालना मामूली बात नहीं है।”

Character is God—

Those who believe in God see him in truth, feel him in Ahimsa some others find him in patriotic spirit while others experience him in three principal qualities of soul i.e Right faith, Right knowledge & Right Conduct All the above experiences are in fact the real face of God All such persons are near to God In fact good conduct is God

चरित्र ईश्वरीय रूप है—ईश्वर रूप की परिकल्पना करने वाला न उसे सत्य के रूप में देखा। अहिंसा के रूप में उसकी निरुक्ति की। कितना ने उस विश्व प्रेम में पाया और बहुता ने आत्मा के त्रिविध सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र के विशद रूप में उभरा दर्शन किया। य मत्य, अहिंसा, विश्व प्रेम, और आत्मा का त्रिविध सम्यकत्व व्यक्ति के विगुण चरित्र में समाहित है। एतावता चरित्रवान व्यक्ति ईश्वरत्व के समीप है। अतः निमल चरित्र ईश्वरीय रूप है।

आचार से पतित ब्राह्मण भी बद के फल को प्राप्त नहीं होता है। जिस यज्ञ में तप ही यज्ञ है, जीवात्मा अग्नि का स्थान है, मन वचन काया का योग रूप कायम्नु (चमचा) है शरीर रूप यज्ञ वदिका है कमरूप लकड़ी और सद्यम रूप शान्ति मात्र है एत प्रशस्त चरित्र रूप भाव यज्ञ का भगवान महावीर न यज्ञ की सत्ता दी है। वामीनि रामायण में विष्किंथा कांड में राम न वागी को उपदेश दिया है—

‘ नहि ताव विन्दस्य लोक वृत्ता दप युप ।

ऋणा दयन पश्यामि निग्र हं हृदि यूयप ॥

इ वानरराज, जो लाकाचार में भ्रष्ट होकर लाव विन्द आचरण करता है उस रोहन या राहु पर जान क विग में दण्ड के निवा और कोई उपाय नहीं देता।

गाम्बामो तुनसीदाम जो न भी रामचरित्र मानने में कम को भाग्य निर्माण का नियामक नव मानने हुए कहा — कमप्रधान विश्व करि रागा जो जम के

तो तम पत्र पाया" । मन्त्ररिप अस्तित्व का आगवाह होता प्रुव साथ है । यह किसी भी परिस्थिति का सामना पना चरित्र बन घोर मताबल से कर सकता है और हर जीन म मन्त्र एक समान रूपा ।

हर धर्म का अपना प्रापण्य नाम्न होता है । महात्मा र्मा का पहलू पर दिया हुआ उपदेश तथा "म प्राणाण" (Ten Commandments) म मनुष्य क उचान के लिये आनरण मन्त्रधी गिभा है । आयात बुद्ध का (Noble At Field Path) मनु मन्त्राग्न का दम धम, अनिया के धम के दमनमाण मुगनमाता है 10 नीति निर्देशर मिद्धात यह सब चरित्र उचान के लिये है ।

'मम्यगूदशन आ चरित्राणि शोभ माग'—(तथाय मूत्र) मम्यगूदशा पान शोभ चरित्र द्वा तीना का याग ही भाग माग की प्राप्ति का उपाय है । चरित्र द्वाग ही मानव दृष्टिया गिपही बन कर गिदृष्टि मार्गी बन सकता है और म प्रकार यह इन्ननीति परिनीतिव दोना मुगा को प्राप्त कर सकता है । चरित्र के धनगत ममहा धर्मों के प्रति महिदुता कल्पपानता, बानकपन से लकर वृद्धावस्था तक का ममन्ता जीवन ब उगने काय कताप, ध्यायहारिक जीवन म मम्यदिषा विशिष्ट गुणा का पानन जग देग भक्ति ब उमक प्रति गौरवपूर्ण भावना, ध्यवहार बुझनगा र्मानकारी क्षमा, स्वनाय म सनुना, मत्याचरण, उमर की पावशी, धनुनामन, मम्भारण, परिधमगीनता, भावात्मक एवता क निल गता प्रयाम, स्वास्थ्य रणा, धार्मिक महिदुता आप्यारिभर व मानमिक उन्नति क निल माधना का धम्याम प्राप्ति है ।

यद्यपि चरित्र वांरनाने म शोभ नी धोका नतिक गुण स्पृहणीय है तथापि इन गुणा का विशेष महत्व है । ये सब गुण धम्याम म प्राप्ति हो मान हैं । बान्यावस्था चरित्र निमाण क निल उपयुक्त समय है । इस समय जो सदम्याम बन जाने हैं व सारी उध्र काम देने हैं । हमार महापुरुष जने स्वनामधेय गोपान कृपण गावले, सात्रपनगाय, बानगगापर नितर, महात्मा गांधी प्राप्ति महापुरुषा म मत्य बोधन के सन्सार बानकपन म ही बन गये थ । ऐसे ही सन्सार प्रादमी को बडा व चरित्रवान बनाते हैं । भारत का भविष्य भारत के नवयुवक समाज के चरित्रवान बनने पर ही निर्भर है । चरित्रवान पुरुष ही म्म का उन्नति का पय दिया सकता है । नवजागरण पू ब सकता है और देश के आगरिका के गुधरने म समय हो सकता है । चरित्रवान पुरुष ही देश के गौरव हैं । चरित्रहीन मनुष्य देश के बलर हैं—

मथाहि मलिनवस्त्रयंत्र त प्राय विश्वन

एव चलित व्रतस्तु दत्तशन न रक्षति ।

जिस प्रकार मय कपडे बाना मनुष्य हर म्यान पर बैठकर कपडे विगाडता है उमी प्रकार चरित्रहीन व्यक्ति भी न्निन प्रतिनिधि धर्मो चरित्र को विगाडता है ।

नैतिक पथ

नैतिक पथ स तापय व पथ हैं जिससे मनुष्य व्यक्तिगत पूणता वा सौज म अग्रसर हो । व्यक्तिगत पूणता जब ही आती है जब मनुष्य मानसिक शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक सभी क्षेत्रों म प्रगति करे । अखिल ब्रह्माण्ड म सत्यम् शिवम्—सुन्दरम् तीन अति महत्वपूर्ण है । नैतिकता द्वारा युवको को ईमानदारी याय पवित्रता तथा मत्य—शिव शौर सुन्दर जिन बन्तुओं मे निहित है, उह प्राप्त करने की आर अग्रसर हाना चाहिये । नैतिकता का प्राचीन भारत तथा ग्रीक की शिक्षा प्रणाली म सबसे महान् माना जाता था । चरित्र तथा आचरण की आधार शिवा अध्यापक द्वारा स्वयं के उदाहरण तथा अपने प्रभाव द्वारा रखी जाती थी वह बानका को प्रारम्भ से ही पवित्रता, आदर करना विनय पूर्वक व्यवहार करना सेवा भाव रखना स्वावलम्बी बनना, आत्म बलिदान के लिये तत्पर रहना, शुद्धता प्राप्त करने के लिय चेष्टा करना आर नृत्तव्य की उच्च भावना का प्रास्ताहित करने की प्रेरणा दत्त थे । नैतिकता सब प्रकार क आचरण का गुण है चाहे वह देश के लिए हो धर्म के लिए हो कम के लिये हो, वचपन म वृद्धावस्था तक व जीवन यापन व जीवन चक्र के लिए हो, व्यावहारिक कुशलता के लिए हो, चाहे वह स्वास्थ्य रक्षा व लिए हो । एव खिलाडी जत्र खेल के मैदान म नियमों के अन्तगत खेल खेलता है ता उमम खिलाडी की भावना होती है चाहे वह हारे या जीत । उसे जीत को स्वीकार करता है वैसे ही अपनी हार को भी वह स्वीकार करता है । मन की माधना व लिए जत्र नाना प्रकार की ध्यान की प्रणालियों का अभ्यास करता है तो उसे अन्तर् आचरण की शिक्षा स्वतः ही मिल जाती है ।

नैतिकता की आवश्यकता जितनी सामाजिक क्षेत्र म है, उतनी ही राजनैतिक व धार्मिक क्षेत्र म भी है । कृत्तिल राजनीति के लिए राज भी मैकियावली को बहुत माद किया जाता है । इसका जन्म इतानी व फ्लोरेन्स नगर म 3 मई 1469 को हुआ था ।

कृत्तिल राजनीति का प्रतिपादक मैकियावली—मैकियावली अग्रजी का एक ऐसा शब्द = जिनका अर्थ है साजिशा या गुण छन करवा वाला और व—वर्णन राजनीति । एक कामा व करने वाले का मैकियावलीनियम कहत है । य श = इटली

के विख्यात राजनीतिज्ञ प्रार लेगन मैरियावली के नाम पर बन है। जिन तरह हमारे देश के रामायणकांग न रावण का बदनाम करके उमका नाम धमर कर दिया है उसी तरह पश्चिम के इतिहासकारा न मैरियावली का बदनाम करके उस धमर बना दिया है। उमन अपने प्रथ 'इन प्रि सप की रचना की। इसी आधार पर उम आधुनिक राजनीतिशास्त्र का प्रवर्तक माना जाता है। एक जगह उमन लिखा है 'जा बादमी अपने व्यवहारा से ईमादाग हान का दावा करता है वह बबाद हा जाता है क्याकि दुनियाँ में बदमानी की मस्या बहुत ज्याला है। सा अपनी सत्ता का रायम रखन के लिए राजा का बदमान बनना मीयना चाहिए। इस पुस्तक में मैरियावली ने राजनीतिशास्त्र का धमशास्त्र और नीतिशास्त्र से प्रिवुल विनग कर दिया है। मैरियावली का पूरी तरह घृणा और निंदा का पात्र बना दिया है क्याकि उसने नतिक आचरण का राजनतिक मीका परम्नी की चरी बना दिया है। उसने सदाचार के बाई मिद्धात निश्चित करन की वाशिष नही की।

प्राचीन भारत के आचार्य चाणक्य ने भी कुटिल राजनीति का प्रतिपादन किया है। अथशास्त्र नामक ग्रन्थ में चाणक्य ने राष्ट्र के हित में सभी तरह के अनतिक तथा अनुचित उपायों का नीतिमुक्त कहा है। अथशास्त्र का इस अवधारणा का द्यकर ही विशागदत्त ने मुत्तारागम नाटक में चाणक्य का कुटिल मति प्रेषित किया है। चाणक्य ने भी कौटिलीय अथशास्त्र का 'अतिनशस प्रायाण दणम' अधान अत्यन्त नशमता का उपदशक कहा है। इसी कुटिल नीति का महत्व देने के कारण चाणक्य का कौटिल्य भी कहते हैं। पर तु फिर भी चाणक्य की तुलना मैरियावली से करना युक्तिमगत नहीं है। चाणक्य ने धम तथा नाति का राजधम का आधार माना है। अथशास्त्र के प्रारम्भ में ही उमन कहा है —

तस्मात् स्वधम भूताना
राजनय भिचारयत ।
स्वधम सदाधानाहि
प्रत्यचेह च नदति

राजा अपनी प्रजा को स्वधम से च्युत न होने दे, राजा भी स्वधम के अनुसार आचरण करे। जा राजा एमा करता है वह इस लोक और परलोक में सुख पाता है।

चाणक्य के अनुसार राजा का बृद्ध सवी, विद्या विनय सम्पन्न, जितन्द्रिय तथा काम, क्रोध लोभ माह का दमन करन वाला होना चाहिए। शत्रुनाश के लिए चाणक्य ने गहिन उपायों का विधान किया है, परन्तु माध ही यह भी कहा है —

'एव दूप्यपु अधमकेपु धर्तेन न इतरेपु अर्थात् कुटिल नीति का
केवल दुष्टा तथा अधार्मिक लोगों के साथ ही कर, दूसरों के साथ नहीं।
न अर चाणक्य नीति में धम नीति तथा सदाचार के उपदश भर पडे है।

विभाग में स्वतंत्र शासन हुआ कि कारिज का उपदेश महा दत्त। प्रारंभ
 राग्यर का मत है कि जस युद्ध तथा नाति व साभ समान नरर घात हा प्र
 नाति ता हा वरग करता कारिग वरति युद्ध म मय, धर्म, पाग मया मरता
 हात है। एता विपरीत मैरियाली एमा विवक गरी करता। यह ता रात्रा का री
 उपदेश दता है कि प्रयाग एरवा कागम रगा। क तिए मभी मरर का कृतीरि का
 प्रयाग करे। मैरियाली का एत विमय ए मगर मर क रात्रागमा का पय
 रिया है। वामान मारणी क हिरर मुमातिता और मरतिर जन मारता
 और नमम ह्या क मामत म उगत ही प्रतिरूप तरर घात है।

प्राज भी मताधारिया क काय बयागा म, मारगर्धीय रात्राधिर, घात
 प्रतिघाता म और मर का के० जी० बी० तथा घमरीका ती मी० धा० ए० म
 जामुमी गतिविधिया मैरियाली म मिडगाग पर की जाती है।

नीति के विषय में डाकिन के विचार

डाकिन यद्यपि नीति क विषय पर लिखा घाता पुरम ए घा, निर भी उम
 यह बताया रि बाहर की यन्तुमा पर नाति का समाव रिना महग है। डाकिन क
 कथनानुसार मनुष्या और दूसर प्राणिमा म भी जीव रहा का साभ रहता है। क
 यह भा कहता है कि जा दम मयम म जीवित रह सता है यही विजय मनी
 जाता ह और जा मयम गरी ह वर जडमूल म गष्ट हा जाता ह, पर दम मयम क
 मुकाबल म हम कवल शरीर बन म रिक् नहा सत। हम मरि रीध मिह ती
 भरा व घादमी की तुचना तर ता घातमा उनम म रिगा क माध मुग्नी सडे ता हा
 जायगा पर यह रात हात हुए भी घपना बुद्धि क बदीतत वह उम घधिर बने
 ह। युद्ध कात म जिाए पाग घधिर बल या घधिर राग्या बाल घादमी हा, यह
 जीत एमा नहा हाता, बन्कि जिमके पाग कला कागल का बल और मच्छे नता हो
 है, वह जाति सग्या म कम हा ता भी विजयी हावी ह।

कितन ही लाग यह मानत हैं कि डाकिन न तो हम यहीं मिलाया है कि जो
 शूर ह मार शरीर बन म भरपूर है वही घात म विजयी हाता ह यह ठीक नहा है।
 नाति बन शरीर एत मार बुद्धि बल दाना म बढकर है और योग्य मनुष्य मजोम्य
 म मधिर टिक मरता ह। ता जातिया अनीतिमय थी, व प्राज नाम राग हो गई
 ह। साठम मार ममार का लाग बडे दुराचारी थ। इमम यह देश मिट मय। प्राज
 भी हम दम सकत है कि जा जाति मा राष्ट्र अनातिमान ह उसका नाश होता जा
 रहा है।

शांत स्वभाव नीति का अग ह। उपर दलन म एमा जात हाता है कि
 घमण्डी मनुष्य प्राग बढ मक्ता ह। पर बाग विनार तरक भा हम दय मक्त है
 कि मनुष्य का मक्त्पा तापार अत म घमण्डी के उपर ही गिरती है मार उगत

पतन हा जाता है। मनुष्य नशे का सेवन न कर यह नीति का ही एक दूसरा अंग है। दखन में यह आया है कि शराबी अधिक नहीं जीते हैं पर नियसन मनुष्य अधिक आयु तक पहुँच जाते हैं। व्यभिचार न करना नीति का तीसरा विषय है। डाविन ने बताया कि व्यभिचारी मनुष्य जल्दी ही नाश का प्राप्त होता है। उसकी सतान भी कमजोर होती है। व्यभिचारी मनुष्य का मन हीन हा जाता है और धीरे-धीरे वह पागल सा हो जाता है।

अण्डमान टापू के पुरुष अपनी मित्रिया का, ज्याही बच्चे चलन फिरन लायक हुए त्याग देते हैं। इससे विदित होता है कि वे परमाथ बुद्धि दिवान के बदल अत्यन्त स्वाथ बुद्धि का परिचय देने हैं। परिणामस्वरूप उस जाति का धीर धीर नाश हा जाता है। डाविन बताता है कि पशुघात में भी एक हद तक परमाथ बुद्धि होती है भीरु स्वभाव वाल पक्षी भी अपने बच्चा की रक्षा करने के समय बलवान बन जाते हैं। डाविन का कहना है कि प्राणी मात्र में थोड़ी बहुत भी परमाथ बुद्धि न हा ता आज समाज में घास पात और जहरीली वनस्पतियाँ के सिवा शायद ही कोई जीवधारी हा। मनुष्य और दूसरे प्राणियों में सबसे बड़ा अंतर यह ही है कि मनुष्य सबसे अधिक परमार्थी है। दूसरे के लिए अर्थात् अपनी नीति प्रमाण में अपने बच्चों के लिए अपने देश के लिए अपनी जान बुरबान करता आया है।

डाविन स्पष्ट रूप में बताता है कि नीति बल सर्वोपरि है। ग्रीस की जनता युरोप की आज की जनता से अधिक बुद्धिशाली थी, फिर भी जब वहा की जाता न नाति का त्याग किया तब उसकी बुद्धि उसकी शयु हा गई और वह जाति आज दखन में नहीं आती। जातियाँ न पसे स टिकती हैं और न सना से। वे एकमात्र नीति की नींव पर टिकती हैं। अतः मनुष्य मात्र का कतव्य है कि इस विचार को सदा मन में रखकर परमाथ रूपी परम नीति का आचरण करे।

ध्यावहारिक जीवन में आचरण

व्यावहारिक जीवन में हमें सदा यह देखते रहना चाहिए कि हमारा आचरण सुधार की ओर जा रहा है या बिगाड की ओर। व्यापार करने वाला हर एक सादा करत हुए इस बात का विचार करेगा कि मैं अपने आपका या दूसरा का ठग तो नहीं रहा हूँ। वकील, वैद्य और डाक्टर नीति का अनुसरण करते हुए मुवक्किल और रागी के हितहित का अधिक साचेगा। मा बच्चा का पालन करते हुए मदा यह डर मन में रखकर चलेंगे कि कहीं भूँठे स्नह या अपने दूसरे स्वाथ से वह बिगड न जाय। मजदूर भी अपने कतव्य का पालन करेगा। मनुष्य का मृत्यु उसक चरित्र, उसके चाल चलन पर आधिन होता है उसके पद दर्जे पर नहीं। उमक चरित्र की परख उसके बाहरी कार्य से नहीं हाती, उसकी अंतवृत्ति जानकर का जा सकती है। एक आदमी किसी का अपनी नजर से दूर करने के लिए 100/- १० दना है दूसरा उम पर तरम खा कर स्नह से 50/- १० ही दता है। इनमें से पहिला दानी है और दूसरा नीतिमान है।

8/चरित्र निर्माण के नतिक पथ

जा आदमी स्वयं शुद्ध है, किसी से द्वेष नहीं करता, किसी ग ब्रजा लो नहीं उठाता सदा पत्रिय मन रखकर व्यवहार करता है वही आदमी धार्मिक है वही सुनी है और वही पस वाला है। मानव जाति की सेवा उसी से बन मर है। अशासक का आज भी महान् कृता जाता है व स्मरण किया जाता है क्योंकि उसने प्रजा की रक्षा के लिए बड़े बड़े काम किए किन्तु बड़े बड़े बादशाहा का लो जिहान ससार विजय की उनका नामलवा भी कोई नहीं है। कृष्ण महावार, बर ईमाममीह मोहम्मद मुहम्मद का आज भी स्मरण किया जाता है क्योंकि उन्होंने मसार का नीति से सावजनित्त कयागु का उपदेश ही नहीं दिया बल्कि इसम पू नीति का अपन जीवन म भी उतारा।

हमार मन म कः प्रश्न उठत है। एक की नीति दूसर का अनीति क्या होती है। एक जाति एक ही पत्नी के साथ विवाह का हाना स्वीकार करती है दूसर अनक पत्नी करन की इजाजत देती है। बार्ई काका, मामा की सताना के साथ विवाह सम्बन्ध का त्याग्य मानत है ता दूसर उसने लिए इजाजत भी देत हैं। यह मच है कि यह नीति की भिन्नता है। यह हमारी अपूर्णता की सूचक है, नाति का अनावश्यकता की सूचक नहीं। ज्या ज्या हम अधिक अनुभव करत जावन त्यास्या सत्र कौमा की ओर सभी अर्मा के लागे की नाति म एव्य होता जायगा। नाति के अधिकार का स्वीकार करत वाला जगत ता आज भी एक पत्नीव्रत का आन्तर का दृष्टि से देखता है। किसी भी धर्म म अनक पत्नी करन आवश्यक नहीं है मिन अनक पत्नी करन की स्वीकृति है। आज भी मिश्र म जो मुस्लिम राष्ट्र है वही एक पत्नी के लिए नियम बनाया गया है।

इसी प्रकार पशु हत्या का भी ले। एक जाति पशु हत्या को स्वीकार करता है मास भक्षण करती है और हम धार्मिक कृत्य मानती है। दूसरी जाति इस कृत्य का पाप मानती है। यहा नाति की भिन्नता है। नीति को मानन वाला जगत नो आज भी शानाहार का उच्चता की दृष्टि से देखता है क्योंकि वह जानता है कि शानाहार के कारण नूर हत्याएँ तो होती हाँ है साथ ही स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह हाकिवारण है। इसम शरीर म नाना प्रकार की व्याधिया व मन म श्रुता उत्पन्न होती है जो स्वयं व समाज के लिए अहितकर है। इसी प्रकार शराब की व्यसन है जिमने शराबी व उनक गार्शिता के समाज को लाखला व जजर बना दिया है। जस जस मानव म दिवक जागृत हाता जायगा और वह पुरेता की ओर अग्रसर हागा तम तम इन यथना का त्याग करता चला जायेगा। वह नतिकता म भा एव्य जाता जायगा इतिहास हम दात का मा ती है। जिन मुस्लिम वांशाहा व हिं शागका न न यथना का त्याग किया उ हान अपनी प्रजा का अधिक सुनी व समृद्ध बनाया।

प्रथम पथ सम्यक् जीवन

सम्यक् का अर्थ ठीक मही, यथाथ सत्य है अर्थात् सम्यक् जीवन स अर्थ एसा जीवन जिमम मिष्यातत्व को कोई स्थान नहीं, जिसका जार जबरदस्ती स कोई वास्ता नहीं। सचता, स्वच्छता, निमग्नता, निर्दोषता जीवन म उतारना चाहिए ता ही सम्यक् है कर्म्याणप्रद ह यथा भाग्य है। हमारी वाणी सम्यक् हा, वाणी सम्यक् तब हाती ह जबकि भूँट कपट गाली गलोज, बटु कठोर, चुगली-निंदा और ऊनजलूल भर वचनों स वस्तुत छुटकारा पा लत है। हमारे शारीरिक कम सम्यक् तब हात ह जबकि हम हिमा हत्या, चारी, नश पत आदि दुष्कर्मों म यथाथत मुच मोड लत ह। हमारी आजीविना तत्र सम्यक् हाती है जबकि हम अपने जीवन यापन क साधना का वास्तविकता क स्तर पर शुद्ध करते हए छन छद्म, जानमाजी तस्वरी, चारी वा सनधा त्याग दत है और एसा कोई व्यवसाय नहीं करत जिमम नि धन सचय की नीत्र लालसा क वशीभूत हाकर अन्य अनेका का हानि पहुँचाव।

हमारे जीवन म प्रयत्न सम्यक् हो, यह तब ही सम्भव ह जबकि यह एक एसा अभ्यास काय बन जाता ह जिसमे कि हमारा मन दुगुण विपन्न और सदगुण सम्पन्न हा।

जन्म से मृत्यु तक की यात्रा के बीच की अवस्थाएँ—बाल्यकाल किशोरावस्था प्रौढावस्था व वृद्धावस्था है। इस यात्रा के बीच जा चेतना है वही तो जीवन है। जब तक जीवन ह तब तत्र मनुष्य की यदि बीच म कोई दुघटना या किसी अनहानी स जीवन समाप्त नहीं हो जाय, इन मभी अस्थायी स गुजरना पडता है। इन सब अवस्थाओं की विशेषता ह। यदि बाल्यावस्था म बालिका का सुमस्कारो की जडे मजबूत कर ली जाये, उनका लालन पालन शिक्षा की उचित व्यवस्था हा, ता यह ही वातक आग चलकर सुनागरिक व अच्छे युवक बनत ह। आग चलकर इस समय क मस्कार ही प्रौढावस्था व वृद्धावस्था मे सम्यक् जीवन बितान म गहायक हान है। इही वाता त्र ध्यान म रखकर बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढावस्था की स्थिति पर विचार किया गया है।

प्रथम सोपान बाल्यावस्था

जन्म माना पिता हान है वस ही उसकी सत्तान हानी है बुद्धिमान माता पिता की सत्तान बुद्धिमान व मूय माता पिता की सत्तान मूय हाती है। इसरिने जनसाधारण म यह सिद्धांत प्रचलित हा गया है कि जमा बीज हागा वसा ही कुण हागा। भारतीय समाज म वशानुक्रम क आघार पर लाग अछूत व छुणित समझे जात है। यह सम्भव हा मकना ह कि सगीतज्ञ वा पुत्र सगीतज्ञ तथा डाक्टर का पुत्र डाक्टर हा परंतु कभी-कभी इसका विपरीत होता है। बुद्धिमान माता पिता की सत्तान मूय तथा एक मूय माता पिता की सत्तान बुद्धिमान तथा एक सत्त वा पुत्र अपराधी हा जाता है। कभी कभी दूयिन वातावरण म पतन स भी सत्ताने बिगड जाती ह।



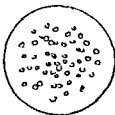
अध्ययनरत बालक

वशानुक्रम और वातावरण दो महान् शक्तियाँ है जा मानव जीवन का अत्यधिक प्रभावित करती है। वस्तुतः मानव इन दानो की ही उषज ह। वातावरण क अंतगत व मभी नतिक सामाजिक शारीरिक और बौद्धिक परिस्थितियाँ आती है जो व्यक्ति के जीवन पर अपना प्रभाव खलती ह। वशानुक्रम इन सभी

गुणों का योग है जिन्हें बालक जन्म से लेकर आता है। अतः वशानुक्रम और वातावरण एक दूसरे के पूरक हैं।

(1) वशानुक्रम—वशानुक्रम एक ऐसी शारीरिक प्रतिक्रिया है जिसके द्वारा आन वाली मत्तानें अपने माँ तथा पूजका के जन्मजाति एवं जाति गुणों को अपने आप में स्वतः ग्रहण कर लेती है। इस शारीरिक प्रक्रिया का सम्बन्ध प्रायः एक ही जाति के दो विपरीत यौन (Opposite Sex) के प्राणियों के आपसी यौन समागम (Sexual Intercourse) से होता है।

वैज्ञानिक अनुमानों से पता चलता है कि वशानुक्रम का प्रभाव पिजका के द्वारा एक पीढ़ी में दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है। स्त्री पुच्छ के समागम से पुच्छ का



अण्ड



शुक्र



पित्रैक

चित्र 2

शुक्र कोष (Sperm cell) एवं स्त्री के बीजकोष (Egg cell) का मिलाप से सन्तान का बीज पड़ता है। गर्भावस्था के समय शुक्र और अण्ड के वंश सूत्र (Chromosomes) के पिजन आपस में जाड़ा बनाते हैं और सन्तान की विशेषताओं और गुणों को निर्धारित करते हैं। मनुष्य में एक-एक शारीरिक लक्षण का एक (Genes) जीन है। एक जीन एक पिता में और एक माता से प्राप्त होता है। जब ये दो जीन एक-साँ हीन हों तो बालक में वही शारीरिक गुण आ जाता है। लेकिन अगर ये जीन अलग-अलग तरह के हों तो जो जीन प्रबल होगा वही गुण बालक में आ जायगा। उदाहरणार्थ यदि माता पिता की सन्तान अधिकतर गारी हा

हाती है, लकिन यह भी काई जरूरी नहीं कि गार माता पिता की सत्तान निश्चय ही गोरी हा। असली महत्व जी स का है। यदि माता पिता के जीम का रग एक का बाला हा और एक का गारा हा ता उनम स जो प्रबल हागा, उसी रग का सत्तान पदा हागी। कभी कभी काई जीस कई पोत्रिया तक गीए रहन पर एका एक प्रबल हो जात है और यह जी स जिम रग का हागा, सत्तान की प्राप्ति उसा रग की हागी।

सन् 1953 स पहिल Genes का एक प्राटीन अणु (Protein molecule) समझा जाता था किन्तु बतमान के नवीन परीक्षण न जीस (genes) मिद्धात म एक नातिकारी परिवर्तन ला लिया है। अब यह समझा जा लगा है कि वशानुक्रम क रामायनिक बाहक प्राटीन नहीं हात ह वरन् एक रसायन हाता ह जिम DNA (Desoxyribonucleic Acid) कहते है। सामासाम इम रसायन क अणु ही हात है। DNA म अद्भुत शक्ति अपन आपका उत्पन्न करन की हाती ह जब भी उसका वातावरण म आवश्यक रासायनिक कच्चे पदार्थ पाए जात है यह काय कद्र म ही कद्रिय रहत है। एक दूसरा रसायन जिसे RNA (Ribonucleic Acid) कहत है जा DNA का प्रतिरूप होता है वह काय क कद्र से काय की बाहरी महत् की आर निकलता ह। इम प्रकार वहाँ DNA द्वारा जा वशानुक्रम सम्य भी सवेतावली हाती है उसकी सूचना दूसरे तंतुओं का देता ह। इमक सम्बन्ध म प्रयाग हो रह है। विश्वास किया जा रहा है कि जब DNA आर RNA क सम्बन्ध म पूण जानकारी हा जायगी आर इसम सम्भावित नियंत्रण हो जायेगा ता व्यक्ति मनचाही सत्तान प्राप्त करन म सफल हा जायगा। कई मनावानिक दम अनुसंधान म लग हुए ह कि सत्तान जन्म से ही सीखा हुआ उत्पन्न हा जिसस उस बहुत कम शिधा दनी पडे।

(2) गर्भावस्था—जब बालक गर्भावस्था म हाता है तब से ही माँ के शरीर म ही अपना रूप ग्रहण करता और बढता ह इसलिए उस पर माता क रक्त का, जिससे गर्भ म उसे पापण प्राप्त हाता ह प्रभाव पडना अनिवाय है। पापणभाव क कारण माता का रक्त इतना अल्प हा सकता ह कि बच्चे को पर्याप्त पापण ही न मिल सके जिससे वह बहुत दुबला पतला हा सकता है, दूसर रक्त की पर्याप्त मात्रा हात हुए भी हा सकता है कि वह बच्चे क लिए उपयुक्त न हा। यदि रक्त म कल्शियम या फास्फोरम की कमी हा ता बच्चे की अस्थियाँ और तना का निर्माण ठीक प्रकार स नहीं हागा और उसका अस्थिवक्रता, दतभय आदि रोग का शिखार हान की सम्भावना रहगी। इमके अतिरिक्त माता की रण मानसिक अवस्था का भी रक्त पर प्रभाव पडता है जा गर्भस्थ बच्चे क लिए हानि कर हा सनता है। आञ्जल एम प्रयाग भी हा रह ह जिमम गर्भावस्था म हा

बालक को उचित शिक्षा दे दी जावे। यह शिक्षा जन्म लेने व पश्चात् दे दी वाली शिक्षा से अधिक स्थायी व लाभप्रद सिद्ध हुई है। अभिमन्यु का गभावस्था में ही चन्द्रव्यूह सम्बन्धी शिक्षा उमक पिता अजुन द्वारा दे दी गई थी जिससे महाभारत युद्ध में शत्रु के योजाया के छक्के छुड़ा लिये थे। आज की माताएँ अपने बच्चा को दूध पिलाने में भी बतलराने लगी हैं। माता के दूध के स्थान पर नाना प्रकार का कृत्रिम आहार दिया जाता है जिससे बच्चे की पाचन शक्ति बिगड जाती है और प्रारम्भ से ही सर्दी, दस्त आदि रोगों का आक्रमण होने लगता है। प्रकृति यही चाहती है कि बच्चे जन्म ग्रहण करने समय स्वस्थ ही रहें पर ऐसा होता नहीं है। शशकान से ही रोगों का आक्रमण प्रारम्भ हो जाता है और यह सिलसिला जीवन पयन्त चरता रहता है। इसका कारण है बालक पालन सम्बन्धी दोष। इन दोषों का दूर कर, सुधार के साथ ही प्रकृत शरीर की प्राकृतिक शक्ति को सहायता करने के बजाय प्रति औषधियों का प्रयोग द्वारा रोगों के लक्षणों का दवान का प्रयास किया जाता है जिससे रोग का मूल ज्यों का त्यों बना रहता है आसमय पाकर जीर्ण वस्था में परिणत हो जाता है।

एक स्वस्थ और मुदर वातावरण में पला हुआ बालक ही बड़ा हाकर देश के लिये उपयोगी हो सकता है। आज हमारे में बाल शिक्षा और बाल विकास पर अधिकाधिक जोर दिया जाता है। रूस, अमेरिका में इस सम्बन्ध में जो कार्य किए हैं वे आश्चर्यजनक हैं। भारत का बालक आज भी पीडित और पददलित है। इसका कारण है बालक व विकास में आवश्यक सुविधाओं का अभाव, प्राथमिक व पूर्व प्राथमिक शिक्षा की दयनीय स्थिति।

(3) बालकों के पालन पोषण में माता पिता का दायित्व—अपने जन्म के समय से ही बालक जिस प्रेम को अपने माता पिता से प्राप्त करता है उसका उसके जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। परन्तु देखा यह गया है कि आज बालक अपने माता पिता से दूर होते जा रहे हैं। बच्चा जब पेट में रहता है तो उसका सम्बन्ध नाभि से होता है। माँ की जीवन धारा नाभि के द्वारा उस बच्चे से प्रभावित होती है। यह एक अनजान विद्युत धारा होती है जो उस बच्चे के व्यक्तित्व को पोषित करती है। पदा होने व पश्चात् उसका सम्बन्ध माँ से टूट जाता है। यदि बच्चा पदा होने के पश्चात् राता नहीं तो उमका अर्थ है कि उसको मा से अलग होने का पता नहीं है तथा उसकी मृत्यु निकट है। अभी तक बच्चा अपनी माँ से नाभि के द्वारा जुड़ा था तथा अब उमका प्रयास होता है कि वह मा से फिर जुड़े। उमकी जीवन धारा फिर से समुक्त होती है माँ के दूध से। जो विद्युत धारा उम नाभि से मिलती थी उस बच्चा अपने माँ के स्तन से हाटा द्वारा सन लगता है। इस प्रकार वह माँ व हृदय से जुड़ जाता है। यदि मा का दूध उस नहीं मिलता है तो उमका जीवन सदा के लिये कुण्ठित हो जाता है। अपने माता पिता से बड़े लिंग व

परवान् भित्तन पर वी शवम्या म भी व्यति का हृदय भर भ्राता है, प्रापिर बना? डमक। वारण है उमकी वचन की विद्युत धारा ता प्रयाहित हाना। यदि माँ का हृदय द्रवित जाता है ता गतान भित्तनी ही बटार क्या न हा उमका भी हृदय द्रवित हा जाता ?।

पश्चिम का ही सुवन नहीं आज ता भारत का युवक भी माता पिता के प्रति अत्यन्त विद्रोह स भर रहा है। दमका वारण है गेमे वच्चे माँ के दूध न नहीं पने हैं। वचन म उनका जीवन के प्रति सम्बन्ध प्रीति पूण नहीं रहा है। माँ स विछिन्न होन स व जीवन म भी विछिन्न हा गण हैं। उाके जीवन म गहरी अशांति उत्पन्न हा गई है। घोर व डमका चटना अपन माँ वाप न ले रह है। भारी दुनिया म स्त्रिया की घोर पुरथा का धाकपण क्यों है? इसका कारण है कि व वचन म अपनी माता के (स्तन) के अधिक निकट नहीं रह हैं। आन्विसी ममाजा म स्तन के प्रति बाई गारण नहीं है क्याकि वहाँ के वातक अपनी मा का दध अधिक समय तक पीत है। हमारी बबिनारों, किन्में, उपवास, नाटक विय सभी स्त्रिया व पाम बेन्द्रित है। दमका वारण है कि वे वच्चे अपनी माता व स्तन के निकट पूरी तरह नहीं रह पाण हैं।

(4) माँ-बाप के अज्ञान को दूर किया जाये—एक प्रसिद्ध लेखिका घोर विचारक एथला मनिन न अपनी पुस्तक 'वामन सस एण्ड दी चाइल्ड' म ठीक ही लिखा है कि मेरा विश्वास है कि 95 प्रतिशत वच्चे ऐस हैं यदि उह बायावस्था म ही अपन माता-पिता स दूर कर दिया जाव ता वे अधिक प्रमद रह गवने हैं। इगलण्ड व त्रातिकारी मानस शास्त्री घोर शिष्या शास्त्री ए० एस० गीन न भी अपनी पुस्तक 'दी प्रान्बलम पेरेट' में इसी प्रकार विचार प्रकट किए हैं। व माता पिता से कहत है 'आप मुझे बहुत परेशान करत है आप एक ममस्या है। जिन वच्चो का आप जटित बतात है मैं उह सुधारन का प्रयास करना हूँ सुधर भी जाते हैं लेकिन आप मेरे किय हुए पर पानी क्या फेर देत है।' आकषपकता है माँ बाप के अज्ञान को दूर करन की व उनके कतव्यो व जिम्मगारी का गान करान की, तानि वह वाक्व के विवाम म योगदान ले सके।

(5) प्रेम की शिक्षा

अपने जन्म के समय स ही वातक जिस प्रेम को अपन माता पिता से प्राप्त करता है उमका उनके जीवन म अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रभाव पडता है। वातक अभिभावक पडोसी सम्बन्धी और अध्यापन मे प्रेम प्राप्त करता है। इसी व द्वारा उसक व्यक्तित्व का सन्तुलन और सर्वांगीण विकास होता है। यदि बालक यह अनुभव करता है कि अध्यापक अथ विद्याचिन्मा की अपथा उम वम प्यार करती है

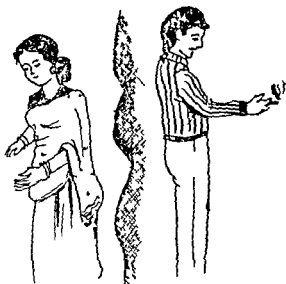
तो उमके मन में अध्यापन के प्रति घृणा उत्पन्न हो जाती है। उमी प्रकार घर में माता अपने बच्चे में प्रेम नहीं है तथा पहिले बच्चे की उपाय करती है ता उमसे भी उसके मन में कुण्ठा उत्पन्न हो जाता है। सौतली माता का व्यवहार अपने बच्चे की ओर पशुपातपूर्ण तथा दूरसे बच्चे की ओर उपेक्षापूर्ण होता है ता उममें भी बालक में प्रिययाँ उत्पन्न हो जाती है जो उमकी भावनाएँ व भविष्य बिगाड़ने में महायक होती है।

एक बालक उदास होकर बड़ा था उमकी माता का देहांत हो गया था तथा पिता ने दूसरा विवाह कर लिया था। इस बालक से जब उमके पिता ने उदासी का कारण पूछा ता उमने बताया कि मेरी पहिले वाली माता मुझको छोड़कर चली गई, वही यह भी मुझे छोड़कर न चली जावे, इससे मैं दुःखी हूँ। उमकी माता ने उमको गले से लगा लिया और विश्वास दिलाया कि मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगी। यन्नि सौतली माताओ का व्यवहार इस प्रकार का हो तो बालक में भी अपने माता के प्रति प्रेम व सहानुभूति होगी। एक स्त्री थी जो बड़े बच्चे की माँ थी। वह अपने बच्चे को मारती, पीटती न थी। लोग उस कहते थे कि तुम अपने बच्चे को बिगाड़ दोगी, उनका सुधार न कर सकोगी। पर पीछे उही लोगो को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उन बच्चों के चरित्र ऊँचे हो गये हैं। उनमें मनुष्यत्व का सच्चा आदर्श आ गया है, दया व मामन जैसे दुष्टता का नाश हो जाता है वसे ही प्रेम और उदारता के मामन मनोविचारों का नाश हो जाता है।

बच्चे के ऐश्वरी और कमजोरिया का प्रगट करने के बजाय उनका मन श्रेष्ठता, सौंदर्य और सत्य विचारों में भरा जाय प्रेम सहानुभूति पवित्रता और उच्चता का आदर्श प्रस्तुत रहने से थोड़े समय में ही बच्चे का मन अद्भुत प्रकार से आलोकित हो उठेगा। बच्चे का नित्य प्रति यह कह कर कि तू मूर्ख है मन्द-बुद्धि है सुस्त है नाकारा है तू कोई काम नहीं कर सकता, सुभक्त न बुद्धि है न शारीरिक पराक्रम ही है इससे तू कुछ नहीं कर सकता। ऐसा कहकर माता पिता सहज में ही उमकी निर्माण शक्ति नष्ट कर देते हैं। उनके मृजन जन्म मन को बेकार बना देते हैं।

बच्चे के लिये कुछ ऐसा नियम होना चाहिये जो उनका पथ प्रदर्शन करे। लेकिन ऐसा भी नहीं कि एजना ऐम नियम बना लिए जावे जिसमें उनके हाथ पैर बिल्कुल बंध जायें। बसल पाठे म ग्यष्ट नियम शो चान्ति जम वह घर सोचकर विन समय तक आ जाए व तिन गीमाथा क प्र न् मये शीन घर म शोच पीम के काम उसके करने के हैं। अनिश्चय मन का प्रत्या मन् प्रत्या मन् प्रत्या मन् यह बात है कि व क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकते।

(6) घर का प्रभाव—बच्चे पर अपने घर का प्रभाव अधिक होता है तथा यह सामान्यतः पाँच बय की आयु तक बनता है और समय और परिस्थिति में अनुकूल ढाला जा सकता है। जहाँ बहुत म जोबर तापर होत हैं वहाँ आगे जाकर उनके व्यक्तित्व में शासन करने की आर अपनी आना पानन करान की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। यदि ऐसा नहीं होता तो वह आश्रित हो जात है। स्कूल के मायों भी उसमें निरंतर उद्वेगन हुई दशा प्रदान करत हैं। कभी वह अपना माँ-बाप या बड़े भाई बहिना में अनुरूप अपने को ढालन का प्रयास करता है। कभी वह आम पाम के बालकों में समान बपडे पहिनन का मरलन लगता है। जो माँ बाप अपने बच्चों को दण्ड देत हैं। वे बच्चे बड़े होकर माता पिता से विद्रोह करते हैं और बुढ़ापे में अपने माता पिता को उतना ही दण्डित करत हैं। यदि घर का वातावरण अच्छा नहीं है, माता पिता में भगडा हाता रहता है तो आगे चलकर ऐसे बालक भी भगडालू हो जात हैं। एक दूसरे को प्यार करने वाले एक बच्चा के लिये अनुकूल



जहाँ प्रेम नहीं हाता, वहाँ भेद का पदा हाता है

वातावरण का निमाण करने में प्रवृत्त दम्पति का जन्म से ही बच्चे पर प्रथम अधिकार है। दम्पति का न तो लडके की, न ही लडकी को अधिक आकांक्षा करनी चाहिये क्योंकि विपरीत अवस्था में जन्म पार नराभ्य का कारण हो जाता है।

दम्पति का यह नैराश्य नवजात शिशु के लिये बहुत बड़ा मानसिक आधार हो जाता है ।

प्रत्येक बालक चाहता है कि वह जसा भी है, उसके माता पिता उसे मन से स्वीकारते हैं, उसे पसन्द करते हैं । वह जब उनकी इच्छानुसार काय करता है तब भी तथा उनकी इच्छा के विपरीत काय करता है तब भी ।

प्रत्येक बालक अप्रत्यक्ष रूप से एक दिशा एवं लक्ष्य चाहता है तथा नतिक मूल्यों को निमित्त करना चाहता है । इसलिये माता पिता एवं अभिभावकों का चाहिये कि बालकों में वे प्रारम्भ से ही नतिक मूल्यों के प्रति विश्वास जागृत करने का प्रयत्न करें ।

जिन घरों में माता पिता शराब पीते हैं वीडियो सिगरेट व हुक्का पीते हैं व अश्लील नशा करते हैं, वहाँ के बच्चे भी उनका अनुकरण करने लगते हैं । पहिले तो वे छिप छिपकर यह नशा करते हैं परन्तु बड़े होने पर वे भी इन नशा के आदी हो जाते हैं । जहाँ पर माँस व अण्डे खाए जाते हैं वहाँ पर बच्चे भी इनके आदी हो जाते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी बसा ही हो जाता है । अतः बालकों के हित में यह आदत त्याग देनी चाहिये । कई बालकों को आध भी अधिक आता है, उसके निम्न कारण हैं—

- 1 दिन प्रतिदिन के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप ।
- 2 उसकी सामर्थ्य से परे उमे काय मीपना ।
- 3 शिक्षकों अथवा अभिभावकों द्वारा वास्तविक या काल्पनिक पक्षपात ।
- 4 प्रौढ व्यक्तियों का व्यवहार जिसे बालक अपना अपमान समझे ।
- 5 बीमारी अथवा नींद न आने से शारीरिक शक्ति का ह्रास ।
- 6 जब परिवार में प्रौढ व्यक्तियों की संख्या अधिक हो ।

कभी कभी क्रोध में बालक अत्यन्त उबल पड़ता है इसका कारण होता है कि अश्लील वस्तुओं के प्रति जिनके लिये वह अपना क्रोध अश्लील कारणों से प्रगट नहीं कर सकता, आक्रोश गहनित हो जाता है और समय पाकर आमन्त्रण चाहते वह छोटा ही क्यों न हो, वह क्रोधित हो उठता है । क्रोध के बड़े दुष्प्रभाव होते हैं, इससे शक्ति का ह्रास होता है । क्रोध से समस्या का सम्यक् समाधान नहीं होता परन्तु कई लोगों को क्रोध में ही काय करने की या समस्या को मुनिकान की आदत पड़ जाती है । स्कूल में अध्यापक का क्रोध का कारण जानकर उमका दूर करना चाहिये । योग्यतानुसार काय करके प्रोत्साहित करना तथा अच्छे काय की प्रशंसा करना चाहिये ।

भय — जगत्वावस्था में यथायथ नुस हो जाये, तीव्र धरनिया में प्रयत्नानि भीषण उत्पाक के प्रति हान वाली प्रतिप्रिया के रूप में भय का वग धारा है। अतः माता म अधकार का भय अथवा छाह दिव जान का भय, पशुपति का भय, प्रेत घाति का भय । एम भय बालका में नहीं प्रीठ स्थितिया में भी ऐस विवरहन और निराधार भय हात है । इसक लिय बालका में विश्वास उत्पन्न करना चाहि कि कथित स्थितियाँ भयहीन है तथा निराधार है । भय का कारण जानन क निः प्रेरित करना चाहिये । जो भी नई परिस्थितियाँ हा उनस धीरे धीरे धवगत करना चाहिये । एम उदाहरण प्रस्तुत करें जिगत वह निभय रह ।

बालक स्वयं काम करना चाहता है । किंतु कौशल न हान के कारण ए बीजा का गिरा दता है फिर भयभीत हो जाता है यथाकि उस अपन माता पिता का डार का डर है ।

बच्चे के धारे में माता-पिता के लिए कुछ सुभाष

1 माता पिता बच्चे की उपस्थिति में कभी नहीं भी भगडा न करें, एर उनको भगडना हो तो धयय चले जावें ।

2 जब आपके परिवार में दूसरा बच्चा जम ल तो वडे बच्चे के प्रति प्रेम कभी न हाने दीजिए । माता पिता का ध्यान एवाएक नवजात शिशु की ओर जात देखकर वडे बच्चे का बहुत अधिमानमिक कष्ट हाता है फलस्वरूप या ता उमम उमके प्रति उनके प्रेम में कचित होने की भावना उत्पन्न हा जाती है या ड्रॉप की । ड्रॉप की भावना का पहिला लक्ष्य नवजात शिशु हाता है और मह भावना यहाँ तक बढ जाती है कि उमकी प्रवृत्तिया घातक रूप धारण कर लती है । इसके अलावा यह ड्रेष माता पिता क प्रति भी हो जाता है । परिणाम यह हाता है कि उसके हृदय में ड्रेषामय मधध और दुष्कम तथा आशका की भावना प्रबल हो जाती है ।

3 अपने बच्चे के प्रति अधधिक प्रेम मत लिखाइये । अगर माता पिता विशेष कर माता अपन बच्चो की आवश्यकता से अधिक चिंता और देखभाल करने लगे तो बच्चे में दायित्व का भाव विकसित हाने का अवसर ही नहीं आवेगा । उसमें पराधनम्वन की घातक भावना बरी रहेगी और स्वयं काई निरणय करने के डर के कारण वह धीरे धीरे शका व नाडी दीबल्य का शिकार हो जायगा । अगर माता पिता प्रेम प्रदशन म्ब धी शारीरिक प्रियाया म अधिक मरुग रहे तो ये विकार बढकर भीषण रूप धारण कर सकने है । बच्चे के प्रति अधधिक प्रेम प्रशन दाम्पत्य जीवन के प्रति माता के असातोष का सूचक होता है । इसका बच्चे के मीन जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पडता है । आगे चलकर उमके लिए समबयस्क विशेषकर भिन वग स्त्री या पुंश के साथ सामजस्य स्थापित करना कठिन हो

जाता है। अगर माता अधिकार प्रदर्शन और शासन के रूप में प्रदर्शन करे, बच्चे के हर काम में दखन देती या शरीक होती रहे और आलोचना करती रहे तो बच्चे की कमजोरी और आशंका की भावना बहुत बढ़ जायगी जो प्रायः सहवर्गीय यौन प्रवृत्ति उत्पन्न कर देती है।

4 बच्चा के प्रति मापका प्रेम बहुत कम भी नहीं होना चाहिए। प्रत्यक्ष बच्चे को प्रेम और उचित ध्यान की आवश्यकता होती है। अगर बच्चा यह समझन लगे कि घर में उसकी कोई पूछ नहीं है तो उमम दीनहीन और असहाय होने की भावना घर कर लेगी। आगे चलकर जीवन में और आगा से मिलन पर उमम पराजय की भावना उत्पन्न होगी।

5 माताएँ अपने पति पर हावी हान का प्रयत्न न करें। अगर माता दबंग और उग्र स्वभाव की हो और पिता का स्वभाव कोमल और दब्यु हा तो बच्चे की शारीरिक और मानसिक स्थिति उचित न रह सकेगी। लड़का तो इस भर्त्सनी माता के सामने डुंटा की भावना और स्त्री मुलभ नम्रता व साथ भुक्ता रहेगा और लड़की अपने को उम माता के रूप में समझकर पुष्प प्रकृति की हो जावेगी, जिससे वह सामान्य यौन जीवन के सामंजस्य स्थापित कर नहीं सकेगी।

6 बच्चों के समझ न तो ज्यादा नरम बनिए और न बहुत बड़ा दण्ड दीजिए। दण्ड देना नियम न हाकर अपवाद ही होना चाहिए। मारना पीटना तो



[माताएँ बच्चा के समझ अधिक गम्भीर न रहें।]

हातिशान्त की है। धर्म का प्रसार का व्यक्तित्व बंधे का बंधन जानकर
 तबता ॥ यो एत त शो दूगरा एमा पाम करना रतगा तिमन म्म शक्ति
 पट्टेपती रतगी। धार नय वर दुर्गिता क युगी हात धार धपत प्रति प्रचार कर
 की शिराया करत लगमा।

7 बच्चा त तिम समय तिमनिय। धार क माता पिता धपत बच्चा क तिम
 समय नरी निरागत है। बच्चा क माप रतिम, उतरी निमगनी रतिम। उम धारता
 दे परतु उपति त एह दे तिम बच्चा क ममभन लग तिम धाप ता उमन रवि हा
 नही नत। मातम म्यायनम्यत मद्भावता धोर मामूनि शयना का धान्न प्रारन
 स ही धारें ता बच्चा कस योग्य हा गतता है तिम गराय म गराव शिमिमा म
 धपत का नियन्त्रित रग तगा। यति धाप उमन तिम समय तिम तो उस पर बाहरी
 प्रभाव नरी पटना। धार उमके प्रारम्भिक गराया की नीय मजबत हागी।

8 बच्चा का नशीवी बन्धुन नरें। बहूत स मां माप रात का बच्चा न
 राए म्म म्यायन म उम धपतीम रत्याति विपत पदाय गिला तिया करते है, इमरा
 परिणाम यह हाता है कि उनके मानसिक विनाम का बडा गहरा धनत पहुँचा
 है। यति धाप धपन बच्चो को बुद्धिमान धोर प्रतिनाशापी बनाना चाहत है तो
 धापनो चाहिम कि उनका तिसी भी प्रकार का नशा न करन दे। उनको धाप बीडा
 मिगस्ट धाति म भी बचागे। बीडी मिगस्ट पहन बच्चे धपन पिता व बडे भाई का
 नकल करके पीत ह व फिर छिप छिपकर पीन लगन है। तिमस उनम भूँठ व चारी
 करन की गान्न पड जाती ह।

जैसा भाव माता पिता धपन बच्चे क प्रति रगते है धोर वर्ताव उनके माप
 करते है वे सभी वालें उनके मन म उगी तरह जम जाती है धोर उमके भावी जीवन
 मे प्रवृत्त होती है जस टेप किया हुआ गाना जस का तमा गायन रूप म प्रवृत्त
 होता है।

9 बच्चा क माय कटु व्यवहार न करे व म्वास्थ्यहीनता के विचारा स उठ
 दूर रवे।

कटु व्यवहार—हमारे माता पिता धपन बच्चा क साथ कटु
 वताव करते है। उह बुरी तरह धमकाते है धोर भला युग नहत है
 कामल हृदय गलक बहुत तिम न और उदास रहत है। इमका परिण
 कि उनका मानसिक विकास रुक जाता ह धोर व धाजम सकुचाए
 बच्चा को धात्म प्रेरणा के प्रभाव मे प्रभावित कीजिए। जब बच्चा।
 रोने नय ता मा बडे प्यार म उसका चुम्बन ल और पुचकार कर कह
 चुप रह तरा दद धच्छा हा गया। उमका धपधपी द। इस धपधपी का बालक ५५
 धाणवयनक प्रभाव पडता ह। छोटी मोटी तबलीके ता केवल माता पिता के प्रद

भरे आश्वासन और हाथ फेरने व पुचकारने भर स दूर हा जात है । जिन लागे का स्वास्थ्य ठीक नहा रहना अवश्य ही उनके बचपन म स्वास्थ्यहीनता व विचार भर गए हाग । बच्चा क मन म मा वाप तथा ग्रहाम पडोस क लाग अनानवश दुग्दद, आधिव्याधि के विचार बुरी तरह भर दते है । व उनको कहा बरत ह 'शरीर व्याधि मदिरम्' वम य विचार बच्चा के दिन म जड जमा तत हैं और उनका प्रभाव आज म उन बचारा का भागना पडता है । अत ऐस विचारा से बालका का बचाना चाहिए तथा वे प्रारम्भ स ही स्वस्थ बने व दुबल न हा जायें इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए ।

दुबले व पतले बच्चे—बच्चा के दुबले पतल हान के कई कारण है, जस कुछ बच्चे अपन वश की परम्परा के अनुसार दुबले हात है । उनके माता पिता म स बाद एक या दाना दुबले शरीर की वनावट क हान ह और बच्चे का डीलडान भी उही के अनुस्प हाता ह । ऐम बच्चा का पालन पापण त्रिकुल ठीक हाता ह, गाना पीना भी समुचित एव पाण्डित दिया जाता ह स्वभाव स भी य बच्चे मुस्त और भदे नही हात ह फिर भी ये बच्चे दुबले रहत ह एग बच्च भाजन भी अधिक् मात्रा म नही पचा पात और विशेषकर पाण्डित पदाथ उनक अनुकूल नही हो पात ।

कुछ बच्चे भय और आतक स इतन प्रभावित हो जात है कि उनकी भूख मर जानी है और व पयाप्त भाजन उही ग्या पात, इसी भय तथा आतक की कल्पना स व दब दबे स रहत है जिसम उनक स्वास्थ्य पर भी कुप्रभाव पडता ह और व दुबल हा जाते है ।

बच्चे की मानसिक परशानी होने पर भी उसका भूख नही लगती, साथ ही उसकी शक्ति भी क्षीण होती रहती ह । स्वास्थ्य गिरता जाता है । किसी रोग से पीडित बच्चे भी दुबले होत हैं, परतु यदि सही समय पर राग की दयभाल नही हुई तो बच्चे और भी कमजोर हो जात है ।

कुपोषण से बच्चे मे रोग—इममे बच्चा म प्रतिरक्षा की क्षमता कम हो जाती है और वे श्वसन तथा पाचन तंत्र स सम्बन्धित रागा से ग्रस्त हो जात ह—कोर बवाशर—उमके प्रमुख लक्षण है वृद्धि की गति म अवरोध, स्वभाव म निडविडापन, सम्पूर्ण शरीर म सूजन, 'पुष्क' व कातिविहीन बाल एव त्वचा, रागावरोधक क्षमता का ह्रास चेहरे पर उदासीनता, भूख की कमी आदि ।

मेरास्मस—उमम उपयुक्त सभी लक्षण रहत ह किंतु शरीर म सूजन नही हानी इसके विपरीत बच्चा हड्डिया वा ढाचा रह जाता है ।

रतोथ्री—यह विटामिन 'ए' की कमी स हाती है । इसम बच्च का कण प्रराग म देवन की क्षमता ममाप्त हा जाती ह । अगर मही समय पर ध्यान नही

दिया जाय ता आरता की दृष्टि जाती रहती है। रताधी स बचाव के लिए आवश्यक है कि विटामिन "ए" युक्त भोजन बालक को दिया जावे। इस विटामिन के प्रमुख स्रोत हैं मक्खन, घी, हरी सब्जी गाजर, टमाटर व फल इत्यादि। पाच वर्ष से छोटे बच्चे को रताधी स बचाव के लिए विटामिन "ए" युक्त दूध पिलाई जावे।

रक्ताल्पता—यह रोग शरीर के लोहलवण की कमी में होता है। शरीर में इसकी कमी के कारण है भोजन में लोहे की कमी। भोजन का पूर्ण अवशोषण न होना या बच्ची से निरंतर रक्त स्राव होना आदि है। बच्चों में वृद्धिवात में इसका अतिरिक्त मात्रा की आवश्यकता होती है। मनरिया में पीड़ित होने के बाद या पत्र में कीड़े होने में भी रक्ताल्पता होती है। खाद्य के प्रमुख स्रोत हैं—हरी पत्ती वाला सब्जियाँ, फल, गुड़, चाजरा, गूँ, आदि इत्यादि।

रिबेटस—इस रोग में बच्चा की हड्डियाँ कमजोर हो जाती हैं व दन्त विकृतियाँ आ जाती हैं। विटामिन "डी" के स्रोत बच्ची हैं जो विटामिन "ए" के पर्याप्त प्रकृति में इसका संपन्न महत्वपूर्ण स्रोत जो हमें दिया है वह है सूर्य का प्रकाश। इसलिए यह रोग बच्चा में अधिक होता है जिनकी छिछरे में कमरा में बंद रखा जाता है और सूर्य के दशन कभी नहीं कराए जाते।

स्वर्षी—इस रोग में मसूँदे सूज जाते हैं व रून चिखलता रहता है। जोड़ों में दर्द होता है व हड्डियाँ हाथ लगाने में दुखती हैं। इस बचाव के लिए नींबू के तरे आउला अमरुत, टमाटर आदि सट्ट फल प्रयोग में लाने चाहिए। विटामिन "बी" की कमी से जोड़ों में दर्द होना, बरीबरी तथा रक्ताल्पता आदि रोग हो जाते हैं। इन सभी रोगों से रक्षण के लिए आवश्यक है कि बच्चे का उचित आहार मिले। इसके लिए माता का प्रशिक्षण करना अनिवार्य है। जब तक माताएँ कुपोषण का महत्व नहीं समझेंगी, बच्चे कुपोषण का शिकार होंगे। यदि बच्चे का स्वास्थ्य दिन दिन गिरता जाता है तो तब तो किसी बाल चिकित्सा विशेषज्ञ का निदान आवश्यक है।

बच्चा दखा गया है कि दुर्बलापन सुस्ती और स्वास्थ्य का गिरना शारीरिक रोग की बजाय मानसिक विकार के कारण होता है। बच्चे का घर से स्कूल अथवा उसका आसपास के वातावरण से कोई अनुविधा या क्लिप्ता होती है तो इसे भी दूर करना चाहिए और उसे यथामात्र में दूर करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसे बच्चों का अधिक खिन्नता नही चाहिए। शारीरिक और मानसिक स्थिति के ठीक होने पर खाने की मात्रा उनकी रुचि अपने आप बढ़ जायेगी। बच्चा यदि एक बार में पूरा भोजन नहीं करता तो उसे थोड़ा थोड़ा बच्चे को बार-बार खिलाना चाहिए। यदि बच्चा खाने में अतिव्यय पाये तो उसे बाले पदार्थ पसंद नही करता है तो उसे खाने में

दीजिए, अपितु जो चीजें वह पसंद करता है उही में धीरे धीरे पौष्टिक चीजें मिलाकर उसे देना चाहिए ताकि बच्चे का मालुम नहीं हो सके। ऐसा करने से बच्चा स्वयं ही पोषण दिन वाली चीजें खाने लगगा।

जो बच्चे स्वभाव में ही कम खाने वाले हात हैं उन्हें भाजन में पौष्टिक पदार्थ जैसे दूध, मक्खन आदि अधिक खिलाना चाहिए।

दुबला बच्चा यदि अधिक चिड़चिड़ा और जल्दी थक जाने वाला हो तो उसे हर समय दौड़घूम, खेलकूद से बचाए रखिए। उसे सुलाने और आराम देने की चूँट भी दीजिए। बच्चे के स्वास्थ्य पर नोद और विधाम का बहुत प्रभाव पड़ता है। छोटे बच्चे के लिए मनोरंजन और खेलकूद भी आवश्यक है। इसके लिए माता पिता को ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे का समुचित विश्वास व मन बहलाव होता रहे। आराम के साथ मनोरंजन और भी हितकर है। बच्चे का भाजन के पश्चात् बठाना



[चित्रकारी मनोरंजन का माध्यम है]

या रिटा दना और बहानी, यविता गुनाना या बटार काई हवा सन विलवन
चाहिए। अच्यी चित्रा वाली पुनके भी दी जा मरनी ह। चित्रकारी भा मनारन
का साथ है।

दुजल और चिडचिडे बच्चा या उमरी इच्छानुमार ही मेलन दना चाहिए।
एस बच्चा के वाम म बाधा टालना ठीक नहीं ह। बच्चा का अछे किडरगाटन का
माटसरी स्कूल म प्रवेश कराना चाहिए जहा पढाई के साथ मेलन व मह प्रवर्तियों
की सुविधा हा। आजकल एस विद्यालय ह जहा अध्ययन पर ही जार रिया जाता है
परंतु बालक के सम्पूर्ण विकास के लिए काई व्यवस्था नहीं है। एस बालक म
दुजल ही रहग। बच्चा की मन्विल जाच भी समय समय पर कराना चाहिए। मां
आपका बच्चा काई विशेष समस्या नहीं उत्पन्न करता वह धाडा उठत दुबला है फिर
भी उसका शरीर स्वस्थ ह, विरमिन हा रहा ह वजन भी अवस्था के साथ बढ़ रहा
ह तो माता पिता का चिंता नहीं करनी चाहिए, समझ लीजिए कि प्रवृत्ति न उन
दुजला ही बनाया ह और वम काई हानि नहीं ह।

बालक बधो पिछडता है

बालक के पिछडेपन म पर्यावरण का पर्याप्त प्रभाव पडता है। घर एवं
स्कूल का प्रतिबूल वातावरण, भग्न घर असम्बद्ध अनुशासन, दोषपूर्ण सामाजिक
सम्ब व अर शिक्षण व प्रति माता पिता की उदामीनता बच्चा के विकास म
बाधक होत हैं। भग्न घर के बच्चे जिह माता पिता का वात्मत्य और स्नेह नहीं
मिल पाता बाद म समस्या मूत्रक बालक' बनत दख गए ह। वास्तव म अनुकूल
पर्यावरण अछा शिक्षण उचित अवसर, सामाजिक सुविधा और सफलता के
अनुभव प्रदान कर जिमा भी आयु म किसी भी योग्यता का प्राप्ताहित और
विकसित किया जा सकता ह।

रूम म माध्यमिक शिक्षा अनिवाय कर दा गई ह। यह इस
बात की जानकारी दता ह कि यदि शिक्षा का आयाजन और उनयन ठीक
प्रकार म किया जावे ता कुछ असामाय कारण का छाडकर सभी बच्चे माध्यमिक
शिक्षा प्राप्त कर सकत ह। भारत म 10 + 2 याजना के अंतगत कई राज्या म
शिक्षा देन की याजना प्रारम्भ की जा रही ह। राजस्थान म भी 1986 स इस
याजना का प्रारम्भ किया गया ह। कन्द्रीय वाड न इस प्रकार की शिक्षा राज्या
व केंद्र प्रगामित प्रदेश म प्रारम्भ की है। इसम सभी विषया का जिसम विज्ञान
भी सम्मिलित है पढाया जाता है। रूम याजना के लिए यह तक दिया जाता ह कि
अविनाश बानक उच्च माध्यमिक शिक्षा का लाभ उठान म अक्षम हात हैं अत
उह सभी विषया की सामाय जानकारी 10वा कक्षा तक दे दी जावेगी।

रूम के हजाग शिक्षण बहा के सामाय विकास के लिए वृत्त मकल्प है।
बहा के उच्च प्राय सभी तान और कौशल सीख लेने ह, जिनकी स्कूनी शिक्षा के

लिए आश्यकता जानी है। यदि शिक्षण व्यवस्था तत्परता और ईमानदारी से की जावे तो स्कूल सभी छात्र छात्राओं के मानसिक विकास एवं क्षमताओं के पापण और आताजन में इष्टतम योगदान दे सकत है। यदि हम रुसा, पस्टालाजी और टालस्टाय के विचारों के बिनाकर दल तो निम्न निष्कर्ष निकलते हैं —

1 यच्चा के सम्मान और स्नेह मिलना चाहिये।

2 शिक्षा के क्षेत्र में पर्यावरण के आनुवांशिकता से बहुत अधिक महत्व है और पर्यावरण में सामाजिक सम्बंध प्रभावकारी होते हैं।

3 यच्चा के मनीषायी उम्र बना या बिगाड सकन है। पर्यावरण के अंतगत यच्चे के परिवार, स्कूल तथा समाज एवं साम्प्रतिक कारण महत्वपूर्ण होते हैं।

घर एक परिवार—घर के सतुलित एवं स्वस्थ वातावरण के यच्चा के विकास पर अनुकूल प्रभाव पडता है। जिन परिवारों में निघनता, परिवार के सदस्यों की अविज्ञता, माता पिता की बुरी आदतें, सवय, बाडिक प्ररणा के अभाव और स्कूलों गतिविधियां में किसी भी प्रकार की महायता यच्चा के नहीं मिलती उन परिवार के यच्चे अध्ययन में पिछड जात हैं। परिवार में यच्चा के अनि-रक्षण या उपमा दाना ही यच्चा के सतुलित विकास में बाधक हैं। अति लड में पले यच्चे कठिनार्ई में आत्मनिर्भर बन पात हैं जबकि उपमित यच्चे असांमाजिकता की ओर अग्रसर हा जात है। यच्चा से उनकी क्षमता से अधिक की अपक्षा, अनु-पयुक्त तुलना और असांमानुसारी दण्ड उह अमुरमित बना देता है। परिवार में पिता की कठोरता और माता की उदारता में सतुलन हाना चाहिये। नानी दादी के यच्चे के पले में असांमय या असांवाश्यक हस्तक्षेप भी यच्चे के विकास में बाधक हाता है। बालक को माता पिता के प्रेम के अतिरिक्त कुछ और चाहिए, वह है अपनी आयु वाल बालक के साथ सामूहिक खेल।



[यच्चा के अपनी आयु वाल यच्चा के साथ खेलन दे]

प्रारम्भिक अवस्था में बच्चों के लिये स्कूली शिक्षा

स्कूल में बच्चा जब पहली बार आता है तो वह अपने साथ अपना घर और वहाँ अजिन आदन, व्यवहार, अभिव्यक्तियाँ, कुण्ठाये, प्रिययाँ और सामाजिक सम्बन्धी अनुभव भी लाता है। भारतवर्ष में अभी तक पूव की शिक्षा जिम किडरगाटन, या माटसरी शिक्षा कहत हैं उसका प्रचलन नगण्य सा है। इन विद्यालयों में 3 वर्ष के बालक में ही अच्छे सस्वारों को डालन का प्रयास किया जाता है जिससे बालक बचपन से ही संतुलित व सुसंस्कृत हो जात हैं। स्कूल उसके लिये एक नये ससार का द्वार खोलता है। वह नये और अधिक मित्रा और अध्यापकों के सम्पर्क में आता है। उसकी गतिविधियाँ का क्षेत्र भी बढता जाता है। कई परम्परागत और साधारण स्कूला में वह खेलकूद काय, निजत्व और सुरक्षापूर्वक भौतिक एवं सामाजिक वास्तविकताओं की दुनिया में अचानक, अशुभ, अज्ञात, प्रतीका और अमूर्तों के अक्षर में पहुँचा दिया जाता है। इसलिये ससार में उसके लडखाने और भटकन की सम्भावना बनी रहती है। शिक्षक अपने काय के प्रति इतना संकीर्ण, अपरिवर्तनशील और कठोर दृष्टिकोण अपनाता है कि वह यह सोचने समझने का प्रयास ही नहीं करता कि यदि इस तनावपूर्ण संक्रमणकाल में बच्चा बिना अधिक हानि या क्षति के पार कर लता है तो वह बच्चे के विकास में सहायक हो सकगा। बच्चे को एसा महसूस नहीं होना चाहिये कि विद्यालय एक यातनाशुह है। स्कूल का पहिला काम है बच्चे के लिये सम्पन्न, सुखद और प्रेरक वातावरण प्रदान करना ताकि उसमें स्कूली कायों के प्रति अरुचि उत्पन्न नहीं हो। इसलिये स्कूला में विभिन्न पाठ्यत्तर गतिविधियाँ, वायानुभव और शक्तिपूर्ण यात्राओं के कार्यक्रम आयोजित किये जान चाहिये।

समुचित विकास और उपलब्धि के लिये बच्चा पर जहाँ अधिक नियंत्रण, घातक रहता है वहाँ बच्चे स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी वाय्यताओं की अभिव्यक्ति नहीं कर पात। अतः विद्यालय में छात्रा का स्कूल की गतिविधियाँ में अधिक भाग लेने की स्वतन्त्रता हानी चाहिये। स्कूला का अध्यापन अध्यापन केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रहकर छात्रा की सामाजिक शक्ति का अभिव्यक्ति प्रदान करने में भी जान चाहिये। स्कूल एक सुधार केंद्र भी होना है। अधिार, सार्वजनिक

और सावगिय रूप से वचित बच्चा के अभाव की पूर्ति करने का प्रयास विद्यालय को करना चाहिये ।

समाज-बच्चा की शिक्षा के क्षेत्र में समाज का भी हाथ हाता है । परम्पराएँ, रुढ़ियाँ, मूल्य, भावनाएँ, विश्वास और आदर्शों का बच्चों की शिक्षा पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है । कई अधविश्वासी माता पिता अभी भी जीव विज्ञान विषय का नहीं पढ़ने देते क्योंकि इसमें उनको मेडक व अन्य जानवरों का काटना पड़ता है । हमारे यहाँ अर्द्ध विद्यालय नगरों की अर्द्धी अस्तित्वा में ग्वाल जाते हैं जबकि ऐसे विद्यालय पिछड़ी अस्तित्वा में खोल जाने चाहिये । ग्रामों में विद्यालय खोले जा रहे हैं परन्तु न वहाँ बैठने को टाटपट्टियाँ, न आवश्यक फर्नीचर व भवन उपलब्ध कराया जा रहा है । विद्यालय में यदि सत्र आवश्यक सुविधाये हागी तो उनका प्रभाव ग्रामवासियों व रहने सहने व स्तर पर भी पड़ेगा । अन्यथा जसा घर है उमगे भी विद्यालय निम्न स्तर का हागा तो आदितर यह आदर्श बालक को वहाँ से मिलगा ।

हमारे देश में गरीबी और अशिक्षा के कारण अधिकांश अभिभावक अपने बच्चा का सतुचित भोजन उपलब्ध नहीं करा पाते, न इसका मूल्य ही समझते हैं । स्कूलों में बच्चों के लिए दूध व मध्याह्न भोजन की व्यवस्था करनी चाहिये । अर्द्धी रमृति के लिये प्रोटीन और ए-जार्डम अत्यावश्यक है अतः उनकी मात्रा दैनिक भोजन में कम नहीं होनी चाहिये । वस ता प्रवृत्ति स्वयं बहुत बड़ी उपचारक हाती है कि तु प्यार और सद्भाव, शांति और सुरक्षा, खेलकूद और नाच, मित्रता और मनोविनोद का वातावरण बच्चा का प्रगति करने लिये अनूठी प्रेरणा देता है ।

पठन में पिछड़ेपन के कारण

स्कूल में छात्र अपने अध्ययन में केवल बौद्धिक कारणों से नहीं पिछड़ते बल्कि इसके कई कारण हाते हैं जस—

1. शब्दों के दृश्य में प्रतिबर्शों प्रत्यक्ष की दुबलता—पठन के क्षेत्र में हुए माध से यह स्पष्ट हुआ है कि दृष्टि सूक्ष्मता और विलम्बित परिवर्तन ही पठन में पिछड़ेपन का प्रभावी कारण हैं । प्रारम्भिक कक्षा में बच्चों की भाँति अधिक उम्र के बच्चों पठनकता भी शब्दों की सरचनाओं में निहित बारीक अंतर का विश्लेषण करने की क्षमता नहीं हाता । जस वय और वाम, नाम और नरम । अंग्रेजी के Wet और

Went, He और She एव Form और From शब्दा म भेद करन म व कमजोर हान है। बुद्ध पठनकता छाट शब्दा का उलट कर पढत ह और बुद्ध समान अक्षरों जस "प और म" या ड और 'ड' के पढन म भ्रुटियाँ करत है। बुद्ध छाट शब्दा को उलट कर पढन ह और बुद्ध समान अक्षरों जस मदन का दमन और वनम का कमल पढत है।

2 आँस व हाथ की कमजोरी व इनमे तालमेल की कमी स भी पिछडापन ह सकता ह। एक राँय हाथ और दाय आँस स अधिन काम करन वाला और दूसरा दाँय हाथ और बाँड आँस स अधिक काम करन वाला। जिन बच्चा के हाथ और आँस का गति म सम बय या तालमेल नही बठ पाता व ही शब्दा या अक्षरों के स्वरूप का सही प्रकार स पहचानन म भ्रुटि करत ह। आरम्भ म प्राथमिक कथाओं म छात्रों का विभिन्न वाक्छनिया का अंतर स्पष्ट और सही रूप स बाल कर एव लिखकर समझाया जाना चाहिये। मिलती जुलती ध्वनियाँ जस प और फ, ज और झ, स और श आदि के उच्चारण और लयन पर अधिक बल दिया जाना चाहिये।

3 नेत्रों की दृष्टि के कोण में दोष-के कारण पठनकता को शब्दा के स्वरूप के प्रत्यक्षीकरण म कठिनाई हाती ह। दृष्टिकोण दाप स पीडित बच्चा प को म, क का व और न का व पढत पाए जात ह। अंग्रेजी पढन म व n का m और c को e पढत है। यह दाप की तीव्रता पर निर्भर करता ह। विशेषकर समीप दृष्टि 'Myopia' दूरदृष्टि Hypermetropia नत्र लक्षा की असमान वप्रता, तिरक दृष्टि Strabismus or Squint आदि दृष्टिकाण पठन का पिछडापन म अधिक सहायक हात ह। निघन घरा म उच्चा द्वारा चश्मा नही लगाना या अनियमित रूप स चश्मा लगाना, चश्मा टूटने पर कई दिना के पश्चात दूसरा चश्मा लगवाना आदि कारण है जिस पर पूरा ध्यान दिया जा कर उपचार करना चाहिये।

4 उच्चारित ध्वनियों के श्रवण भेद की दुबलता-(Weakness in Auditory discrimination of Speech Sounds) समान ध्वनियाँ का अंतर याद रखना और शब्दा के श्रवण तत्वा Auditory elements का सश्लपण व विश्लपण नही कर पाना ही श्रवण बोध की दुबलता का आकार है। श्रवण बोध म कमजोर बालक बानिका Sit को Sat और But का Bud सुनत है। इसी प्रकार हिंदी शब्दा 'साँ' का माँड नाक का नाग, वाट का वात और नाव का नाम सुनत ह। यह भ्रुटियाँ के पढत समय भी करत हैं। अत एम बालक का पहल श्रवण निदान परीक्षण Auditory diagnostic Test करना चाहिये और यदि बालक म काइ पराकी हा ता उसका उपचार करना चाहिये। एमे बालक का गत्वबानी वक मुनियोजित ध्वनि अभ्यास Phonic drilling कराया जाना चाहिये। यह अभ्यास सरल स कठिन की और ही और मजा प्राय पुनरावृत्ति भा की जानी चाहिये।

5 वाग्दोष और पठन नियोग्यता व उमरों—इसकी श्रवण-दायक पठन दोष स मीधा मन्त्र-ध होता है। श्रवण योग्यता पर ही भाषण-यथायथा प्रगति निम्न करनी है। 'स र और न ध्वनिया का ई उच्चे मही उच्चारण नहीं कर पाते। इसी प्रकार न धार ल प और प तथा ध ध्वनियों का उच्चारण म श्रुटियाँ पाई जाती हैं। उच्च उच्चारण दाप का प्रमुख कारण श्रवण-दायक हाना है जो बच्चे सुनकर स ग और श ध्वनियों में भेद नहीं कर पाते वे ऐसी श्रुटियाँ बानने और पठन में करत हैं। एक छात्र ल वा न पठता था 'वह बहुत सी नानियाँ बनाकर एक नाला बनाती है।' वाक्य को बहुत सी नानियाँ मिल कर एक नाना बनानी है, पता था। यह दोष लड़कियों की अपक्षा लड़का में अधिक पाया जाता है। बोलने का दाप किसी प्राकृतिक दाप या बीमारी के कारण उत्पन्न होता है। इनका उपचार होने के पश्चात् भी इसकी पुनरावृत्ति होती रहती है भावि उनका आत्म विश्वास इतना दुबल हो जाता है कि वे श्रावस्था ही नहीं हो पाते कि उच्चारण दार दूर हो चुका है। अतः उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न करने की आवश्यकता है।

6 हकलाना और पठन—यदि बच्चा दा-तीन माल का है व हकलाता है तो चिन्ता न कीजिए। इसकी चिन्ता तब होती है जब बच्चा मात माल की अवस्था में हकलाना प्रारम्भ कर देता है तथा यह उमकी आदत बन जाती है। हकलाहट को लेकर बच्चे को न तो बार बार टाकिए और न ही उमकी मजाक उड़ाइये। बिनौन देर उसे ध्यस्त रहिए नाकि वह शांत रहे। उमे गीत के आसान बाल मिलाइये। जो बच्चे स्नायु दुबलता के शिकार, भावुक और शर्मिले हान हैं उनमें ही हकलाने की आदत अधिक पाई जाती है। बड़े हुए टसिल, माँम की नती या गले की परात्रियाँ हकलाहट का मूल कारण नहीं हो सकती हैं उममें सहायक अवश्य हो सकती हैं। बच्चा का गहरी माँम लेन का अभ्यास कराइये क्योंकि हकलाहट तब माँम लेने के कारण होती है। मुटू शाम खुली हवा में बच्चे को मीधा मडा हान दीजिए, फिर उसे दाना परा का मिलान और कथा का धाडा पीछे झुकाने के लिये कहिये। अब वह धीरे धीरे नाक में हवा अन्दर खींचे और पट का बाहर निकाले। हवा जितनी देर अन्दर राकी जा सके, उतना अच्छा है। इसके पश्चात् हवा धीरे धीरे मुँह से निकालने हुए पट का पहिले की दशा में ले आना चाहिए। मुबह नाम पाच छ बार यह व्यायाम पर्याप्त है पर गहरी माँम लेन की आदत उठवाना आवश्यक है। उमने मानसिक तनाव का कम करने का प्रयास कीजिए। उस आदत आता है, भुँभनाहट होती है या उमकी भावनाओं में हलचल होती है ता ऐसा वातावरण दूर करने का प्रयास करना चाहिये।

दिन में कई बार चटाई या चारपाई पर निटाकर आँखें बंद करन और शरीर को तीना छोड़ने का कहिए। आराम से सेट जाने पर बारी बारी से एक हाथ

आर एक पाँच ऊपर उठाये और चापल से जाते। लम्बी राँम से व अपन का प्रत्यक्ष अनुभव कर। गाँव भी मोठे बाहर और निकाले। छोट छोट चाकपो वाली पुस्तक का गहरी माँम रोककर जब गाँव निकाले ता पठन का बहिए। यह अभ्यास कई सप्ताह कराइये। बच्चे का आरम्भ म बविता या पाठ पठने को बहिए। यदि बच्चा का बालन से पहले मुँह बनाने या माँस पणिया पर जोर टालन की आदत हा ता ऊ आईन के सामन खडा करके दोनने का अभ्यास कराइये। अपनः शिगडता चेहा देगकर उसकी आत्त अपन आप ही कम हा जायेगी। जिस अक्षर पर हनताना ह उसे बार बार बिना हल्लाण कहलान की कागिश कर। उमम आरम विश्वास ९९ करिए। यदि छात्रा म आत्मविश्वास बना रह ता हल्लाने का पठन पर कई प्रभाव नही पडता।

पठन नियोग्यता के परिवेशीय कारक (Environmental factors)

1 शैक्षिक अपरिपक्यता—पठन के प्रति छात्रा की अभिवृत्ति और (Attitude & Understanding) अवबोधन नही पाया जाता ता वे विकसित नहीं हो पात। जिन घर म विविध प्रकार के पर्याप्त शिष्ट और शुद्ध शब्दो का प्रयोग किया जाता है, जहाँ पुस्तके और पत्रिकाएँ पठन के बच्चा का अक्सर लिए जाते हैं और जहाँ बच्चो की भाषिक प्रगति पर ध्यान दिया जाता है वहाँ बच्चे प्रगति करत हैं जिन घर म अनियमित कोलाहल, अशुद्ध और अशुभ बातचीत, लडाई भगडा आदि हाना है और बच्चो को चित्र, पुस्तक, पत्र पत्रिकाएँ आदि देखने को नही मिलती, उन घरों के बच्चे पठन म पिछड जात हैं। घर का शशिक वातावरण पठन के लिए उद्दीपक का काम प्रदान करता है। सांस्कृतिक दृष्टि से बचित घर के बच्चो का शब्द भण्डार Vocabulary बहुत सीमित और नुटिपूर्ण होती है। स्कूल का पहिला प्रयास होना चाहिये कि भाषा दुबलता को दूर किया जाय। उन्हें सचिकर कहानिया सुनाना रग बिरगी आकथक चित्रो वाली पुस्तके दिखायी जानी चाहिये। विद्यालयो म मेले, दुकान लगाना, स्कूल का समाचार पत्र निकालना, लीवार पत्रिका प्रदर्शित करना आदि कार्यक्रम आयोजित करके छात्रा को पठन म प्रगति करने के लिये प्रेरित किया जा सकता है।

2 कक्षा मे उपस्थिति की अनियमितता और स्कूल बदलना—पाच वय से सात वय के बच्चो का स्कूल म अनियमित रूप से जाना पठन मे बाधा पहुँचाता है। जिन बच्चा म इन्द्रिय दोष हा ता यह समस्या और भी जटिल हो जाती है। अत ऐस बच्चो मे खेलकूद की अभिप्रेरणा और प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न की जानी चाहिये। वस ता अनुपस्थिति से प्रतिभाशाली बालक बालिकाय भी प्रभावित होत है परंतु कम बालिक क्षमता वाले विद्यार्थिया के लिए इसकी क्षतिपूर्ति करना कठिन होना है। अत उनक गररक्षा म सम्पक कर उनकी उपस्थिति के लिये बाध्य बनना चाहिये।

3 स्कूल में पठन की कमजोरी की और कम ध्यान देना—यदि बच्चा मातृ वय की आयु में भी पठन में पिछड़ने लगे तो उसका सही निदान कर ऐसे अध्यापक में पढ़वाना चाहिये जो छोट बच्चा को पठन और बतनी सिखाने में प्रशिक्षित हो। यदि इन बच्चा के पठन पर अभी ध्यान नहीं दिया जावेगा तो आगे चल कर नीब कच्ची रह जाने पर भाषायी कमजोरी बढ़ती जायेगी। आजकल 60-70 बच्चों की बड़ी बड़ी कक्षा में पढ़ाने वाले अध्यापक इतना समय नहीं निकाल पाते कि वे पठन में पिछड़ने वाले बालक पर अधिक ध्यान देकर उसका उपचार कर सकें। साथ ही यह भी समझना चाहिये कि यह कमजोरी साधन विहीन विद्यालय में ही नहीं साधन सम्पन्न विद्यालय में भी पायी जाती है। यदि ऐसे विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था कर प्रतिदिन अध्यापन किया जावे तो पिछड़े पठनकर्ता बालक भी प्रगति दिखाने लगते हैं। आवश्यकता है धर्म की कर्तव्यपरायणता की जिसकी आधुनिक अध्यापक वर्ग में कमी है। यदि एक बालक गुणा व भाग ठीक करके बतादे तथा भारत के मानचित्र में सही स्थान बतादे तो यही पर्याप्त नहीं है। यदि वह गति और समझ के साथ नहीं पढ़ सके तो उसका गणितीय और भौगोलिक ज्ञान निरर्थक है।

सांवेगिक कारण आरम्भिक कक्षाओं में पठन में वे बालक पिछड़ते देखे गए हैं जो अति लाड के कारण माता पिता पर आश्रित हो जाते हैं अतः उनमें पहला प्रवृत्ति और आत्मनिभता का अभाव हो जाता है। माता पिता द्वारा जोर से पढ़ कर अधिक सुनाना भी बच्चा को स्वयं पढ़ने से रोकता है। असफलता के अनुभव से भी सांवेगिक कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। साधियों अध्यापकों और माता पिता के समक्ष असफल से बच्चे दवेदवे रहते हैं। स्थिति यहाँ तक पहुँच जाती है कि पढ़ने लिखने के बजाय अर्थ गतिविधियाँ में रूचि लेने लगते हैं ताकि वे वहाँ सफल होकर अपने आत्म सम्मान की रक्षा कर सकें।

पठन में बच्चों की न्यूनताएँ व कुटोवों का निराकरण

(Remedial Teaching) पठन की न्यूनताओं के कारण का आधान निम्न आधार पर किया जावे—

- 1 बच्चों की व्यक्तिगत देयभाव
- 2 बालक के प्रति अध्यापक की उचित प्रभिवृत्ति
- 3 बालक के प्रभावी प्रेरक और प्रभिवृत्तियाँ से सम्बन्धित सामग्री का अध्यापन में प्रयोग
- 4 नियमित रूप में व्यवस्थित और सन्निप्त पाठ पढाना

उपरोक्त तरीका द्वारा बच्चे पाठ में रुचि ले कर प्रगति कर सकते हैं। जब बालकों के साथ बठोर व तिरस्कारपूर्ण और पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया जाता है तो बालक अधन को तिरस्कृत समझते हैं और इस प्रकार के विद्यार्थी कक्षा में उपस्थित होने से हिचकते हैं। वे दधर उधर निरुद्देश्य घूमते रहते हैं। आवाज घूमने घूमते व मिनैमा और गेस्टोरेट के आदी बन जाते हैं, जहाँ पर उनको एस और छात्र मिल जाते हैं जा उन्हें समामात्तिक बना देते हैं। यदि उनके माता पिता बठोर हैं तो व अध्यापक का भी बठोर मानकर उनसे घणा करन लगते हैं। अधन विलम्ब से अधन वाने, गृहकाय नहीं करन बाल और अधयन में पिछलन गल छात्रा के प्रति सानुमूतिपूर्ण व्यवहार करके बुराइयाँ के प्रति उनसे घणा करानी चाहिये। पाठ्य बन्तु और अध्यापन में जब तीव्र प्रगति बुद्धि बाल छात्र छात्राओं के लिए समस्यात्मक सामग्री नहीं होती तब उनके लिए कक्षा में कोई आकषण नहीं रहता। ऐस बालक पहिन ता निष्क्रिय हो जाते हैं और फिर कक्षा में पीछे बठन लगते हैं। इसके विपरीत यदि पाठ्य सामग्री केवल तीव्र बुद्धि छात्र छात्राओं व अधरुण्य हुई ता मन्द बुद्धि या कमजोर यादगाम्त ध्यान नहीं देन वाले और तब म कमजोर विद्यार्थियों का पढने में रुचि नहीं रह पाती। इसलिय अध्यापक का कक्षा के तब बुद्धि अधिन व मन्द बुद्धि, तीना प्रकार के छात्रा के लिए सामग्री और चुनौती प्रस्तुत करन का प्रयास करना चाहिये आवश्यकता पदन पर बठक ध्यकथा समयसारणी (Time table) और अनिप्रेरणा (Motivation) देन बाल प्रेरकों में परिवर्तन किया जाने चाहिये।

बालको मे छोटी-छोटी आदतें

दांतो से नाखून काटना—बई बच्चे दांता स नाखून काटते) है।
 उनकी उँगलियाँ नच जाती हैं। इसके अतिरिक्त यह अस्वास्थ्यकर भी है क्योंकि नाखूना मे मल जमा हान के कारण ये पेट म चला जाता है जिससे रोग हा जाते हैं। जब य आदत बन जाती है ता वे मदव एगा करत रहत है। इसका मनोवर्षा निच कारण यह है कि जब बालक सवेगात्मन तनाव अनुभव करता है तो ऐसे करने लगता है, बपोकि' इसके उसे तनाव से मुक्ति मिलनी है। यह भी हो सक्ता है कि वह अपने मित्रो, अभिभावक या शिक्षक का ध्यान गचन के लिये ऐसा करता है। यह समाज सम्मत व्यवहार नहीं है लेकिन चू कि उसकी आदत हा गई है अत उमके मन म यह धारणा बन जाती है कि रीति, रिवाज, लाक परम्परा मयादाएँ कोई आवश्यक नहीं हैं जो भविष्य म उमके जीवन निर्माण के लिए घातक हो सकती है। परिणामस्वरूप वह समाज की प्रत्येक व्यवस्था का विरोध करने लगता है। अत ऐमे बच्चा की शिक्षा के लिये प्रारम्भ से ही सद्व्यवहार की शिक्षा देनी चाहिये। यदि आवश्यक हो तो इसके लिए ताडना भी देना चाहिये।

अगूठा चूसना—यह भी समाज म एक अमामाय व्यवहार गिना जाता है। पदा होने पर बालक भूख लगने पर अपनी माता का स्तन चूमता है, इसस उसकी भूख भी मिटती है और उसे आनन्द भी प्राप्त होता है। चू कि यह भावना उमक अचेतनमन मे है अत आनन्द की अनुमूति के लिये बडा होने पर भी ऐसे करने लगता है। जब दूमरे साथी उसे चिन्ते हैं या माता पिता उसे ताडत हैं ता उसम हीन-भावना उत्पन्न हो जाती है जिममे वह शर्माता हो जाता है व परिणामस्वरूप एकांतप्रिय बन जाता ह। ऐमे बच्चा का दूध, व म्वास्थ्यकर भोजन देना चाहिये। ऐसे खिलौन दिए जावें जिममे वह दोना हाथा का प्रयोग कर सके, इसके अतिरिक्त उसके साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार होना चाहिये। उस यह बताया जाना चाहिये कि नाखून का मल पेट म जाने से वह बीमार भी हो सकता ह।

अधे उच्चक्रान्त—यह भी बुरी आदत ह. इसके निम्न कारण हो सकते हैं—

- 1 समाज मे किसी व्यक्ति की यह आदत होना तथा अय व्यक्तिया द्वारा अनुमरण करना।
- 2 अचेतन मे दमन हुई इच्छाएँ सग्रह हो जाता तथा उनकी सतुष्टि के लिए ऐसा व्यवहार करना।
- 3 अग विशेष मे सबेदना का अनुभव होना, उससे छुटकारा पाने के लिए अग विशेष का विशेष प्रकार स सचालन।

4 शरीर में आवश्यक तत्वों की कमी होना ।

इस आदत में श्रुतिकारा पान के लिये किसी योग्य डाक्टर से निगमन कर इलाज करना चाहिए । यदि चिकित्सक इलाज न कर सके तो यह चाहिए कि बीमारी का कारण मनोवैज्ञानिक है । अतः उमक साथ व्यवहार व पढ़ने निगमने व खेलन बूढ़न व आराम करन की पूरा सुविधाएँ करना चाहिए ।

बाएँ हाथ से लिखना—अधिकांश बच्चे दाएँ हाथ का प्रयोग अनुसृत है परंतु ऐसा भी देखा गया है कि कुछ बालक बाएँ हाथ से लिखने आदत बना लेते हैं । इसका कारण है माता पिता द्वारा प्रस्तुत प्रतिकूल कई बातों में बचपन से ही ऐसी आदत पड़ जाती है कि वे माता पिता की आज्ञाओं का उल्टा करें । इसका कारण माता पिता का बटोर होना, उनसे का भयभीत होना या सामन बठकर भोजन करना । उस समय उनका ज्ञान नहीं होता तथा वे उनके सामन बाल हाथ से लिखने लगते हैं । माता पिता को बचपन में ही इस पर ध्यान देकर इस प्रकार की आदत नहीं होनी चाहिए । यदि आदत पड़ ही गई हो तो ऐसे बालक हाथ में लिए जावें जिनके म दानो हाथों की आवश्यकता पड़ती हो जैसे—बपड़े धोना, गंद खेलना, बाएँ से डम्बर पकड़ना तथा दाएँ हाथ से श्यामपट्ट पर लिखना । बालक को शिक्षा दिया जावे कि अधिक बालक दाएँ हाथों से ही करें ।

बार बार धूकना प्रारम्भिक बक्षायों में विद्यार्थियों द्वारा अका का उल्लिखना बालिकाओं द्वारा बार बार पुस्तिका क्रिया का तथा बालकों की क्रिया का प्रयोग आदि ऐसी श्रुतियाँ हैं जिनका यदि प्रारम्भ से ही सावधानी से तो निवारण सम्भव है ।

बालक और गालियाँ

गाली का प्रयोग करना बालक की जन्मजात आदत नहीं होती । वह इस को बाहरी दुनिया से ग्रहण करता है जिनमें एक स्कूल भी है । बालक जब स्कूल जान लगता है तो उसमें अपने अध्यापक तथा सहपाठियों का प्रभाव पड़ना शुरू है । यदि अध्यापक ऐसे मिल जायें जिनका गाली तकिया कलाम हो तो इस प्रभाव बचपन पर बुरा पड़ता है । जब बालक का मन खेलन की प्रवृत्ति है तो बालक की चौकट लाघकर अपनी बस्ती के साथियों में आ मिलता है । यदि उसके साथ गालियाँ दन हैं तो वह उनमें भी गाली सीख जाता है ।

कुछ परिवार ऐसे होते हैं जहाँ पति पत्नी में रात दिन भगडा रहता बालक म गालियाँ की चौकट दानो तरफ से होता है और बालक उनको सुन

होता है, बालक भी उन गालियों का खुलकर प्रयोग करन लगता ह। कुछ घरा मे हँसी मजाक के समय गालिया देने का रिवाज है, य गालियाँ सहज म ही उमके अचचेतन मन मे डेरा डाल लेती है और समय आने पर वे इसका प्रयोग करन लगत हैं। उनके जिज्ञासु मन मे सहज म बुरा सस्वार बठ जाता है जो शब्द पहिले सुना होता है, उही शब्दा का अर्थ जानने की ओर उनकी प्रवृत्ति होने की सम्भावना रहती है।

कुछ बालका मे अघे को अथा व लगडे को लगडा कह कर चिडाने की आदत हाती है। यह गाली का दूसरा रूप है। ध्यग्य कसना, उपहास करना यह भी गाली के अतर्गत आते हैं। इन सब बातो को बालक अपने माता पिता, अध्यापक, सहपाठियो सगी साथियो से ही सीखता है।

बहत से लोगो मे बीभत्स, कल्पनायुक्त शब्दा म गालियाँ देन और बातचीत मे भी गालियाँ देन की और बातचीत म बीभत्स शब्दा म व्यवहार करन की आदत सी होती है। यह आदत कुछ सुसंस्कृत और शिक्षित लोगो मे भी पाई जाती है। यह आदत बहुत ही निन्दनीय है। जो लोग इस प्रकार की गालियो और अपशब्दा आदि का व्यवहार करते हैं उन पर इन शब्दो का कुछ भी प्रभाव नही पडता। जा लोग नित्य अफीम खाते है उनके शरीर मे अफीम का विष इतना अधिक फला हुआ होता है कि इतनी अफीम से साधारण लोगा की मृत्यु हा सकती है। परतु उतनी अफीम खाने वाला की कोई विशेष हानि नही होनी है। ठीक यही दशा उन लोगा की होती है जो गालियो और अपशब्दा आदि का व्यवहार करते हैं। यह इसलिये भी निन्दनीय है कि कुछ नवयुवका के मन मे दबी हुई काम वासना होनी है उनकी मनावति ऐमे शब्दा के प्रयोग स उत्तेजित हो सकती है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बालक से सम्बन्धित वातावरण पर प्रकाश डालते हुए ठीक ही कहा है कि "प्रकृति ने बालक का ऐसा सक्रिय अनात मन दिया है जिनके द्वारा वह वक्ष की तरह अपने पास के वातावरण से सब कुछ ग्रहण करता रहता है।" इसलिए बालको के लिये नियम पाठ्य पुस्तके, शिक्षा पद्धतिया साधनो तथा भवना की अपेक्षा वातावरण का अधिक महत्व है।

अत वे घर के वातावरण को स्वच्छ रखन के लिए अन्य बातो के साथ साथ, स्वय गालियाँ देने की अपनी आदत सुधारे। स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध की मूक गालियाँ न दें। यदि इसकी उनको आदत पठ गई है तो वे बालके समय सावधान रहे। बालक पूरा नवलकी होता है उसकी बुद्धि परिपक्व नही होती है, वह भलाई बुराई के अंतर का समझने मे अममय रहता है। वह अपने माता पिता गुरु अथवा

मन्त्रिधिया को जगा वाम करते दखता है या उनकी बातों को सुनना है तब जाने अनजान में स्वयं का उसमें डाल लेता है। यदि उनकी अप्रतीक्षित गतिशीलता की आदत पड़ गई है या उनके मुँह से निकल जाती है तो उनके लिये परवाह करें व भविष्य में ऐसा न करने का प्रण लें।

तकिया कताम शब्द का सविधि विच्छेद "तकिया" अर्थात् सिरहना "कताम" अर्थात् कथन इस प्रकार जो कथन में आराम पहुँचाये वह तकिया का कहलाता है। य शब्द है, समझ गए अच्छा, ठीक है न गोया है कि नहीं है साहब, मतलब एक बात है, सुन लो, बँन लगे, का कहे साहब, ऐसे शब्दों का बार बार नहीं बोलना चाहिये। कई लोगों को बेटा कहने की आदत है व इसका को आदत में लाचार बड़ों को भी बोल देते हैं। अतः बोलते समय अपने नियंत्रण रखना चाहिये।

बालकों को शिष्टाचार सिखावें

ऐसी भाषी बोलिए मन का आपा खोय ।
 औरन का शीतल कर, आपहु शीतल होय ॥
 आवत भारी एक है उलटत होय अनेक ।
 कह कबीर नहीं उलटिए वही एक की एक ॥
 मधुर वचन है औपधि कटुव वचन है तीर ।
 श्रवण द्वार है सूवरे साने सबल शरीर ॥

एक मनुष्य अपने जीवन काल में अनेक व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है। परिवार के एक सदस्य के रूप में, विद्यालय के एक सदस्य के रूप में, या समाज के एक सदस्य के रूप में वह नित्य प्रति अपने कार्य, पद या स्तर के अनुसार व्यवहार करता है। वह अपने व्यवहार में कभी दूसरा का प्रमत्त नहीं है ता कभी अप्रमत्त। कभी उसका व्यवहार मर्यादित होता है तो कभी एक अनमर्यादित और अनेक समस्याओं का जन्म देने वाला। एक बालक अपने आचरण में अपने माता पिता भाई बहन आदि का मन जीत लेता है ता इसमें कवन उसकी व्यक्तिगत गरिमा में वृद्धि होती है अपितु अपने आचरण से वह प्रति जना को भी मुग्धकृत बनाता है। पारम्परिक गुण, शक्ति एवं मर्यादापूर्ण जीवन के लिए शिष्टाचार की नितांत आवश्यकता है। "जा व्यवहार हम अपने ही है उम ता हम दूसरों के प्रति करें -" यह कथन में शिष्टाचार की सम्पूर्ण कुंजी निहित है। शिष्टाचार न केवल अपने जीवन का उत्तम और लोकप्रिय बनाने का साधन है अपितु सामाजिक जीवन की सफलता भी बहुत कुछ शिष्टाचार पर निर्भर करती है।

बडों के प्रति व्यवहार

अच्छे बालक नित्य प्रति अपने माता पिता एवं गुरु का नम्रतापूर्वक हाथ जाड कर प्रणाम करत हैं या चरण स्पश करत है। श्रद्धा व्यक्त करत समय दाना श्रद्धालु और श्रद्धेय का हृदय सात्विकता से भर जाता है जिससे यही सात्विकता कालांतर में सम्पूर्ण तामसिक वृत्तियों का समूल नाश करती है। हम सभी जानते हैं कि अस्तित्वता और नास्तिकता के भेद में माता लगातार नरद्र का जब गुरु रामकृष्ण परमहंस का पावन स्पश प्राप्त हुआ तो नास्तिक नग्रेद्र अस्तिक बन गए। माँ का ममतामय स्पश जब बालक प्राप्त करता है तो वह अमीम सुगम अनुभूति का विषय हो सकता है, वरुण का नहीं। वनानिक धरातल पर स्पश का महत्व तो सभी स्वीकार चुके हैं।

विनी भी शुभ वाय, माया, परीक्षा आदि कार्यों के आरम्भ से पून माता पिता गुरुजनो का आशीर्वाद प्राप्त करने से न केवल हमारे आत्म विश्वास में वृद्धि होती है अपितु उनकी मंगल कामनाएँ भी सफलता का उज्ज्वल द्वार खोलती है।

किसी वाय में सफलता मिलने पर जब कोई व्यक्ति विनीत भाव से प्रणाम करत हुए अपने से बडो का उम सफलता की सूचना देता है तो उस सफलता से उत्पन्न हुआ सारा अहंकार नष्ट हो जाता है। सफलता मिलने पर इस प्रकार विनीत भावा की अभिव्यक्ति मनुष्य को अनक प्रकार के दुःखों से बचाकर अय प्रकार की सफलताओं का भाग प्रशस्त करती है। "करने वाला मैं नहीं, ईश्वर है" गीता का यह सिद्धांत स्मरण करने से अपने आप चरिनाथ होता चलता है।

बडो से बानालाप करते समय आदरसूचक शब्दों या सम्बोधना का प्रयोग करने से शिष्टाचरण का परिचय मिलता है। जी, जी हाँ, आप आदि शब्दों का प्रयोग शिष्टाचरण का परिचायक है।

बडो की तरफ पीठ करके बठना, पर करके सोना साथ-साथ चलते समय आगे चलना, साईकिल या किसी अय सवारी पर सवार रहते हुए प्रणाम न करना शिष्टाचरण की कान्टि में नहीं आता है।

शिष्ट बालक सदैव बडो का पास जाकर बुलाते हैं, दूर से संकेत द्वारा अथवा चिल्लाकर नहीं बुलाते हैं। बडा से बातें वे बठकर नहीं अपितु खडे हाकर करत है।

बडा से व्यवहार करते समय उक्त बातों का ध्यान दिया जाए तो न केवल हम बडो के स्नेह भाजन बनेंगे अपितु विनयशीलता, श्रद्धा, नम्रता आदि गुणों का विकास होगा।

बागी का शिष्टाचार

शिष्टाचार बागी का भी होता है और व्यवहार का भी। अपने मन में आप कहना, आप क्या कहते हैं कथान में आपकी क्या भाषा है यदि बात वास्तविक गमभ जाते हैं। तुलसीदास जी ने कहा है —

बायल काका दत्त है बागी बागी मत ।

तुलसी भीठे यचात जग भ्रपाया गरि जत ॥

एक ही बात का हम बण-रटु शब्दा में कहते हैं और उसी का हम मनुष्य बना सकते हैं। बाणभट्ट जब मग्न बाला याता यह प्रश्न हुआ कि उसी प्रभूरी कादम्बरी का कोन पूरा करगा? सामने जा गुंगा घुमा पड़ा है उसका तुम किस प्रकार अपनी भाषा में व्यक्त कराग? बड़े पुत्र ने कहा "गुप्त काष्ठनिष्ठ त्यजे" छोटे पुत्र ने कहा 'नीरग तरार विनागत पुत्र बान एत ही यो। कहते कहते मफ था। बाणभट्ट ने छोट पुत्र का ही कादम्बरी पूरा कराने का भार सीपा। एक मुहावरा है—बात बात का फव तुम गटते हा भरते हम कहते हैं परिश्रमा, मुगतमाने भरव का परिश्रमा बटते हैं हिन्दू भरते, परन्तु गुता में परिश्रमा शब्दा तगत है। यदि सिपाही का सिपाही न बहुर जमादार साहब वह दें ता सिपाही बहुत प्रसन्न हागा। नीति में कहा है —

बदन प्रसाद सदा मदय हृदय, मुधा मुचावाच,

करण परापकरण यथा तथा व न वद्या ॥

जिन मनुष्या के मुग प्रसन्नता के घर है। हृदय दया से परिपूर्ण है वचन अमृतमय और काम परापकार का भावना में प्रेरित है वे विस्क बदन प्राय नहीं हाते।

जिसे काम का करान के लिए कृपया (Please) शब्द का प्रयोग शिष्टता का परिचायक हाता है। अपने में नीचे है उस काई एमी बात न कही जावे कि उससे यह प्रकट हा कि हम उनका हीन समझते हैं। अपने से कम स्थिति के सापा के स्वाभिमान की रक्षा करना मज्जन का पहला काम है। यदि इकार करना ही पडे ता मत् (Sorry) शब्द का प्रयोग किया जावे। इकार इस प्रकार किया जा सकता है कि—मुझे खद है कि आपन यहाँ आन का कष्ट किया और मैं आपका सबान कर सका। बातचीत का पूरा सूत्र अपने हाथ में रचना उचित नहीं है। सुनने वाला का भी बात करने का मौका दिया जाना सम्भता का तकाजा है।

द्वि अथवा बात कहना उचित नहीं है।

अपत्त्यामा हता नरा वा कुजरी वा'

द्विविधा मूलक शब्द जो युधिष्ठिर न कह, एमें शब्दा से बचा जाव । आश्राप म एमी कोई बात नही बही जाव, जिसके लिए बाद म पछनाना पड ।

व्यवहार क शिष्टाचार का भी हमका ध्यान रखना चाहिए । दूसरा क आन पर उठ गडा हाना जान पर दरवाज तप पहुँचाना । आने पर नमस्कार' या प्रणाम अथेजी म समयानुसार Good Morning या Good Evening आदि शब्दा म मुस्कराहट क साथ जान पहचान का परिचय दना ।

रतगाडी म जो पहले आया है उसका बठन का पहले अवसर दना । यदि महिला वहाँ हा तो उमका बठन की सुविधा देना । दरवाज से बाहर निपलन की सुविधा पहुँच बडा को देना । रेल व बस का टिकट ब्यू (que) लगाकर लेना । पान, इलायची जल भाजा आदि की वाली पहिने बडा क गमना रगना । वाच नालय म मौन रहकर पढ़ना । यदि अरबबार का कोई पृष्ठ नही पडा जा रहा हा ता उमको कृपया (Please) कहकर माँग लेना लौटान पर 'धयवाद' (thanks) दना न भूलना, गभा व गाठिया म ठीक गमय पर पहुँचना, समय से अधिक न रालना । भापण दन वाला के बीच म बोलकर हतासाहित न करना । जब तक बतना भापण समाप्त न करले तत्र नष उठरर नही जाना । आवश्यकता मे अधिक जर मे बात न कहना । राह चलती स्त्रिया की आर न ताकना । उनसे कोई एमी बात न कहना जा अव्यवहार्य हा । भवा म प्रवेश करने म पूव घटी बजाना या दरवाजा गट खटाना । कमर म प्रवेश करने से पूव क्या मैं आ सकता हूँ श्रीमान ('May I Come in Sir) बिनमना के साथ बालना । यह नर छाटी बातें है परतु आज के युग मे यह सब शिष्टता के अंग है ।

मान पीन मे शिष्टाचार का पालन करना जस खात गमय मुँह बंद करने जाना । 'चवर चवर' की मुँह से आवाज न निकालना । न पहिले खाना प्रारम्भ करना व न दूसरा म पहिले उठना । बफे म पडे हाकर खान का रिवाज ह । उसम चाजे लेने के लिए अधीर न होना । वीए हाथ स खान की चीजे लना व दीए हाथ स खाना चाहिए ।

कपडे पहनते समय अवसर का ध्यान रखे । ऐस कपडे पहने जिममे आपकी आज यता प्रबट हा । विद्यालय म धुली हुई व दस्तरी की हूट गणवज म जावे । विद्यालय म शिष्टाचार का पूरा ध्यान रगना जाव । जहाँ विद्यार्थी इमका पाता नही करता हा उमका सुधारा जावे । हम उपकार के लिए 'धयवाद' (Thanks) व आना के लिय 'कृपया' (Please) शब्द का प्रयाग करें । यह बातें ता छाटी हैं परतु जब बच्चा बडा होता है ता शिष्टाचार क नियम का अभ्यास न हान म उनका पालन नही करता अत समाज उस असाभ्य व उच्छृंखल मान लेता ह चाह उसम अय गुण हो ।

बाल अपराध

देश में बाल अपराधा की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। केन्द्रीय दण्ड मंत्रालय के पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो की एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार 1969 से 1979 के दशक में बाल अपराधा का अनुपात निरंतर बढ़ता गया है। रिपोर्ट के अनुसार 1969 में बाल अपराधा का प्रतिशत 2.6 था जबकि 1979 में 3.5 प्रतिशत हो गया। रिपोर्ट के अनुसार प्रति एक लाख जनसंख्या के पाठ में बाल अपराधा में बढ़ोतरी हुई है।

विश्लेषण से पता चलता है कि राजस्थान में 1969 में देश के प्रति एक लाख की जनसंख्या पर जहाँ 4.2 प्रति बाल अपराध हुए, वहीं 1979 में यह प्रतिशत बढ़कर 7.1 हो गया। रिपोर्ट में 1979 में हुए बाल अपराधा के ब्यूरो ने बाल अध्ययन में निष्कर्ष निकाला है कि किशोरा न चारी के अपराध अधिक किए जबकि सेधमारी और दगा के उससे कम। किशोरा के किए गए कुल 96351 अपराधा में से 60 प्रतिशत अपराध सिर्फ इन्हीं तीन शीपका के अंतर्गत थे। पूरे देश में कुल अपराधा में से 60 प्रतिशत अपराध केवल चार राज्या मन्त्रालय, मध्यप्रदेश, गुजरात तथा बिहार में हुए। ठीक इसके विपरीत उत्तर प्रदेश की जनसंख्या सबसे अधिक होती है भी वहाँ मात्र 3.48 बाल अपराध हुए। यह तथ्य चौंकाने वाला है, इसलिए कि अन्य राज्या की तुलना में यह राज्य अपराध की दृष्टि से भी किसी से कम नहीं रहा है। बाल अपराध की दृष्टि से राजस्थान का देश में सातवा स्थान है।

बाल अपराध को कैसे रोका जावे—य उपाय जो सामान्य बालकों की कमी दूर करने के लिए किये जाते हैं वे तो किये ही जावे परन्तु एक बालक जिनमें सम्मान प्रतिष्ठा का भाव हो चुका है और जो इतना चलाक और शरारती हो चुका है कि माधुर्य उपचार का कोई प्रभाव नहीं होता उनका ऐसा विद्यालय जिनमें उद्योग सिखाया जाता है, प्रवेश दिया जाना चाहिये। इनमें पूर्ण कौशल या अधकौशल धर्म में ताना गे व फिर नजर में करने लगते हैं। इनमें सुनारी, छपाई, जूत बनाना,

बागवानी, चित्रकला, कपड़े मीना मशीन पर काम करना, बडईगिरी, विजली का काम, रेडियो व टेलीविजन सुधारना, पानी के नल लगाना, ब्रोड बनाना आदि व्यवसाय सिखाने की व्यवस्था होनी चाहिये। लड़कियों के लिये धरेलू सेवा व गृह विज्ञान सम्बन्धी व्यवसाय उपयोगी हो सकता है। इनके लिये पाशाक बनाना, रंगाई छपाई पापड, मगाडी व धरेलू काम में आन वाली वस्तुओं का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

हमारे सामान्य स्कूलों में बच्चा की शिक्षा के लिए केवल पठन, लेखन, गणन या नाम मात्र के उद्योग ही पर्याप्त नहीं हैं अपितु विभिन्न रुचियाँ का सतुष्ट करने वाली सामग्री आवश्यक है। मूल रूप से सामान्य ज्ञान मनोरंजक कहानियाँ, गायन, वाद्य अभिनय, नृत्य, चित्रकारी यात्राएँ आदि मनोरंजक और सांस्कृतिक आयोजना द्वारा परिष्कृत एवं सामाजिक रुचियाँ का परिष्कृत एवं सामाजिक रुचियों से सम्बन्धित कर उनके जीवन प्रवाह का वाछनिय दिशा में मोड़ा जा सकता है। माध्यमिक शिक्षा पाठ, राजस्थान में सामान्य शिक्षा के अंतर्गत 'समाजोपयोगी उत्पादन कार्य' Socialy useful Productive Work प्रारम्भ कर एक नई दिशा दी है जिसके परिणाम अभी तक अच्छे रहे हैं व आशा है भविष्य में भी अच्छे रहेंगे। इन सब योजनाओं की सफलता तब ही सम्भव है जब अध्यापक वगैरे स्वयं परिश्रमी व बालक से सहानुभूति रखे व उनकी समस्याओं का समझने वाले हों। पिछड़े व अपराधी बालक के लिए तो एक अलग 'औद्योगिक विद्यालय' की आवश्यकता है।

बच्चे अपने बड़ों के बारे में क्या सोचते हैं

तीन वर्षीय राज के पिता आफिस में अधिकारी हैं तथा अधिक समय दूर पर रहते हैं, मा पढी लिखी हैं। जब उससे पूछा गया कि पापा कहाँ है तो उसने कहा कि वे तो बहुत दिनों के बाद घर आते हैं। मम्मी ही मारा काम करती हैं, मालूम होता है उस अपने पापा से बहुत शिकायत है वह उन्हें महामान समझता है।

दूसरी बच्ची पिकी है, उससे पूछा गया कि पापा कहाँ है तो उत्तर मिला डाइग्नरूम में। वे अच्छे हैं चावलट लात है और कार में सँभे बराते हैं और मम्मी वह तो बलब जाती है मीटिंग का काम करती हैं। हम तो अपने पापा के साथ साते हैं। उसका दिमाग में मा की तस्वीर बड़े हान पर एक ही हागी, क्लब व मीटिंग में धूमन वाली मम्मी।

तीन वर्षीय मानू के पिता Office में सुपरिन्टेण्डेंट हैं। मा थोड़ी पढी-लिखी हैं। मानू घर के बाहर खेल रहा था, मरे द्वारा पूछने पर वह बाला—पापा अभी थोड़े ही आते हैं वह पी कर आते हैं रात के समय और मा का खूब गानियाँ दते हैं व

कभी मारते भी हैं। मरी मम्मी राती ⁴ घोर कहता है नू बडा हा जा घमघा मैं मर जाऊँगी। बडे हान पर मैं पापा का मारूँगा घोर उट घर म बाहर निवाल दूंगा। इगकी निगाह म बाप एन शरायी के गिवा बुद्ध भी नहीं है। उसन लिय न बचपन की किलकारियाँ छार न सबदनामा की आत्मीयता ही है। एम ही बातक बडे हान पर पूछते हैं—'हम पदा ही क्या किया।'

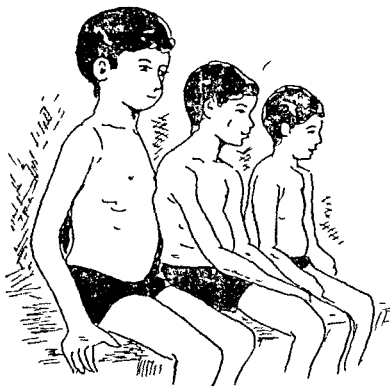
तीन वर्षीय राज के पिता आफिम म अधिपतारी है। मम्मी स्कून म वरिष्ठ अध्यापिका है। दादी मा उस पालती ह तथा वह इनस हित मिन गइ है तथा कहता है कि दादी मा मुझे कहानी सुनाती ह, परिया की घोर राजा की, मेरी गुडिया के लिये प्राव भी बनाती ह। बागज क फून बनाती है। उसक माता पिता क पान उठने बठन का समय भी नहीं ट ता प्राग जाकर उनम भी उसका सीमित परिचय ही रहगा।

बिटी क पिता लखन हैं, घर म उमक चार भाई क बहिन हैं। घर का सब कठिनाइ म चल रहा ह, उमक पापा जब भी घर म आन हैं मा लडन भगडने लगती ह। कई दफा रिना खाना गये पापा सा जान ह। मैं बडी हा जाऊँगी ता पापा के लिये भाजन बनाऊँगी, मम्मी तो लडती रहती ह, हम उसको अपन साथ नहीं रखेग। बच्चे भगडा पसन्द नहा करत ह तथा क प्यार चाहत ह चाह उह अपन माता पिता को छोडना ही क्या न पडे।

ढाई वर्षीय मौतू के पिता आर्मी आफिसर हैं। उसन जिद्द पकड रखी थी कि उस गुवारा दिया जाव। माँ के मना करन पर उसन दादी स पसा लिया और मा का बहा कि मैं दादी मा स शादी करगा क्याकि उसन दया है कि उसकी मम्मा पापा स भगडा कर पसा लेती ह। क्या उसका अपनी भा स कोई सराकार नहीं। बच्चा के लिए माता पिता का समय निकालना और हर जिज्ञासा का समाधान करन के लिय धीरज की आवश्यकता ह जा मशीनी युग म उनके पास नहीं ह।

बबलू के माता पिता राजनीति म सक्रिय रूप म जुडे ह। उससे जब माता पिता क निय पूछा गया ता उत्तर दिया—पापा हम फिडकत है बहुत से आदमियो स बातें करत है। मम्मी भाषण देती ह मीटिंग करती ह। मैं आया के पास रहता हूँ। कभी कभी गली म रहन वाला क साथ खेलता हूँ। उमके पापा मम्मी का पता ही नहीं कि गती म रहन वाल बच्चा म बुरी बुरी आदतें क गालिया सीखता ह। लडता भगडता ह योगा का दुय समझकर समाधान करन वाले एन साशल सोमा के पास घट जानन का समय ही नहीं है कि उनक लाडल का माता पिता का प्यार नश मिल रहा है, वह गालिया क बुरी बुरी आदते गली म रहन क खेलन वाला स

मीच रहा है जा भविष्य म व हो घादते व गालिया उमका वसा ही चरित्र बना देगा जो एक समस्या बनकर उनके सामन आबंगी ।



[भुग्गी भोपडी व गली मे रहने वाले उपरि त्त बालक]

भुग्गी भोपडिया म व गली म घूमन वाले बच्चा का ता हाल ही कुछ और है उनमे म कुछ के ता बच्चे भीख मागत है कुछ घर पर रह कर अपन छोटे भाई बहना का विलासत हैं जबकि उनके माता पिता मजदूरी पर जात हैं । वे दिन भर राते भगडत, भागत रहन ह । उनके सस्कार कस हाग तथा भविष्य के लिये वे समाज मे क्या बनकर निकलेंग इसका साचकर हा दिल बाँपता ह । यह कैसा समाज निमाण हो रहा ह जहा एक बच्चा अति लाड प्यार स बिगड रहा ह वहाँ दूसरी आर अभाव स विकृत हो रहा ह । इन दाना म जिन किशारा का निमाण हागा क्या व समाज क लिय अभिशाप नही हाग । जब मस्कार ही खराब हाग ता कोई भी सीमा अघन न हान पर व विद्राही क्यों नहा हाग ।

बच्चों के बारे में माता-पिता के लिए कुछ सूचनाएँ

- 1 जिस बच्चे की सदा गिल्ली या मजाक उड़ाया जाता है, वह बालक आगे जाकर डरपान बन जाता है।
- 2 जिस बालक की सदा आलोचना की जाती है उसमें आगे जाकर तिरस्कार की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है।
- 3 जिस बालक पर अविश्वास किया जाता है, वह आगे जाकर धोखा देने वाला हो जाता है।
- 4 जो बालक विरोधाभास अथवा द्वन्द्व में रहता है वह आगे जाकर भगडालू हो जाता है।
- 5 जिस बालक को स्नेह मिलता है, वह आगे जाकर प्रेम करना सीख जाता है।
- 6 जिन बालकों का सदैव प्रोत्साहित किया जाता है, उसमें विश्वास की भावना उत्पन्न होती है।
- 7 जिस बालक को सत्यता सिखाई जाती है, उसमें श्रद्धा की भावना विकसित होती है।
- 8 जिस बालक की प्रशंसा की जाती है वह अभिमान करना सीख जाता है।
- 9 जो बालक मिलकर अपने भाग का बाँटकर देन में साथ रहता है वह विवेकमाल हाता है।
- 10 जो बालक ज्ञान प्राप्त करने की भावना रखता है उसमें बुद्धिमानी उत्पन्न होती है।

11 जो बालक सहनशीलता के माध्य रहता है उसमें वर्णित बरन की भावना उत्पन्न होती है।

12 जिस बालक में प्रमत्तता रहती है, उसमें प्रेम व सुन्दरता की भावना उत्पन्न होती है।

अतः अच्छे बालक के निर्माण के लिए माता पिता उपरोक्त बिंदुओं पर ध्यान देकर उनमें अच्छे गुण उत्पन्न करने का प्रयास करें। क्योंकि यही बालक बड़ा होकर देश का निर्माण करेगा।



बालक से पिता छिपा है (Child is the father of man)



द्वतीय-सोपान

युवावस्था

आज के मानव काल के विचार हंगे फिर युवा व देश के बरूपधार बनेंगे। इन पर ही सारे देश का भार होगा। हमारे यहाँ माधारणतः पुत्र व जन्म हान पर उत्साह व आनन्द के साथ उत्सव मनाया जाता है यातिर्या बजता है मिठाई बाँगी जाती है, परन्तु कन्या हान पर पूरा उदासी छा जाता है जमे कुटुम्ब पर बहून गडा मउट आ गया है। पुत्र के जन्म पर नया जन्म कुण्डली बनती है परन्तु पुत्री जन्म पर यह मर नहीं होता। मात्र के सुम म पुत्र व पुत्री, सुपुत्र व कुपुत्री समान है। परन्तु परम्पराया न पुत्री को ह्य व निवृष्ट प्राणी बना दिया है। पुत्र जन्म पर माताएँ उह तारियाँ मुनाता हुई कहती हैं—मैंन तुम्ह उज्ज्वल दूध पिनाया है तुम एम अपन सुवृता स अधिक श्वन बनाना। यदि पुत्र सुपुत्र है ता माता पिता और वश के लिए कीर्तिकर है और 'पुनाति त्रायत इति पुत्र' इम निर्म्नि का पात्र है। यदि वह सुविशेषण धम नहीं है तब इसका विलोम पाठ करने स त्रपु (पुत्र त्रप) समान है। एम पुत्र के लिये नीति शास्त्रकारा न भत्सना के सक्डा श्लोक लिख है, एक सूक्ति है—'चित्त जातु जातेन मातु यौवन हरिणा' उम पुत्र के उत्पन्न होने स क्या, जो केवल माता के यौवन को ही हरण करता है। क्याकि 'सजाता यन तजान जाति वश मम्मुगित उमी का उत्पन्न हाना श्रेयस्कर है जिसस वश की प्रतिष्ठा बने। किमी कवि न ठीक लिखा है—

कुल कपूत और दीप की गति एक कर जोय ।

वार उजियारा लग बढ अघेरा हाय ॥

कुपुत्र और दीपक समान गति वान है दीपक जलने पर उजाला करता है और बुझने पर अघेरा। इसी प्रकार कुपुत्र बाल अवस्था तक सच्छा लगता है कि तु बुरे आचरणा स बिगडकर जय बढता है जते जस बढा होता है अघेरा कर देता है। इसीलिय एम पुत्रा के लिय 'पुत्र समा वेरिया साधि पुत्र समान बैरी और कोई नहीं एस कठार शब्दा का प्रयाण प्राचीन साहित्यकारा न किया है। परन्तु १ व लिए भी कविषा की सुभाषित वाणी सूक नहीं हुई है—

“मत्पुत्रेण कुल, नृपण वसुधा, पूर्यो दुना शक्तिरी”—अच्छे पुत्र स कुल राजा मे पृथ्वी और पूरण चंद्रमा स रात्रि शोभायमान हाती ह ।

मानतुगाचाय ने भक्तासर स्रोत मे लिखा ह—

स्त्रीणा शतानि शतशा जनयति पुत्रान्
नाया सुत त्वदुपम जननी प्रमृता ।
सर्वादिशो दधति भानि, सहस्र रश्मि
प्राच्यव दिग जनयति स्फुर दणु जालम् ॥

इस ससार मे जन्म बेलाआ का अटूट क्रम लगा ह प्रतिक्षण कितन प्राणी उत्पन्न हाते हैं, इमको गणना नही की जा सकती किन्तु भगवान् आदिनाथ की जमी जन्मबेला और नही । तार सभी दिशाओ की गाद म खेल रह है किन्तु सूर्य का जन्म देन वाली दिशा पूव ही ह ।

छात्रावस्था वालको के निर्माण की अवस्था ह इसी अवस्था म वे राष्ट्र के माता पिता के, धर्म और समाज के सत्पुत्र बनते है । कहा भी ह— यत्र वे भाजने लग्न सस्कारो नायथा भवेत्” जा सस्कार बच्ची अवस्था मे किए जात है वे अत तक स्थायी रहत है । धारण शक्ति भी छात्रावस्था मे ही होती ह । आजकल छात्र चरित्रवान नही होत । पहिले विद्याओ का जीवन कठोर, सादा व तडक भडक से दूर हाता था । आत्म समय के कठोर घरातल पर उनरे जीवन का प्रारम्भ होता था । आश्रमो मे रहते हुए वे गुरु और उसके परिवार की सविनय सेवा करते थ । ‘गुरु स्नेहो हि कामसू’ गुरु का स्नेह सम्पूर्ण कामनाओ का पूरण करन वाला हैं । यह उनका दृढ विश्वास था । वे माता पिता और गुरु तीनों के प्रति श्रद्धालु होते थे । उनका आदेश था मातृ देवाभव, पितृ देवाभव और आचाय देवोभव ।

भारतीय शास्त्रो म विद्यार्थी के लिये गुरु भक्ति का आदेश ह, गुरु का सब शक्तिमान साक्षात् ब्रह्मा माना गया है ।

“गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वर ।

गुरु साक्षात् ब्रह्म तस्म श्री गुरुवे नम ॥

आज हमारे दृष्टिकोण म बुद्धि की प्रधानता हो जान से क्रमश भावना का लोप होता जा रहा है । फलम्बरूप पारस्परिक सम्बन्धो की पवित्रता नष्ट हो गई । प्रत्येक कम औपचारिकता से आवृत्त रहता है । गुरु शिष्य सम्बन्ध म भी पारस्परिक भावना एक विश्वास का ह्रास हो रहा है । आज के युवा आधुनिकतम वेशभूषा म सजकर वाहना म बठकर अध्यापको का भाषण भुगत है सिगरेट, पान, सिनमा, मद्य, मिथ्या खोय, प्रमाद आलस्य, उच्छ खलता, अविनय ब्रह्मचर्य भग आदि अनेक दुगुण उसम बस जाते है । तोड फोड अविनय, अध्यापका की दुदशा विश्वविद्यालय म विभागाध्यक्षा वाइस चांसलर तक के साथ अभद्र व्यवहार करत है । विश्व विद्यालय के अध्यापक वग भी विद्यार्थियो चतुर्थ श्रेणी कमचारी व कमचारिया के

साय गपनी माँगा की लेबर हाय हाय करत नजर आते हैं। मवा कारण है वतमान शिक्षा म स धम का निवाल कर आध्यात्मवाद की इतिथी कर देना। चरित्र निमाण की शिक्षा की वही भी व्ययस्था नहीं है तथा छात्र व शिक्षक के बाँव का सम्बन्ध साधारण रह गया। गुरुओं का निर्माण रक गया, बल के उच्छयतता करन वाले छात्र आज के गुरु बन गए और अध्यापक की गरिमा समाप्त हो गई। विद्यार्थिया की जिनासा जाती रही और अध्यापकों का उत्साह समाप्त हो गया। किसी कवि न कहा है—

गुरु कुलाल शिष्य कुम्भ है घड घट बाढत खोट ।

अदर हाथ पसार के बाहर मारत चाट ॥

गुरु कुम्भकार और शिष्य कुम्भ है। कुम्भ के निर्माण म गुरु का ही प्रयत्न है। यदि वह चाह तो उसे निर्दोष और परिपक्व बना सकता है। ऐसा गुरु कभी मिट्टी स लादे को ठोक पाटकर आकृतितवान बनाता है। घडत समय वह भीतर अपना हाथ रखता है हाथ रखन से गुरु की कुम्भ निर्माण के प्रति वात्मल्य भावना



आचाय ढेवो भव

तथा सावधानी सूचित होती है। वह जो चोट मारता है तो कुम्भ की कुशलता के लिए ही। यदि कुम्भ पर जान पर बाका निरछा या भद्दा रह गया तो बाजार म उसकी रचना पर लोग हँसेंगे, उसका कोई मूल्य नहीं रहेगा। यदि शिक्षा प्राप्त करे पर भी मङ्कारा म शुचिता नहीं आने चरित्र का बल नहीं मिला, तब जीवन साभावित नहीं हो गया तो वह शिक्षा निरर्थक है व प्रमाण पत्र केवल

न क टुकडे हैं।

युवा व उनकी स्थिति

समुक्त राष्ट्र सभ ने 15 से 24 वष की अवस्था वालो को युवा माना है, वैसे भारत म 16 से 35 वष के बीच वाली आयु के लोगो का आमतौर पर युवा स्वीकार किया है। युवजन के कार्यात्मक पक्ष को देखें तो युवा वह है जिमम सुम का लालच कम और साहम से लगाव अधिक हो। समाज में व्याप्त पाखण्ड, अत्याचार और अत्याय के विरुद्ध आवाज उठाता है, जिसने जीवन का कोई उद्देश्य हो जो विचारा के कठघरा को स्वीकार नहीं करता।

1975 में विश्व के 15-24 वष की आयु के लगभग 74 करोड व्यक्ति थे। ऐसा अनुमान है कि सन् 2000 तक यह संख्या 118 करोड हो जायेगी अर्थात् विश्व भर में 60 प्रतिशत की वृद्धि। कुल जनसंख्या का पाँचवाँ भाग युवा वर्ग का है। सारी प्रगति के पश्चात् अधिकांश युवजन शिक्षा, राजगार के अवसर और उन्नत व पर्याप्त स्वास्थ्य उपकरणों से वंचित हैं। जीवन सुविधा की खोज में वे गाँव में शहर की ओर दौड़ रहे हैं। गाँव उजड़ रहे हैं और यह लोग शहरों में अपना का आधारभूत स्थिति में पाते हैं। युवतियाँ में मासिक धर्म की गड़बड़ी, सून की कमी, प्रसव और गर्भावस्था की जटिलताएँ अधिक पाई जाती हैं। गभपात तथा प्रसव सम्बंधी मृत्यु दर 18 वष से कम आयु की युवतियाँ में विशेषतः ऊँची है।

युवजना में रक्तरोग, दुघटना और दीर्घकालीन अपंगता एक ओर अधिक है तो दूसरी ओर दृष्टि दाह, श्रवण विकार, मनुमट श्वास नलिका, आदि रोग भी मिलते हैं। आज वह आधुनिकता को ललचाई नजर से देखता है ता दूसरी ओर परम्परागत समाज की रूढ़िमा को भी छोड़ नहीं पा रहा है। सिरदद, निराश मानसिक स्थिति, समस्याएँ व मनोविकार जो धूम्रपान, मध्यपान, नशीली दवाओं का सेवन व अपराध वृत्ति के त्रिये उकसाता है।

आज विश्व की तीन चौथाई संख्या गाँव में रह रही है जबकि सन् 2000 तक विश्व की आधी जनसंख्या शहरों में रहने लग जावेगी। इस प्रकार गाँवों से शहरों की ओर, खेत से कारखानों की ओर भुत्ताव हा रहा है। परिवर्तन युवाओं के त्रिये एक नाजुक परिस्थिति है।

रोजगार दरपतरा के आँकड़े बताते हैं कि विश्व में सबसे अधिक बेरोजगार 15 से 24 वष की आयु के व्यक्ति हैं। सीरिया में 79 प्रतिशत, भारत में 67 प्रतिशत घाना में 60 प्रतिशत बेरोजगार हैं। युवजन की कई आवश्यकताएँ हैं जिनमें पर्याप्त आहार का अभाव पुरानी व नई पीढ़ी में सघन जीवन की समस्या नशीली दवाओं का सेवन, हिंसावाद व पाखण्ड्य संस्कृति का प्रभाव आदि हैं। वे

अथवा परिश्रमी व कठिन ताय म समझ बने रहें इसके लिए उह पयाप्त प्राणन मनिक पलाथ विशपारर चाह तन्व एव कशियम आदि आहार मिनना आवश्यक है। यह भी आवश्यक है कि उनम मानमिन तनाव कम हो इमनिण व्यायाम शागतन ध्यान की माधना वा भी अभ्यास हो।

कठिन भाषा म एक शब्द है Adolescence इसका अर्थ है प्रौढ़ता का प्राणन (To grow to maturity) यह अवस्था 18 वा 20 वष की उम्र म समाप्त हान है। यह कहा गया है कि Adolescence is a period through which a growing person makes transition from childhood to maturity युवक का कोई भी सम्बन्ध शरीर की दशा से नहीं है बूढे भी युवक हो सकत हैं और युवा भी बूढे यह सब मन की करामात है।

मत्तान को जन्म देकर उमका जीवन निर्माण करना अभिभावक का कर्तव्य है। जीवन निर्माण का अर्थ है—सम्कार सम्पन्न बनाना तथा शारीरिक, मानमिन एव बौद्धिक विकास मे सत्रिय धाम प्रदान करना। अभिभावक का यह नतिक कर्तव्य हो जाता है, लेकिन इमको बार बार दाहरान से यह युवक के स्वाभिमान के प्रतिबूल पडता है तथा उमम अमतोप की भावना जम लती है। आए दिन लडका द्वारा तोडफोड मारपीट के समाचार मिनत है। विश्वविद्यालय मे ना जान मिनत ही युवक डिमिया का पुलिन्दा लिये नौकरी की तनाश म भटकते रहते है। उनका एकमात्र उद्देश्य नौकरी प्राप्त करना ही है। उनम नवीनता के प्रति आक्षेपण है फिर भी उनकी मानमिक परम्परा प्राचीनता से विपना हुई है।

पुरानी व नवीन पीढी मे सघष—उमके कारण ही समाज विकास नहा कर पा रहा है। पुरातन के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव प्रत्यक नागरिक का जन्म से ही घूँटी के रूप म पिला दिया जाता है पर अत्र परिस्थितिया के बदलाव से यह घूँटी ही प्रभावहीन हा गयी है। निष्प्रिय पाश्चात्य गीत, सिनेमा मन्ता साहित्य मे युवका की मानमिक चेतना का निष्प्रिय कर दिया है। उत्तजनारमण एव कुण्डिन भावना म हमारे युवा भटकत नजर आ रहे हैं। युवक राजनीति की कठपुतली बनता जा रहा है। आज बेटा बाप का कहना नहीं मानता। युवा होन का अर्थ है वित्त की एक जाग्रत अवस्था बूढा हान का अर्थ है वित्त की चेतनाहीन दशा। यत्र शारीरिक दृष्टि से देखा जाये तो करोडो युवक मिल जायेगे परतु मानमिक दृष्टि से दश म युवको की कमी है। भारत हजारों वषों तत्र गुनाम रहा है अमरी वरह है यहाँ पर युवका की कमी हाना। युवक वह जो जिन्गी म क्रांति करे व दूरता व भुक्ता नहीं जानता हा जो जीवन का नय आयामा म ल जान पाहता हा।

परन्तु प्राति की आकाशा लेकर चलने वाला युवक है ही कहा। युवतियों का विवाह नहीं हो रहा है इसलिए कि युवक दहेज की आकाशा में जी रहा है। कितने युवक हैं जिन्होंने इस दहेज परम्परा को तोड़ा है। जात पाँत में ऊपर उठ कर कितने युवकों ने निधन अभावग्रस्त व पिछड़ी जातियों में विवाह किए हैं।

युवकों में उत्साह की कमी—स्वामी रामतीथ पहिली दफा जब विदेश को खाना हुये तो उनको जहाज पर एक 90 वर्ष का वृद्ध जमान मिला जो चीनी भाषा सीख रहा था। वे हैरत में ही गये कि इतनी उम्र में यह वृद्ध इतनी कठिन भाषा कैसे सीखेगा, जिनमें बंगमाला के बदले चिनमाला होती है। जानते हैं उम्र वृद्ध ने क्या कहा कि अभी तो सीखने में जीवन लगा रहा हूँ जब सीख चुकूँगा तब साबूँगा करने की बातें। बूटे ने रामतीथ से उनकी 30 साल की उम्र जानकर कहा कि मुझे तो ऐसा लगता है कि भारत बूढ़ा हो गया है जहाँ 30 वर्ष में ही मरने के बारे में माया जान लगता है। भारत हजारों वर्षों से दुख को देख रहा है। महात्मा बुद्ध ने तो जीवन का ही दुःख का कारण बता दिया है। भारतवासी दुख को गते लगाए बैठे हैं।

सुकुरात को जहर दिया जा रहा था और वह कह रहा था कि जब तब मैं जिंदा हूँ जिंदा रहूँगा। वह सोच रहा था कि मौत भी जिंदगी की एक घटना है और वह उसका अनुभव करना चाहता था।

रवीन्द्रनाथ टगोर जब मर रहे थे, उनके सम्बन्धी ने कहा कि अब तो प्रार्थना कर लो कि अब दोपहर मनुष्य जीवन में न आना पड़े। उन्होंने कहा कि मैं यह प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझे कस रगीन मसार में भेजा कि मैं आनन्द में मर रहा हूँ, अतः दुबारा भी मुझे इसी मसार में भेजा। मरने समय उन्होंने यह कविता लिखवायी—

‘देखा तो मैं नाचने लगा’

जवानी सघप से पना होती है सघप करो सत्य के नियम, लडा श्रेष्ठ के नियम और यह ही अवस्था है जब ममाज की कुरीतियों से भ्रष्टाचार से, बेईमानी से, जडता व शोषण में युवक लड सकता है। जवान आत्मी अभी ही लड सकता है जब उस अनुभव हा जायेगा तो लडने की इच्छा ही समाप्त हा जायगी। अनुभवही आदमी चालाक हा जाता है, उसकी लडाई कमजोर हा जाती है और वह अपना हित देखने लगता है।

यौन और प्रकृति

योग्य प्रकृति का यौवन १। दृग्म पुराण पते नष्ट है और नई बात गिनती है। दृग्मके प्रभाव से ही पुराण ग्रन्थ, साता-गुप्ते पुराण बात छोड़ कर यौवन में विरत और विर पत्रन करने हैं। अभी प्रसार परापर जगत् का प्रवाह उता है। मनुष्य भी मगार का एक प्राणी १ और प्रकृति व नियमों में बांधा है परन्तु यह मगार के अम प्राणियों में ध्येष्ट और बुद्धिमान है धन प्रकृति व नियमों को अधिन गावधानी से काम में लाता है, इससे उमम विराम का मात बढ़ जाती है। विनाश व बल पर ही मात्र मनुष्य प्रकृति का अधिपति बनने का प्रयास कर रहा है। यौवन आयु का स्वर्ण काल है यौवन में प्रकृति की उमम स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होकर शरीर को मज्जित और मज्जित गती है। यौवन की इसी सन्निधता और मस्ती को मनुष्य आयु पयन्त मनुष्य बनाए रखना चाहता है।

यौवन का आगमन—यौवन का आगमन 15 वर्ष की आयु होत पर लड़के में और 13 वर्ष की आयु होने पर लड़की में होत लगता है। बच्चा की आयु में 16 वर्ष तक और लड़के की आयु में 25 वर्ष तक उनमें शारीरिक परिवर्तन होत रहत हैं। इस अवस्था में प्रायः लड़के लड़कियाँ तनिक भी समग दाप से काम सम्भली विचार करत लगत हैं। व प्रकट या गुप्त रूप में ऐसी बातें सुनना या ऐसी पुस्तकें पढ़ना पसन्द करत है। यदि जरा भी अवसर मिलत त तसो अधिपरिपक्व अवस्था में विषय भाग में पड़कर अपन यौवन का नष्ट कर दत हैं। उह प्रकृति व नियमों का ध्यान नहीं रहता अतः व भरी जवानी में अपनी नारी ही यौन शक्तियों का बढत हैं।

यौवन और स्वास्थ्य—यह आवश्यक नहीं है कि मनुष्य विषय भोगों व सुख के लिए ही यौवन की दीर्घकाल तक बनाय रखना चाहता है अपितु जीवन भर स्वस्थ रहने के लिए भी उस यौवन शक्ति की अत्यन्त आवश्यकता है। जीवन में सधप कम नहीं हात। इन सधपों में मन, इन्द्रियों और शरीर आश्रित होकर निबल हा जात है। शरीर के क्षय को रकना उमम आयुओं की कमी न हान देना और उमे आगम्य तथा दीर्घायु रखने का सर्वोत्तम उपाय यौवन तत्त्वा की प्राप्ति और जीवन रक्षा है।

शरीर एक बढती हुई नदी के समान है जहाँ एक धार ता मधुम और स्थान पद से प्रवेश करत है और दूसरी ओर से निकल जात है। इस प्रसार का जहाँ

मनुष्य नहीं रहता, वही शरीर म मर हुए परमाणु एकत्र होने से मिलते हैं और शरीर के यौवन में विघ्न डालते हैं। यह मर हुए परमाणु ज्यों-ज्यों शरीर में जुड़ते जाते रहते हैं तस-तस शरीर की विभिन्न सौंदर्य दशाएँ यौवन तरवारों से बहुत होकर दूषित पदार्थों से सजित हानी रहती हैं। इस प्रकार सौंदर्य घटने के साथ ही यौवन और स्वास्थ्य भी घटता जाता है।

‘सौंदर्य की प्रतिभा वाक्य सुनते ही स्त्री जाति का चित्र सामने खड़ा हो जाता है, परंतु यह सत्य नहीं है। ससार के पशु वर्ग में पुरुष वर्ग ही स्त्री की अपेक्षा अधिक सुंदर होता है। चिड़िया की अपेक्षा चिड़ा, गाय की अपेक्षा मांड, बिल्ली और बुनिया की अपेक्षा बिल्ला और कुत्ता। शरणी की अपेक्षा नर शर अधिक सुंदर है। अपन रूप पर माहित होना प्राणी का स्वभाव नहीं। सुंदर स्त्री पर कोई स्त्री मोहित नहीं होती, सुंदर पुरुष पर कोई पुरुष माहित नहीं होता, फिर भी स्त्रियाँ की अपेक्षा पुरुष ही अधिक सुंदर हैं। जया जया आयु बढ़ती है, स्त्रियाँ का सौंदर्य कुम्हलाता जाता है परंतु पुरुष वृद्धावस्था तक गठे हुए और सुंदर रह सकते हैं। बाल पक जाना, दाँतों का मुँह से निकल जाना और शरीर पर झुर्रियाँ पड़ जाना ये तीनों वृद्धावस्था के लक्षण हैं। इन तीनों लक्षणों का शरीर में उदय होना किसी मास आयु पर निर्भर नहीं करता। बहुत से युवकों के शरीर में यह लक्षण 22 वर्ष की आयु में ही प्रकट हो जाते हैं, बहुत से 60-70 वर्ष की आयु में भी तजवान रहते हैं। अतः तीनों लक्षणों को दूर करने का उपाय हृदय, मस्तिष्क के अथवा इन्द्रियों के ठीक संचालन की क्रिया है। प्रसिद्ध जर्मन कवि गेटे बहुत वृद्धावस्था तक भी सशक्त और सतज बना रहा था। एक बार उसने मित्रों का लिखा था कि ‘इस चरम वृद्धावस्था में भी मर मस्तिष्क में एम एम विचार उत्पन्न होता है, जिनके विकास के लिये दूसरे जीवन का भी आवश्यकता है।

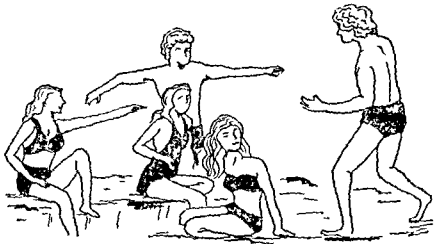
यह यौवन पूरा चेतना का लक्षण है। यह एक प्रकार का हठयोग है जिसके द्वारा मानस में वाक्य प्रवृत्ति का अनुचित गति से तरंगित करने से जीवन का उदय होता है। स्वर्गीय वर्नाइशा ने एक बार कहा था “यौन विषय के सम्बन्ध में जितनी अथहीन बातें कही जाती हैं उतनी निरर्थक बातें किसी दूसरे के सम्बन्ध में नहीं हैं। यह सत्य है, अनिच्छित बातें ही यौन समस्या का जटिल एवं दुराग्रह बनानी हैं। इनका मनुष्य के मस्तिष्क पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति भयंकर हो जाता है। काम भावना एक शक्ति है और भौतिक विज्ञान के अनुसार शक्ति अपने तन्वों को नष्ट किए बिना ही दूसरी प्रणालियाँ में प्रवृत्त की जा सकती है। अतः समय का वाचनिक रूप यही है। अतः युवकों को बार-बार यह साचना चाहिए कि जन्मिन्द्रिय में केंद्रित प्राण शक्ति सारे वायुमण्डल में फैलकर प्रत्येक अणु का पुष्ट कर रहा है, कुछ ही समय में मन में यह विचारन से युवकों का तन मन स्फूर्तिमय हो उठेगा।

हिप्पीवाद

हिप्पीवाद न युवका वा काफी अमित किया है। बनावटशा न एन विताव म लिखा है कि *There are no golden rules* स्वयं नियम यह है कि कोई भी स्वयं नियम नहीं है। हिप्पीयान् कोई वाद नहीं ह, समस्त वादा का विरोध है। आज पश्चिम म जिन युवका न हिप्पिया का नाम ल रगा ह उनकी पहना बनावट यह है कि "हम सीधे आदमिया की तरह जीयेग। न हिन्दू, न मुसलमान, न ईसाई न कम्युनिस्ट और न साशलिस्ट हाग। व बवल निपट आदमी की तरह जान का कोशिश करगे।"

सहज जीवन न पाठण्ड १ प्रवचना—हजारों साल की सभ्यता ने आज सब गुड गावर कर दिया ह। वृद्धिम व भूँटा बनान की कोशिश की ह। हमारे रई मुटाटे है। हम जस दिग्मत ह वम नहीं ह दिल तो चाहता ह कि आपका गला धार दे परंतु आप मुस्करा रह ह। हिप्पी कहते है कि कुछ भी छिपाना नहा चाहिए।

भूँठी सभ्यता व भूँठे अभिनय से इ कार—सत्र माता पिता, सम्बन्धी बह रह है कि प्रेम करत है परंतु राज वियतनाम, वाग्निया, कश्मीर, ईरान, ईसाई इत्यादि म युद्ध हो रह ह। अत प्रेम वहा है सब तरफ घृणा है।



[हिप्पी' स्पच्छ ३ रूप म जल ब्रीडा मे "प्रस्त]

युवका व युवतियों को हिप्पी सस्कृति से बचाया जावे—हिप्पी ऐसी लड़किया के साथ रह रह ह जिनस व विवाहित नहीं ह । क्योकि हिप्पी कहता ह कि विवाह 'यायानुमोदित व्यभिचार (Legalise Prostitution) ह । समाज द्वारा आदेशित "लाईसंस देण्यावत्ति" है जिसम कई सात फेरे लेकर, कही दफ्तर म रजिस्टर पर दस्तखत करके, कही गिजाघर व कही निकाह करके विवाह का लाइसंस प्राप्त करता ह । परंतु समाज व्यवस्था के लिए इस प्रकार के विवाह आवश्यक है अथवा उच्छ्वतता व उसके दुष्परिणाम उत्पन्न हो जायेंगे ।

हमार सामन सत्यकाम जाबाला का उदाहरण प्रस्तुत है जो उपनिषदा म वर्णित ह । जब वह विद्यालय मे पढने आया तो उसके पिता का नाम पूछा गया, उसने माँ से पूछा, मा ने कहा कि युवावस्था म जब मैं सेवा करती थी ता कई लोग के सम्पर्क म आयी अत टीका पता नहीं कान तरा पिता ह । इसलिए जबलपुर का नाम उस पर ही रखा गया । देवदासी प्रथा भी तो हमर शब्दा म वष्यावत्ति ही ह जिन कथाओं का विवाह नहीं होता था उनके माता पिता मंदिर म देवता व साथ विवाह कर देत थे वे मंदिर म रहकर पूजा सेवा करती था । उनका किसी पुरुष क साथ सम्पर्क पाप नहीं समझा जाता था । इस अवस्था के जब दुष्परिणाम प्रकट हुए ता उसे कानूनन बंद कर दिया गया ।

हिप्पी का अर्थ ह 'भगोडे' अर्थात् पीठ दिखाकर भाग जाने वाले । जस ही उ हान विवाह किया, बच्चे हुए, उह घर बसान व नौकरी की चिन्ता लग जाती है । फिर इस हिप्पीवाद का भारत म फलन का सवाल भी नहीं है क्योकि हिप्पी दो दिन काम करके 28 दिन खाना चाहते ह, जो भारत के गरीब लोग के लिए सम्भव नहीं ह । 28 दिन के लिए पसा कहा स लायगा ।

जिसबग जा हिप्पिया का नेता ह, वह काशी आया ता उसको एक स यामों से मिलान ले गय । वह सयासी सूत्र हमा और कहा कि हम काशीवासी और यहा पर भगवान शंकर जस परम स्वतंत्र व्यक्ति पदा हुए ह । परंतु यह समृद्धिया की बात ह इसलिए आज जो भारत का युवक हिप्पिया की नकल कर रहा ह, उसक भविष्य का क्या कहना जबकि उनकी ज भूमि अंधकार मे ह ।

पारचात्य संगीत—आज का युवक सडका पर नृत्य करता ह उस कहत ह Twist व अभी जा नृत्य आया ह वह ह Disco हमार यहा क बड बूटे भी उता देखकर आनंदित हात है । उसको आलाचना करत भी दसे जा सकत ह परंतु उनका रागते नहीं ह । यह डिस्को आखिर क्या ह ? यह मनावनानिय प्रभाव उत्पन्न करने वाला नाच ह । इसमे माईडलिक प्रशाश की रगोन किरणा के बीच तज गति का संगीत बजाया जाता है । इसम सबसोफान, इलट्रिक आगन इत्यादि हात ह । इस संगीतमय चमचमात वातावरण म अपनी मस्ती म भूमना संगीत की लय साल क

बीच तात्कालिक विघात हुए आवश्यकतानुसार स्टयिंग और फ्री डांस हो रिस्ता है। इसमें संगीत व साथ साथ कोई गीत भी गाया जाता है जो हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में हो सकता है। जैसे "आप जगा काँटे मेरी जिंदगी में आये।" इसमें संगीत का रचना की गई है, उसकी धुन प्रायः अफीकन या अफी अमरिक्न धुना की नकल होता है। एक ही पक्ति कई बार गायी जाती है, इसके दोहराये जाने से सम्मोहन का काम बरकरा पैदा हो जाता है व घर परिवार के प्रतिस्पर्धा से उबलाये हुए ताने गाने आकर जीवन की शून्यता का लुप्त उठाने है। अतः ना कोई घर में भी इसका सम्मोहन होना लगा है। उन्तेजक संगीत की धुन पर धिरकन म्त्री पुण्य तीव्र गति से नृत्य करत है, पाव कही पडते है ता सिर कही घूम रहा हाता है तथा वे उलजनु हरकते करत लगते है। पहले इस नृत्य की शुरुआत अमेरिका में आज से 25 वर्ष पूर्व हुई। उस तरह की संस्कृति का उत्पादन हमेशा से ही अमरिका रहा है। अमरिका की रणनीति के विरुद्ध अश्वता ने रात रात भर चौखबर व्यवस्था के खिलाफ अपना आवाज जाहिर कराने के लिये इसकी शुरुआत की, इससे उन्हें मानसिक शांति भी मिली परन्तु अब तो भारत में भी इस नृत्य में 5-7 वर्षों में ही अपनी लावप्रियता हासिल करनी। कई नगर ऐसे हैं जहाँ डिस्को क्लब नहीं है वहाँ छात्रावासों में ही डिस्को रात रात भर चलता रहता है। छात्रावासों में किसी मेल या उत्सव में भाग लेते हैं तो वहाँ अक्सर और वहाँ सामूहिक रूप से स्त्री पुरुष नृत्य करत हैं, वहाँ रात भर गाने भी रहते हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि फ्री डांस की विचारधारा का प्रतिनिधित्व भी डिस्को करता है। यह आवाज आज के युवाओं की आजादी की मशाल है। इसमें युवक ही नहीं अतः ना अथेड उम्र के और अपने आपका अति आधुनिक समझने वाले कुछ पेशेवरस्त लोग भी इस संस्कृति से जुड़े हैं। आप किसी मित्र या रिश्तेदार के घर जाये व अपने छोटे टुनू, पप्पू से आपका नमस्ते करने के लिये भले ही न कहें, परन्तु डिस्को गियाकर अक्सर जी का मन माह लेने के लिए अक्सर कहेंगे। युवक युवतियाँ से बात का ज्ञान तो व कहते हैं कि यह एक मीठी थकान के साथ मानसिक आराम देता है। व नहीं जानते कि उन्हें मानसिक तनाव क्या है, परन्तु वह आरंभ इसका निराकरण नृत्य मंच पर डिस्को के द्वारा होता है।

लोक नृत्य का आध्यात्मिक स्वरूप—कई भा संस्कृति, वही से भी आब, उसकी रक्षा नहीं जा सकता। विद्यार्थी युवक व युवतियाँ के पास Surplus power है उसका उपयोग नहीं होता तो वे इस प्रकार के नृत्य में भाग लेकर अपने शरीर को थकाकर मन को शांति देंगे ही। इसलिये आवश्यकता है सक्रिय ध्यान का मन स्थान पर चालू कर नये का आध्यात्मिक स्वरूप दिया जाय जिससे आध्यात्मिक शक्ति व भावना भी रूढ़ि आरंभ युवा का कुण्डा भी तिराहित होनी रहे। इसमें कुछ

सक्रिय ध्यान दिय जा रह हैं जिसका प्रयाग मामूहिक रूप म युवाग्रा द्वारा पूण नियंत्रण के साथ रिया जा सक्ता है। क्या भारतीय नाशनत्य जिसम राम, भगडा, गर्वा व विभिन्न प्रान्ता के विभिन्न लोशनृत्य हजारा वर्गों स गाय गाव म नही है ? अत क्या नही इन डिरको, टिवस्ट आदि के म्यान पर इन लाकनृत्या का परिष्कृत व परिवर्तित रूप ग्रहण किया जाय।

जब बालक युवा हाता ह और वह देखता ह कि जिन पर मैं पूरी तरह स विश्वास करता था, जिह मैं ईश्वर तुय समभना था, व वर्षों स हर तरह मुझे धावा देते रहे है, तब उसके दिल म कितनी चाट पहुँचती ह। इसलिए माँ बाप का चाहिए कि व अपनी युवा सत्ताना के साथ माफ व गुले दिल स व्यवहार करे। वे उस बात का ध्यान रखे कि उनका युवा पुत्र पुत्रिया का कभी भी दिल न दुगया जाव।

इसलिए आवश्यक है कि आज व नवयुवक का मिखाया जाय कि उसकी आत्मा मे वह दिव्यता विद्यमान ह जा समार का आलापित कर सकती ह। उमर मन म वट दिव्य विचार, जमा दना चाहिय कि दयासागर परमात्मा न उम समार म किमी खास उद्देश्य का पूर्ति हतु भेजा ह। उस सम्यक धम की शिक्षा ली जानी चाहिये जिससे उसको आत्मा का सम्मान बढे। उसका मानमिक व शारीरिक विकास हा और उसका जीवन दिव्यता से पूण हानर सुख शांति म पूण व सफल हो।

मादक दवाइयो से प्रसित युवक

“हम ऐसी सब कितायें बाविले जव्ती समभते हैं,

जिह पढ कर बच्चे बाप को खव्ती समभते है।”

अन्वर इताहावादी का यह शेर आज कितना सच मिद्ध हो रहा है। अमरीका म पन्द्रह वष से सत्रह वष के बच्चा के माँ बाप, घर के बड्ड आज बहुत परेशान ह। उनकी किसी माग का पूरा न करा वे अपने माँ बाप स लडन भगडने का तयार हा जात हैं और कई ता अपन मा बाप को पीटना गुरू कर देत ह। कसास युनिवर्सिटी के स्कून आफ मडिसिन के चिकित्सा प्राफेसर डा० वायले के मत स अमरीका म अस्सी लाख माँ बाप अपनी किशोर किशारी सत्ताना द्वारा तग किए जात ह या कोई ता पीट भी जात हैं। यह सब बच्चे डग नेन लगते है, जम मेरीजग्रा, काबन आदि और वे नशे म अपन माँ का माँ और बाप का बाप नही मानत ह। अमरीका व एक तिहाई बच्चे अबब नशे करत है। हर माहलवें हाई स्कूल के विद्यार्थिया मे स एक रोज मरीजुआना लेना ह जिसम उनकी स्मृति नष्ट हा जाती है। बुद्धि काम बगना उद कर गती है। इन नशे के पत्थारों का एक बार तन म

उमकी आदत पड जाती ह आर इस लेन की वह बार बार इच्छा करता ह। बनी पर बीअर पीना ता आम बात है क्याकि व इस नशे का कारण नहीं समझत परन्तु उसको भी पीन म यह भी बच्चा की आदत म आ जाता ह और कुछ समय परवाह व पियबकड हा जात ह। वहा पर हाई स्कूल के मीनिशर विद्यार्थिया म आष तडर और बीम प्रतिशन नवी कथा के विद्यार्थी शराब पीत ह।

इम प्रकार के नशेवाजी का परिणाम ह, तलान या मम्बध विच्छन्न विगम वहा के परिवार टूट रह ह आर उनकी उचित देख भाल करने वाला नाई रहता ह। दूसरा कारण ह, परिवार नियोजन। इसको कृपा स एक या दो बच्चे परिवार म हात ह। अखिरतर एक ही बच्चा हाता ह जा बहुत ज्यादा लाड-प्यार, नाज नसरा म पलता ह। जब वह बाहर की खूर दुनिया दगता है तो वह भा आतकवादी हा जाता ह और स्कूला म या अडास पडाम म बुरी सगत मिलत ही धर म ही अथ काब व कारण किमका मार रहा ह इसका उसका काई पता नहा रहता है। अमरीका आर यहा तक अब ता इ गलेण्ड म भी मातृत्व, वामन्य आदि मूल्य उडे पुरान दकियानूसी, मध्ययुगीन, नई दुनिया के ग्याग्य बताए जात ह। अमरीका तथा रूस म अनिवाय शिक्षा ह इसके कारण वहाँ की सरकारें इन युवको का कह भी भेज सकती है। जब य तरण सना स वापस लौटत ह तो अपन आपका अथ असबद्ध आदर्शविहीन मशीन के पुर्जे की तरह सक्ल्पविहीन अनुभव करत है। उनकी मानसिक पूति लूटपाट, चारी, बलात्कार आदि असाभाजिन नायों म होत ह। वहा का हर फशन हर मैगजीन आर भाषा की नई शली हमार देश भारत म आपानिन होनी ह तथा यहाँ के युवक युवतिया द्वारा इमकी अ की नवल की जान ह जिसम हमार देश की सस्कृति तथा मर्यादा का तहस नहस करन म पूरा सहयोग दिया है। भारत म एस विदेशी युवक युवतिया स्वतंत्र वहाँ भी अड नग्न स्थिति म देखन का मिल सकते है। तीव्रगज पुष्कर, गाया आदि स्थल मानो इनके क स्थन ही बन गय ह। हमारे देश भारत का युवक भी नशेवाजी, लूटपाट, हजा चार बाजारी आदि दुध्यगना म लिप्त हावर अपन चारन का हनन पर रहा ह।

युवक म नशे की वृद्धवृत्ति—एन एम डी आर मैस्कोलीन य दाना चारें मनुष्य का चेतना के नये दशन करान म कुछ समय के लिय सफल हा सगत है। जब एक आदमी एन एम डी की टिकिया लता है ता कई घटा के लिये उसी दुनिया बल जानी ह। प्रकृति उमन लिये रचीन हा जाती ह चाडी दर क तिन जगत और दग का तिसाई पटन लगता ह। एन एम डी आर मैस्कोलीन जिहने तिया ता उनना स्थान आया कि हमार फ्रपियो का दबी दबना जमीन पर बन गया नजर आत थ। सम्भवत उम समय का मामरम भी इन जगा ही हागा। भाग व गाजा स घाटा hang over है, अधिन नहीं। अगर एक आदमी 30 दिन उपवास कर ता उम भा गमार्पनिक प्रभाव हाग र नी एन उम न गमान हा हाग। ध्यान

म जा श्वास लिया जाता है उससे भी घ्रावसोजन की मात्रा में घातर पडना प्रारम्भ हो जाता है, परन्तु इस डगम लने के पश्चात् शरीर व स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडता है। हिप्पीज न दो शब्द दिये ह 'Turning on' काई एक माड ह जो एक गाली टिकिया दन से सुल जाता ह दूसरा है। 'Turning off' जहाँ हम है, जिस प्रकार का जीवन हम जी रहे ह वहाँ से वही घोर मुड जाना, जिसका हम पता नहीं ह। एल्डस टवसम न एक पुस्तक लिखी ह "Doors of perceptions" उमम उमन लिखा है कि बबोर और नानक जा बह रह ह कि अमहद नाद बज रहा है, अमृन की वर्षा हा रही ह आकाश में बादल ही बादल घिर ह और बबोर नाच रहे है, यह शायद ऐसा अनुभव था जा उमको ध्यान की मस्ती में अनुभव हुआ होगा जा एल एम डी लेन पर भी एसी ही ध्वनियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं व मन हवा प्रार नया हा जाता है। साईविलक डूम से निश्चय ही रासायनिक तत्वा के द्वारा ऐसी भनक पाई जा सकती है, लेकिन भनक अवस्था नहीं ह। आदमी जसा इसमें पहिन था, वसा ही रह जाता है। महावीर बुद्ध, बबोर, नानक की जा अवस्था ह वह सत्य की ब्रह्म की, आत्मा की, मोग की निर्वाण की प्रतीति ह। उससे बाद आदमी दूसरा आदमी है पहिला आदमी नहीं है। यह अवस्था है भनक नहीं। शरावा सदा यह समझता ह कि नश में वह आनन्द में है, यह भनक ह परन्तु उसके पश्चात् की दशा उमम भी बुरी हा जाती ह। हिप्पी एक प्रतिक्रिया है विद्राह नहीं ह। विद्राह का मूल्य है। प्रतिक्रिया का नहीं। प्रतिक्रिया स्यायी गही होती गिफ सत्रमण की बात हाती ह। विद्राह विवर ह और प्रतिक्रिया अविवर ह। एक विद्राही आदमी इसलिए नहीं, नहीं कहता ह कि नहीं कहना चाहिये, बह इसलिए यह कहता ह कि गही कहना उचित है। यदि उम लगता है कि हाँ कहना उचित ह ता हजारा नहीं करन बाल के बीच में बह हाँ कहेगा। दशन व विरोध में खडे होन से काई बठिनाई नहीं ह क्याकि एक दशन का विरोध हागा ता दूसरा दशन खडा हो जायेगा। हिप्पिया न भी अपन नियम बना लिय ह, कितन बडे बात, कितनी छाटी हाफ पट, कितना छाटा ग्लाउज, कंगी माला, क्या यह सब व्यवस्था नहीं ह इसलिए यह भी दशन हा गया तथा इसका विरोध भी दूसरा दशन करेगा। दशन में ऊपर चल जाना ता रहस्यवाणिया व लिये ही सम्भव ह मन व पार जाना जहाँ में नहीं है, सत्त के लिये ही सम्भव ह।

हिप्पिया को इस बात से यह आभास हो रहा है कि मनुष्य आज के जीवन व इसकी व्यवस्था से ऊब गया ह। उमका चेहरा दुप्नीकट हो गया है, बाहर कुछ और है। जस वह जगती आत्मिया या Trial ममाज का जमा जीवन जीना चाहता है जिसे दिखाना नहीं छन नहीं, कपट नहीं प्राकृतिक अवस्था ह। बाह्य विस्तार बहुत ले गया है। अब आंतरिक अवस्था की चेतना को आदमी ग्राज रहा ह। जितनी सम्भना ता विनाम हाता जायेगा उनना हा शांति की ग्राज में आत्म

जायेगा। सम्यता की चरम सीमा पर ही आदमी व्यवस्था के प्रति विद्रोह करेगा, अतः नतिकता व लिये चेतना की राज आवश्यक है।

किशोरावस्था की समस्याएँ व उनका निराकरण

किशोरावस्था में धार्मिक अविश्वास—

किशोरावस्था में किन्हीं एक-एक विषय का ढूँढता है जिसके प्रति वह अपने हृदय की समस्त निष्ठा का ऊँचा ला सकें, उसकी पूजा कर सकें। यम यहाँ से किशोर पराथ की भावना का प्रारम्भ होता है। निमरता की भावना किशोर का धार्मिक सिद्धांतों का ग्रहण करने के लिये प्रेरित करता है। उसमें धार्मिक चेतना आ जाती है और धर्म में उसकी रुचि बढ़ जाती है। धर्म में रुचि उत्तर-वाल्यावस्था में प्रारम्भ हो जाती है। इसका मूल जीवन के बहुमुखी पान से परिचित होना होता है। यह प्रवृत्ति किशोरावस्था में आकर और अधिक विवक्षित हो जाती है। इस अवस्था में किशोर में धर्म के प्रति अविश्वास उत्पन्न होता है और वह अपनी सभी नतिक समस्याओं का समाधान नहीं कर पाता तथा उन बयोवृद्ध लोगों के आशुओं से भी उसका मत नहीं खाता। जो धर्म का प्रतिपादन करते हैं। इस वय में धर्म के प्रति अविश्वास विज्ञान व अध्ययन में भी उत्पन्न होता है जो धर्म के अधिश्चानों व अध्यात्मिक कार्यों का खण्डन करती है। अतः इस समय यह पावन वक्तव्य ही जाता है कि बालक में धार्मिक भावना एवं अविश्वास की प्रवृत्ति का समुचित समाधान कर। धर्म व विज्ञान दोनों की उपयोगिता का समझाया जाये तथा प्रतिवादी दृष्टिकोण से उन्हें सत्य बताया जाये।

एक तरफ रूडिया परम्पराय व अधिश्चान है तो दूसरी ओर नव जागरण व चेतना की विचारणी है। हम पुराने सिद्धांतों की कठु आलाचना करते हैं, उनमें सुराइया है दाप है जो हमारे समाज की उत्पत्ति में बाधक हैं। पर नये सिद्धान्तों व आदर्शों का हम ग्रहण नहीं कर पाये हैं। उनमें आस्था रखने हुये भी हम अपने व्यावहारिक जीवन में उतार नहीं पाये हैं। उसका परिणाम हमारे नवयुवकों पर बहुत बुरा पड़ता है। उनके मस्तिष्क में सघट्ट है अतः डूब है। व नये विचारों के हात है तथा पुराने सिद्धांतों से लाजस्य स्थापित करने के लिये उनमें मानसिक डूब का हाना मंज ही है क्योंकि उनमें नवीन चेतना जनित कार्यों का समाज स्वीकृति नहीं देना।

विज्ञान व विचारों का अधिक मिलन जुबन उनका सामूहिक एवं सहकारी रूप में समाजिक कार्यों में भाग लेने की सुविधा प्रदान की जावे। जब एक दूसरे के प्रति धारण स्थापित है तो उनके सम्पर्क व अभाव में जनित समस्याओं का उनका समाजिक सम्पर्क समाहित करने में ही जाना है। किशोरावस्था में गणनीय शिक्षण की परम्परा प्रयोगी है। उगम विज्ञान का काम सम्पन्न

जिगासा की पूर्ति होती है। वह अघरार म नही भटवना ह। जिम प्रकार एक डाक्टर के परीक्षार्थी का स्त्री शरीर सम्बन्धी गमन्त जातकारी ली जाती ह उमी प्रकार विशारा का भी उस सम्बन्ध म प्रौढ विद्वाना द्वारा शिक्षा ली जानी चाहिए जिमम मकम सम्बन्धी जिगासा का समाधान ह।

यौन शिक्षा और सतति नियमन

काम शास्त्र या यौन विज्ञान भारत का प्राचीन शास्त्र है। प्राचीन भारत म अथ शास्त्रा के साथ साथ इस शास्त्र का पठन पाठन किया जाता था। वात्सायन के कामसूत्र के अध्ययन म बात होता है कि प्राचीन भारत म युवका की भाँति ही युवतिया का भी काम शास्त्र का अध्ययन व ज्ञान कराया जाता था। विश्व माहित्य के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद म भी काम के प्रतीकित महत्त्व का प्रतिपादन किया



[छोटा परिवार सुखी परिवार]

है। सतति नियमन का 'काम या यौन स निवृत्त का सम्बन्ध है, अतः इस विज्ञान की उपेक्षा नहीं की जा सकती। भारतीय परम्परा म काम व पुनर्जन्म म दृढ़ विश्वास किया जाता है। मनुष्य का म का वृत्त ही दुःख माना जाता है। जीव चौरासी

यागिया म धमगा धामगा मनुष्य तम पाता = । यत्रि वट मनुष्य-जम म भी मनुष्य
 तही करता ता वह पुन एतर शूकर योनि म पहुँच जाता है । जन धमावन्वी
 यह मानत है कि जीवा की मर्यादा यदि आज मममन पृथ्वी पर दा गरव है ता वृ
 दा गरव ही रहगी । जीवा की समस्त यानियों की मर्यादा जाडन मे उसकी मर्यादा में
 कोई अंतर नहीं पडेगा । भौतिक उन्नति के कारण पाप कम बढ जान से मनुष्य का
 पुन मानव योनि म आना कम होता जा रहा है । इसलिए जितनी भौतिकता में
 उन्नति हागी, उतनी ही मानव यानि म जम लेन के द्वार बढ हा जायेमे परन्तु
 औद्योगिक विकास के कारण परावरण प्रदूषित हा रहा है जिममे जल व धन म
 जमे अनेमानक जीवा का नाश हो रहा है । वायु प्रदूषण मे मनुष्य जस तस आना
 जीवन खीच रहा है पर अय वायुचर नष्ट होत जा रह हैं । इन जीवा की अना
 मृत्यु मे एक तो योनि धारण का काल घट रहा है जिममे यह छतौग लगाकर मनुष्य
 योनि म प्रवेश कर रहे है जिममे अद्ध विकसित या निम्न विकसित ही मानवा का
 जनमर्यादा बढ रही है जो समाज के लिये अहितकर है । गत वर्षों म इतनी अशुभ
 पूव उन्नति का कारण मृष्टि की स्पन्दनशीलता, आरोह, अवरोह या मकोच विकास
 के सिद्धांत के अतगत भी हो सकता है । यह युग चूँकि विकास का ह अंत इसम
 जनसंख्या म वृद्धि होगी तो ह्यास काल मे इसम कमी आवगी । सहर का भी यही
 तरीका है । कभी यह ऊँची उठती है फिर नीचे गिरती है यह ही क्रम चलता
 रहता है ।

दशावतार का जा सिद्धांत है उसके अनुमार विकास का एक युग सगभ्य
 साड तीन हजार व. का आका गया है । दशावतार की पौराणिक गायाएँ जीवन
 विराम की मीडिया के रूप म है । उसका पहिला जीव मतस्यावतार जीव व स्फ
 रण का द्योतक है । फिर जन शन जीव विकास कर सिंह रूप म अद्ध पशु व अद्ध
 मानव के रूप म पहुँचता है । राम व कृष्ण अवतार हुए जा मानव विकास के प्रबल
 प्रतीक हात है । पृथ्वी जब एक नय अवतार के माध्यम स एक चरण आन वती है
 तो जीवन म एन उत्स उत्थान आता है तथा अचानक ही मानव मर्यादा म बद्धि होती
 है । पूव अवतार काल म उनके सम्पण म जा भी जीव जन्तु चर अचर आत है अगत
 अवतरण काल म यह सब विकास की चरम सीमा पर पहुँच कर नय नये जम ले
 कर भिन्न भिन्न रूपा मे प्रकट हात है । जनमर्यादा की अतिवृद्धि होने पर युगपुरण
 का आन की प्रबल सम्भावना हा जाती है इसलिए अय अटरी अवतार की दाट देखी
 जा रही है ।

आज का समाज युवक युवतिया की जिना यान विज्ञान की उचित तथा
 पचापन शिक्षा लिए ही उनकी सम्पत्य जीवन म बाधकर अवतार मे माग टटाना
 के लिए छोड देत है । इस अनानता के कारण आज का युवा वय अपन हृम म

उठने वाली यौन लाजमात्रा का अस्वाभाविक अनुचित तथा कृत्रिम मार्गों से अभिव्यक्त करन लगता है। इसमें वह अस्वाभाविक मैथुन तथा अथ यौन कुटियों का शिकार हो जाता है। आज के प्रयेन युवक तथा युवती का यौन मनोविज्ञान, तथा कामागा तथा सतति नियमन का पूरा ज्ञान कराना आवश्यक है। धर्म और नतिकता की दुहाई देकर यौनविज्ञान तथा सतति नियमन के प्रति मौन रहकर सामाजिक समस्याओं का समाधान नहीं अतः उसकी जटिलता को ही बढ़ाया जा सकता है। अतः आज के परिप्रेक्ष्य में यौन शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके मदुपयोग में मानव का सब ही दृष्टि में समुचित विकास होगा।

प्रकृति ने निरन्तर मृत्यु व जन्म को सतुनित रखा था। प्राचीनकाल में दम आदमी जन्मते थे, तो सात या आठ जन्म के पश्चात् मर जाते थे। पहल इतनी आबादी नहीं बनी कि भोजन की कमी पड जाय मराना की कमी पड जाय। आज स्थिति बिल्कुल उलटी हो गई है। आज विज्ञान की सज व आधुनिक उपचार विज्ञान (Medical Science) ने इतनी उन्नति कर ली है कि आज दम बच्चे पैदा होते हैं तो उनमें से एक बच्चा ही मर पाता है। अकाल महामारी प्लेग हैजा मलेरिया, चेचक सब पर नियंत्रण कर लिया गया। हमने मृत्यु के बहुत सारे द्वार बंद कर लिये और जन्म के द्वार सब खोल दिए। परिणाम यह हुआ कि मृत्यु जन्म के बीच जा मतुलन था, वह समाप्त हो गया।

भारतवर्ष की जनसंख्या इस समय 1986 में 74 करोड़ है। दम वर्ष पश्चात् यदि यही वृद्धि की गति रही तो जनसंख्या 95 करोड़ हो जायगी। पृथ्वी के नीचे पहाड़ी कदराओं में छिपे हुए समुद्र की सतह में छोड़े गए बहुत सारे ऐसे पशुओं के अस्थि पजर मिले हैं जिनका अब कोई नामोनिशान नहीं है। आज में दम लाख साल पहल पृथ्वी पर बहुत से ऐसे प्राणी थे जो हाथी से भी पांच व दस गुणे बड़े थे। उनका छोटा प्रतिनिधि केवल मात्र एक छिपकली रह गया है। व इतने अधिक बढ़ गए कि उनके लिये भोजन, पानी, स्थान कम पड गए। इसलिए उनका आभूल नष्ट हो जाना पडा। यदि जनसंख्या इस ही गति से बढ़ती रही तो न हम सभा करने की आवश्यकता रहगी, न मेला की। सब स्थान मानव से भर जाएंगे।

यदि हम 100 बंदरों को कठपुतली में बंद कर दें तो वे विभिन्न हो जाएंगे। वही प्रचार आज बड़े बड़े नगरों में छोटे छोटे कमरा में 10 में 15 तक आदमी रहते हैं व आज पागल नहीं हो रहे हैं तो कल पागल होना प्रारम्भ कर देगा। मनुष्य का घूमने के लिए खुला व अकेला स्थान चाहिए। वह नहीं मिलेगा तो क्या होगा, कविता गीत चित्र, प्रार्थना प्रेम ध्यान सब एकांत में हुए हैं व फूल फल हैं। जनसंख्या जितनी बढ़ी है व्यक्तिगत उतना ही कम हो जाता है। भीड़ द्वारा ही मंदिर, मस्जिद तोड़े गए हैं। हत्याएँ बनाकर ताड़ पोट सब भीड़ द्वारा ही किए गए हैं। यदि भीड़

नारे लगाती है ता आप भी नारे उगाने हैं। जय भीड़ तेज चरती है तो आप भी तेज चरत हैं। भीड़ सन्नामस है वह पुछ भी करवा लेनी है। इससे व्यक्तिव का हा गायगा। हा सगता है जि हम गमुद्र स भोजन निराला गवें, मिट्टी म भी खान निराला जा गय सिफ गालिया खानर ही जी गवें। परतु आज जा लोग सन हा रह है व भीड़ के दबाव को उही मह पा रह हैं, मन दबाव को सहन नहीं कर पा रहा है अत इस समाज मे मुक्त होन का प्रश्न है। 1947 म भारत और पाकिस्तान की मिलकर जा जनसंख्या थी, आज अवेने भारत की उससे बहा ज्यादा है। आज जम दर 1000 म 34 है तथा भारत सरकार का यह प्रयास है कि यह घट कर 21 हा। परतु इमम कई अटकचनें हैं। व हैं 'गरीबी और अक्षिया। गरीब के पास मनारजन का एर ही माधन है योन, (Sex)। यदि इसे नी बर कर लिया जावे तो वह मर ही जायेगा। यदि वह मिनेमा देखे, टलीविजन देखे, किताबें पढ़े, संगीत सुन व नाचे गावे तो रपया खच हाता है, वह रपया वह कहीं से लावे? लो ब्रह्मचय की वान करने है। गरीब समाज के लिए ब्रह्मचय की बात व्यथ है। परमाण्व की खोज म कोई चला जाव ता ब्रह्मचय को उपलब्ध हा सकता है परतु ब्रह्मचर से कोई परमात्मा की तरफ नहीं जाता। योन (Sex) की वक्ति स मुक्त हुमा जा सकता है अगर योन से निकलने वाली शक्ति को किसी और दिशा म प्रवाहित कर दिया जाव।

एक वचानिक, एक चित्रकार एक समीक्षक, एक कवि, एक कलाकार, एक मजदूर बिना ब्रह्मचय के जीवन म मुक्त हा सकता है क्याकि उसकी सारी शक्ति सारी योन की ऊर्जा एक लक्ष्य की ओर लग जाती है। उसकी सारी शक्तिया इतनी तीव्र हो जाती है कि उसके पास योन की दिशा मे सोचने के लिय न शक्ति का बहाव वचता है न ही आवाग्ना। ब्रह्मचय की वान आज के इस युग म अवज्ञानिक और अप्रव्यावहारिक ह। कृत्रिम साधन जो परिवार कल्याण के अतगत मुभाए जात हैं यदि उनका उपयोग किया जाव तो मानव बिना किसी चित पर दबाव दिए जम से बचा जा सकता है।

पुत्रपोतभदास टडन ने जब सजुराहो व कोणाक में युगल प्रेम म निव मूर्तिया का दखा ता उहान कहा कि इन पर मिट्टी पात कर बंद कर दिया जावे। परतु क्या इन पर मिट्टी पोतन से मनुष्य इस गरी मे मुक्त हा सकता है। सजुराहो दशन के निय जो भी यात्री जाता है वह इन युगल श्रीडा म लिप्त मूर्तिया को देखे जिना नहा रह सकता क्याकि उनने भीतर बठी जिनासा व काम प्रवृत्ति की ती वे नहीं लग सकता है।

गवस (योन) का आज तक स्वीकार नहीं किया गया। जिसमे जीवन का ज म हाता न, जिगम जीवन के बीज पूटत हैं जिसत जीवन के फूल तिनत हैं

जिससे जीवन का सारा नृत्य है उम मौलिक प्रवृत्ति को अस्वीकार कर दिया गया है। क्या यह मानव मात्र में ही है। फूल हो, पशु पक्षी हा, बीज हा, पीधे हा इन सब में सबम है। आपका मन निपरीत सेक्स का दम कर ही आपणित नहीं होता है। फूल, पीधे व प्रत्यय मुन्दर वस्तु को देखकर मन आपणित हाता है क्याकि आपके मन के भीतर छिपा हुआ प्रेम (Love) है सेक्स है।

जा लाग आदमी को दमन के द्वारा, वजना के द्वारा नतिक बनान का प्रयाम कर रहे है, व भूल कर रहे हैं। उनका कहना है कि फिटमा मे नगी तस्वीर नहीं हानी चाहिए, पास्टर अश्लील नहीं हान चाहिए चुम्बन कितना लिया जावे इन पर सरकार नियंत्रण कर। फिर भी पोस्टर अश्लील हात जा रहे हैं। माता पिता, पुत्र व पुत्री सब एक साथ बठकर 'चित्रहार' में युगल प्रेम व युगल नृत्य देख रहे हैं, अश्लील पुस्तकें घडाघड गिन रही हैं और उका धार्मिक पुस्तका के अदर रख कर छुपकर पढा जा रहा ह। स्त्रिया के अद्भनग्न चित्र छपी हुई फिटमी पत्रिकाएँ घडाघड गिन रही हैं ब्लू फिल्म देखी जा रही हैं। हाटला मे क्या कुछ नहीं हो रहा है जिसमे युवक व युवतिया छिपकर भाग न रहे हैं। आगिर ऐसा क्या होता है ? इसलिये कि युनियाद में आदमी की माग है कि अश्लील पोस्टर लग अश्लील फिल्म बने, जितना अश्लीलता का प्रचार किया जावेगा उतनी ही सिनेमा में भीड अधिक होगी। House full का बाड लगा होगा। जितनी इसकी वजना की जायगी जितना मेक्स पर राक लगायी जावेगी उतना ही आज का नवयुवक और भी कामुक मे कामुक हाता चला जायगा।

इटली दश के मन्चे देश भक्त मैजिनी का कथन है कि दश का भविष्य उमक नवयुवको पर ही निर्भर है। जिम देश के नवयुवक बराहीन और अशक्त होते हैं वह देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। कारण ता अनेक हा सकत ह परंतु एक कारण यह भी है कि हमारे दश के नवयुवक यौवन विनाम (Sex) सम्बन्धी बातों से निनात अनभिन्न हैं। शारीरिक और मानसिक उत्थान के लिये कुछ विशेष शारीरिक और मानसिक नियमा का जानना बहुत आवश्यक ह। हमारे कुछ अग प्रत्यग एमे हैं जिनको अनुचिन रूप से व्यवहार किए जाने की अधिक सभावना है और वे हमारी जनद्रियाँ हैं। यौवन के पूर्व किशोरावस्था में ही कामोद्देक उत्पन्न होना आरम्भ हो जाता है। परंतु जिनका अज्ञान के कारण दम अवस्था का पर्याप्त ज्ञान नहीं हाता वे जीवन में अनेक आपत्तिया में पड जात हैं। भारतवर्ष में यौन सबधी बातें नवयुवक व नवयुवतिया में छिपाकर रखी जाती हैं। यदि वे जानना भी चाहत ह ता उनसे मात पिता शिक्षक या दूमरे अभिभावक इत्यादि गना प्रकार के बहाने बनाकर टान लेत हैं क्याकि यौन सम्बन्धी बात बनाना भारतवर्ष में अश्लील समझा जाता है।

दिशा में जा भारतीय धूमर आए हैं उनका कहना है कि हाटना व कलम इस प्रकार की विम दिग्गई जाती हैं जिनमें जनद्रिया का पूरा जान लिया गया है। विम ही नहीं प्रत्यक्ष में दिग्गया जाता है कि जनद्रिया का क्या उपयोग है। जैसे एक बाजीगर राजा में गढ़े होकर वही प्रचार के दृश्य दिखाता है एम हाटों पर वही श्रय दिग्गए जाते हैं जिनका उरनेम यहाँ पर करना समीचीन नहीं होगा।

दो एम व एकर ने एक प्रश्न एक हजार नवयुवका से पूछा कि उन लोग का जनेन्द्रिय सम्बन्धी जान पहचान पहचान कहाँ से मिला। 674 युवका स उत्तर मिला। 617 म म 544 युवका को यह जान अपने मित्रा से प्राप्त हुआ। 33 का कुसगति में और शेष का कहानिया उपयोग मिनमा तथा दूसरे लोग की बातचीत स ए जान प्राप्त हुआ। 37 नवयुवका का यह शिष्या पहल पहल अपने माता पिता स ए हमरे निवट मध्य घिया स मित्री। 14 नवयुवका का अपने मगे भाइया म 3 को अध्यापका से और शेष तीन को व्याख्यानों म यह शिष्या मिली। इससे यह जान हुआ कि 915 प्रतिशत नवयुवका को मौन सम्बन्धी विषय का जान पहल पहल अपने मित्रा और कुसगति से मिला। इससे यह निष्कर्ष निकला कि इसको जितना ही छिपाया जाय यह जान कही न कही में अवश्य प्राप्त कर लते हैं। कुसगति या बुरे मित्रा स गलत तरीके से जान लेन पर वे अपना जीवन नष्ट कर लते हैं जिसे समान और देश दोनों की हानि होती है।

जब घर में कोई बच्चा पला जाना है तो घर के छोटे छोटे बालक यह बचन पूछने हैं कि यह बच्चा कैसे पदा हुआ और कहाँ से आया। ऐसे समय उसकी शता समाधान करने के स्थान पर उस बुरी तरह स ताडना मिलती है। तो वह समझता है कि इसमें कुछ रहस्य है। रहस्य जानने की जिज्ञासा हाती है तो अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए प्रयत्न करता है तथा बुरी मगत में पडता है। अत अध्यापका का दायित्व है कि वे देश, समय, स्थान तथा बालको की अवस्था के अनुसार जिन प्रकार में उचित समझें, इस विषय की शिष्या दें।

मान ना एक घर में एक कुतिया के अतिरिक्त दूसरे दिन ही बहुत स छोटे छोटे पिल्ल दिखलाई पडते हैं जो कुतिया के स्तन स मुह लगाए हुए उसका दूध पी रहे हैं ता बालका के आश्चर्य की सीमा नहीं रहेगी। वह इस सम्बन्ध में प्रश्न अवश्य करेगा। यदि इससे इस प्रश्न का उत्तर ठीक ठीक न दिया गया तो वह बालको को संतुष्ट करने के लिए इस प्रश्न के उत्तर की आशा दूसरे तागा से अवश्य करेगा। एक गलत न अपनी गनवती माता से पूछा अम्मा तुम्हारा पेट क्या फूला है। माता ने बच्चे का फुगजाने के नियम कह दिया कि उम एक राग हो गया है। पिताजी ने पूछन पर उहान उस डाट कर बाहर निकाल दिया। जब बच्चा उत्पन्न हुआ गया त उमका जिज्ञासा यह कह कर शांत कर दी गई कि ईश्वर ने बच्चा ला कर मरी

शोध में सुला दिया। परन्तु इसमें उस बालक की जिंदाशा शांत नहीं हुई। यदि इस बालक को पेट फूलने का कारण मरल भाषा में वनस्पति जगत तथा पशु पक्षी का उदाहरण देकर समझा दिया जाता तो अच्छा होता।

हमारे पुरखे, हजारों साल की पीढ़ियाँ, इस यौन चान को देन में भयभीत रही हैं। आवश्यकता है इसे समझने की, युवका को समझाने की। क्या है इसकी यंत्र रचना (Mechanism), क्या है उसकी आकांक्षा, क्या है प्यास, क्या है उसके भीतर छिपा हुआ भेद। जितना युवक इसको समझेगा उतना ही स्वस्थ हो जायेगा, मेवम में छुटकारा पा जायेगा।

अब एक दूसरे के प्रति आनन्दपूर्ण स्वाभाविक है तो उनके सम्पर्क के अभाव में जनित समस्याओं का समाधान उनके सामाजिक सम्पर्क स्थापित करने में ही हाता है। किशोरावस्था में काम सम्बन्धी शिक्षण भी परम उपयोगी है। उससे किशोर की काम सम्बन्धी जिंदाशा की पूर्ति होती है। वह आनन्द में नहीं भटकता है। जिस प्रकार एक डाक्टरों के परीक्षार्थी को स्त्री शरीर सम्बन्धी समस्त जानकारी दी जाती है उसी प्रकार किशोरा का भी इस सम्बन्ध में प्रौढ व विद्वानों द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिये जिससे मैक्स सम्बन्धी कुटा व जिंदाशा समाप्त हो।

नशीले पदार्थों का कुसेवन—घनाढ्य व सम्पन्न व्यक्तियों के किशोर बोरियन बोरियत चिल्लाते हैं। इस निमित्त बोरियत का तोड़ने के लिये वे बहुत सार समाज विरोधी कार्यों में लग जाते हैं, उनकी यह भावना हा जाती है कि ऐसा काम करें जिनसे उन्हें श्रित, मिले इस प्रकार के किशोरा में शक्ति के अतिरिक्त उनमें सरप्लस शक्ति होती है उसका उपयोग नहीं होने पर वे बोर हाते हैं और बोरियत तोड़ने के लिये वे नशीली दवाइयाँ का प्रयोग करने लगते हैं।

पिछने एक दशक से नशीले पदार्थों का जितना उपयोग बढ़ा है उसमें ऐसा लगता है कि धीरे-धीरे आध्यात्मवाद का विश्व गुरु कहाने वाला देश नशीली वस्तुओं के द्वारा हान की चरमसीमा तक पहुँचने वाला पूर्वी देश में सबसे पहला और बड़ा देश हागा।

नशील पदार्थों में टैरोइन, पथेडीन, माफिन, अफीम मैडिकस, काकीन आदि विशेष रूप से युवा पीढ़ी में अपनी जड़ जमाने में सफल हुए हैं। अब इसमें स्मैक नाम और बढ़ गया है। वास्तव में स्मैक अब नशीली वस्तुओं का सामूहिक नाम है। विश्व व बड़े बड़े देश इसी स्मैक के अपराधीकरण में चिंतित हैं। नशीले पदार्थों के द्वारा ताता और बराडा का तस्कारी करने है। इस तस्कारी में भारतीय अपराधवृत्ति के लाग भी कम सख्या में नहा है। इस धृणित व्यापार में बम्बई, दिल्ली, कानकता और मद्रास जस महानगरो व नाय साथ गावा, इन्काल वाराणसी, हरिद्वार की कदराएँ

अनुमत्त 'गीत' और गीतावाणी प्रदेश, राजस्थान के गिम्ता मुख्य रूप से वर्तमान स्थान है। तुल्य गेणवर अपराधी बच्ची उम्र के बयस्क या धवयस्क पर इमका प्रर वरत है। धीर धीर एम युवत म्मैर की रत के शिकार हा जात है। फिर उन्न द्युत्वारारा पाना उनर लिए अमभव हो जाता है। नया न मितन पर य चोरी, दस्ता हत्या और इमी प्रवार के अपराध करत हैं तथा उसम प्राप्त घन का नमान पार्थी के मेवन म लगा दत है। विश्वविद्यालय के युवक युवतिया और उनम मम्बन्धि मित्रा म नशीनी वस्तुमा का मवन एव प्रवार का पशन बनता जा रहा है वा भविष्य म पूर दश के लिए एक दुश्चरित्र पीढी के निर्माण का कारण बन सक्त है। स्कूला और कालेज क विद्यार्थिया पर मादकता का कितना भूत मवार उमका नमूना दगिया—विद्यार्थिया का एक दल कमर म परिचमी संगीत की इन पर याता म गौह डालकर नशे मे घुत्त थिरक रहा है। तभी एक विशार मन्ता के भूमत हुए एक भूग पाउडर मुह म डारकर पागला की तरह हँमने भूमने लाता है। उमके माथ कई और बच्चे उम स्वग म या जान के लिए पुडिया मुह म लगा लते ह। इतन म दूसरा चिन्लाता है स्वग की तलाश मे तो यह पुडिया उम माथ गर्मी के नाम पर ले रहा हूँ जिसम पट म नूरज के विस्फाट जमा मुख मिल, और इमी के माथ संगीत की तज घुन म कमरे का हर बच्चा मादकता की सहारा पा चढने उतरने गता है।

शिली के अपराध विज्ञान के एक विशेषण ग एम जेड खान न अध्ययन के अनुमार नशे की आदत बच्चा के स्कूली दिना के दौरान पडती है। ऐम मामल बन ही कम सामन आते हैं गत्र बयस्क हान पर कालेज मे बह पगी हा।

डा खान का अध्ययन जबलपुर के 4400 लडके व लडकिया म प्राप्त जान कारी पर आधारित है। इन पर उहाने एक पुस्तक Drug Among College Youth भी लिखी है जिसका हाल ही म प्रकाशन हुआ है। उनके अनुमार नशे की लत स राष्ट्रीय बडटकार तथा राष्ट्रीय समाज सेवा के कडट भी दूर नहीं हैं। इन कडटा म भाग तम्बाकू बहुत ही लाकप्रिय हैं और व इन पणार्थों को वेन किलर बताते हैं।

शराबखोरी—पीना क्या ? किसी जाने या अनजान आप किसी दुर्ग स्थिति म बचन न निग अस्थायी मानसिक शान्ति के लिए, जान बूझकर अपन मन्तिष्क की चेतनावस्था का साकर अद्व चेतन अवस्था या अपने आपका पूरा चेतन मे परे की अवस्था म ल जान की प्रिया ही पीना है। लाग क्या क्या पीत है ? शराब गाजा, चरम भाग, अफीम, काफान, हशीश, ताडी आधी एथिल, एल्वाहन या एथो नाल अथवा अन्न एल्वाहन या स्पिरिट (Spirit)। प्राचीन आर्यों का सामरम धार प्रतिष्ठा क पय ताडी थ। एल्वाहन पय जस वियर ह्विस्की और जिन जी म, वादन पाट और ग्राइ अगर स, साडर सब स, धार रग शीर स बनती है। परतु एल्वा

हल उबका जमनाता ह । घापका आशय हागा कि पीन की वस्तुधा म सीमा, पारा और भ्रसेनिक और मैनीज विप हात हुए भी शामिल ह । वैसे लोग सलिया का भी नहीं छाडते है ।

मनावपानिका का कहना है कि लाग इमलिए पीत हैं त्रिमम मानसिज तनाव भय चिन्ता, निराशा दुखद समस्याधा व मघर्षात्मक परिस्थितिया स बचा जा सक । पीन वाला एक कष्टजय स्थिति का मामना नहीं कर सकता क्याकि वह दिल निमाग स कायर है । जब व्यक्ति नशे म हाना है ता वह अप्रिय विचारा स मुक्ति पा जाना है । परन्तु यह सब अन्यायी हाता है और नशा उतरन व पश्चान् व्यक्ति अपनी वास्तविक परशानिया से फिर घिर जाता ह । पीन म मादकावम्या इतनी हा जानी है कि वह अपराध, हत्या या आत्महत्या तज कर सकता ह । नश स पान ध्राति हा सकती ह जिमम नील न घाना, भग न लगना, नाडी की गतिम ग्ना प्राति ह । इसने मानसिक लक्षण है भ्रम विभ्रम हाना जस त्वना पर पाड पडना, लकव का आभाम हाना, उमरी ममस्त संवेदना अगनुजिन हा जाती ह । शराव पीन बाना का बसर रोग हा जाता ह ।

नशीले पदार्थों का सेवन करन वाले अनेक अस्यस्थ व्यक्ति चाह कर भा माा मिक बमजारी व वारण इस छाड नहीं पात है । उनक हाव पर उनक शरीर म एक विशय प्रकार ती पीडा का अनुभव हाता ह । उनक बाल बच्च, पत्नी माता पिता उनका इम स्थिति म परेशान हा कर कभी स्वय भी इनक निय नशीले पदार्थों की व्यवस्था करते हैं अथवा मरणमग्न अवस्था म पहुँचे व निराश हताश व्यक्ति भीग मीगन लगत है, जय काटते है, चारी करत है । उनके घर बचा हा जात ह । बीबी बच्चे मूना मर जाते है ।

भारत सरकार न नशा छुडान के लिए विभिन्न कानूना का म्थापना की ह । इन कानूना म ये उपकाराय दातिल भी हात हैं । व अपनी आदत पर पश्चाताप भी करत है । नशा छाडना चाहत है । परन्तु इनकी विवशता इस पान के लिए मजबूर करती है । समाज को इस बुराद क लिये आन्दोलन करना चाहिए । इस सबध म कठोर नियम बनाने चाहिए, अथवा यह दुःप्रवृत्ति समस्त तज का खोपला कर दगी ।

अच्छी सगत

जय काई युवा पुरुष घर स बाहर निकल कर बाहरी मसार म अपना स्थिति जमाना ह ता उसके जान पहिचान व लाग धडाधड बढत जात ह आर थाने ही दिन म कुछ लोगा का उसस हलमेल हो जाता ह । यही हलमेल बढत उढन मित्रता के रूप म परिणित हो जाता है । वन आशय की बात ह कि लाग एक धानी नन ममय उमके गुण दाप का परवत है पर किसी की सगत करत

उमके पूर्व आचरण और प्रवृत्ति धारि का कुछ भी विचार और अनुमान न करना। जो नाम अपना सम्बन्ध अच्छे बताता जाता है, उन अपने किन्हीं बातों व आचरण पर भी दृष्टि रखनी चाहिये। उम यह ध्यान रखना चाहिये कि उनकी बुद्धि और उनका आचरण ठीकान का है। माधारणतया हम एक धारणा का साथ नहीं करना चाहिये जिसमें हमारी विषयना की गति मंद हो, भ्रम-भ्रम विषय धीमा हो। जीवन केवल हमी ठट्ठा, गा प्रजावर वाटना, गपगप करता है नहीं है, जीवन में गम्भीर बातें और विपत्ति व समय भी आते हैं। महाराणा प्रताप की भाँति सबके म दिन वाटना वाजिदमली शाह की भाँति भोग-विलास कर स भ्रच्छा है। शिवाजी के गवारा की तरह चन चौध कर चलना, औरगवर व सवारों की तरह हमारे व पानपान के साथ चनो में भ्रच्छा है। हम यह जीवन बन वक्त व्य पालन के लिय दिया गया है, जो आदमी अपना वक्त व्य पालन नहीं कर सकता, उसका जीवन व्यथ है।

लागता हमारी जमी सगत हागी वगा ही हम गमभेंगे पर। हम अपने कार्य में भी सगत व अनुसार सहायता व वाता पहुँचेंगे। यदि हमारी सगति भ्रच्छा न हो हागी तो उसका प्रभाव हम पर बराबर हर घडी पडता रहगा और उसका अनुसार हम उनत व अबनत हगे।

जान पहचान व लाग एम हा जिनमें हम कुछ लाभ उठा सगत है, जो हमारे जीवन का उत्तम और आनंदमय करन में कुछ सहायता दे सगत है। यदि व एम हा जो हमारे लिए कुछ नहीं कर सगत न कोई बुद्धिमाना या विनाश का बातचीत कर सगत है न गाइ अछ्छी बात बतला सगत है न सहायता द्वारा है डाडम बधा सगत है न हमारे आनंद में सम्मिलित हा सगत है, तो हम उनसे दूर ही रहना चाहिये।

आजकल जान पहचान बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है। कोई भी कुछ पुरूप एम अनज पुरूप का पा सकता है जो उनके साथ थियेटर देखने जायग नच रंग में जायग, सर सपाट में जायग। पाठिया में सम्मिलित होग, यदि एम लोग त हानि नहीं हागी तो लाभ भी न होगा। पर यदि इन लोगो में से कोई मनचल युवक निकल आवे जो अमीरा की बुगइया और मूलताप्रा की नजल किया करत है दिन रात बनाव शृंगार म रहा करत है कुलठा स्त्रिया की सगत करत है सनाया में व्यथ की बाह बाह किया करत है गलिया में आवागर्दी करत हनी ठट्ठा करत है और मिगरेट का धुँआ उठाते चलत है शराब व आधुनिक नशीली वस्तुआ में मगन करत है नचमग मिलन पर पाकिटमारी व लागो को ठगन का काय भी करत है एम नचयुवका में बढकर शूय व निस्सार और सोचनाय पालन और किसका है।

एसे युवका के लिय न ता ससार म अच्छे कवि हुए है और न अच्छे आचरण वाल महात्माआ का महत्व है । उनके लिय वीरा या तथ्यकारा विचारो स काई लेना देना नही है उह फूल पत्तियो स सौंदय नही, भरना के कलकल म मधुर संगीत नही, उनके भाग्य म मच्ची प्रीति का सुख और कामल हृदय की शांति नही ह । उनका मन सदब कुत्सित विचारा और इन्द्रिय विषय म ही लिप्त ह, एस प्राणिया का संग, जा अपना आचरण बनाना चाहत हा उनको नही करना चाहिय ।

कुसग के दुष्परिणाम—कुसग का ज्वर सबसे बडा भयानक है, इसस प्राणी का चरित्र और सद्वृत्ति का ही नाश नही होता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय होता है । युवा पुष्प की संगति बुरी होगी ता उमे दिन दिन अपनति के गण्डे म गिराती जायेगी । उसका अपन वश अपनी मर्यादा आदि का कोई ध्यान नही रहेगा और यह अपनी ससारी सम्पत्ति खोकर दर दर का भिखारी हो जायगा । यदि अच्छी संगति हागी ता उसे निरंतर उन्नति की आर उठाती जायगी ।

ग्रहुत से लोग एस हात है जिनक घडी भर क साथ मे भी बुद्धि अप्ट हाती है, क्याकि इस घडी भर म ही एसी एसी कुत्सित गालिया, एसी भद्दी बातें वही जाती हैं जो काना म नही गडनो चाहिय । चित्त पर एस ऐम प्रभाव पडत ह जिनस उसकी पवित्रता नष्ट हा जाती ह । बुरी मगत क कारण ही प्रारम्भिक अवस्था म ही युवक हस्त मैथुन जस विकारा से ग्रस्त हाकर अपना शोय नष्ट कर दत हैं ।

बुरी बुरी बातें हमारी धारणा म बहुत दिना तक टिकती ह, भद्दी दिल्लगी क फूहट भीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढत हैं, उतनी जल्दी वार्ड गम्भीर अच्छी बात नही । सिनमा, टी वी आदि पर जो कामुक दृश्य दिखाय जात ह उनका प्रभाव तो बचपन म और भी स्थायी हाता ह । एस दृश्य बटे हान पर भी उसक ध्यान म बार बार आत रहते है । जिन भावनाआ का हम दूर करना चाहत ह, जिन वाता का हम याद नही करना चाहत क बार बार हृदय म उठकर दुस पहुँचाती ह । एस लागे को कभी साथी न बनाओ जो अश्लील, अपवित्र फूहट वाता स तुम्ह हँसाना चाह । यदि एक दफा भी इनके साथ हो गए यह साचकर रि आग इनक साथ नही रह्य, इनका सुवार देगे जब एक दफा किसी बुर क साथ रह जायेंग ता आग उनकी बुरी बातो क अम्यस्त हात हात उनसे चिठ नही मालूम होगी । हमारा विवक कुण्ठित हा जायेगा और हम भल बुरे की पहचान न रह जायगी और अत म हात-होत हम भी बुराई क भक्त बन जायेंग । किसी कवि न ठीक ही कहा है—

बाजल की कोठरी म कँस हूँ सयानो जाय,
एक लीक बाजर की लागिहै प लागहि ।



राजल की बाठागी म गया घादमी नहा जान ह क्याकि उमम जन मदव वाली तकीर लग री जाती ह । पुरी गगन बरन पर उमका प्रभाव प्रता हाता हे ।

मनुष्य सामाजिन प्राणी है, समाज क प्रिना क्ट रह भी नहा सक्ता । मना म मम्मिलित हान म हमारी समभ यदनी हे, हमारी विवेक बुद्धि तीव्र हाती हे, हमरी सहानुभूति गहरी होती हे, हम अपनी शक्ति क उपयोग का अन्याम हाता हे, हम पालन का अन्याम हाता हे, स्वाथ याग करना मीगने हँ सद्गुणा का प्रार क्त और सुन्दर चालचान की प्रशसा करना मीगने हे, इसालिय शिबिर का प्रारण होता ह सामूहिक यात्राए की जाती ह, जहाँ पर गुणा क विरसित हान का प्रसर प्राप्त हाता ह ।

अच्छे साथी बनायेँ—गाथो हा ता प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय क हा, मृदुल और पुष्पार्थी हा शिष्ट प्रार सत्यनिष्ठ हा जिगत हम अपन का उन भरामे हाइ सार हा और यह विश्वास कर सके कि उनम रिमी प्रकार का धाया न हागा । कन कहा हे कि, आचरण स्पष्ट हो मनुष्य जाति की पाठशाला हे, जा कुछ बह उमम सीपता ह और किमी स नही ।'

युवक और युवतियों का उम चान अग्रहार की अवहलना करना चाटिय जो भने प्रान्तिया क समाज म आवश्यक समभी जाती ह । उहा के प्रति सम्मान, प्रार मरुता का व्यवहार उरातर वाना के प्रति प्रसन्नता का व्यवहार, और छोटा प्रति कामनता का व्यवहार अच्छे प्राणिया के लक्षण ह ।

वामुकता उत्पन्न करने वाली परिस्थितियाँ—प्राज के युवक युवतिया और यहा तक कि प्राइ व्यक्ति भी बुरी सगत क कारण फिल्मी पुस्तकें, वामुकता उपन्न करने वाले उपयास जाभूमी पुस्तकें क हकी पुस्तकें पढा करत ह । प्राज जहाँ तहा बाजार म एसी पुस्तकें विराय पर भी मिल जाती ह । जब तक यह पुस्तका का पूरा नही पढ तै उनका भाजन करना भी अच्छा नही लगता माना यहाँ उनक संग साथी ह । इस प्रकार की पुस्तकें पटन से उनका मन मदा वामपूण विचारा से भरा रहता ह । मन वनना चवन हो जाना ह कि किमी भी काय म स्थिरता की प्राप्ति नही हा पाना । म प्रकार के उपयास क पुस्तकें पढने से उनम वामुन क मारघाड की भिम दमन की प्रवृत्ति प्रबल हाती ह तथा क एमी वामुन क वीभक्त फिल्म जा सरकार स प्रतिवधि त ह उनका रिप रिप कर की टी प्रो पर दगते हे । इनका मन स नवयुवक क नवयुवतिया की पवित्रता सदहपूण हनी जा रही ह । ना नाम अपना सताना का नतिर पतन स बचाना चाहत ह क म प्रकार का फिल्म न दलन द ।

सगत में पडन से पान यान का भी रिवाज बढ गया है। पान यदि कभी कभार खाया जावे तब तो बुरा नहीं है परंतु यदि यह आदत में आ जाता है तो हानिकारक है। पान खाने वालों का धूमन की आवश्यकता होती है। इससे व यहाँ वहाँ धूमन ही रहत है। इससे राग का उद्भव हाता है। आदत छोटी होने पर भी इसके कारण बहुत सा धन व्यय में व्यय हो जाता है। इसी व कारण जदा व कोबेन आदि नाना प्रकार की नशीली वस्तुआ का प्रयोग हाता है जा स्वास्थ्य के लिए हानिकर है।

बुरी सगत में पडन से धूमनपान भी बुख्याति प्राप्त दुव्यसन है। इससे फेफडा की हानि और नयनों की ज्याति शीण हाती है वीय द्रवीमूत हान लगता है और सन्तान निबल और रागी होती है। स्मरण शक्ति का ह्रास हान लगता है और कफ के आधिक्य हान व कारण कई भी भाजन अधिक प्रभावकारी नहीं हाता है।

लास एजिल्स में धूमनपान पर बडा प्रतिबन्ध--15 अप्रैल 1985 से नगर में धूमनपान आदेश लागू हा गया है। इसके तहत धूमनपान पर अनक प्रतिबन्ध लगाए हुए है। अध्यादेश के अंतगत पाच या उमस अधिक कामगारों वाल सभी व्यापारिक प्रतिष्ठानों का अपने यहाँ धूमनपान मुक्त क्षेत्र बनाना हाया। इसके तहत कमचारी विश्राम गृहों, सीडिया, व चिकित्सा कक्ष में धूमनपान नहीं कर सकेंगे। कामगारों के दा निहाई स्थला का धूमनपान वर्जित क्षेत्र घोषित किया है। केवल निजी कार्यालय, रेस्तरा शराबघर व हाटला को इससे छूट दी गई है।

एक पत्रिका न विश्व स्वास्थ्य मगठन व हवाल स बताया है कि प्रतिबन्ध विश्व में नौ लाख लोगों को तम्बाकू के सेवन से कैंसर होता है। विकासशील देशों में जिस ढंग से तम्बाकू का बित्री व लिय प्रचार किया जाता है उससे वहाँ यह रोग और भयकर रूप ले लेगा। पट और फेफड़े के कैंसर व मामल सबसे अधिक मिलत है। पुरुषों में फेफड़ों का कैंसर काफी तेजी से बढ रहा है। विश्व के 24 हिस्सों में किय गय अनुसंधान पर यह अध्ययन आधारित है।

भारत सरकार की तरफ से विज्ञापन निबन्धता है 'धूमनपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' परंतु साथ में उही पत्र पत्रिकाओं में सिगरेट के लाखों रुपए के विज्ञापन निकलत है। नगर व कस्बा में जगह-जगह पर सिगरेट के विशाल हाडिंग व पोस्टर लग हुए मिलेगे। कसी नीति है। एक तरफ तो कहा जाता है कि चार से सावधान और दूसरी तरफ चार का चारी करने लिए उकसाया जाता है। इस प्रकार धूमनपान पर राक नहीं जगगी अपितु इसका प्रसार बढता ही जायगा।

लास एजिल्स के समान ही भारत में भी ऐस कानून बनाय जावें जो विद्यार्थी बीजी सिगरेट पीत हा उनका विद्यालय में प्रवेश नहीं लिया जाव। कार्यालय, कारखान, अस्पताल, विद्यालय वस, रेल व इनक स्टेशनों व स्टण्ड

स्टडियम आदि को सीमित क्षेत्र बना दिया जाये जहाँ पर न तो बाड़ी सिगरेट या बिस्की हा और न कोई इसका पीये। विनापन पर कड़ी पावनी हा। यदि इस कानून का कडा पालन किया जावे ता जा व्यक्ति फेफड़े के कंमर स मर रहे हैं उनपर काफी कमी आवेगी और साथ ही इस विषय का पीन व लिए व्यक्ति जा कडा कंमर का पमा यच कर रहा ह उसकी यचन म पालन पापण उचित प्रकार स हा जापगा। सभास्रा म घूम्रपात क कारण वातावरण दूषित हा जाता ह तथा इसका सवन नहीं करन वालो को भी दुष्परिणाम भुगतना पडता है।

जुम्मा—यह भी बुरी सगत के कारण प्रचलित दुगुणो म स एक है। यह विविध रूपा म पाया जाता है। कलवा व मस्थास्रा द्वारा आयाजित मेला म भी इसका आयाजन हान लगा ट। लाटरी भी इसका एक रूप है जिसम पढा विद्या समाज भी अपन धन का अपव्यय करेता ह। हमारा इतिहास इसना साप्ती ह। महाभारत का प्रलयकर संग्राम इसी खूत ब्रीडा के कारण हुआ जिसन हमार देश की सत्त्वति का अपार हानि पहुँचाई। युवक जत्र बुरी मगति म पड जाता ह ता वह युवा खलन लगता ह। काम, क्रोध, हत्या, चारी अपनी सम्पत्ति व घर की दुदशा घाति न जाने कितन विनाशकारी पाप इसम अंतनिहित ह। यह इन सब का जनक है। जुम्मारी का जीवन विपात्मय हो जाता ह। सत्य और असत्य का विचार करन वाली बुद्धि जाती रहती ह। बुद्धि हाने पर भी यह पशुवत हा जाता ह। हम एस तागा की सगत करनी चाहिये जा हम उच्चतर सक्त्पो स रूढ करेगे। दाया और श्रुटिया स हम बचावेंगे। हमार सत्य, पवित्रता और मर्मादा के प्रेम को पुष्ट करेगे। जब हम कुभाग पर पर रलगतव हम सचेत करेगे। साराण म व हमे उत्तमता पूर्वक जीवन निर्वाह करन म सहायता करेगे।

सिनेमा व टो वी मे युगल प्रेम नृत्य—यह कहन की अपेक्षा कि शब्द विन चिह और दृश्य स्वय ही अयपूर्ण है कदाचिन यह कहना कही अधिक यथाय होमा कि मनुष्य की मनावृत्ति ही अयपूर्ण और अयसूचक हुआ करती ह। पारश्वात्य शिल्पकारा क अध नग्न पुतले, शरीर वलवधक पारश्वात्य मासिक पत्रा म लिए स्थिया क अद्भ नग्न या पूर्ण नग्न अवस्थास्रा क चित्र टनीविजन म युगल नृत्य, प्रेम नृत्य दयकर काम वासना पूर्ण नवयुवका के मन म सदा अनुचित और अनिष्ट कल्पनाएँ ही उत्पन्न हागे, परंतु जो लाग शिल्पशास्त्र क चाता हांग अथवा जो अपना शारीरिन बल बढाना चाहत हागे, उनक मन म उन दृश्या या चित्रो की दयन पर प्रमाणबद्धता और शरीर क अवयवा की भरी पूरी कला की ही कल्पना हागी। माधारण लाग इस प्रकार क दृश्य दयकर यही कहंग कि इसम नतिवता का निन दहाडे मून हाता है यद्यपि इस प्रकार क नृत्या म भी बहुत स एस युवक युवतिया गम्भिरिन हात हैं जिनकी वृत्ति मात्रिक हाती ह और उन लाग क

लिय इस प्रकार का नृत्य वभी शारीरिक अथवा मानसिक काम लक्ष्णो का उत्तेजक नहीं होता । अणुद्ध मनावृत्ति के जा नवयुवक उन नृत्या म सम्मिलित होत है अथवा देगते हैं उनम ही शारीरिक और मानसिक कामोद्दीपन के लक्षण दिग्मलाई पडत हैं । इसका कारण यही है रि प्रत्यक व्यक्ति पर बाह्य दृश्यो का प्रभाव उसके पूव सस्फारा के ही अनुसार हाता है ।



दृष्टि की सात्विकता स कला की कल्पना

अपने परा के चुभन वाले काटा मे वचान के लिये सारा ससार मुलायम चमडे से नहीं ढना जा सस्ता । यह सम्भव नहीं ह कि ससार म इम प्रकार के आकषक दृश्य टलिबीजन व अन्य स्थानो पर नहीं लिखाये जावें । अश्लील साहित्य भी छपता रहेगा और कामात्तेजव दृश्य सामन आते ही रहग । क्याकि इनकी भाग है परतु जो लाग अपना चरित्र संरक्षण करना चाहत हा व अपनी मनोवृत्ति अवश्य बचल सकत है ।

ही प्रगामन प्रबन्ध व बड़े पदा पर घामीत ढा रह है और व मम्पुग व्यवस्था ता प्रबुगल बना रह है । आज जय लाग गिरन स्तर व गिरती मुगनता की बात करन है नो उनमे इम तवन का बहुत बडा योगदान हाता ७ जिस हम प्रथम दन ह । आज ऊँची ऊँची डिप्रीधारी सामान्य ज्ञान की ढाती मो गान भी नही जानन जिस पर हम कगान करते है ।

नवन मे डिप्री प्राप्त करना और गान है और गान हागिल कर मानवीय ममान को कुशल बनाना दूसरी गान १ । यह राग छोटी कथाया म प्रारम्भ हाता है और उच्च शिक्षा तक चलता रहता है । एम एम हथकण्ड प्रपाय जा रह है त्रिमकी कल्पना भी नही की जा मवती तथा जिमका जानवर बहुत आशचय हाता है । निरीगक राकना चाहकर भी नही रात पान । छात्र ही नही प्रव ता छात्राएँ भी इम दुप्रवत्ति म शामिल हाती जा रही है । नवल रोगन के लिए आवश्यक है कि परीक्षार्थिया को ही नही शिक्षाको व निरीगका को भी गग हाया पकडा जाय जो नवल करन म सहयाग देत है । इम प्रवत्ति को शुद्ध चारी व भ्रष्टाचार की दृष्टि मे देखा जाना चाहिए और इमका जषय प्रपराध ममभा जाना चाहिये क्याकि इसके कारण हमारी भावी गन्तति प्रारम्भ म ही भ्रष्टाचारी व धाक्षाधही वा प्रशिक्षण प्राप्त कर देश का दुर्भाग्य की प्रार घमीतन का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही ह ।

इसमे एक गठिनाई है गानगिरी । डरा घमका कर नवल की जाती ह और शिक्षा प्रपनी दुदशा के डर व कारण इमका राकने का माहम नही जुटा पात क्योंकि उनका राज्य सरकार प्रथवा अधिनारिया का सरभण उपलब्ध नही हाता । इसलिए इमके लिए भी आवश्यक उपाय करन चाहिये । विद्यालय म भी इम बुराई को प्रार विद्यार्थिया का ध्यान आकर्षित करना चाहिये और उह स्पष्ट रूप से बताया जावे कि इमम आत्मविश्वास म कमी आती है और नवन करन वाला विद्यार्थी कभी भी अच्छी श्रेणी प्राप्त करन म सफल नही हो सकता । प्रत्येक क्षेत्र म प्रतियोगिताएँ है जिह उत्तम श्रेणी म उत्तीण करके ही अच्छा पद प्राप्त किया जा सकता है वहाँ नवल करन बाता ता किसी भी स्थिति म सफल नही हो सकता । अत इम दुप्रवत्ति का हर सम्भव उपाय करके सगती म राकना अति आवश्यक है ।

विद्यालय व महाविद्यालय में युवजन व कार्यरत विद्यार्थी संसद

विद्यालय व महाविद्यालय में छात्र संगठन समता प्राप्त प्रतिष्ठान व युवा प्रतिष्ठान है। ऐसा कहा जाता है कि यह युवावर्ग भागी युवावर्ग व राजनीति में भाग लेने व तिन युवक। का प्रतिष्ठान प्राप्त है। यह युवावर्ग में सभी प्रकार की दुर्गति व्याप्त है। इन का अध्ययन आवश्यकता भंगत प्रमाण व कभी कभी किया भी हो जाती है। युवावर्ग समाप्त है। व पर्याप्त तन्वी बोधी भागी वी युवावर्ग है तथा उनका माया व विग हटाया, मायावर्ग व मायावर्गी का गटाव किया जाता है। प्रयानाचार्य, छात्राय युवावर्ग व युवावर्ग के युवावर्ग बनाव प्राप्त है। यह हमारा विद्या मन्त्रि विद्या अध्ययन भाग पर्यन्त व पत्रि निमाग व स्थान है व कि राजनीति में भाग लेने प्राप्त करने अपना गुणवत्ता छात्राय का स्थान या उनका योग्य वगैरे के विग मायन मरित वगैरे व स्थान है। सम्भव है एका वरने हुए व एन तिन प्राप्त माना गिता पर भी प्रयानाचार्य वगैरे उनको मायता में इकार करे।

आज के युवावर्ग जय स्वयं अधिपति या राजनीति होगे ता प्राय प्राप्त वाली पीढ़ी के युवा उनके प्रति भी अभद्र व्यवहार परभाव व नारवात्री करने से क्या चुकेंगे। इसलिए आवश्यकता है कि हम उमाग से हटकर तत्काल समाग पर चलना उही के तिन में है। हमन छात्र संगठन के कर्तव्य परिणाम देना लिए। इतने विद्यार्थिया व चरित्र हनन में कार्य कोर वगैरे उठाए नहीं रखी है वत आवश्यकता है कि हम हमारी युवा परम्परा में लौटें। हमारे विद्यालयों को, सरस्वती के मन्दिरों को राजनीति, चुनाव मिगरेट मन्त्रि चाय प्रमाण, धालस्य, उच्छल चलता, अधिनय ब्रह्मचर्य भग आदि अनवानक दुगुणा में दूर रखकर वही माता पिता और गुण व प्रति आत्मिक आन्तर भाव रखना समय, तप, त्याग साथ आदि का पालन करना व भविष्य व त्रिए जीविकोपार्जन कर अपन कुटुम्ब का लालन पालन करना मिलाया जावेगा, तब ही भारत का गरितष्क उन्नत होगा। हम विदशा को सीना ठोककर कह सकते कि आज भी भारत अतीतानुसार नैतिक क्षेत्र में अब भी पश्चिमी देश व साथ प्रगतिशील देशों को सही रास्ता दिखाने की क्षमता रखता है।

पूर्व में जब इन विद्यार्थी संसदा का निर्माण विद्यालयों में किया गया तो प्रारम्भ में इनके परिणाम सुखद रहे किन्तु ज्यों ज्यों समय बीतता गया इसका प्रति परिणाम सामन आय और इसमें एक विस्फोट हुए कि विद्यालय व विश्व

विद्यालया को बन्द करने तक की स्थिति थी। जना-वि-पू-स-सभाया छात्र मण्डल को हथियार बनाकर राजनीतिकी में प्रवेश म्याव मिद्ध विंग। विद्यालयों में राजनितिक गुटबन्दिना न शिक्षाशास्त्रिया एउ जागरूक नैतिकता का स्तम्भ के निग विवग कर लिया कि विद्यार्थियों की, नवयुवका की अधिकांश शक्तिया का उपयोग हो रहा है, इसको बने बचाया जावे। यदि यही परिस्थिति जारी रही तो अन्त में हमका कौनसा विष्वक्सा-म-रूप होगा, कहा नहीं जा सकता। इसी भावनानुसार छात्र सभा के म्यान पर कायरत छात्र मण्डल का निर्माण किया जावे ता उत्तम रह्या। हमका मन्त्रिपत प्रारम्भ नीचे दिया जा रहा है—

विद्यालय या महाविद्यालय में जितने भी विषय पढ़ाय जात हैं उनके श्रेष्ठ विद्यार्थी विषयानुसार सम्बन्धित विषय व प्रभारी अध्यापक की सम्मति में कमानुसार या विभागानुसार चुन लिए जावें तथा यह ही विद्यार्थी विषयानुसार अपने पदाधिकारी आवश्यकतानुसार चुन लें। इस प्रकार विषय समिति का गठन होगा। इनमें ममम इस कायरत छात्र मण्डल का उद्देश्य स्पष्ट कर लिया जाव कि व विषय में सम्बन्धित अपनी योग्यता में वृद्धि करने के लिए वग भर के कार्यक्रम आयोजित करेग जिसका पूरा समयन प्राचाय या प्राचाय द्वारा होगा। प्रत्येक विषय की समिति में से एक एक प्रतिनिधि केन्द्र की समिति का निर्माण करेगा जिसका प्रभारी अध्यापक व प्राचाय पदेन सम्भ्य हागे। कन्द्रीय समिति के अध्यक्ष प्राचाय व विषय समिति के अध्यक्ष प्रभारी अध्यापक हागे। समय समय पर प्रत्येक समिति के कार्य का मूल्याकन हागा। इसका प्रयोग केवल केवल अपने अपने प्राचाय कान में छाटे-छाट व बडे विद्यालयों में मफनतापूर्वक किया ह जिसके परिणाम अति सुखद रह है। इसमें विद्यालय ताडफोड व इडतान में वच गया व शिक्षण कार्य मफनतापूर्वक मचानिन हुआ है।

कोई क्या कहेगा ? की भावना से युवको में सेवा का अभाव

कोई क्या कहेगा ?' इस भावना में आज का युवक प्रसन्न है। निमी को ग्रमहाय, ग्रममथ और कठिन समस्या में देखकर आज का युवक द्रवित नहीं होता है। यदि द्रवित हो भी जाता है और सहायता करने का विचार भी करता है तो दूसरा विचार उसने मस्तिष्क में आना है कि कोई क्या कहेगा ? यह हमारी नतिक और मानसिक दुबलता है।

एक वृद्ध यात्री ठण्ड के मौसम में एक हाथ में एक भारी बडिंग का घामे और दूसरे हाथ में एक भारी बकमा लटकाए रेन्वे पुत्र का पार करने के लिए सींगिया खड़ा रहा था, उसका बदन बाक में दबा जा रहा था और हाथ पर बस के भार से झुन झुन जात थे। फिर भी वह साँस फूलने की परवाह न कर चला जा रहा था। ऐसे समय कुछ युवक उसने पाम में निकले, उनमें से एक युवक के मन में बरगा उपजी लेकिन ठीक उसी समय दूसरा भाव जगा कि कहीं किसी ने देख लिया तो वह क्या सोचेगा ? क्या कहेगा ? इन्हीं विचारों के तान बान में वह युवक निकल गया और ट्रेन में अपने प्रथम थ्रोंगी के डिब्बे में जा बैठा। वह यानी द्वितीय थ्रोंगी के डिब्बे में जा बैठा।

एक बच्चा स्टेशन के प्लेटफार्म पर बेतहाशा रो रहा था। पाम में एक अथेड मंत्री हाथ पाव समेट अपनी एक सूती साड़ी में ठण्ड की ठिठुरन और शरीर की लज्जा डारिन की विफल काशिश कर रही थी। बीच बीच में वह बालक को देख भर लेती थी। वह बच्चा भूख में तड़प रहा था। उसकी मा के पास चाय या बिस्कुट के लिय पसे नहीं है। पाम में खड़े कुछ युवकों का ध्यान उसकी ओर नहीं जा रहा था परन्तु उनमें से एक युवक की इच्छा हुई कि उसकी सहायता कर दी जावे परन्तु एकाणक भाव उठा कि कोई देखेगा तो क्या कहेंगा। इस प्रकार उतर कर महिना के पास जाकर पस देने का कोई क्या अथ निकाले कोई क्या कह और उसकी सेवा भावना दब कर रह गई।

एक आत्मी जन्मी होकर सड़क पर पड़ा हुआ है आपस सहायता चाहता है कि आप उस चिन्तित्साय पहुँचा दे, परन्तु आप उसका छाडकर चले जाते हैं क्योंकि आप पुलिस के भय में नहीं पड़ना चाहते, इस समय आपकी सेवा भावना समाप्त हो गई।

वैसे यह आम बात है कि कुछ युवक तो इन बातों पर ध्यान ही नहीं देते, कुछ समय, श्रम और धनाभाव का बहाना बनाकर अपने मन की श्रममय बताकर ऐसे अवसरों पर विरक्ति का भाव दिखाते हैं। वे यह कह कर अपने आपको अलग कर लेते हैं कि छोड़ो हमें क्या? इस प्रकार के व्यवहार के लिये दानों ही नतिक अपराधी हैं।

जब कोई आदमी कोई बुरा काम करने को मग्न होता है, जैसे गाली देने, धोखा देने, झगडा करने, चोरी करने, किसी लडकी का छेड़ने, व्यभिचार में पडन, शराब पीने आदि में तो आत्मा से एक आवाज उठती है—कोई देगेगा तो क्या कहेगा? यह कोई क्या कहेगा एक दब पुन्प की तरह सामने आ सडा होता है और एक भय की ओर इशारा कर देता है। जिस किसी को भी ऐसे बुरे काम में आगे बढना हाता है, वह इस दब पुन्प में ही लडकर आगे बढता है।

लेकिन जब कोई आदमी या युवा अच्छा काम करने का सोचता है तब भी 'यह कोई क्या का कहेगा' भाव जागता है। यह आत्मा की सच्ची आवाज नहीं होती, यह एक काल्पनिक भय होता है जो हमार अधिन सोचन विचारन, अति सतकता बरतने व मशय बरतन और भूँठे ग्रह की प्रवृत्ति में पना हाता है। यह हमारी अपराध मन स्थिति का द्योतक है। यह एक रोग है जो हमें कमजोर करता है।

जब कुछ कर डालने का समय होता है तो भी हम सोचत रहते हैं, करे दूमरी और सोचत रहते हैं 'कोई क्या कहेगा' और इस बीच दूमरा उम कर डालता है। मनुष्य इच्छा करते हुए भी कुछ नहीं कर पाता। एक अधिकारी अपने अधीन सेवक के दच्चे का प्यार नहीं कर पाता। एक युवा पुरुष किसी असहाय लडकी की सहायता नहीं कर पाता। एक धनिक किसी निधन को गने नहीं गगाता, यह सोच कर कि कोई क्या कहेगा? एक धनी व्यक्ति पदल चलने में कतराता है इसलिये कि पन्स चलते देखकर लाग उसे क्या कहेगा। कई लोग अच्छे अच्छे वायब्रम देखने से बचिन रह जाते हैं क्योंकि उनके पास दिग्बावे के लिए स्वयं का वाहन नहीं है अथवा उनकी प्रथम श्रेणी का आरक्षण नहीं मिला है। बस में चलते उनको लज्जा आती है, क्योंकि उनके पीछे 'कोई क्या कहेगा' का हड्वा उनका पिण्ड नहीं छोड रहा है।

एक लडकी तालाब में डूब रही है या कि वह अकेले चनती डर रही है या बोभे से थकी जा रही है और आप इसलिये उसकी सहायता नहीं कर रहे कि 'कोई क्या कहेगा'। एक अनपढ महिला आपस जान करना चाहती है और आप भूँठे पनी लिम्बी युवती हैं इसलिये आप उससे दग्धी निला रही हैं कि 'कोई क्या कहेगा'। अथवा भिगारी चीख चीखकर आपमें सहायता चाहता है पर इसे, 'कोई क्या कहेगा' के कारण आप उसकी सहायता नहीं कर रहे हैं।

आप आप व्यवहार, अपना रूढ़ि, आचार विचार और चरित्र के बारे में
 मन्विन हान है। आप आप आप लगाता चाने है, ठण म टोरा ए
 तातत है पर अगए एपार म रिगी न न लगार् ता 'वाई क्या बहेगा, सपरर
 पहन रहे ह। रिगी गाय फशा स्टायल या रिवाज के वस्त्र आपुपण ए
 पान आन् रिगिण नही कर रहे हैं क्याकि आपना वाई क्या बहेगा का इहै।
 आप पत्नी पुत्र पुत्री म भी रिगिण नही रह रहे हैं कि वे क्या बने म
 माचेंगे। 'वाई क्या बहेगा' एम भय मे आप आपना मामान भी नह। उठा पान
 गाडी निकल जाती है।

एमे कई पुत्र हैं, जो वाए की वणभूया, मामा म पण आन् का द-वरर
 देते है कि यह मने परिचिन है। क्याकि इह डर रहना है कि यन् व उत आपना
 वह देन ता उमके मित्र क्या माचते कोई क्या बहेगा, यह साधारण विचार न
 है। यह एक इब्वा या भूत है जा हम अपनी इच्छानुसार सत्वाय भी नही कर
 देता। जा हमारी इच्छा की अपरिपक्वता प्रकट करता है और स्वय म विम
 न करते हुए दूसरा के प्रति भी अविश्वासी लगता ह। यह हमारे चरित्र का
 निवृत्तता का घातक है।

दमलिए आज के युवक युवतिया का आपन विवक से अच्छे और बुरे का
 ग्याल करके कोई क्या बहेगा' का डर निवाल कर इच्छा का हठ और बतन
 बनानर उच्छिन काय को सत्वाल विना किसी सवाच व भावी आशका व व
 डानना चाहिये। इस व्यस्त ससार म एसा कोई नही है जिस आपके कुछ कल
 देखत, आपके चार म माचन और कहन को वक्त है। यदि कभी एसा हा भी जा
 ता आपको क्या कहन वाले ता कहते ही रह्य। आप को बुरी भावना तो स्व
 नही अत काम करने से पहिल ही अनिष्ट और अपमान की वात सोचना व्यय है।

युवको द्वारा योग्यतानुकूल व्यवसाय का चुनाव

आज भारत में बेरोजगारी की समस्या इतनी उभर आई है कि उसमें देश की सामाजिक व्यवस्था को गहरा हाँसा है। राजगार कार्यक्रमों में (1986) में 2 करोड़ 35 लाख बेरोजगार लोगों के नाम दर्ज हैं जिनमें से अधिकांश लोग मैट्रिक या उससे अधिक योग्यता रखते हैं। श्रम क्षेत्र में लगभग 60 लाख लोगों का शामिल किया जाने में बेरोजगार लोगों की मौजूदा समस्या लगभग चार करोड़ है जो 1990 में लगभग 6 करोड़ हो जायेगी। पूँजी प्रधान तंत्रों के ध्यान पर श्रम प्रधान तंत्रों का बढ़ावा और छोटे यूनिटों का बढ़ावा इनके लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता है। इस देश में लगभग 7 करोड़ 50 लाख में 8 करोड़ तक लोग पूरी तरह बिना रोजगार के हैं। बेरोजगारी इतनी तेजी से बढ़ रही है कि अधिक नियोजन से सम्पूर्ण मुद्रास्फीति हुई है और चारों ओर सामाजिक तनाव पैदा हो गया है।

आज स्थिति यह हो गई है कि डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, कलाकार उच्चस्नातक, प्रशिक्षित अध्यापक आदि भी बेकार पड़े रहे हैं। उसका कारण है कि



जहाँ काम नहीं होना बड़ा आराम हो जाता है।

य तारी तरा प्राण्य का जीवन रिताता चाहन है। कुछ युवक एन है वा फल माला विना ता विष्णु नही छायाता फाला और राती का प्रयन स्वय हन करने न प्रपनी अउजती मम तत है। अमलित प्रयो युवक का जा ममार म प्रवा इत विजय कामता मगता ता य राय्य न ति वह शीघ्र ही म वात का चिच करन ति वह प्रपनी मारी शक्तिया का रिम काम म समावणा। पटना, लिनना रिमी क्षत्र म भी प्रणिशण प्राप्त करता यह मनुष्य का रिगा निर्म दना है। ए युग म जही प्रया श्रेय म व्यावायिज हाड नगी हूई है और जही Cut throat Competition है वही पर तो यही टहर मनेपा जो म प्रगति की रस म प्रयन रा श्रेष्ठ मिद्ध कर मनेगा।

हाथ पर हाथ धर कर बठ जाना मनुष्य के दह धम क भी विरुद्ध है। मनुष्य का मन पनचवरी के समान है, जब तक उसम गहूँ डानत जायोग, तब तब बर गेहूँ का पीमकर आटा बना दगी परंतु जब उसम गेहूँ न डालागे तब वह स्वय प्रस्र प्रायवा। पीम पीस कर शीण बना डानेगी। बहुत कम मनुष्य लाभ क कारण बुझार या शराबी हूझा करत है। कुछ नाम न करन के कारण केवल समय बितान के रिा ही जुझा येजत है या शराव पीते हैं। रिमी ने ठीक ही कहा है कि "मानी रिमप शतान का घर है। (Empty mind is the Devil's workshop)

सामे पढ़ने हमारा यह वनव्य होना चाहिए कि हम बुद्ध न बुद्ध व्यवनाय प्रयन लिए पमद कर। वह व्यवसाय हमार मन इच्छा, काम शक्ति और स्वभाव के अनुकूल होना चाहिये। स्वाभाविक प्रकृति के प्रतिकूल व्यवसाय करन म सफलता नभी नही हा सक्ती। विचार करन की बात है कि जिम युवक को ईश्वर न जप मिद्ध चित्रकार बना कर भेजा है उस यदि किसी कारण म उमका पिता विश्व विद्यालय म पढा कर डिग्री पिलाना चाहे ता वह पडन म ध्यान कसे लगावणा। इधर प्रोफेसर साहब उस रिताय की बडी बडी बात ममभावेंगे और इधर वह युवक प्राफेसर साहब का मन म विप्र बनावणा। असी प्रकार एक जमसिद्ध मगीन, अष्ट क्लिताधी, श्रेष्ठ अदाकार बस कितावा म लिन लगावणा। मनुष्य जीवन क असफल होन क द्वा मुख्य कारण है-पहला यह कि वह कभी कभी अपनी स्वाभाविक काय शक्ति के विरुद्ध यचनाय म लग जाता है। दूसरा कारण यह है कि मनुष्य व्यवसाय कुशल हुए रिना नी प्रयन काय को शुरू कर देता है। परंतु जब तक काय कुशलता और कामचलाऊ अनुभव नही हा जाय तब तर यकामर काई काम शुरू नही करता चाहिये नाय ही उमके सब पहतुझा पर लाभ हाति भविष्य की योजना पर भी पूरगतना ध्यावहारिज रूप म रिचार कर लेना चाहिये।

गहनप म पड रिता नाग कवल मानमिज आर लेखक काय White Kaulor job करना अधिक पमद करत है। लोग म शारीरिज व्यवसायो स ए

प्रकार की घृणा उत्पन्न हो गई है। डाई मा रणायों माह्वार म सोकी का मुंशा बनना अधिन पमत् करगा, पर तु ग्रय गारीरिा काय ररक अधिन द्रव्य पदा करत मे उम लज्जा मालूम होगी। भारत पविस्तात के बेटवार के ममय म लावा सिरी साग अपनी सम्पत्ति, कारगान व दुकान, मगान व गेत छाड कर भारत म आए, परतु अपन परिश्रम के पत्र पर भारत क वान शौन म आज मफल व्यापारी, कारगान के मानिन व प्रतिष्ठित दुमानदार बने हुए है। व्यापारिया का भी उहान काशी पीये छाड लिया है। इमके एक जुलुम म एक भाकी दखन का नेतक का अवसर प्राप्त हुआ उमम उमम नाव था कि चद्रमा पर भी मि थी ही अपनी पहिनी दुकान गालगा। यह है परिश्रमी व्यक्तिया का साहम जा परिश्रमितिया का अपन अनुवृत्त बनान की रड इच्छा रगत है।

लेकिन आज परिस्थितिया ऐसी हो गई है कि अपनी रचि व अनुवृत्त व्य वमाय नहीं मित्रता है। एम ममय भी निराश होन की आवश्यकता नहीं है। भारत म आज इतन व्यवसाय नहीं है जिसम अपनी प्रवृत्ति व अनुकूल ही उनका चुनाव किया जा सक। ऐसी मकटनालीन परिस्थिति म यदि व्यक्ति परिश्रमी है तथा उसम किसी भी पश म अपने को जमान क लिए मधय करन की प्रवृत्ति है ता अपन परिश्रम म वह अच्छा विद्वान, राजनीतिन, यशस्वी, व्यापारा इत्यादि सब कुछ बन सकता है। माना कि वह अच्छा कवि नहीं बन सके ता भी सासा तुक्कद तो बन हा सकता है और आज के युग म ता तुक्कद भी अच्छे कविया को पीये छोड जात हैं। हाना चाहिये उनम ध्यावहारिकता, सूभ्रूभ व ममय स लाभ उठान का बुद्धि।

यह ता सही है कि बाल्यावस्था के कायों स यह जाना जा सकता है कि बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ किस ओर हैं। जा लडका बायावस्था म बालिदास बनन को पदा हुआ है, वह छोटी उम्र म भी अच्छी कविता कर सकता है। जो भविष्य म शिवाजी बनता है, वह बचपन मे लडका की सना बना कर सनापति का काय भी किया करता है और जा भविष्य मे विख्यात अमीर अली ठग बनता है वही लडका पहिले भुट्टे चुराकर अपना पहला पाठ सीखता है। यह भी सही है कि बचपन व युवावस्था मे जिन पर समाज व सरकार द्वारा अत्याचार निय गय हैं व भविष्य म कुख्यात डाकू भी बन गए हैं। जिनकी बचपन स ही चोरी करन की आदत या कुमस्वार पड जात है माजमस्ती की आदत पड जाती है उनका भविष्य म, यदि मीजमस्ती के लिए पसा न मित्र ता के गुडागर्दी करक जार जररदस्ती या ठगी करक पसा बमाने है तथा भविष्य म कुख्यात ठग व तस्वर बन जात है जा समाज व देश के लिय बलक होत है। परतु कई दफा ऐसा भी हाना है कि बायावस्था म भविष्य जीवन का पूण प्रतिरिम्ब नहीं मिलता है परतु यदि उसम प्रारम्भ स ही परिश्रम, धैर्यवान व माहम जस गुणा की शिक्षा, खेलूद प्रतिया-

गिताम्रा द्वारा व अय साधना व द्वारा दी जावे ता व वालव भविष्य म अन्न व्यवसाय स्वय चुन कर जीवन म सफलता प्राप्त कर जन है ।

जिम तरह इस मृष्टि की प्रत्येक वस्तु म एक एक विशेष गुण रहता है व प्रानर प्रत्येक मनुष्य म भी कुछ छिपे बाय करने की शक्ति अवश्य ही रहता है । यह शक्ति अथवा स्वाभाविक प्रवृत्ति चाहे किसी विशिष्ट अवस्था अथवा परिस्थिति म न भी मानुम हा सवे परंतु वह एमी रूढ और उत्कृष्ट हाती है कि वह आप हा आप प्रकट हा जाती है । उमे कोई छिपा नही मक्ता । आवश्यकता हा आप के मुक्का के सामन समम्न व्यावसायिक क्षमा का पूरा चिय रटिया, समाचार पर टनीविजन व अय मचार साधना व माध्यमा से उनके सामन स्पष्ट चिन रन पिय जावे जिमस रि वे अपन म छिपे काय करन की शक्ति का पूरा उपयोग कर सकें ।

जब हम अपनी रचि और प्रवृत्ति के अनुसार कोई व्यवसाय चुनलें तब रि हम उसम हजार बाधाया के हान पर भी लगे रहना चाहिये । बहुधा युवावस्था म कुछ नष्ट उन्मीनता अथवा सम्बन्धया द्वारा निरस्ताहित करने पर युवकपर हाताश हाकर अपन इच्छित व्यवसाय का यह समभ कर छोड़ देते ह रि कर्त्तव्य के किसी दूसरे व्यवसाय म नग जान स अत्रि सपनीभूत होय परंतु यह बड़ी भारी भूल है । जीवन मग्नम म विजय प्राप्त करन के त्रिय अपनी प्रवृत्तिया व अनुकूल व्यवसाय चुनन की जितनी आग्रह्यता है उमस बढ़ कर उसम रूढतापूर्वक लगे रहन की आवश्यकता है । मभी धंधा या व्यवसाया म लाभ व हानि हाता है परंतु अपन धंध म कष्ट दफा हाति हा नजर आनी है पर एसा हाता सम्भव नहा है । इसत्रिए अपन एर वार के व्यवसाय का जिना माचे समभे नही छाडना चाहिये अथवा यह स्थिति हा जागगी ' कि न सुदा ही मिला न विसाले सनम, न इषर व रह न उधर व रहे । हम व्यवसाय का छाडन या चुनन म चंचलता अथवा जल्द नहा करना चाहिये । कभी कभी मनुष्य जब व्यवसाय म हजार प्रयास करत क पश्चान भी मफल नही हाता तज उसे अपने व्यवसाय का बदल कर दूसरा चुनन की आवश्यकता हाती है । इसम ता यही मद्रि हाता है कि उसन व्यवसाय चुनने म बड़ी मलता की । इसका कारण पुरी मगनि, अचानक घटना, माता पिता की दुर्भारि हीनता अथवा गिना समय का दुस्प्रयोग व समय स काम न करने की प्रवृत्ति के कारण अथवा पन व अभाव के कारण हा मक्ती है । आज भारत मरफार न राष्ट्रीय बका स वम योज पर व्यवसाय व त्रिये ऋण दन की सुविधा प्रणा की है, तथा प्राप्न ऋण का आमान रिगना म चुकान की व्यवस्था की है । आजानी ग पहिल धन की कमी व रागण व्यग्रमार प्रारम्भ करन का प्राय माहम भी नहा कर मक्ता था । वही तग व्यापार या व्यवसाय प्रारम्भ करत थ जिमव यही पुत्रता राम जाना था पर तु अब एसा नही है । मय का मविष्य है परंतु इसका उपयोग वहा कर मक्ता है जिसम तकनाका अष्टता व बुद्धि का उपयोग करन ता ममता हा ।

प्रायः यह भी देखा जाता है कि अनवरत युवक उस व्यवसाय का छोड़ बैठने हैं जिसे थोड़े से ही अधिक परिश्रम से वे सफलीभूत हो गये होते। जो व्यवसाय जितना ही अधिक अच्छा होगा उसमें सफलता प्राप्त करने के लिये उतना ही अधिक समय और परिश्रम भी लगेगा। पहिल वर्णाश्रम धर्म के कारण बाप बेटे का ब बेटा पोते का वह व्यवसाय सिखा दिया करता था जिससे वह इसमें स्वतः ही दक्ष बन जाता था तथा जोशिम नहीं रहता था, परन्तु अब व्यवस्था में परिवर्तन आ गया है। सबको ही सब काय करने की स्वतंत्रता है ब काय कोई भी छाटा बड़ा नहीं है। जूता बनाना कपड़े धाना आदि हेय दृष्टि से नहीं देखे जाते। जिस व्यवसाय का करना पड़े, उसे घृणा की दृष्टि से मत देना। बई लाग कहा करते हैं कि हम अपनी योग्यता के अनुकूल व्यवसाय नहीं मिलता। अतः हम अपनी योग्यता का बरवाद कर रहे हैं। इस तरह की व्यथ की बकवास के कारण वह अपना तिरस्कार स्वयं ही कर रहा है। क्योंकि जिसमें थोड़ी बहुत आश्चर्यजनक योग्यता विद्यमान है वह किसी न किसी रूप में अपनी योग्यता दिया ही देगा। इसलिये अपने व्यवसाय की तुच्छता की शिवायत करते रहने का बदल उस उच्च और कुलीन बनाने के लिये मनापूर्वक लगे रहना है। इससे ही अधिक लाभ और शक्ति मिलेगी। बार बार व्यवसाय बदलने से बाजार में पठ नहीं जमती है, यह ध्यान रहे। व्यवसाय को अपना बतव्य समझकर उसके सम्पादन में लग जाना ही श्रेयस्कर है।

हमारे देश की याजना में भी पूँजी प्रधान तन्वीय के स्थान पर श्रम प्रधान तन्वीय को बढ़ावा देना और छोटे मूनिटा का बढ़ावा देने के लिये अधिक धन का प्रावधान करना होगा। छोटे तथा कुटीर उद्योगों के विवास तथा आधुनिकीकरण के माध्यम से दूसरी ओर स्थानीय कुशलता तथा तन्वीय के माध्यम से बेरोजगारी में बमी आ सकती है। सातवीं याजना में 3 लाख करोड़ २० की राशि खर्च करने का जो प्रस्ताव है उससे कोई लाभ मिलने वाला नहीं है क्योंकि उसमें केवल 10 प्रतिशत लागो का ही काम मिलेगा। इस देश में बेरोजगारी इतनी तेजी से बढ़ रही है कि आर्थिक नियाजन की सम्पूर्ण प्रक्रिया का आग्रह ही घट गया है। योजनाओं से इतनी मुद्रा स्फीति हुई है कि चारा और सामाजिक तनाव पैदा हो गया है। उद्योगों के प्रसार पर ध्यान दिया जावे राजनितिय स्थिरता और आर्थिक परिवर्तन का मुनिश्चित करने के लिए एर शांतिपूर्ण शक्ति की अत्यन्त आवश्यकता है।

आज की परिस्थितियों में युवको का कर्तव्य

हमारे युवकों में विचारा का अभाव सा है और उनमें पराश्रम नाम का कोई चीज नहीं रही है। इसी मिशनरियों अपने धर्म के प्रभाव से पिछड़े शत्रुओं में जाकर मुफ्त में दवा बान्ध है जिन्हा का प्रचार करते हैं परन्तु हमारे -

युवका म राई उल्हाह नही है। पाकिस्तान-भारत के 1971 के युद्ध न इन देवक युवका म उल्हाह व वीरता का वातावरण बनाया, आज बसा उल्हाह वहा रखा का नही भिन्नता। जा एका युद्ध बगला ह उमके नागरिक गीर बनत हैं उन जानत ह। अग्रजा के वात म महात्मा गांधी व ननृत्व म भारतीय ने हन व आजानी की लडाई लडी तो उनका चरित्र बना, वीरता की भावना बनत हैं। युद्ध म हानिया ह तो नाभ भी हैं, परंतु आज का युवन निठन्ना है उमका कि परिश्रम आजन मित रहा ह जीवन म मधप का नाम नहा है। विघननाम व कांति का युद्ध का अनुभव ह वहा व युवन वीर बन गा है। अब उस दश क काला बसा रिया स भी वही व युवन निपट लेंगे। इरान व ईरान म अब युद्ध हा रहा है वहा भी युद्ध का अनुभव हा रहा ह। वीरता की परीक्षा हा रही ह। भारत म हजारों वर्षों स बाइ युद्ध नही लडा गया अत वीरता क्या हाती है इसका हने अनुभव नही ह। आमत म युवका न अपने अस्तित्व के लिय सधप किया है, म है य ही युवन एक दिन वीर बन कर निकलेग। जमनी का युद्ध व कारण तवाह ह गया, परंतु पुन उठा, लडा हुआ व आज के राष्ट्रा को चुनौती दे रहा है। जाण युद्ध के कारण बरबाद हा गया था परंतु पुन उठकर पहिल स भी अधिक बचत हा गया।

अग्रज वीम का इतिहास वीरता, अभियान व युद्ध की कहानिया से भर पडा है ता आज भी उम देश की गणना श्रेष्ठ देशों की गिनती म आती है, परंतु भारतवप न क्या किया? कवल आक्रमणकारिया म अपना वचाव नही कर सक ता विदेशिया के गुनाम उन गए। किनी देश पर आक्रमण करना जायसगत नह है लकिन अब विदेशी ताकते आप पर लगातार आक्रमण करती हैं तो क्या आप वचाव ही करत रहेंगे। शांतिमाल म भी युवको के पाम करने को बहुत ह। व सुयोग्य अध्यापक हाकर छात्रा क जीवन की दशा बदल सकते हैं, जह उनका सुगम्कृत करन म सह्याग कर सकते ह। डॉक्टर बनकर इस बग म जो घननिष्ठा प्रवेश कर गया ह उह माविन माहम मे अपदस्थ करके, दीन दुखिया की सेवा कर सकते ह। उत्तम व्यापारी बन कर सबटकालीन परिस्थिति म अन्न के गीतना का तालकर गराव व भूमे लाग म बाट सकते ह। ईमानदार व सुचे वकील बन कर भूँठ का परबी करन वाला का परामूल कर सकते हैं। मिलावट करन वार्णों भूँठी दवा बनान वाला का पकडवा सकते हैं। चुनाव की प्रथा न हमारे सारे नतिक मायताया का धराशायी कर लिया ह। एक विधानमभा के सदस्य की या सन व सन्ध्या क लिय खच की मीमा 25 हजार या एक लाख ह। य सदस्य बोट के निध गराव पिनाना कम्बन वगैरना रिश्वत क तीर पर हजारों रुपय बाँटना की धाराब प्रार बन का उपयोग करना तथा सारा नतिकता का एक तरफ उठाकर रन

दना, उनकी विजय का कारण है। गरीबों के रिटन 25 हजार पश किया जात है। परंतु चुनाव पर लाया रुपय खच किया जात हैं माना चुनाव क्या हुआ भूठ का कारणार हा गया वेईमानी का, दुराचार का आधार बन गया। आधार जब भूठा वेईमान व दुराचार का बन गया ता एस नताम्रा का प्रारम्भ स ही आचरण भ्रष्ट हो गया। इस प्रकार के चुन हुए प्रतिनिधि ता भूठ, दुराचार व वेईमानी का ही समथन करेग। यदि के सच्चाई की जगह जगह भापण देगे ता एम भापण निप्रभावी होंगे। अत युक्ता का वक्तव्य 7 वि व दश म ऐसी भावना जाग्रत करे जिसम हमारे चुनाव कानून धम मम्मत व यायसगत ही। गभी हाल ही म दन-बदल पर राफ लगन के लिए कानून बनाया गया ह। आशा ह इसम चुन हुए प्रतिनिधि जा धन व लाभ स पाटिया वदन लेते है, उन पर राक लगेगी।



सतान के प्रति माता-पिता के कर्तव्यबोध का मूल्यांकन

अपन बच्चा का अपनी शक्ति और प्रवृत्ति में अनुसार अपनी महत्वाकांक्षी पुनर्जागरण और उन्नत नियमन करने का अवसर देना ही विवेक है। यह विवेक प्राप्त न करता है इस नीच की प्रत्यावृत्ति से नापे—

(1) क्या आप इसका ध्यान रखते हैं कि घर पर और स्कूल में बच्चा में जा माँग की जाती है, वह उमरे बूढ़ में भीतर है। (हाँ/नहीं)

(2) क्या आप टीक में जा गमभी गए हैं कि आप अपने बच्चे से विन प्रथार की सफलता में आशा रखते हैं। (हाँ/नहीं)

(3) क्या आप इसकी जाँच करते हैं कि बच्चा से आप उचित आशाएँ ही रखते हैं। यह आशा आपका अपनी जरूरतों में उपजी है या अपने बच्चे की जरूरतों से। क्या यह आशा इस बच्चे की शक्ति, स्वभाव और वृष्टभूमि से मिल जाती है। (हाँ/नहीं)

(4) क्या आप अपनी माँगों में स्कूल की माँगों में एका मल बठा रहे हैं कि बच्चा का परस्पर विराधी माँगों में न पैसे जाव। (हाँ/नहीं)

(5) क्या माता पिता के रूप में आप दोनों बच्चों के विषय में अपने धर्मों में इस तरह बात मल बठा लिया है कि बच्चा का परस्पर विराधी माँगों में न पैसे जावें। (हाँ/नहीं)

(6) क्या आप बच्चे का इस बात के लिये मदद दे रहे हैं कि वह अपने आगे वाजिब और सम्भव धर्म हूँ रखे। (हाँ/नहीं)

(7) क्या वे धर्म उसके अपने ही धर्म हैं आपके स्थापित ता नहीं। (हाँ/नहीं)

(8) क्या आप विभिन्न उम्र के बच्चा की प्रवृत्ति और वातावरण के बारे में काफी कुछ जानते हैं जिससे अपनी माँगों उनके स्तर के अनुरूप ही रखें। (हाँ/नहीं)

(9) क्या आप बच्चों के व्यक्तित्व, स्वभाव क्षमता आदि के अंतर पर पर्याप्त ध्यान देते हैं और यह मानते हैं कि सब बच्चे एक ही प्रकार की सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। (हाँ/नहीं)

(10) बच्चा की अपन सम्बन्ध में जो तस्वीर है उमम भी क्या आपका उतनी ही रचि है जितनी कि आपका अपनी निर्धारित की हुई सफलता में है।
(हाँ/नहीं)

(11) क्या सफलता की आपकी व्याख्या भातिक सिद्धि व बजाय व्यक्तिव की परिपूर्ति की ज्यादा महत्व देती है।
(हाँ/नहीं)

(12) क्या आप बच्चे का स्पष्टत बता चुके हैं कि उसे क्या करना है, क्या बनना है, बजाय उसका मामा 'मन्त्रीपूरा वनो', 'आरा में भिन्न बना', विश्वसनीय बना' जस अस्पष्ट ध्यय रखो।
(हाँ/नहीं)

(13) क्या आप बच्चे का इम मदद दन है कि वह कदम व कदम अपन ध्यय की आर बढ़े, बजाय इसका कि एक साथ ही एक सपाटे में ज्ञानदार विजय पा लेन की कोशिश कर।
(हाँ/नहीं)

(14) क्या आप बच्चे का अपना अभोष्ट व्यवहार करान के लिय उस अनुभव कराते हैं कि क्या व्यवहार करने का तुरत लाभ मिलता है। (हाँ/नहीं)

(15) क्या आप बच्चे का यह महसूस करान में बचत है कि वह चाह कुछ भी हासिल करले, आप कभी सतुष्ट नहीं हाय।
(हाँ/नहीं)

(16) क्या आप प्रशंसा करन आर शावासी दन में उदार है। (हाँ/नहीं)

(17) आनाचना करत समय क्या आप इम बात का ध्यान रखत हैं कि बच्चे के समुचे व्यक्तिव की आलोचना कर डालने के बजाय किमी रास प्रवृत्ति या क्रिया की दापपूर्णता, उम समभाई जावे।
(हाँ/नहीं)

(18) क्या आप इसका पूरा ध्यान रखत हैं कि बच्चे का स्तूल में इमलिय विफन नहीं होना पडे कि यहाँ उमस अमम्भव आशाएँ की जाती हैं। (हाँ/नहीं)

(19) क्या बच्चे के साथ आपका ऐसा सम्बन्ध है कि अपनी निराशा और विफलता आपके सामने कह सके।
(हाँ/नहीं)

(20) भले आप उसे ढाढस बंधान वाल हो, मगर क्या आप उस कुछ क्षण अपनी निराशा व विफलता व्यक्त करन देते हैं।
(हाँ/नहीं)

(21) क्या आप उसकी विफलता के प्रति अपने का इम तरह तटस्थ बना सकन हैं कि इम निष्पत्ता के समय में बातें करते समय अपने ही वार में बोलते रहन है, बजाय इसके कि बच्चे के वार में बोल सक।
(हाँ/नहीं)

(22) क्या आप बच्चे का यह पता लगान में सहायता देत हैं कि वह क्या विफन हुआ और भविष्य में क्या सफलता हा सकता है।
(हाँ/नहीं)

(23) क्या मामा-यत एमी विफलताआ के बार म आपस बात करन व पश्चात् वच्चा अथिक् अच्छी मन स्थिति म दिखाई पडता ह । (हां/नहीं)

(24) क्या आप वच्चे ना इम चीज म सहायता दत २ कि वह अपना विफलता क बहाना देडने के वजाय सच्चे कारण पता लगाए और पहिचान । (हां/नहीं)

(25) क्या आप अनुभव करत ह कि आपना वच्चा क्या बनता ह, वह आप पर है, उमकी योग्यताएँ आप निर्धारित नहीं कर सकत ।

(26) क्या आप अपने वच्चे का पूरा आनन्द उठात ह और उसस प्यार करत है । (हां/नहीं)

प्रत्येक हा' का एक अंक दीजिए । अगर आपके कुल प्राप्तांक 22 या अधिक है तो उत्तम, 16 व 21 के बीच सामान्य अगर 16 से कम है तो समझिये कि आप अपने वच्चे को सफल हान म सहायता नहीं दे रह ह ।

युवको के स्मरण योग्य गायन

आज देश की बलिबेदी पर, शीश चढान कौन चनेगा ।

आज तिरगा घोढ, मृत्यु को गल लगाने कौन चनेगा ॥

वीरो आज तुम्ह ललकारा, भगनमिह बलिदानी न ।

वीरा आज तुम्ह पुकारा शेखर की कुर्वानी न ॥

स्वग लोक स तुम्ह निहारा, उस भांसी की रानी न ।

दूर देश से किया इशारा, उस सुभाष सेनानी न ॥

उन वीरा को दिया दृष्टा, कौल चुवाने कौन चलेगा ।

मातृभूमि की रक्षा हतु प्राण लुटाने कौन चलेगा ॥

हम चलेंगे, हम चलेंगे, हम चलेंगे ।



इ माफ की डगर पर, बच्चो दिखाया चल के ।

ये देश है तुम्हारा, नेता तुम्ही हो बल के ॥

दुनिया के रग सहना और कुद्व न मुँह से कहना ।

सच्चाईया के बल पे आग को बढत रहना ॥

रग दागे एक दिन तुम सत्तार का बदल के इसाफ

अपने हो या पराय, सब क लिय हा याय ।

देखो कदम तुम्हारा, हरगिज न डगमगाए ॥

रस्ते बडे कठिन है, चनना सम्भल सम्भल के ।

इ माफ ॥

इमानियत के सर पर, इज्जत का ताज रखना ।

तन मन की भेंट दकर भारत की ताज रखना ॥

जीवन नया भिनगा, अन्तिम चित्त मे जलके इसाफ ।



चलो मडक की बाईं पटरी, जाना हा या आना ।

आगे पीछे, दाये बायें खूब देखते जाना ॥

अगर कही दब गए यार तो हा गए लगडे लूने ।

चलने वाली मव मडका स सावधान हो जाना ॥

तृतीय सोपान

प्राचीन भारतीय सस्कृति मे स्त्री

शोचति जामया यत्र विनश्चय त्याश्रुतकुलम् ।
 न शोचति तु तत्रैता वधति तद्भि मवदा ॥
 यत्र नायस्तु पूज्यते रमते तत्र देवता ।
 यत्रा ताम्बु न पूज्यते सवा स्तत्रा फन त्रिय ॥ (मनुस्मृति)

अर्थात्—जिस कुल में स्त्रियों का आदर मान तथा सत्कार होता है उस कुल की वृद्धि और देवता प्रसन्न हात हैं और जिस घर में उनका अन्याय होता है, तथा रात दिन बेधे रहती है वह कुल उनके शाप से तत्काल नष्ट हो जाता है।

इस प्रकार से भारतीय सस्कृति में स्त्रियों को पूरा आदर दिया गया है। प्राचीन भारत में ऐसी बहुत सी स्त्रियाँ हुई हैं जिन्होंने पुरुषों के समान ही न्याय अर्जित की है।

गार्गी क्षेत्रीय ब्रह्मनिष्ठ थी कि जिन्होंने महर्षि याज्ञवल्क्य से शास्त्राध्यय कर अपनी योग्यता तथा विद्वता का परिचय दिया था। योग विद्या में राजा जनक को बिल्कुल मुक्त कहा जाता था तो उही के समान देवी भी इस विषय में बहुत ही निपुण तथा पण्डित थी कि जिन्होंने राजा जनक जैसे आत्मज्ञानी महापुरुष को सबान कर आत्मदान सम्बन्धी बहुत सी सूक्ष्म क्रियायें बनाई थी। वह इतनी अगाध पण्डिता थी कि इनका अपने समान वर न मिलने के कारण ब्रह्मचार्याश्रम से ही संन्यास ग्रहण करना पडा था। महर्षि याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मचारी तथा विद्वान थे तो उही के समान उनकी पत्नी मन्थरी भी विलक्षण गुण वाली थी कि जिन्होंने अपने पति के साथ ही मायवानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया था। एक बार राम, अजुन, नल आदि स्त्रीव्रत का धारण करने वाले थे तो दूमरी बार पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली उनकी पत्नियाँ भी गीता सुभद्रा तथा दमयन्ती आदि स्त्रियाँ भी थी कि जिन्होंने अपने पतियों के साथ जग में धारण आपत्तियाँ महन करने पर भी माय न छोडा और स्वयं सवा में मग्नन हा अपने पतिव्रत धर्म पर धन रही। राम, कृष्ण तथा युधिष्ठिर आदि बड़े बड़े उपदण्ड उही के समान गीता तथा मन्दोदरी भी जिन्होंने स्वयं जग याज्ञा का सुन्दर तथा नीतिप्रद उपदेश देकर मग्नाने की चेष्टा की थी। कामध्या न तोना का गुमिना न अपने पुत्र लक्ष्मण का, तारा न शम्भु

को, कुत्ती ने अपने पुत्र पाण्डया का तथा गुभङ्गा ने अपनी पुत्र अशिमयु को सुंदर उपदेश दिया था।

जन धर्म के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में दृष्टिपात करने पर भी पात जाता है कि जहाँ वैनाचार्यों के अपने उपदेशों से पुण्य प्राप्ति तथा अज्ञाना कल्याण किया वही नारी जगत में भी जिनके द्वारा प्रतिपादित धर्म की महती प्रभावना की है। प्रथम, उपवास त्याग, तपस्या आदि का रूप स्त्री जाति में प्रवृत्तापन से पाया जाना है वही पान जगत में भी नारी जगत अग्रणी रहा है। मुनिपुत्रा मती का एकात्मक अंग साहित्य का अनुगम था। भगवान् महावीर का सघ (1) मुनि (2) आधिवा (3) थावक (4) आधिवा, इन चार अंगों में विभक्त था। अनेक आय महिनाएँ ममार से विरक्त हार आधिवा सघ में शामिल हो गई थी। इनमें प्रमुग साध्वी चंदना थी। वह वशाली के प्रमुग राजा चेटक की पुत्री थी व रानी त्रिशला की छोटी बहन थी। आधिवाप्रा में भी राजा चेटक की दूसरी पुत्री महारानी चेतना प्रमुग थी। पूर्व जन्म अशुभ कर्मों के फल के घटाने के वशीभूत हार कोशाध्वी में एक सेठ ने उमका मूल्य चुकाकर खरीद लिया। उम मठ की गेटाने ने डाह के वश उमके हाथ पाँव में हथकड़ी बँडियाँ डालकर तहाने में बन्द कर लिया। मठ ने उमको छोड़ा परन्तु हथकड़ी बँडियाँ खुद नहीं थी। ऐसे समय भगवान् महावीर आहार की बेला पर चंदना के सम्मुख आ गये हुए। चंदना ने मूष के कुछ दाना में प्रमु महावीर का पहगाह किया तथा उमकी अनन्य भक्ति गपन हुई। इसके पश्चात् वह साध्वी हार दुःख तप करने लगी। आत्मदान की अपूर्व ज्योति उममें चमकने लगी और वह भी ही आधिवा सघ की प्रमुग हो गई। आधिवाप्रा में भी महारानी चेतना मुख्य रूप से प्रसिद्ध थी, वह भी राजा चेटक की पुत्री थी। चेतना का विवाह मगध सम्राट् श्रेणिक के साथ हुआ था व बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। रानी चेतना बौद्ध के शिष्यवाद की निस्सारिता को अच्छी तरह जानती थी अतः वह बौद्ध भुषणा से अग्रभारित रही। राजा श्रेणिक भी धर्म में जन धमानुयायी हो गये। पूर्वजन्म अशुभ कर्मों के परिणामस्वरूप श्रेणिक के पुत्र अजितशत्रु ने चिह्न कर अपने पिता को बन्दी बनाया। उनके देहावसान के पश्चात् वह राजगृह में न रही और महावीर सघ में सम्मिलित हार आत्म कल्याण करने लगी।

रानी त्रिशला ने तीसकर की जननी हान का सौभाग्य प्राप्त किया था। जब राजकुमार महावीर घर छोड़कर माधु हुए तो उन्होंने सहप उमको विदा किया और स्वयं भी धर्मगणन में लिप्त हो गई।

वपिलवस्तु के राजा शुद्धावन की पटरानी महामाया महात्मा बुद्ध की जननी थी। पुत्र जन्म के बाद सातव दिन ही उनका देहावसान हो गया। शक संवत् राजा ने बच्चे को सम्भालन का भार अपनी दूसरी रानी महामाया की

छाती बहिन महाप्रजापति को दिया व उन्होंने इस महान् बालक का पालन पोषण किया ।

विश्व के कल्याणकर्ता ईसा को जन्म देने का सौभाग्य मरियम का है । इनके उचित पालन पोषण व कारण ही वे महान् महात्मा व मनीहा हुए । मुहम्मद साहब के पिता की मृत्यु उनके जन्म से पहिले ही हो गई थी । अतः इनकी परिवार का जिम्मा उनकी माता आमिला पर आ पडा । परन्तु इसका श्रेय हलीमा नामक धातु को है जिसने इन्हें 6 वर्ष की अवस्था तक पाल पोस कर बड़ा किया । मुहम्मद साहब की जीवन मगिनी यदीजा थी जिसने 25 वर्ष तक मुहम्मद साहब का हाथ धो कर पाल पोस दिया था । उनके स्नेहपूर्ण प्रार्थना, विश्वास और महारे से मुहम्मद साहब का बड़ी शक्ति मिली थी ।

महिलाओं की स्थिति तथा सुधार

प्रशिक्षण, पदां प्रया, बाल विवाह आदि ऋद्धियाँ विरगित हा गई, पर अश्रेणी शासन न इन समस्याओं के समाधान हेतु महत्वहीन प्रयाग किये । स्वतंत्रता के पश्चात महिलाओं म सुधार लाने हेतु प्रयाग किये गये । इसी हेतु 1975 म महिला वष मनाया गया । जत्र यह महिला वष विश्वम काय की सफलता के लिये वम नया तो अंतर्राष्ट्रीय महिला दशक ही घोषणा हुई । महिला दशक दयने देखत चुक गया पर आधी आधादी की समस्याएँ आज भी उत्तनी ही दुःख बनी हुई हैं । नारी एक सजावटी वस्तु के रूप मे सग्न्या से चर्चा का केन्द्र बिन्दु रही ह । जब-जब उसने अपन इस दायरे से निवलना चाहा, उसका मजाक बनाया गया । कभी उम शक्ति या देवी कहा तो कभी अकला और पराधिता । इस प्रकार से नारी की स्थिति बढी विवादास्पद रही है । नारी स्वय उत्तरदायी है इसनी । जब उसन अपना जो रूप चाहा, चरिताय किया । कभी वह "अभिमारिका" और "भोग्या" बन कर पुरुषा के हाथ की कठपुतली, अकला या गई तो कभी सक्ल्पशील वमयोगिनी की तरह अपने शक्ति स्वरूप को चरिताय कर बठी ।

इस "महिला दशक" म महिला विवास व विविध पणा की समय समय पर चर्चाएँ होनी रही हैं । नारी जीवन से विभगत जुडी पत्रिकाओं म नारी की आर्थिक, आत्म निर्भरता के चर्चे खूब ही पढने को मिले । उसने बाह्य रूप पर प्रवाण ज्ञानन वाले सौन्दर्य प्रसाधना, जेवरो वस्त्र विवास आदि पर भी अथव चर्चा हुई, गृह सज्जा, पुष्प सज्जा के अतिरिक्त पक्वान जमे आचार, चटनी, न जाने कितने स्वादा के व्यजन बनाा की बना भी नारी का सिखाई जा रही ह परंतु नारी उपभोग के दायर को वहाँ तोड पाई है ।

आज वह मातृ शक्ति का प्रयाग कयो नहीं कर पा रही ह । शक्ति शब्द अदम्य तेजोमय है जो जडता म नव प्राण संचारित कर देता है । नारी नवप्राण सजा है । मा शब्द म स्त्रत स्मृत मातृत्व शक्ति आभामित होती ह । आज भी नारी मे आत्म विश्वास वया नहीं । वह आया, मदरस या बानधरा की आनिता वया बनती जा रही ह । वस्तुन बानक तभी ससार म आना चाहिये जब मा उमके निर्माण के लिये वृत्त सक्ल्प हा । अ यथा समाज कटन ही बनेंग, सुपुत्र या सुपुत्री नहीं ।

घपने पर पन्ना में समुक्त राष्ट्र मध्य महासचिव थी जविष्य वेदा
वसन्तवर्ष 1 वरुण वि द्म वष का ही विज्ञाप महत्व है। यथात्रि इस वष समुक्त एण्ड
मघ की 40वीं वषगाँठ है और अन्तर्राष्ट्रीय महिला दशक का अन्तिम वष है।
इस वष अन्तर्राष्ट्रीय महिला दशक के दौरान महिलाओं का उत्थान तथा यह
समानताधिकार दिनांक के त्नाए गए विभिन्न पापत्रम घपनी चन्म मोमा पर हए।

यह उचित होगा कि हम समुक्त राष्ट्र मघ के महिलाओं के प्रति स्वागत
नियम गए स्थापितवा तथा समुक्त राष्ट्र मघ द्वारा घोषित मानव के मून परिष्कारक
घापणा पथ के परिश्रेष्य म यह देसन का प्रयास करें कि महिलाओं का समानाधि
कार प्राप्त हुए है या नहीं। उ ह पुष्पा के समान अधिकार प्राप्त हुए हैं या नहीं।
1946 म ही समुक्त राष्ट्र मघ महिलाओं के उत्थान के लिय प्रयत्नशील है। इस
लक्ष्य की प्राप्ति के लिये उमने महिला सम्न्धी घापण का गठन किया ताकि
समान म महिलाओं को उनका उचित स्थान दिलाया जा सके और इन अधिकारों
के सम्बन्ध म विश्व चेतना को जागृत किया जा सके।

इस दिशा म सही उपलब्धिया के लिए कुछ कानूनी सुविधाओं की महिलाओं
को दिलाई गई। 1952 म एक प्रस्ताव द्वारा महिलाओं को उनसे राजनयिक
अधिकार दिलाने की कानूनी व्यवस्था की गई है। इसके पश्चात् 1979 म महिलाओं
के साथ लिए जाने वाले भेदभाव का समाप्त करने के लिये व्यवस्था का पई।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दशक के त्तरान यह प्रयास किया गया कि महिलाओं
का राष्ट्र के आर्थिक व सामाजिक विकास म बराबर सहयोग रहे और विश्व म
शांति की स्थापना के लिये अपना पूरा योगदान दे सके। विभिन्न देशों की सरकारों
तथा गर सन्कारी संस्थानों का इस काम मे विशेष सहयोग रहा है। अतः निम्नकार
रूप मे कहा जा सकता है कि महिलाओं को पुरणा व समान अधिकार दिलाने के
लिये गत वर्षों म काफी काम हुआ है। किन्तु महिलाओं के उत्थान म अभी बहुत
कुछ किया जाना है विशेषतः भारत म।

महिलाओं को कानूनी अधिकार

इस दिशा म सही उपलब्धिया के लिये कुछ कानूनी अधिकार भी भारतीय
महिलाओं के लिये स्वतन्त्रता से पूर्व तथा उमके पश्चात् लिये गए।
स्वतन्त्रता से पूर्व निर्मित कानून—

(1) सती रेषूलेसन 1829—राजा राममोहन राय के मन्व प्रयासों से
यह नियम बना। इसके अनुसार हिन्दू स्त्रियों को पति की मृत्यु पर त्ना उलान
या दफनाने की प्रथा को अवश्य घोषित किया गया ताकि विधवा स्त्री के जाकर का
अन्त कराने की उम समानुचित प्रथा का राना जा सके। कानून का उत्तपन करना
दण्डनीय अपराध घोषित किया गया। पुलिस अफसरों का आदेश दिया गया कि
यह स्त्री स्त्री के विधवा होने पर उसके पति की अर्थों के साथ रहे और 16 वष

मे छोटी लड़की या जो स्त्री गर्भावस्था में हो या नशीली वस्तु पान से प्रभावित हो उस पर विशेष निगरानी रखे ताकि वह अपने जीवन का अन्त न कर लें। इस कानून से सती प्रथा पर रोक लग गई और सभी आयु की विधवा स्त्रियों के जीवन पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा।

(2) महिला शिशु हत्या निरोधक अधिनियम 1870—दहज प्रथा के कारण बालिका उत्पन्न होने पर शोक मनाया जाता था और बालिकाओं को जन्म लेते ही मार दिया जाता था। इस कानून से लड़कियों की हत्या करना अब धर्मोपेक्षित किया गया।

(3) हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856—इस अधिनियम ने विधवा पुनर्विवाह को वैधता प्रदान की परन्तु पुनर्विवाह पर उसका अपने मृत पति की सम्पत्ति पर अधिकार समाप्त कर दिया गया। विधवा का पति के अतिरिक्त किसी अन्य स्रोत से कोई आर्थिक सहायता मिल तो पुनर्विवाह करने पर उसका दाम के मिलन पर कोई बाधा नहीं रखी गई। यदि पुनर्विवाह करने वाली विधवा स्त्री की अवस्था नाबालिग हो तो उसे अधिकार दिया गया कि अपने पिता अथवा सरसक की आज्ञा से वह पुनर्विवाह कर सकती है।

(4) भारतीय विवाह विच्छेद अधिनियम, 1869—इस अधिनियम से पत्नी का यह अधिकार मिल गया कि वह विभिन्न विशेष आधार पर विवाह विच्छेद की अधिकारी है। इनसे उसे व्यभिचारी, शराबी, असाध्यरोग से रोगी तथा दुगुणों से परिपूर्ण पति से तलाक पाने का अधिकार मिल गया।

(5) विवाहित स्त्री सम्पत्ति अधिनियम, 1874—उसके अनुसार विवाहित स्त्री की आय तथा वचत उसकी निजी सम्पत्ति मानी जायेगी एसा वेतन तथा आमन्नी जो उसने प्राप्त किया हो, उससे वचत व अन्य आय के स्रोत बनाए हो, स्त्री की निजी सम्पत्ति मानी जायेगी।

(6) भारतीय उत्तराधिकार कानून, 1925—इस अधिनियम के द्वारा पति एवं पत्नी को किसी एक की मृत्यु होने पर एक दूसरे की सम्पत्ति पर समान उत्तराधिकार होगा। इसमें सम्बन्ध पिता की आर से हो या माता की ओर से, किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जावेगा।

(7) बाल विवाह निरोध अधिनियम, 1929—इस अधिनियम से विवाह हेतु लड़कों की न्यूनतम आयु 18 वर्ष तथा लड़कियों की 15 वर्ष निर्धारित की गई ताकि बाल विवाह की प्रथा का निवारण हो सके। 18 वर्ष से अधिक आयु का कोई व्यक्ति यदि किसी का बाल विवाह करवाता है या उसके लिए निर्देश देता है तो वह दण्ड का भागी होगा। यदि कोई बालक या बालिका को 18 वर्ष से कम हो अपना

विवाह करा है, तो उसकी जिम्मेदारी उक्त माता पिता या सरदार का मान जायगी और उन्हें दण्डित किया जायगा। यदि एक बालक/बालिका की मरणावधि स्त्री हो तो उस बँद की गजा नहीं दी जायेगी।

स्वतन्त्रता के पश्चात निमित्त कानून

(1) कमचारी राज्य बोमा अधिनियम, 1948—यह अधिनियम मना कारखाना पर लागू होता है, इसमें राग, प्रभृति, विनयागता, निभरता एवं विविध सम्बन्धी लाभ का प्रावधान है। कारखाना अधिनियम, 1948, बाल अधिनियम, 1952 और बागान अधिनियम अधिनियम, 1951।

इन सभी कानूनों के अन्तर्गत, कारखाना और बागानों में महिलाओं को रात को 7 बजे से प्रातः 6 बजे तक काम पर लगाने की मनाई है। इसके अतिरिक्त उनका काम करने का समय, सुरक्षा एवं कल्याण का प्रावधान भी है।

(2) विशेष विवाह अधिनियम, 1954—यह अधिनियम के द्वारा अल्प जातीय विवाहों की शान्ति प्रदान की गई। विवाह के लिए जातीय प्रतिबंध नहीं रहे। इसके अतिरिक्त विवाह के लिए पति की आयु 21 वर्ष तथा पत्नी 18 वर्ष निर्धारित कर दी गई ताकि बाल विवाह की समस्या का निराकरण हो सके। इन अधिनियमों के अनुसार धार्मिक कुरीतियों से किये गए विवाह भी इस कानून से पना कृत किये जा सकते हैं जिससे पति पत्नी में प्रत्येक तलाक अथवा परिवर्तन का अधिकारी हो जाता है।

(3) हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955—इसमें विवाह के लिए लड़के की आयु 18 वर्ष तथा लड़की की 15 वर्ष निर्धारित की गई है। विवाह के समय किसी भी पक्ष पति अथवा पत्नी का अर्थ कोई पूर्व विवाहित जीवन साथी पति अथवा पत्नी जीवित नहीं होना चाहिये। दोनों पक्षों में कोई सदस्य विवाह के समय विद्वत् मस्तिष्क वाला अथवा मूग एवं पागल नहीं होना चाहिये। विशेष परिस्थितियों में तलाक की अनुमति प्रदान की गई है जिसमें राग, अत्याचार अथवा अमानुषी व्यवहार विवाह के उपरान्त किसी अर्थ स्त्री अथवा पुरुष से लैंगिक सम्बन्ध, धर्म परिवर्तन सम्बन्ध पति बलात्कार इत्यादि शामिल हैं। भरण पोषण वृत्ति का भी प्रावधान किया गया है। बटु विवाह निषेध किया गया है।

(4) हिन्दू उत्तराधिकार कानून, 1956—इसमें पुत्र पुत्री का पट्ट सम्पत्ति पर समान अधिकार प्रदान किया गया है। इसके पूर्व पुत्र पुत्री में जो विषमताएँ थीं, उनका समाप्त कर दिया गया है। विधवाओं का भी इस अधिनियम से अपने पिता तथा पति के हिस्से की सम्पत्ति का सहयोग मिल सकेगा। वह अपने सम्मान सुविधानुसार उपयोग करेगी।

(5) हिंदू दत्तक पुत्र ग्रहण तथा निर्वाह अधिनियम, 1956—दत्तक पुत्र ग्रहण करत समय पत्नी को सम्मति अनिवार्य है। स्त्री यदि विधवा है, मानसिक स्थिति स स्वस्थ है बालिग है तो दत्तक पुत्र गोद ले सकती है। पुरुष भी ऐसी अवस्था में ही गोद ले अथवा दे सकता है। यदि उसकी स्त्री जीवित है तो उसको अपनी पत्नी की भी सहमति लेना अनिवार्य है, ऐसा न करने पर दत्तक पुत्र अवध समझा जायेगा। अविवाहित स्त्री भी, यदि वह बालिग है, दत्तक पुत्र ग्रहण कर सकती है। लड़की अथवा दत्तक पुत्री गोद ली अथवा दी जा सकती है। अविवाहित स्त्री पुरुष द्वारा दत्तक पुत्र एवं पुत्री के मध्य 21 वर्ष का अंतर होना आवश्यक है। हिंदू पत्नी अपने जीवन काल में भरण-पोषण के व्यय की अधिकारी है। पति द्वारा छोड़े जान पर भी वह पति के आश्रित मानी जाती है। विधवा पुत्र बधू अथवा पौत्र-बधू का दायित्व श्वसुर पर होगा। असमय एवं बूढ़े माता पिता का दायित्व पुत्र पर होगा।

(6) महिलाओं एवं बालिकाओं के अनतिक व्यापार की रोकथाम अधिनियम, 1956—इस अधिनियम के अनुसार वेश्यावृत्ति के उद्देश्य से महिलाओं एवं बालिकाओं का अनैतिक व्यापार करना निषेध है। इन हेतु जो व्यक्ति वेश्या के झण्ड चलावा। वेश्या की कमाई पर जीवनयापन करेगा व सहायता देगा उस अपराधी घातित कर लिया जायेगा तथा दण्डित किया जावेगा। जो व्यक्ति वेश्यावृत्ति हेतु स्थान देगा या उसके पक्ष में किसी प्रकार की सहायता करेगा, लड़कियों का वेश्यावृत्ति के लिये प्राप्तहित करेगा, वह दण्ड का भागी होगा। वेश्यावृत्ति का झण्डा सावजनिक स्थल से कम से कम 200 गज की दूरी पर होना आवश्यक है। मम मन्दिर, शिक्षण संस्था छात्रावास, अस्पताल या अन्य कोई ऐसा स्थान शामिल किया जा सकता है जिस पुलिस कमिश्नर या मजिस्ट्रेट प्रतिबंधित करे।

(7) हिंदू अल्पवयस्कता एवं अभिभावकता अधिनियम, 1956—18 वर्ष से कम का बालक नाबालिग माना जायेगा। बालक को उम्र 5 वर्ष से कम हो तो उसका संरक्षण माता के हाथ में जा सकता है। अभिभावक का नाबालिग की जाय दाद गिरवी रखने, बचन अथवा दान देना का कोई अधिकार नहीं है। भारतीय अभिभावक अपने बच्चा के विरुद्ध कुछ भी काम नहीं कर सकते।

(8) दहेज निरोधक अधिनियम 1961 व दहेज निषेध (सशोधित) कानून 1984—ऐसी सम्पत्ति या मूल्यवान वस्तुएँ जो चाहे विवाह के समय दी जाय, चाहे विवाह से पहले दी जाये, चाहे विवाह के बाद दी जाये, अगर इनका दिया जाना सगाई या विवाह के लिए एक शर्त है तो वह दहेज कहलायेगा। यदि कोई विवाह के सम्बंध में कर या बधू के माता पिता या अन्य सम्बंधियों से या मरहम से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में कोई दहेज मांगता तो वह दहेज मांग घोर जुमाना का भागी।

इसकी अवधि 6 मास से कम नहीं होगी। चित्तु दा यह तर बा हा सकी और जुमाना म एजाए मपये तर हा मरगा। ज दहज देना या मगा यपवा इनक निर प्रेरित करगा उम छ मास म दा यप तर का कारावास होगा। जुमाना दन हरा मपय या दहज के मूल्य की मरम तर हा मगेगा। न ता यधु और न विवाह क समय उस नोट देगे याल म्ण्ट र भागी होग। यदि नोट म निमित्त बिना किसी मीर के यधु ता नी जाती है म्णर नोट नियमा क म्णुगार म्णी गई म्नी म म्ण कर दी जाती है। नियमा क म्णरी म्णी म्णी यधु क द्वारा रगी जायगी। म्णु म्ण प्रत्यक नोट ता यगा उमगी म्णुमानित म्णुय, नोट दन याल का नाम और नोट दन वाले का यधु म म्णु य हागा। म्णु ती पर यर यधु दोता क हम्तापर हगे। म्णु दनम यदि भी यपदा नियम होगा तो उस पर म्णुठे का निशान लगावेगे। यदि एमी म्णुची नहीं रगी जाती है ता नोट दन या सन याल दाना ही दम्ण क भागी हगे।

(9) प्रसूति सम्बन्धी लान अधिनियम, 1961—प्रसूति क समय सभी सस्थान, खान, कारखाना व वागान सस्थापक क लिय महिला का प्रसूति अवकाश की सुविधा उसकी औसत दैनिक घतन क आधार पर दता म्णिवाय है।

(10) मभ निस्तारण चिकित्सा अधिनियम, 1971—मानवीय दृष्टिकार एव स्वास्थ्य का ध्यान म रखत दुए प्रशिक्षित लोगा द्वारा किसी महिला का मभ निस्तारण यध माना जायगा।

दहेज का दानव—म्या क ज मन ही माता पिता का उसक मगई ब्याह के लिए धन की चि ता लग जाती है म्णकि म्णिना दहज क समाज म म्णुद्धा यर नहीं मिलता। म्णमानिण हिन्दू समाज म कयाए नीचा दृष्टि से देखी जाती हैं। कया और पुत्र के पालन और खान-पहानान म म्णेट रखन वाल निदयी मी बाप महापातकी है। इसम कई सवह नहा, परतु इस पाप के लिए दहज की बुरी प्रया जारी रखन वाला समाज ही प्रधान जिम्मेदार है। कया का पिता यदि मुई मीगा दहज नहीं द सकता ता बहुधा विवाह के पहले ही सम्बन्ध छाड दिया जाता है म्णर ब्याह म नहीं देन पर बेचारी लडकी को तरह तरह क ताने माता पिता के लिय अपमानजाक शब्द म्णर गालिया की गोछार गुनती व सट्नी पडती है। यही तक म्णि लडकिया का समुराल वाले जिन्द, भी जला देते हैं। एस उन्हाहरण म्णि प्रतिदिन म्णुयबारा म पडने व समाज म देखने की मिलत है। यह कुप्रथा जब ही बद हो सकगी जब लडक वाले दहज खना बद कर द। सरकार न इस सम्बन्ध म यठार कानून बनाया ह जिसके अतगत दहज खने और दने वाल दानो ही म्णुठ क भागीदार हगे। विवाह म मिजली, बंडवाजा, सजावट व पार्टी आदि पर म्णुनाप सजाप म्णुया उन्नी सगा ता समाज में पतिम्रा के लिए खन करना पडता है।

इस धात्रे माह का निकालनर कम सच करन वाला की प्रशंसा की जावे और उनका उत्साह बढ़ाया जावे ।

पुत्री भार है—स्वास्थ्य परिवार कल्याण उपम श्री कृष्णकुमार न लानसभा म एष प्रश्न के उत्तर म प्रताया वि राज्या का निर्देश दिए गए ह कि लाग गभपात क लिए प्रभव पूव लिंग निधारण सम्बन्धी जांच कगन जाते हैं उनक विम्ब समुचित कामवाही की जाव ।

वनानिक प्रगति के कारण यह सम्भव हो गया ह कि प्रसव स पूव ही यह जानकारी हा सक्ती ह कि लडका होगा या लडकी । इसका उद्देश्य यह ही था कि दम्पति अपनी इच्छानुसार चयन कर सकें एव अवाछित सता से गभपात द्वारा मुक्ति पाकर नियाजित परिवार की कृष्टि कर सकें । किन्तु नारी का पूजन वाल हमारे समाज की मान्यताएँ इतनी विवृत हो गई है कि पुत्री वाभ मानी जाती ह । अनवानक कारणा से इस प्रकार की भावना का एक कारण दहज भी ह ।

यौन भेदभाव की यह चरम परिणति ह जा आज किसी भी आधार पर तक संगत नहीं कही जा सक्तो । किसी जमान म रातपूता द्वारा कया का जन्म लेत ही कत्त कर दना यदि नशम कृत्य था ता आज विनान क सहार कया का प्रसव हा नहीं होन देना भी कदापि अनुशासित नहीं कहा जा सक्तता । किसी भी तरह स लडकी से छुटकारा पान की प्रवृत्ति का प्रस्ताहन मिल जाए ता उसके भयावह परिणाम हा सक्ते ह जितकी कल्पना मात्र स ही रागट राडे हा जात ह । स्त्री पुष्प की आवाणी म अत्यधिन असमानता एव तज्जनित यान असतुलन ता इसक शाध्र प्रत्यक्ष हानि पावे परिणाम हैं । लेकिन यह प्रवृत्ति निरकुश हो जाव ता एक स्थिति यह भी आ सक्ती ह जय वश परम्परा कायम रखन क लिए स्त्री का मिलना ही कुलभ हा जायगा ।

सबस अधिन खेद की बात तो यह है कि यह दुष्प्रवृत्ति तथाकथित उच्च कुन सम्पन्न, शिक्षित एव शहरी लाग म ही सवाधिव व्याप्त है । यह यही वग है जा समाज को दिशा दन का दम्भ भरता है, और यही पर अकुश लगान से गभका प्रसार निश्चित रूप स रहेगा । लेकिन अपराधी व नहीं हैं जा गभपात करते ह वन्कि वास्तविक अपराधी व लाग हैं जो पुत्री का सतान क रूप म दगना ही नहीं चाहते एन इस प्रयाजन क लिए वीछित सुविधाया की माँग को बढावा देत ह । वास्तविक अपराधी ता वह समाज है जिसम पुत्री वाभ जन गई है । जब तर समाज स्वय का इस अपराध के लिए दण्डित करन को तयार नहीं हागा तब तब केवल कानून से ही समाधान भी नहीं होगा । क्यानि जब तर समाज म जाप्रति नहा हागी यह कानून निथरन ही हाग । नारी समाज की रीड है और समाज का दीप भी । यदि उम अधिभाग का तल प्राप्त हुआ तो समाज का आलोकित करन

अदल दीप शिखा बन जायगी। हिंदू सत्सृष्टि के उच्च षण द्वारा तलाक का विराह किया गया है। परंतु कोई भी विचारशील मानव यथायथा की अवहलना नहीं कर सकता। यदि पति चार, डाकू, पतित और अय्यायी होन पर तथा दूसरा विवाह करने पर नारी का परवश, बंधव्य, त्याग और तपस्या की वेदी पर अपना प्रतिज्ञा का बलिदान करन में असमर्थ होन के कारण व्यभिचार पर उतरन की आ सम्मान पूर्वक विवाह कर लेना कही अच्छा है। पत्रिक सम्पत्ति पर समान आर प्राप्त करन पर ही नारी को अपन पिता के घर में सम्मान प्राप्त होगा। निर्वाह अधिनियम द्वारा हिंदू पत्नी अपन जीवन काल में पति द्वारा छोड़ जान पर उस पति द्वारा गुजारा भत्ता प्राप्त होगा। इसमें नारी का सम्बल प्रदान किया है। दृश्यावृत्ति के उद्देश्य से महिलाओं में बालिकाओं का अनैतिक व्यापार करना निषेध है इस हेतु जो इसमें सहयोग दगा उस अपराधी घोषित करन से महिलाओं एवं बालिकाओं को उचित संरक्षण प्राप्त होगा।

भारतीयों द्वारा पश्चिम के समाज का आधुनिककरण—पश्चिम का उत्पन्न वैज्ञानिक प्रगति के साथ हुआ, इस कारण वहाँ के निवासियों के जीवन में औद्योगिक दक्षता और भौतिक सुखा का विशेष महत्त्व है। भौतिक सुखों की चाह और उत्तरी प्राप्ति के लिए प्रयत्न का यहाँ विशेष महत्त्व दिया जाता है। इस वृत्ति को भौतिकवाद कहा जाता है। भारतीय जीवन में आध्यात्मिक जीवन का भौतिकवाद से अच्छा समझा जाता है। पश्चात्य जीवन के मूल्यों और हमारे जीवन के मूल्यों में बड़ा अंतर है। मदिरापान वहाँ के सांस्कृतिक जीवन की एक परम्परा है जिसे हम हर हालत में सामाजिक पतन मानते हैं। किसी पर स्त्री के साथ पर पुष्ट का नृत्य करना पश्चात्य मभ्यत्ना की एक साधारण बात है जिस हम चरित्र का पतन कहेंगे। शादी के बाद पुन तथा बरबधू का घर से अलग हो जाना भारतीय परम्परा की दृष्टि से अनुचित है। हमारे देश में यह आशा की जाती है कि विवाहित पुरुष अपने माता पिता के साथ रहकर उनकी सेवा करण पर पश्चिमी समाज में यह बात अनहोनी समझी जाती है। पश्चिम का सारा समाज व्यक्तिवाद पर आधारित है। वहाँ के समाज में व्यक्ति प्रमुख है। पारिवारिक जीवन में जो मिठात तथा स्त्री भारतीय समाज में वह पश्चिम के समाज में नहीं है। वहाँ व्यक्ति बहुत कम अपने माता पिता भाई बहन के प्रति अपनी जिम्मेदारी का मानता है। वहाँ बड़े माता पिता की देखभाल का काम सरकार पर छोड़ा गया है।

नारी का क्षेत्र

भारतीय समाज में महिलाओं का क्षेत्र प्रत्यक्ष क्षेत्र में उन्नति करता है। राजनीति में सफलता का कीर्तिमान पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने प्रस्तुत किया है। विज्ञान के क्षेत्र में भी महिलाएँ पाछ नहीं हैं। प्राशासनिक सेवाओं में वृद्धि में भी महिलाएँ मान्यता का गाय पाय कर रही हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्त्रीदा में, कला, नगरी

आदि प्रतियोगिताओं में उठने नाम बमाया है । आज की नारी अपने आपका हर दृष्टि से पुरुष के समान समझती है और बहुत हद तक है भी । सज्जा, सहनशीलता, विनम्रता जो पहिले नारी के गुण समझे जाते थे, आज उसकी बमजोरी मानकर छोड़े जा रहे हैं ।

आज समाज के 85 प्रतिशत लोग नौकरी करने वाली स्त्री को श्रेष्ठ मानते हैं, जो लड़की नौकरी पर नहीं है, यदि वह मध्यमवर्गीय परिवार से है तो उसके विवाह में भी पचासो बाधाएँ हैं । एसा क्या है ? नारी के घनापाजन का महत्त्व क्या दिया जाता है ? इसका प्रमुख कारण है दश में निरंतर बढ़ती महंगाई, प्राधुनिक फेशन, दूसरा की नकल करना आदि है । इन सभी की पूर्ति के लिए धन की आवश्यकता होती है और वह उसकी जीवन सगिनी ही नौकरी करके धन कमा कर उसकी सहायक हो सकती है । पर इसका दुप्रभाव उनके बच्चा पर पड़ता है । बच्चे माँ के प्यार से वंचित होकर अनवरत दुराड्या के शिकार हो जाते हैं । जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है उनकी स्त्रियाँ को नौकरी करने में बाई एतराज नहीं है पर जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक है उनकी शौचियाँ नौकरी करने के बजाय सास समुर व अन्य परिवारजनों की सेवा करनी चाहिए । इससे न केवल उनके बच्चा का जीवन सुधरेगा अपितु पूरा परिवार सुखी होगा । स्त्री पर नौकरी के परिवार दोनों का लाभ डालकर उस कुछ ही दिना में वृद्धावस्था की ओर धकेल देना वहाँ का आया है । यदि महिलाओं का अपना गृहस्थ सुगम बनाना है तो जहाँ तक हो सके, वे नौकरी न कर । सली समय में व रचनात्मक एवं कलात्मक कार्य कर सकती है ।

नारी समस्या पर प्रकाश डालते हुए एक बार महात्मा गाँधी ने कहा था—
 "आज की नारी के कर्त्तव्य बहुमुखी है गृहस्थों का पालन उसके एक कर्त्तव्य हो सकता है, सब नहीं ।" असलियत भी यही है । भारतीय नारी से आज यह आशा करना कि वह पुरुष की इच्छाओं की दामी बनकर रह सकेगी, यह दुराशा मात्र ही है । हम यह नहीं भूलना चाहिए कि नारी के प्रति हमारे इस सकुचित दृष्टिकोण ने ही भारतीय नारी का इतना कायर और भीर बना डाला है कि वह घर से बाहर के विषय में साच ही नहीं सकती ।

विदेशी नारियाँ का उदाहरण हमारे सामने है जहाँ की सामान्य नारियाँ भी अपने देश की वाता का समझती हैं और उसे उन्नति की ओर ले जाना का प्रयास करती हैं, वहीं पर भारतीय नारी घर गृहस्था, बाल बच्चे, सास ननद और साडी तथा आभूषणों के अनिरिक्त और कुछ भी नहीं साच सकती । भारत में आज भी 10 प्रतिशत शिक्षित नारियाँ मिलेगी और उनमें भी उच्च शिक्षा के सहारे जा अपना मनाविकास कर सकें एसी नारियाँ की संख्या उनसे भी आधी होगी अर्थात् एसी 5 प्रतिशत नारियाँ कठिनाइयों से मिलेगी जो स्वयं को और अपने कर्त्तव्यों का भलीभाँति समझती है ।

लाग कहत ह घर का त्याग कर नारी को बंधे पर बंदूक धर कर युद्ध क्षम जाना क्या शोभा देता है। निश्चय ही नारी को इसकी आवश्यकता नहा था, परंतु आज देश की स्थिति को देखते हुए इसकी भी आवश्यकता पड सकता है। महारानी लक्ष्मीबाई न क्या अंग्रेजो से अपनी नारी सेना के साथ युद्ध नहा किया था। युद्ध का छोडकर भी भारत म ऐसे क्षेत्र की कमी नही जहाँ नारी का सहयोग आवश्यक ही नही अनिवाय भी ह। शिमा और डाक्टरों क्षेत्र म भी नारी की उठना ही आवश्यकता ह जितनी पुरुष की। नर्मिङ्ग का काय सीख कर सीमा म लग हुए घायल जवानों की सेवा करन वाली महिलाओं की अत्यंत आवश्यकता ह। आज हमारे देश की कितनी ही माताएँ कुष्ठ रागो से पीडित हाकर मृत्यु को प्राप्त हानी हैं। महिलाओं की आर वच्चा की उचित चिकित्सा महिलाएँ ही करती हैं।

आज जा भारत का 90 प्रतिशत नारी समाज अभी अर्धरूप म हा पया हुआ है उह प्रकाश म लान का समस्त भार भी आज के शिक्षित नारी वग पर ही ह और यह काय घर बठरर नही हो सकता। उसक लिए उह घर घर, गाव-गाव जाना हागा तभी वे अपनी बहनो को शिक्षित बना सकेगी और उनको अपन अधिकार का जो कानून द्वारा उह प्रदान किए गए ह तथा कर्त्तव्य से अवगत करा सकेंगी।

यदि नारी घर स बाहर क क्षेत्र म काम करन लगेगी ता गृहस्थी का काम बान करणा वच्चा का पालन पोषण कौन करेगा, एसी शकाएँ उठाइ जाती है। पर से बाहर के क्षेत्र मे काम करन का यह ता अर्थ नही होता कि वह घर स ही नाना तोड लगी और उस अपन वच्चा का लालन पालन करने का समय ही नही मिलना। आज कितनी ही महिलाएँ सेवा भी करती हैं और वच्चा का लालन-पालन और पति की सेवा भी भली प्रकार करती है। ध्यान ता उन महिलाओं का माता है जा आधुनिक कलाओं और मध्यपान पाठिया म अपना समय जुटा, ताश, डीस आदि अवाधिन कार्यों म भाग लेकर अपना समय नष्ट कर देती ह।

युग युग को त्यागमयी और वात्सल्यमयी नारी घर और बाहर के बीच मामजस्य स्थापित कर लगी। जा नारी सेवा नही करती हैं यदि वे गृह काय और मातृत्व का उचित निवाह करत हुए अवन्याश का समय बाहर सामाजिक धारा म ध्वन करे तो देश का कितना बचाए जा सकता ह। समानाधिकार और घर की गहुरित नामा म बाहर ध्यान का यह अर्थ नही कि नारा घर का छोडकर बाहर ही अपना धन बनात। नारी ता उम स्वयं पनी क समाज हागी जा मुक्त समाज म ऊँच स उँच उठन की भी शक्ति रगत हुए अपना न ट ग पागन प माह म भी सेवा रतना। ताका का जीवन उम गहर गागर म बस नही ह जिगर अन्नर म गागर क गजन के अतिरिक्त नारी को शक्ति भी निहित ह।

विवाह दो शरीरो का पवित्र मेल

भाज पति पत्निया म तलाक की प्रथा म वृद्धि हा गई ह उनम बाती गही है । जो समाज प्रेम के आधार पर विवाह को निर्मित करेगे, उन समाजा म तलाक अनिवाय होगा, क्योंकि प्रेम तरल है, मन चंचल है, शरीर स्थिर धार जड है । शरीर के तल पर जो विवाह ह वह स्थिरता साता ह वह समाज के हित मे ह । शरीर क तल से ज्यादा पनि और पतिन का बाई सम्बन्ध नहीं ह । उका मित्रन एक यात्रिक, एक मकनिकल म्टीन हा जाता ह, जहाँ प्रेम नहीं है वहा रोज रोज एक तरह का सम्बन्ध पैदा हो जाता है और यह जीवन भर निभ भी जाता है ।

दूसरा तल ह मानसिक । जा लाग प्रेम करत ह और फिर विवाह करत ह उनका सम्बन्ध शरीर के तन म थोडा गहरा मन तव जाता ह लेकिन राज रोज उसको पुनरावृत्ति होन म थाडे दिना म वह भी शरीर के तल पर आ जाता है और यात्रिक हा जाता है । दो सौ वर्षों म पश्चिम न जो विवाह की व्यवस्था विकसित की है वह प्रेम को मानसिक तल तक ल जाती ह । इसीलिए पश्चिम म समाज प्रस्त पस्त हा गया ह क्यानि मन का बाई भरोसा नहीं है । 'वायरन' पश्चिम का एक प्रसिद्ध विद्वान हुआ है, विवाह स पूव उसका सम्बन्ध कई स्त्रिया से हुआ । जब वह विवाह करके चच की गीडिया स उतर रहा था ता उसे चच के सामने ही एक और सुन्दर स्त्री जाती दिलाई दी और उसका मन उसका पीछा करन लगा । मन इतना चंचल ह कि जिन नागा का समाज का व्यवस्थित करना है उनन अपना मन शरीर क तन पर ही राब लिया है जस भारत । अत विवाह करा, प्रेम नहीं फिर विवाह स प्रेम आता ह तो आय, न आता हा तो न आय । शरीर के तल पर स्थिरता हो सकती है । पश्चिम मन के साथ प्रयोग कर रहा ह इसलिए विवाह टूट रह हैं परिवार नष्ट हा रह ह ।

तीसरा तल है आध्यात्मिकता का । घटा नौ मास तक पेट म माँ की सास से सास लता है, माँ क हृदय म धडकता है, माँ के खून स खन, मा क प्राण स प्राण, उसका अपना बाई अस्तित्व नहा हाता वह माँ का एक हिस्सा हाता है । इसीलिए स्त्री माँ बने बिना कभी भी तृप्त नहीं हा पाती । बाई भी पति म्त्री का कभी भी तृप्त नहीं कर सकता जा उमका वेटा उम कर देता ह । मा का नितार, पूरी तरह सौन्दर्य, उसका माँ बनन पर प्रकट हाता है । बहुधा पति हरान होत है कि उसकी पतिन माँ बनन के बाद उसम प्रेम रचि लती है क्याकि उनने मातृत्व का एक गहरा रम ल लिया ह । पिता बिल्कुल मामाजिक व्यवस्था है, मा आध्यात्मिक गन्निमा ह ।

पश्चिम म आज उलटा हा रहा है, आज वही म्त्रियां शारीरिक सम्बंध म अधिन रस लेती है। मा बनन स इकार करती हैं। वही पर एन नया भय ममा गया ह कि यहा जनसंख्या कम न हो जाय वशति गोमित नियमन म मस्त्री की जा सकती है। लेकिन किमी स्त्री को मजबूर नहीं किया जा सकेगा कि वह बच्चे पदा ही कर। वही ये मनावज्ञानिक सलाह दे रहे हैं कि बाल विवाह प्रारम्भ कर दें क्याकि स्त्री म समझ भा जान पर वह मा बनन स इकार कर दती है। पति पत्नी का सम्बंध उमकी तयारी ह, उसका भ्रत नहीं है। यह उसकी यात्रा है और यात्रा सदा कष्ट म हाती है मजिन पर आराम मिलता ह। इम कष्ट का भ्रन ता वही होगा जहाँ स्त्री मा बन जायगी और पुष्प फिर बेटा हा जायगा। यह तत्र ही सम्भव हागा जब पति और पत्नि म आध्यात्मिक काम का सम्बंध स्थापित हा जायगा। आध्यात्मिक काम को ही प्रेम कह सकते हैं।

तत्र य संबस—तत्र न मकर को आध्यात्मिक बनान का सबसे पहिला प्रयास किया था। मजुराहा म म्त्रे म्दिरा पुरी और काणाक के म्दिर इसवे प्रमाण है। मजुराहो क म्दिर जि हाने बनाये थ उनका स्थाल था कि इन प्रति माया का भ्रगर कई ध्यान स देवें ता यासना स मुक्त हा जायगा। यह प्रतिमाएँ ध्यान की वस्तु हजारों वर्षों तक रही। जो लोग अत्यंत कामुक थ उह मजुराहा के म्दिर म जाकर उह ध्यान करवान क लिये कहा जाता था कि तुम ध्यान करा इन प्रतिमाया का देखा और इम लीन हा जाया। यह एक मनावज्ञानिक तथ्य ह कि यदि मथुन का प्रतिमाया का कई शांत हाकर ध्यानमग्न हाकर दने ता उसक शरीर म जा मथुन को विकृत पागल दशा है वह विलीन हा सकती है। यदि रास्त म दा आदमी लड रहे हा ता हजारों काम छाड कर भी आप उनका लडना देख सकते हैं। इमका कारण है, दा आदमिया का लडत दख कर आपके भीतर जा लडन की प्रवृत्ति है, वह विसर्जित हाती ह। उसका विकास हाता है वह वाष्पीभूत हा जाती ह। एक मालिक स एक नौकर बहुत नाराज था क्याकि वह उस अपमानित करना था। यदि यही स्थिति रही ता आवश म एक दिन नौकर उस वह जूता भी मार द परंतु नौकरी का जो दर था। उसन घर वाला स भी यह कहा ता व इसे एक मनावज्ञानिक क पास ल गए। उसन बताया कि मालिक की एक तस्वीर घर म रखे और राज सुबह पाँच जूत धार्मिक भाव स उमे मार। पहिल तो उसे यह पागलपन मालूम हुआ, पर तु जब वह राज पाँच जूत मारकर दफ्तर जाता तो 15 दिन पश्चात् ही उस अनुभव हुआ कि यह मानिक के प्रति अत्यंत विनयशील हा गया। इसका कारण था तस्वीर का जूता मारन स जूता मारन का भाव तिगहित हा गया, वह वाष्पीभूत हुआ।

आज बच्चे पदा होना आकस्मिक ह, बच्चे विना बुलाये महमान है इसलिये बच्चा न प्रति वही प्रेम हा सक्ता ह जो विना बुलाये भेटमाना के प्रति हा मक्ता

है। सारी दुनिया में हमेशा से यह कागिण रही कि बच्चे से किसी प्रकार बचा जाय। आयुर्वेद के ग्रन्थों में दवाइया का उल्लेख है जिनके लेने से बच्चे नहीं ह्राये। आयुर्वेद के तीन चार हजार साल के पुराने ग्रन्थों में इसका विचार करते हैं और आज का परिवार नियोजन भी इसका खूब प्रचार करता है क्योंकि बच्चे बचाने में आ जाते हैं, जिम्मेदारी ले आते हैं और आप इस जिम्मेदारी से बचना चाहते हैं। आपका बच्चा से प्रेम नहीं है अपनी सपत्ति से प्रेम है कि एक हफ्ता मरे खून का उस बच्चे के लिये होना चाहिये। वह जाना है आपका पुत्र, पुत्री नहीं। भारत में पुत्र होने पर थालिया बजायी जाती है, मिठाईयाँ बाँटी जाती हैं पर तु पुत्री उत्पन्न होने पर मातम मनाया जाता है। पुत्री के पदा होने के साथ देहेज का दानव आपके समर्थ गडा हो जाता है। ममन्याएँ बहुत हैं और मनुष्य का कमी में जीना है और मुक्त दुःख का समान मान कर चलना है। दुःख सुख है और मुक्त दुःख है। यह तो मानने वाले पर निर्भर है। दुःख मनुष्य की कमी है। सुख मनुष्य के अस्तित्व को भुला देते हैं क्योंकि मनुष्य नहीं जानता कि वह कहां है। दुःख मनुष्य सिखाने वाला है और मनुष्य को सीखने वाला दुःख का अंत है। वह मनुष्य का सच्चे स्वरूप का जान कराता है।

डा० सवल्ली राधाकृष्ण का कहना है कि—काम वासना को अपवित्र या अशिष्ट समझना नतिक विकृति का ही चिह्न है। यह कोई राग या विकार नहीं है, अपितु एक स्वाभाविक सहज वृत्ति है। जीवन में इस समय का घोर अशांति है उसकी यह चेतावनी है कि ऐसा सदाचार जो अक्सर पाते ही सत् के बंधन से निकल भागना चाहें वह कोई सदाचार नहीं है।

अतः सुखी दम्पति का जीवन बिताने वाला के सम्बन्ध टूटे नहीं, जुड़े रहें। पाश्चात्य जीवन में जहाँ तलाका की बाढ़ आ रही है, भारत में भी ऐसा होना लगा तो हमारा ब्रह्मिक जीवन जो हजारों वर्षों से बना है पाश्चात्य देशों के समान ही भविष्य में टूट कर बिगड़ जायेगा। हमारे आपसी सम्बन्ध की बुनियाद पक्की है और हम सुखमय जीवन बिता सकें, यही कामना है।

अर्थे भार्या मनुष्यस्य आया श्रेष्ठतम

मनुष्य के जीवन को निर्वाह योग्य, रहस्यमय और सुखपूर्ण बनाने में लिंग भेद बहुत बड़ा कारण है। समाज के नष्ट होने के भय से समाजशास्त्र में अविवाहित आयुष्य प्रथम अर्थात् किया गया है। नीतिशास्त्र में ऐसा मनुष्य प्रथम इसलिए माना गया है कि अविवाहिता की बढती हुई संख्या से समाज में व्यवहारा बढना। इसीलिए इन दाना में गामजस्य स्थापित करने वाले और परामश का चिन्तन करने वाले धर्मशास्त्रों में यह श्रेयस्कर नहीं माना गया है। आयुर्वेद शास्त्र में भी अविवाहित जीवन मान्य नहीं है क्योंकि अविवाहित पुरुष का दीर्घायु और मवागपूरण जाना

एक प्रवार म असम्भव सा ही है। स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं, इसीलिए इन दोनों का परस्पर साहचर्य होना आवश्यक है, और समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा धर्मशास्त्र तीनों की दृष्टि से यह साहचर्य विवाह की रीति से होना आवश्यक है। ऐसे भी उदाहरण देवन म आते हैं कि अविवाहित स्त्री पुरुषों ने भी मसार म प्रसिद्धि प्राप्ति की है परन्तु यह अपवाद ही है।

स्त्री पुरुष का वैज्ञानिक मेल—विद्युत् शक्ति सदा धन और ऋण इन दो प्रवाहा के मेल से अपना काय करने म समथ हाता है। इसी प्रकार मानवीय जीवन को पूरा बनाने के लिये स्त्री और पुरुष के धन और ऋण जीवन विद्युत् प्रवाह का सगम करने की आवश्यकता होनी है। पुरुष धन विद्युत् प्रवाह है और प्रेरक है। स्त्री ऋण विद्युत् प्रवाह है और संग्राहक ह। प्रारम्भ से ही पुरुष शिवार को गया और स्त्री न घर बसाया है। पुरुष आत्मात्मक है और स्त्री ग्राहक है। सारी सम्भता का जो स्थिर तत्व है वह स्त्री न बनाया है। अगर स्त्री न हो तो पुरुष आबारा ही होगा। घुम्नक्कड ही होगा। नगर की सम्भता स्त्री के कारण से हुई। क्योंकि स्त्री एक जगह रुकना चाहती है, पुरुष को उसके आसपाम दुनिया बसानी पडती है, इसलिये नगर बसे, गाँव बसे, सम्भता बसी, घर बना। अत जब स्त्री और पुरुष दोनों का मिलाप होगा तभी इनम विश्व चेतना का प्रवाह प्रवाहित होगा परन्तु इसके लिये दानों के ही समस्त गुणा का मेल होना आवश्यक है। दाना की समस्त वृत्तिया मे ऐसा मेल होना आवश्यक है। दाना की समस्त वृत्तिया मे ऐसा मेल होना चाहिये जो आपस म एक दूसरे की विरोधी न हा अपितु पोषक हो और इन दोनों म नामजस्य या एकरमता आनी चाहिये। दाना म स्वभाव बचिय हो तो भी काम चल जायेगा परन्तु यदि वह बचिय परस्पर पोषक और अविरोधी हागा, तो वह सम्बन्ध स्वर्गीय तथा सुखद हागा और अत म उसका परिणाम अपूब मुग्धनायक होगा।

मनुष्य प्राणी या उसका समूल शरीर भिन्न-भिन्न रासायनिक द्रव्या की प्रक्रिया से बना हुआ है। एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य म जा विचित्रता देवन म आती है, वह इही रासायनिक मिश्रण के भेद के कारण उत्पन्न हाती ह। मनुष्य का मूढम मनामय वह समस्त मूढम स्थिति और शक्ति इही रासायनिक प्रक्रियाओं के मूढम रूप हैं। दा व्यक्तिया का मिनाप एक नवीन रासायनिक मिश्रण हाता है। बहुत से रासायनिक द्रव ऐसे हाते हैं जा म्वन पूरा रूप स निरूप द्रव्य हात है। परन्तु कुछ द्रव्य ऐग भी हाते हैं जिनम यदि दो विनिष्ट निरूपद्रवी द्रव्या का मिश्रण कर ल्या जाय ता वह मिश्रण एक भोग्य विष बन जाता ह। कुछ द्रव्य एम भी हात हैं जिनका मिश्रण कभी हा ही नहीं सकता। व सग एक दूसरे के विरोधी और आपस म झगडा करन बाल ही रहगे।

(9) एक दूसरे पर विश्वास व प्यार करे, यह समझकर कि हम दो शरीर एक जीव हैं, किसी भी प्रकार की चोरी बात एक दूसरे से न छुपावें।

(10) सभी काम एक दूसरे की आज्ञा, इच्छा व स्वीकृति में ही। मतभेद होने पर समझकर बीच का रास्ता निकालने का प्रयास किया जावे।

(11) किसी बात पर विवाद होने पर स्वयं ही भगड़े का निपटा लें। किसी दूसरे का मध्यस्थ न बनावें।

(12) अपने आचरण और व्यवहार से बच्चा पर उत्तम संस्कार डालें। यदि कोई बुरी आदत नशा, बीड़ी, मिगरेट आदि की हो तो यह बच्चा के सामने कभी न करें।

(13) एक दूसरे के सम्बन्धों का पर्याप्त आदर करें। यदि उनमें कोई बुराई भी हो तो उस एक दूसरे का न कह। साम बहू मिलकर रह।



सास बहू मिलकर रह

(14) छोटी छोटी बातों या मूला को अधिक महत्व न दें। यह समझकर धमाका भाव लावें कि ऐसा होना ही था इसमें किसी का क्या अपराध।

(15) पति पत्नी जीवन की गाड़ी के दो पहिये हैं गाड़ी जब ही ठीक चल सकती है जब दोनों पहिए समान हों व साथ साथ चलें, रसीलिये एक दूसरे के महत्व का समझें।

(16) जो आदतें एक दूसरे को परमाद नहीं हैं, उनका छोड़ने का प्रयास करें। पत्नी का यदि पति का सिनमा देना बलबा में जाना, तांग खेतना परमाद नहीं हो तो उस छोड़ दें या कम से कम कर दें।

(17) पत्नी घर को सुघट महिला के अनुसार घर की सभी वस्तुओं का परीने से सजा कर रखें। पति का भी वस्तुव्य है कि इमम उस गहायता करे। परन्तु एक दूसरे की रूचि का ध्यान अवश्य रखें।

(18) पत्नी व्यय की निंदा नुगली म बचे और पति व काम से घर धान पर ही शिकायत न करे। अथमर देखकर वह उमकी बाद म जना दिया जावे। पति भी पत्नी को शिकायत करते समय, समय का ध्यान रखें।

(19) दोनों ही घर का बजट आमदनी के अनुसार बना लें तथा उमी व अनुसार चलने का प्रयास करें जिससे फिज्ज र्गर्ची न हा। अपध्यय से मदा बचा जावे।

(20) दोनों ही अधविशवाग, छुप्राछून, झूठ व ढाग आदि व्यय की वाता को लेकर घर म कनह नहीं करें। यदि पत्नी अनुभवहीन हा तो उगे जीवन में ऊँच नीच समभा कर अध्ययन का शौन डान कर दण बनाया जावे।

प्राथमिकता के अनुसार वस्तुव्य निश्चित किए जायें। वच्चा का पालन पोषण, पढीसिया स व्यवहार व सामाजिक मन्वारा म दान मेवा आदि को आवश्यकता के अनुसार महत्व दिया जावे।

दोनों ही सादा जीवन उच्च विचार का उद्देश्य अपने ममण रख कर वाय करें। पति पत्नी को यह अनुभव करावें कि वास्तव मे वह गृहम्वामिनी है और उमका दायित्व महत्वपूर्ण है। पत्नी के माता पिता स अथवा मन्वकी म कोर् वस्तु आवे तो सहय स्वीकार करे और उममे दोष न निराले। उमी प्रकार पत्नी भी पति के मन्वधियो की वस्तुओं म दोष न देखे। पति मे जो भी गुण हैं उमकी भीनी भीनी प्रशसा करें। उसके मीदय उसके वस्त्र व उसकी वस्तुधा की विशेषता बताएँ। परन्तु उसने सम्मुख दूसरी स्त्री की प्रशसा तुलना के रूप म न करें।

एक दूसरे की मूल ही जान पर प्रेम से उस बतलाएँ, आवश म आकर वटुवचन न बोलें, अपनी मूल स्वीकार करन म सकाच न करें एक दूसरे को आदर से सम्प्रेमन करें। पति पति को अपना जीवन साथी समझ सेवक नहीं। पति चाहे कितना ही ध्यस्न हो, नित्य प्रति अपना घाडा समय पत्नी व वच्चो के साथ वातचीत करने के लिए अवश्य निकालें।

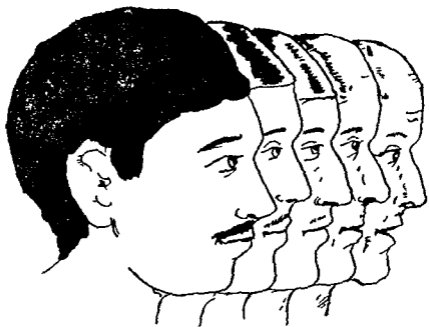
पति अपनी महानता न जताव न उसे यट कहे कि उसकी कमाई पर ही घर चल रहा है। स्त्री का काम भी घर का सम्भालना, वच्चा का पालन पापग करना भी कम महत्वपूर्ण वाय नहीं है। पति व पति वच्चा म स किसी एक का अधिव प्यार करते हैं व पणपात करते हैं ऐसा व्यवहार घर म कभी कभी बलह का कारण होता है। इससे बचा जाव।

राजनतिक व धार्मिक विश्वास मे यदि दोनों समान विचार रखते हा ता उत्तम है पर नु मतभेद हान पर एक दूसरे का गहन किया जाव। दाना को हा परस्पर धयवा अय लागू व साथ व्यवहार म मधुरता, सत्यता तथा स्पष्टता का ध्यान रखना चाहिय।

चतुर्थ सोपान

वृद्धावस्था

जन्म में लेकर मृत्यु तक मनुष्य के शरीर में ही नहीं प्रत्येक जीव मान के शरीर में अवस्था बदलती रहती है। बालक से जवान होता है जवान से वृद्धावस्था आती है, किसी भी अवस्था का हम टाल नहीं सकते, पर इतना तो अवश्य कर सकते हैं कि जवानी को अधिक वर्षों तक कायम रख सकते हैं। वृद्धावस्था को कई वर्षों तक टाला जा सकता है ऐसा बताया गया है जिसमें 70 वर्ष का व्यक्ति अपने



वृद्धावस्था युवावस्था की छाया है।

को 50 वर्ष का अनुभव कर। 50 वर्ष का व्यक्ति इतना धरा मादा रह सकता है एक शायर की यह उक्ति कितनी ठीक है—युवर्गों के अवलम्बन साल के तद्वगरी न दिनम्बन न बमान। 70 80 वर्ष का व्यक्ति इतना पुनीला हो सकता है उस

40 50 वर्ष का है। मनुष्य का स्वप्न रहा। नि बर वृद्ध है। जवानों कापत करने की शक्तिया देवा के इन्द्रतहारा के सहायक जात बितन गान्तगो, पुस्तनी यद्य हनीमा की गुजर बगर हो रही है। प्रादि युग म ही प्रादमी प्रमृत और प्रमरफन की तलाज म रहा है। मोमरग और मजीवनी यो के नाम पर पता नहीं बरा-बरा गाया पीया जाता रहा है। चरपत कति का फिर म योरत दा वाता चरपनप्राग मूय बिवता है। मन्मन्गान, घबनह, जिना और नम्म राज यद्य द्वारा मुग मुन्दरी मे गव रहते बान राजा महाराजप्रा और तयाथा के निग तजवीज विय जाने रहे हैं। गिमे उदाहरण यून म मिन गाते हैं।

घठारहवीं मरी के घात म हामोता की गात्र हई तो तिरयोवा की तलत फिर भभव उठी। एक विगानत विजियो साजिग्न न घापणा की वि बन्दरा के वद-गगत के इजेकान म बहु फिर जवान हा गया है। बन्दरा का विपात होा लगा और हमने बिनती ही विदेशी मुद्रा बमाई। तिरयोवा की म घधी दीष्ट म क्या तकी प्राजमाया गया। उडीरर रगायन ड्रेनत मुग भ्रुमीपरम पानी बलिा और टंस्टोस्टरोन जग सगिव हामोन, ममन की कोशितागे जेर का घन किलारोव नामक डाक्टर के बापाजविव उदीपरत ग्राटर बोगामा स्टम द्वारा उनका मे बनाया गया उदीपरत मोरम मधुमत्रिगमा की रायन जली तथा तात्रालन और उमम म्युत्यग रगायन घाति की एग नम्बी गृत्तता है। यही ता वि मूष मुँह बरना का मूत्र तथा युवका का शुत्र भी यौवनकारी रमायना के रूप मे प्राजमाया गया है। लेकिन हमग काई भी चीज एमी गाबिा तही हई जिगमे कोई विभेग नाभदायक परिणाम निबन्ना हा। यह विश्वासमूवक कहा जा सकता है वि दीघ जीवन तथा निरोग रहोे का रहस्य मनुष्य के बाहर नहोे मनुष्य के भीतर ही दिग्या है। किगी डाक्टर, हनीम यद्य की कोमती औपधिया म नहोे मनुष्य के घपन हाथ म है बिात बुद्ध गव विय। घागिर बुझपा केम घाना है ? उन्न बदन के माय माय शरीर के पुजे घिसने लगत है। 25 मे 35 बर तक शारीरिक् और मागमिक् विकाम का स्वए युग हाता है। निमाग 21 माग तक बरना जाना है और 30 माग म 75 माग और घाग धीरे-धीरे घटता जाता है। दिमाग के घावार म भी बृद्धावस्था म 10 म 22 प्रतिशत तक कमोे हा जानी ह। दिन और निमाग की तथा बरान पशी की काशितार्ह नण्ट हान के पश्चान अपनी जगह दूसरी कोशिकागे नहोे बनानी। घावा के तारोे का तनीनापत 12 माग की उन्न म ही घटन तगता है।

श्रवणेन्द्रियौ दम गान म परिपन्न हो जाती हैं और फिर लाम शुभ हो जाता है। तिन के मून म्प्य करन की तावत म 30 म 50 प्रतिशत कमी हा जाती है। पेषडे घव उतना घाससीजन नही सीवत। पट की पाचन शक्ति भी दुनिया भर के व्यजना स लडत लडत हार जाती ह और मग घार वञ्ज की शिवायत ।

हैं। गुर्दे पहल से 2/3 याम वरन लगने हैं। शरीर म जीवन रस हार्मोन का संचार करने वाली ग्रंथियाँ भी शिथिल हो जाती हैं। एक विशेष अवधि के पश्चात शरीर की कोशिकाओं के विभाजन संबन्धी नई सतति कोशिकाएँ कमजोर होती हैं फिर उमसे और कमजोर कोशिकाएँ पदा होती जाती हैं।

शरीर के भीतर कोशिकाओं में चलन वाली रासायनिक क्रियाओं में अतिरिक्त रूप से पदा हुए विपले पन्थ इकट्ठे होते जात ह। एडीनल, पिट्यूटरी और थाईराईड आदि ग्रंथियाँ अतत बुढापा ले आती हैं। परंतु इम सबका मुख्य कारण मनुष्य की धमनियाँ तथा शिराओं म तलछट निक्षेप का जम जाना है। यदि नस नाडियों म तलछट के जमन को न रोजा जायेगा तो शरीर के अय अवयव भी राग से आक्रात होने लगेंगे और मम्पूण शरीर का ह्वाम होन लगगा। परिणाम यह होगा कि युवा वस्था म अगा की जो लचक थी वह जाती रहेगी और अग अग म कडापन मालूम होने लगगा। शरीर के अगों की लचक ही युवावस्था है और लचक का न रहना ही वढावस्था है। धमनियाँ में चाक सरीखा यह तत्त्व अथवा यूरिक एसिड अधिक जम जाता है तब वे कडी पड जाती हैं, सकुचित हाँ जाती ह। जब धमनियाँ में तलछट निक्षेप जमन लगता ह तब शरीर का मवतामुखी ह्वाम होने लगता है इसी अवस्था को पुढपा तथा स्त्रियो में वढावस्था कहा जाता ह।

बुढापा व मनोभ्रंश विकार—

मस्तिष्क की एसीटाईल कोलिन प्रणाली की खोजबीन में लगे तंत्रिका वैज्ञानिकों की दिलचस्पी इन दिनों आल्टसहाईमर रोग की गुत्थी सुलभाने में बढती जा रही है। यह मनोभ्रंश के विकार का एक विशिष्ट रूप है जिसमें इससे पीडित 50 से 60 प्रतिशत तक रोगी रखे जा सकत हैं। सन् 1907 में जर्मनी के एक तंत्रिका रोग विनानी आल्टसहाईमर न सबसे पहले इसका वणन मस्तिष्क में होने वाल निश्चित परिवर्तना के रूप में किया था। कुछ रोगियों के मस्तिष्क की चीर फाड के पश्चात वह इम परिणाम पर पहुंचे थे कि इस किस्म के मनाभ्रंश में आदमी के दिमाग के अंदर कुछ खास तम्बीलिया होती हैं।

पक्की उम्र के लोग अब मारे ससार में पहन से अधिक संख्या में पाए जाते हैं और इसलिए आल्टसहाईमर के मामले भी बढत जा रह है। पश्चिमी देशों में 65 मान में अधिक उम्र के लागा में म 15 प्रतिशत आल्टसहाईमर रोग से कराह रह थे इनमें से एक तिहाई रोगियों की हालत इतनी खराब है कि उन्हें अपनी देवभाल व त्रिए बाहरी सहाय की आवश्यकता हाती है।

मनोभ्रंश के रोगी की मानसिक क्रियाओं में कमी आना सही फमला न कर पाना और बुद्धि स जुड़े कामों में पूरक होना और उमके साथ ही यान्दास्त की कमी

ही मनोभ्रंश के लक्षण हैं। बाद में इस रोग से पीड़ित व्यक्तियों के मस्तिष्क के उत्तकों की सूक्ष्मदर्शी से जांच करने पर कई तरह के परिवर्तन दिखाई दते हैं। मुख्यतः यह देखा जाता है कि तंत्रिका तंतुओं में फटे पड़े जाते हैं, बुझापे से जुड़े कुछ चिह्न दिखाई देते हैं, जैसे तंत्रिका चकत्। इसके साथ ही दिमाग के कुछ हिस्से में तंत्रिका कोशिकाओं की संख्या भी घट जाती है। इन फटकों का दाहक धागे वाले तंतुओं का झुण्ड कहा गया है जो तंत्रिका कोशिकाओं के आसपास की जगह में चकत् से बन जाते हैं जिनमें शरणशील तंत्रिका कोशिकाओं का मलबा इकट्ठा हो जाता है और उससे चारा और उनसे अनुश्रवण करने वाली कोशिकाएँ जमा हो जाती हैं। रोग अधिक बढ़ने पर तंत्रिका कोशिका की संख्या में स्पष्ट कमी देखी गई है।

ज्या-ज्या आयु बढ़ती जाती है, त्या-त्या शरीर का तापमान नियमन क्षमता घटती जाती है जिसके कारण बड़े-बड़े लोग अधिक ताप और शीत सहन करने में असमर्थ हो जाते हैं। उनमें विटामिन डी की कमी हो जाती है जो कि अस्थियाँ के निर्माण के लिए आवश्यक तत्व है। यह भी ज्ञात हो गया है कि आयु के साथ-साथ शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति घटती जाती है क्योंकि उमर बढ़कर अस्थायी रासायनिक कचरे के जमा होने से लिम्फोसाइट्स क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। इस रासायनिक कचरे को एंटी-आक्सीडेंट्स से सवने से प्रभावहीन बनाया जा सकता है।

जवानों को कैसे कायम रखा जाय

कम-कमारी किन्तु अधिक पीठबन्ता से सम्पन्न आहार जीवन-काल बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। लेकिन आहार का अनुशासन बँधना ही नहीं कभी कभी खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

ध्यान रहित व्यायाम के लिए एक विद्युत यंत्र का प्रयोग किया जा रहा है जो मांस तंत्रिका के लिए लाभकारी है। इसका प्रयोग बीमार व्यक्ति भी शय्या पर लेटे-लेटे कर सकता है। यह व्यायाम आहार नियमन से अधिक प्रभावी पाया गया है। अथवा कृत्रिम रक्त और कृत्रिम त्वचा का भी आविष्कार हो चुका है जो बुझापे के निवारण में उपयोगी हो सकता है। बुझापे किसी दवा से ठीक नहीं किया जा सकता। प्रवृत्ति का एक ही उपाय है वह उपाय है घषण रगड़ना। Friction शरीर के अंग प्रत्यक्ष में जो निक्षेप आ बँधे हैं उन्हें रगड़कर दूर करने का क्या उपाय है? यह उपाय है—नस नाडियाँ तथा मांस पेशियाँ का सक्कल करना, Contraction फिर इनके शिथिलीकरण से उनमें एक रगड़ पदा होगी जिससे धमनी तंत्र में भी गतिज तत्व या यूरेिक एसिड जमा पड़ा होगा वह उगड़ जायगा और रधिर के साथ वह जायेगा। रधिर की नाड़ी चाड़ी हो जायगी और शरीर की स्वच्छता प्रवाह में जा सक्कल पड़ी हुई थी, वह दूर हो जायगी। अगर धमनी तंत्र (System) को नूना, यूरेिया, एमिण्ड एवं अनिद्रण पदार्थों से मुक्त रखा जाने ला

नियों तथा वाशिनामा की दीवारों युवा शरीर की धमनिया तथा कोशिकाओं की तरह चमकीली बनी रहगी, उसने द्वारा हृदय बिना किसी कठिनाई के अधिर का सब अंगों में पहुँचा सकेगा। शरीर व अंग प्रत्यग का प्रमश सिखोडना और ढीला कर देना यही शरीर के काया रूप का रहस्य है। इसी से वृद्धावस्था टल सकती है। इसी से वृद्ध हो रहे अंगों को युवा बनाया जा सकता है।

छोटे छाट बच्चा का दक्षिण व वित्तन प्रियाशील रहत है। इस प्रियाशीलता में उनके यौवन का रहस्य छिपा हुआ है। प्रकृति ने आरम्भ से बच्चा के जीवन में यौवन की प्रियाशीलता डाल दी है। वह एक जगह टिक कर बठ नहीं सकता, इस लिए उसका सभी अंगों को व्यायाम मिलता रहता है।

व्यायाम—व्यायाम बहुत प्रकार से किए जाते हैं, जैसे टहलना, दड, बठक करना, कुश्ती लडना, मुगदर घुमाना, तरना, वजन उठाना, दौटना, फुटबाल, हाकी वास्केटबाल, वालीबाल खेलना, योगिक व्यायाम करना, प्राणायाम करना, तल मालिश आदि हैं। सभी व्यायाम अपनी अपनी जगह ठीक है परन्तु शरीर का लचीला बनाने के लिए रक्त वाहिनी नाडियाँ में रून का संतुलित रूप से प्रवाह होता रहे उसके लिए योगिक व्यायाम, प्राणायाम ही उत्तम एवं वैज्ञानिक माना गया है। वृद्धावस्था का रोकने के लिए तो सर्वोत्तम योगिक आसन, प्राणायाम एवं मालिश पथ ही प्रधान है।

व्यायाम करने का समय—व्यायाम करने का समय प्रातः काल है। जब सूर्य निकलने का समय है। उस समय की वायु का यदि हम फेंकड़ा में गहरा सास लेकर भरें तो वह हमारे अंग प्रत्यग का विद्युत शक्ति से भर देती है। भारतीय शास्त्रों में इस प्राणशक्ति कहा गया है। दीर्घ जीवन के लिए जो अभ्यास किए जाव उनसे तब जाकर लाभ होता है जब वे प्रातः काल सूर्योदय के समय ऐसे स्थान पर किए जावे जहाँ पर नग्न शरीर पर सूर्य की रश्मियाँ पड़े। सूर्य व्यायाम इसके लिए अत्यन्त उपयोगी है। शरीर को युवावस्था को बनाए रखने के लिए कलसियम तथा फास्फोरस की आवश्यकता है परन्तु यह शरीर में तब ही घुलत है जब उन्हें विटामिन डी प्राप्त होता है। इसलिए प्रत्येक गृहस्थ को सूर्य स्नान करना अर्थात् सूर्य का किरणों का सार बदने का लगाना आवश्यक है। सिर पर अधिक समय तक घूप नहीं लगाने चाहिए। उम्र पर सौलिया या अन्य कपडा रत लना चाहिये। शेष शरीर को खुला रखकर घूप लगाना चाहिये। सामकाल के समय दिन भर की धूल व गद वायुमण्डल में रहती है, सायंकाल व्यायाम करने से वह फेंकड़ा में जा सकती है। रात के समय वह नीचे जाती है इसलिए प्रातःकाल का वायुमण्डल जब शुद्ध होता है तब उम्र गहरा गाँव जाने के लिए मे शुद्ध वायु पहुँचती है।

यौवन के लिए इच्छा शक्ति—इच्छा शक्ति का हमारे जीवन को नियंत्रित करने में बड़ा भारी हाथ है। भारतीय विचारधारा तो यह है कि शरीर-की रचना ही मन या इच्छा शक्ति से हाती है। शरीर विचार का निर्माण नहीं करता, विचार शरीर का निर्माण करता है। मनुष्य के जैसे विचार होंगे, वैसा ही चेहरा बन जायगा।

किसी दुष्ट का चेहरा किसी सत्त का सा नहीं हाता, किसी सत्त का चेहरा दुष्ट का सा नहीं होता। इसका यही कारण है कि मन विचार सवेग, आदतें, स्वभाव इच्छा शक्ति, प्रेम, द्वेष य सब जो मानसिक गुण हैं उनका ही मनुष्य की रचना में मुख्य भ्रग है। भोजन से शरीर स्वस्थ होगा, किंतु हमार भीतर मन है, इच्छा शक्ति है, सवेग है इसके माथ उनको भी मिला देने से ही मनुष्य सम्पूर्ण का विवास हाता है, आर इसीस चरित्र बनता है। यौवन का उभारने वाले बुद्धावस्था की रोकथाम करने वाले शारीरिक प्रयाग, अभ्यासा, व्यायामा को किया जाय, तब इच्छा शक्ति का इन भ्रग प्रत्यगो पर बेद्वित करना चाहिय, जिनका हम व्यायामा से त्रियाशील बना रह हैं। उदाहरणार्थ जस हम सीने का व्यायाम कर रह हा तो सम्पूर्ण इच्छा शक्ति को सीने की मांस पशिया पर बेद्वित करना चाहिय। हम शरीर तथा मन दाना का यौवन बनाय रसन के लिए क्रियाशील बनाना होगा।

मन को बढ़ निश्चयो बनाना—अगर मन में दृढ निश्चय कर लिया जावे कि दीघजीवी होना है तो लम्बी आयु हांना निश्चित है। अगर कोई यह अनुभव करता है कि अब तो वह बूढ़ हो गया, उसके जीवन में उत्साह व उल्लास नहीं रहा तो उस समझ लेना चाहिय कि उसका अंत निकट ही है। मनुष्य उतना बूढ़ा होना है, जितना बूढ़ा वह अपने आपको अनुभव करता है। जब मनुष्य अ न स्थल से निश्चित कर लेता है कि वह ठीक हाकर रहेगा, भले ही कुछ हा जाए आर उसके लिए मत्र पर आस्था रखकर उसका पाठ करता है तो उसस अभीष्ट मिद्धि हाती देखी गई है। विज्ञान के अनुसार यह सब कात्पनिक तथा अधविश्वास हो पर तु इच्छा शक्ति में इतना बल है कि वह मनुष्य में नवजीवन का सचार कर सगती है। रागी का जिस टाबटर पर विश्वास हाता है, उसी की दवा से लाभ मिलता है वयानि हमार भीतर की आशा आर विश्वास ही उसम प्राण का सचार करन लगती है। विज्ञान के अनुसार विचार या आस्था से ठीक हांना अधविश्वास का परिणाम है पर तु एस रागी ठीक हात देखे गए है।

मनुष्य के बाहर का जा ढाँचा है, वह उसक भीतर से ही निमाण हुमा है। अगर बाहर राग है तो वह भीतर से ही उठा है, इसलिए बाहर का ठीक करन व निग अपने भीतर ही जाना होगा। अपने भीतर बठी इच्छा शक्ति का प्रवाह जिन

और होगा, वसा ही बाहर भी होगा। इस सिद्धांत का उन शारीरिक व्यायाम, आसन के साथ जोड़न होगा जिसमें मासपेशिया का तनाव, सकीचन तथा उसके बाद फलाव (प्रसारण) करे।

शरीर की मालिश-घर्षण—त्वचा शरीर का मुख्य अंग है और उसका काम शरीर के सभी अंगों की रक्षा करना है। त्वचा के दो काम हैं—त्वचा के भीतर लाला बरोडा छोटी छोटी ग्रंथिया (Glands) हाती ह, जिनका काम भीतर ही भीतर रमीला रखना है। इसके अतिरिक्त त्वचा में लाखों बराडो छिद्र (Pores) हात हैं जिनमें से पसीने के रूप में शरीर के भीतर की गर्मी बाहर जाती ह। अगर यह काम न हाता शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता। ग्रंथिया का काम शरीर के भीतर रसों का उत्सर्जन (Secretion) है, छिद्रों का काम भीतरी मल का विसर्जन (Extraction) ह। अगर शरीर के भीतर ग्रंथिया द्वारा रसा का निमाण तथा आव नहीं हाता शरीर में रोग आ जात है। यदि शरीर में विपाक्त पदार्थों का विसर्जन न हो तो भी मनुष्य बीमार हा जाता है। ग्रंथिया तथा छिद्रों (रंध्रा) को क्रियाशील बनाए रखने से ही मनुष्य में यौवन का उत्साह बना रहता ह। इसके नियमित काय करत रहने से पाचन शक्ति ठीक हाती है। अंत ठीक काम करती ह, गुर्दों भी निरोग रहत हैं।

त्वचा का स्वस्थ रखने का उपाय ह—त्वचा का घषण। त्वचा का अच्छी तरह से घषण किया जावे, उस रगडा जावे और रगडन क पश्चात स्नान कर लिया जावे। इससे त्वचा स्वस्थ रहती ह और चमडे पर सिक्नुडन नहीं पडती। चमडे पर सिक्नुटन का न पडना ही बढावस्था का दूर रखना ह। त्वचा की दा तह हाती है उपर की तह का चमडा कहत है। चमडी का मुलायम रखने क लिय साबुनी, पाउडर का उपयोग करत ह पर उससे चमडी क छिद्रों के भीतर काइ असर नहीं हाता। कुछ समय तक चमडी मुलायम हो जाती है पर लाभ के बदल कभी नुकसान हा जाता ह क्यकि छिद्र बंद हा जात ह और छिद्रों से जा दूषित पदार्थ पसीने क रूप में बाहर निकलता है, वह रुक जाता ह। तेल घषण से हाानि नहीं हाती ह।

त्वचा के घषण का तरीका—खुली जगह में बठकर शरीर की स्वय मालिश करे या किसी जानकार व्यक्ति से करावे। स्वय करन से घापके शरीर का भी ताकत मिनेगी। स्नान के समय मालिश करन से प्रत्येक छिद्र जा रके हुए ह उनमें प्राण आ जायेंगे। मुलायम ब्रुश से भी मालिश की जा सकती है। नींद न आती हा, नाडी दुबल हा शरीर में अधिक गर्मी हाता सूखी मालिश, हाथ पांव में सरसराहट हाता ठडी मालिश या तेल मालिश, कमजार और पतले मालिश करे। माटापा दूर करन के निर गुर्मी मालिश या ठडी मालिश, जोर में पीट ता ...

का पोस्तिया आदि म तल मालिश, ठंड गरम व बिजली की मालिश, उपवास म तल मालिस व ठंडी मालिस लाभदायक है ।

घषण कहीं से प्रारम्भ करें—प्रथम सिर म कम स कम 2 मिनट करें । उसके पश्चात् बालो की जडा को ब्रुश या हाथ से करें फिर नाक गाल, पीछे की गदन पर करें । फिर छाती पर पट पर पीठ पर फिर नितम्ब पर, जघा पर पिडली पर और अन्त म पर के पजा पर एव पर के तलवा पर बरके समाप्त कर दें । इसम कम से कम 10 20 मिनट ता लगाना चाहिये । मात्रिश के बाद स्नान करे । स्नान ठडे पानी स करे और सुरदरे तालिए मे सारे बदन वा मले ।

सतुलित आहार लें—प्राटीन कलसियम, सा, विटामिन, आयरन, फासफारस आदि सभी चीजें उचित मात्रा म मिलने से सतुलित भाजन माना जायगा । अधि-कतर लाग केवल चावन गहूँ और दाल तथा तल या घत उपयोग करत ह किन्तु बाकी चीज जा शरीर वा सतुलित बनाए रखती है उनका प्रयोग नही करत हैं उमके अभाव म बीमारी वा अना शरीर वा घेडान हाना स्वाभाविक ह ।

कम त्वाया जाय जिमस पट पर जररत म ज्यादा बोभ न पडे । कम तान स उअर कम नही हाती ज्यादा तान से उअर कम हानी है और इती स लाग मरत हैं पट को कुछ आराम भी दिया जाय । ताना पट का सक्चन (Contraction) है उपवास करना पट का प्रसारण (Relaxation) है । इसी स लम्बी उअर हा सकती ह । सभी धर्मों म उपवास का महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है । ईसाई, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, हिन्दू सभी धर्मों म उपवास का धम वा अग बना दिया गया ह, ताकि मानव मात्र का स्वास्थ्य बना रह और दीधजीवी बनकर चरिय वा निर्माण कर सकें । निम्न शर्ता वा पालन करे—

- (1) प्रात काल सूर्योदय स पहल उठें ।
- (2) शौच आदि से निवत होकर स्नान कर ।
- (3) कम स कम 15 मिनट और अधिक स अधिक 30 मिनट ध्यान वा साधना के लिए नियमित रूप से ।
- (4) आसन वा व्यायाम कर तथा प्रात काल धूमन वा वायक्रम रखें ।

बुडाप की साच के कारण भी मनुष्य बूडा हान लगता ह । उमके पात पड पाते हैं और उस दादा परदादा बहन लगत हैं 'बाबा' दिन म सक्डा बार सुनन वा मिलता ह ता उस तजी से बुडापा तान म आर मदद मित्रन लगता ह । इसक अतिरिक्त अपने बाल बच्चो, स्त्री व पुत्र बधुभा आदि के रख व कारण भी उमे दुख हाता है । पहिल वह सारे परिवार का मालिक बन कर संचालन करता था जा वह चाहता था वही हाता था । अब बाल बच्चे व उसकी स्त्री जो बहती ह उसे हा उग मानना पडता ह । उमगे भी उगल मन पर बाभ पडता ह ।

अकृतापन—बुढ़ाप म मनुष्य काम धंधा छोड़ कर बैठ जाता ह या नीकरी स अवकाश हा जाता ह । दिन पहाड़ व समान लगता ह आर काट नही बटता । क्या कर यह भी समझ म नही आता । उस जीवन, भार स्वरूप लगन लगता है । वह अपन की जवान बस अनुभव करें ।

बुढ़ापा प्रत्यक्ष रूप स शरीर पर दिग्गद पडन लगना ह, बाल सफेद हा जात हैं । चेहर पर झुरिया पड जाती हैं, चमड़े पर सिकुडन हाने लगती है । गल के नीचे मांस व भाल से सटकन लगत हैं । बमर भूक जाती ह, दिखना बम हो जाता ह, यकान अनुभव हाती ह कान स बम सुनत है, भल बम लगती है, यह लगण एक साथ नही हात, धीर धीर 45 बप स लकर 70 बप तक होत ह । परंतु सब के साथ नही । कई व्यक्ति 70 बप की अवस्था म भी जवान के समान बोंय करते ह शारीरिक बुढ़ाप का कारण रक्त परिमचरण (Circulation of Blood) का अक्रियाशील हो जाना ह । बुढ़ाप म रक्त का सचारण मड पड जाता है ।

गृहस्थी की समस्याएँ भी सामन हाती ह, जैसे लडके लडकिया के विवाह की चिंता । जब काम धंधा करत थे या नीकरी करते थे तब तो इम ओर ध्यान नही गया परंतु रिटायर व पश्चात आमदनी भी बम हा जाती ह और खर्च वही रहत ह, उस चिंता स भी बुढ़ापा जल्दी ही लगता है ।

यदि बृद्धावस्था म पति पत्नी स पति अकेला रह जाता है या पति अकली रह जाती है जिनकी इस अवस्था म एक दूसरे की अत्यंत आवश्यकता हाता है तो उनका जीवन अधकारमय दिखन लगता है । जा लाग बुढ़ाप की याजना बना कर नही चलत, आमदनी का ठास साधन नही बनात, बाल बच्चा पर निर्भर रहत है उनकी दशा तो और भी बुरी होती है । घर म प्रतिदिन के तान, व्यग्य स बे टूट जात है और सदब मृत्यु का आह्वान करत रहते हैं । व भाग्यशाली ह जिनके पुत्र आज के युग मे अपन माता पिता की निस्वाय सवा करत हैं परंतु एस उदाहरण आज के इस दानिक युग म विरले ही मिलेग । बृद्धावस्था म मित्र भी साथ छोड़ जात हैं । अबल धन की समस्या को हल करन क लिए जीवन म शौक (Hobby) पदा कर लिया जावे । यदि जमीन हा ता फुलवारी या सागसब्जी सगाने का काम, छाट बच्चा व साथ खेलन व पढान का काम, प्रात स्वच्छ वातावरण म धूमना भजन या गान व कायक्रम म भाग लेना, पुस्तकालय म जाकर पुस्तक पढना या लिखना यदि योग्यता हा । समाजसवी सस्था म जाकर काम म लग जावे या पदाधिकारी या सदस्य बनकर इन सस्थाआ के माध्यम स समाज सवा का काप करें ।

अगर धन म रचि है तो अपनी मायताआ के अनुसार धार्मिक सगठना म भाग ले सकते है । दनिक क्रिया का विभाजन इस प्रकार करें कि सेवा पूजा धार्मिक म समय यतीत हा जाव । राजनीति म जिनकी रचि हो तथा अनुभव हो तो इसम भी क्रियाशील हो गाने ह । यथागम्भव उद्दानस्था मे एम धन की सहायता

जिनमें अनुभव हो अथवा धन व समय की कमी होगी। भारत में भी वृद्ध लोग के लिए स्वीडन की भाँति Old Age Association खोली जावे जहाँ पर अपनी रचि व स्वभाव के अनुसार विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर वृद्धावस्था में भी युवावस्था का आनन्द ले सकते हैं। सरकार द्वारा वृद्धों के लिए पेंशन व अन्य उपयोगी कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये हैं परन्तु वे पर्याप्त नहीं हैं। अकेलेपन की समस्या का हल करने के लिए रचनात्मक कार्य प्रारम्भ करने की आज अत्यन्त आवश्यकता है।

वृद्धों के लिये उपयोगी सुझाव—जो अधिकांश आयु के हैं उन्हें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये—

- (1) अपने मन से वृद्धेपन की भावना दूर भगाव। जिसके जीवन में उत्साह, आनन्द, प्रसन्नता, रसिकता, स्फूर्ति, ताजगी तथा उमंग है। वह वृद्ध होता हुआ भी वास्तव में युवा है।
- (2) कुछ समय सात्विक आमाद प्रमोद तथा हँसी लुशी में अवश्य रह।
- (3) बच्चा व साथ प्रसन्न रहे।
- (4) सदा हृष उत्साह तथा आनन्द की दिव्य भावनाओं में रमण कर।
- (5) अपने मन को सदा जयानी की मोठी तथा सरस चेतनाओं तथा दिव्य भावनाओं से इतना भरपूर रखें कि बुढ़ापे का विचार तक भी न आने पावे।
- (6) नित्य कुछ समय भजन स्वाध्याय तथा सत्संग तथा परापूर्वकार में अवश्य लगावें व अपने का व्यस्त रख।
- (7) प्राणीमात्र के प्रति उदारता, विशालता तथा कामलता और प्रेम की भावना अपने हृदय में रखें।
- (8) अपनी जिह्वा पर पूरा समय रखें। भोजन सात्विक करें व अधिन मसाले व गरिष्ठ भोजन से बच।
- (9) प्रतिदिन धूम, कुछ श्रम कर जा बागवानी व घर के कार्य भी हाँ सकते हैं।
- (10) अपनी मित्र मण्डली भी बनाए रखें जिनसे प्रतिदिन कुछ गपगप कर सकें यदि सम्भव हो तो आंतरिक खेल (Indoor games) में रचि लें।
- (11) अपने जीवन की योजना बनावें जिससे अपने पुत्र पुत्रियाँ व विवाह आदि कार्यों में समय पर ही मुक्त हो जावें।
- (12) मादक पदार्थ अर्थात् नशीले पदार्थों को विष के समान समझ कर त्याग दें। सिगरेट, चाय, काफी भी यदि पीने के अभ्यस्त हो तो उन्हें भी धीरे धीरे छोड़ने की काशिश करें या कम कर दें।
- (13) गदन भुंका कर न चलें, चलते समय सिर सीधा और सीना उभरा हुआ रखें।
- (14) नींद पूरी लें अर्थात् 6 से 9 घण्टे तक व सात समय दिन का सब घण्टा मुतावर मन की पूर्ण शांति से विस्तर पर लट। यदि नींद न आती हो तो अपने मन को उपयोगी गतिविधियों में लगे।

द्वितीय पथ

व्यावहारिक गुण

स्वदेश के प्रति गौरव की भावना व भावनात्मक एकता के लिये
देश भक्ति पूर्ण प्रार्थना

सब की नसा म पूवजा का पुण्य रक्त प्रवाह हा ।

गुण, शील, साहस, बल तथा सवम भरा उत्साह हा ॥

सबक हृदय म सबदा, समवेदना का दाह हा ।

हमना सुम्हारी चाह हो, तुमको हमारी चाह हा ॥

विद्या कसा कौशल म सबका अटल अनुराग हो ।

उद्योग का उमाद हा, भ्रालस्य अध का त्याग हा ॥

सुप्त और दुःख म एक सा सब भाइयो का भाग हा ।

अत करण म गूँजता राष्ट्रीयता का राग हा ॥

कठिनाइया के मध्य अध्ववमाय का उमेप हा ।

जीवन सरल हा, तन सबल हो, मन विमल मविशप हो ॥

छूटे कदापि न सत्य पथ निज देश हा कि विदेश हा ।

अखिलेश का आदेश हा, जीवन का यही उद्देश्य हा ॥

आत्माबलम्बन ही हमारी मनुजता का मम हो ।

पण्डितु समर के हित सत चरिन स्पी धम हो ॥

भीतर अलौकिक भाव हा वाहर जगत का कम हा ।

प्रभु भक्ति पर-हित आर निश्चल नीति ही ध्रुव धम हा ।

उपलक्ष के पीछे कभी विचलित न जीवन लक्ष हा ।

जब तक रह ये प्राण तन म पुण्य ही का पथ हा ॥

कतव्य एक न एक पावन नित्य नन सम्प हो ।

सम्पत्ति और विपत्ति म विचलित कदापि न लक्ष हा ॥

उस वद क उपदेश का सबन ही प्रस्ताव हा ।

साहाद्र और मतकय हो अविद्वद मन का भाव हा ।

सब इष्ट फल पावे परस्पर प्रेम रखकर सबथा ।

निज यन भाग समानता स दब लत ह यथा ॥

द्वितीय पथ

व्यावहारिक गुण

विश्व को भारत की देन के प्रति हमारी गौरवपूर्ण भावना

आज मे पन्द्रह सौ से तीन हजार वर्ष पूर्व के बीच भारत में बड़े बड़े साम्राज्य हुए। उनके विशाल साम्राज्य में तत्कालीन भारत में आध्यात्मिक चर्चा के साथ कला, साहित्य एवं सामाजिक विषयों में भी अच्छी उपलब्धियाँ थीं। राजकीय संगठन अपने ढंग का निराला था। भगवान बुद्ध और महावीर के समय में भी जहाँ एक ओर लोग मत्सर त्याग कर भिक्षु धर्म ग्रहण कर रहे थे वहाँ दूसरी ओर व्यापार और राजनीति में भी उपलब्धि हुई। यहाँ से व्यापार करने के लिए बड़े जहाजी बड़े दोनों तरफ के देशों का जाते थे। उनके साथ हमारे धर्म प्रचारक भी जाते थे।

भारत से निर्यात काफी होता था। प्रायः सभी चीजें इसी देश में बनती थीं। इसलिए बाहर से निर्यात के बदले सोना आता था। रोम में जब नीरो का राज्य था उस समय दस करोड़ रोमन सिक्का के बराबर सोना भारत में आया था। रोमन सिक्का करीब ढाई दिरम के बराबर होता था। ग्रीक विद्वान मैगस्थनीज लिखता है कि चाण्डोग्य मौर्य का महल बड़ा शानदार था जो कारदार लकड़ी पर सुनहरा काम करके बनाया गया था। धातु पर भी नक्काशी का काम होता था। सिक्कों के अलावा ऐसी मूर्तियाँ भी मिली हैं। कुल्लू में तांबे का लगभग दो हजार वर्ष पुराना एक कलश मिला था जिसके चारों ओर कलापूर्ण नक्काशी का काम था। भारतीय वस्तु कला के प्राचीन समय के अवशेष मोहन जादड़ो उत्खनन से प्राप्त भगवान् ऋषभदेव जो जन धर्म के प्रथम तीर्थङ्कर हुए हैं, उनके सम्बन्ध में एक प्रतिमा प्राप्त हुई है जो जन धर्म की प्राचीनता को सिद्ध करती है। अशोक के समय में सांची का स्तूप का निर्माण हुआ जो अपनी कारीगरी के लिए समार में प्रसिद्ध है।

अशोक के शिला स्तम्भों में सारनाथ का स्तम्भ बहुत प्रसिद्ध है। गुप्त युग के भवन निर्माण कला के सुन्दर नमूने और उत्तर प्रदेश के भासी जिले के देवगढ़ के दशावतार मन्दिर व सहस्रब्रूट चतुर्थाय बड़े ही मनोप ह जो अद्वितीय हैं। अजन्ता गुफा की गुफाएँ अद्वितीय हैं। साहित्य की प्रगति का उपनिषद् और गीता बताती हैं। उस समय का गौतम ऋषि का योग दर्शन कपिल ऋषि का सांख्य दर्शन, पातञ्जलि ऋषि का योग दर्शन, कणाद ऋषि का व शणिक दर्शन, बादरायण ऋषि का वेदान्त दर्शन, जमिनी ऋषि का भीमीमासा दर्शन व बृहस्पति ऋषि का

चार्विक दशन, मनुष्य जीवन के और इस मृष्टि के पीछे क्या सत्य है इसका दिग्दर्शन कराते हैं। इक्कीस सौ वर्ष पहले पाणिनी जना व्याकरण लिख गया, वह भी भारत के साहित्य की सबसे बड़ी देन है।

वयात्मक वणमाला उल्टे मीधे रोमन वर्णों के मुकाबले तरतीबवार जमाए हुए पहले स्वर फिर व्यजन वणमाला बनाना उम जमाने म सचमुच अनाखी सूक्त थी। इसी वणमाला की कृपा से विदेशी व्याकरणिय ध्वनिक संगीत वण सीख सके। यह माहित्यिक प्रगति प्राय आज से डेढ़हजार माल पहले तक चलती रही। इसी काल म अश्वघोष, कालिदास, भारति अदि कई महा कवि हुए जिनका आज भी नव जगह नाम है। विदेशा मे जहा धर्म के नाम पर खून खचकर हुए वहाँ भारत ससार का सबसे प्रमुख देश है जहाँ विभिन्न विचारधाराओं का समान रूप से फलन, फूलन का अवसर मिला। यहा बुद्ध जो नास्तिक थे, महावीर जो ईश्वर की सत्ता मे विश्वास नही करते थे उनको भगवान की तरह पूजा गया। चार्विक ऋषि जिहोने बभय का ही आराम का जीवन माना। श्राद्ध, यज्ञ, होम व अन्य धार्मिक क्रियाओं को जीविका चलाने के लिए किये जाते हैं अत उहे भाज्य माना।

यावज्जीवेत्सुख जीवे ऋण कृत्या घृत पीवेत्।

भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमन कुत

जब तक जीवे तब तक सुख से जीवे, जो घर मे पदाथ न हो तो ऋण लेके आनन्द करे, ऋण देना नही पडेगा। क्योंकि जिस शरीर मे जीव ने खाया पीया है। ऋण लिया है उन दोना का पुनरागमन न होगा फिर कौन किससे मागेगा और कौन किसको देगा। यद्यपि यह विचार भारतीय दशन से मल नही खाते फिर भी उनको आचाय और ऋषि की पदवी दी। विचार और दशन के स्तर पर शास्त्राथ होत रहे लक्ष्य था सत्य की खोज। इ द्रमुति जो ब्राह्मण थे उनको महावीर का दशन अनुकूल प्रतीत हुआ तो वे उनके प्रथम शिष्य हुए और वे गौतम गग धर कहलाए। उहाने बिना हीन भावना के उनको अपना गुरु मान लिया।

ऋतु तो दो से चलकर ढह तक बब की बन चुकी थी और वर्ष को बारह मास म विभाजित करके उसका नामकरण भी हो चुका था। नव ग्रहो म राहु और केतु को छोडकर बाकी मात ग्रहा पर तिनो के मात नाम रखे गए। मास चंद्रमा के माय तिथियो पर आज भी चलता है। तीस मास बाद एक मास बढाकर स्य की चाल से तिन पूरे किए जाते है।

गणितशास्त्र म भारत जगद्गुरु रहा है। बेगी अदि बनान व लिए ज्या मित्री और दशमलव (Decimal) पद्धति का आविष्कार यही हुआ। भारत व गणितन इसा की सातवी मदी तक भी दतन आग थ कि ग्रीस भी ७। यूरोप म गणित म समये ऊँचा माना जाता है, भारत म पिछडा हुआ था।

कौटिल्य अर्थशास्त्र आज स करीब 2400 वर्ष पहले लिखा गया था। उस समय अर्थनीति पर विचार करना और उस पर ग्रन्थ लिखना किसी भी देश के विद्वानों की समझ के बाहर था।

‘आयशास्त्र’ में भी भारत बहुत आगे था। भारतीय दशमशास्त्र में आठ भी दुनियाँ इसमें पिछनी हुई है। जहाँ औरों का तब जान सम्पन्न होता है वहाँ में भारतीय तब का आरम्भ होता है।

ब्रह्माण्ड श्रुति के अनुसार दशम न ‘अणु परमाणु’ की नाविक शोध कर सिद्ध किया कि जगत् में सब कुछ गतिमान है। और वह किसी न किसी नियम पर आधारित रहता है नियम निरर्थक नहीं है अतः कोई निष्क्रिय नहीं हो सकता। प्रकृति का नियम अज्ञान रूप में ही अज्ञान उमरा पालन अनिवाय रूप में करना पड़ता है। छोटी सी टहनी पर छोटे छोटे पत्ते बदन गत हैं। पत्ते मूल की रोशनी में खुराक मीच लेते हैं और वायु में ऑक्सीजन निकाल कर वापस छोड़ देते हैं वायु में डाइऑक्साइड पड़ में पहुँचते हैं। पत्ते अपने होकर नित्य का यह काम करते ही मूल पर गिर जाते हैं और उनकी जगह नए पत्ते निरन्तर लगते हैं। पत्तों भी निष्क्रिय पत्तों को नहीं चाहता। ब्रह्माण्ड में निष्क्रिय कोई नहीं रह सकता। छोटा बालू बगल, उमके भीतर भी ब्रह्माण्ड है। उमके बीच के ‘यूट्रोन और प्रोटोन’ के पुँज के चारों तरफ जम मूल के चारों तरफ नार धूमन हैं, उमी तरह इलक्ट्रोन धूमन रहते हैं। पर पत्ता मूल पर पत्ता नहीं रह जाता। इसमें सिद्ध किया जा सकता है कि कम का महत्व सबके श्रेष्ठ है। लोकमान्य तिलक ने कर्म योग की महिमा का गान करत हुए कहा कि कम ही धर्म हैं, कम ही जीवन और कम ही फल है। निरन्तर का अर्थ ही निष्प्राण हो जाना क्योंकि निष्क्रिय का नाश अवश्यम्भावी है। जल बिना प्रवाह के, वायु बिना वेग के, अग्नि बिना तत्र के जम मूल स्वभाव में पड़े हा जाती है कम ही कमही मनुष्य अपने मूल से गट जाता है।

मनुष्य जीवन में गुणधर्मों अथवा अती रहती है। गामन बढिनाइया अने पर मनुष्य का क्या व्यवहार रहता है—वही शरीर रक्षा और कीर्ति, व घु प्रेम और धर्म में भगडा होगा। ऐस और भी प्रश्न उठ लडे हा ता ऐमे समय में क्या कर्तव्य है। अज्ञान के सामने भी ऐसा ही प्रश्न था। जस बैसर हाने पर अपनी जीवन रक्षा के लिए मनुष्य अपना हाथ बढवा कर भी फँक देता है वस ही वही अभी अभी जीवन में धर्म के लिए वचु बाधवा को भी छोडना पड जाता है। अनागति पूर्वक विचार किए बिना मनुष्य गही कम कर नहीं सकता।

मान मान का नियमन, आत्म निग्रह, बिना आत्म जान के नहीं आता और बिना आत्म निग्रह के सूक्ष्म निष्पन्न सम्भव नहीं। इसलिये इस दश में अध्यात्म ज्ञान को मद्रा में ऊँचा स्थान दिया गया है। प्राय धर्म या आगम धर्म यह तो एक ब्रह्म—

ज्ञान प्राप्त करने का आत्मा किया ईश्वर के साथ एक हान का विश्वात्मा में मिलकर एक हो जाने की बात है। जो बात अनुभूति की है वह केवल बुद्धि द्वारा नहीं समझी जा सकती, जानी और देखी जा सकती है। आत्मा अदृश्य और व्यापक है। सृष्टि के लिए वह व्यक्त होता दीक्षता है। शरीर विशेष की आत्मा का केवल जीवात्मा कहते हैं और बाहर जो कुछ है, जिसका अनुभव होता है वह ग्रह है। न दीखते हुए भी जैसे नमक पानी में रम जाता है और ऊपर से नीचे तक सब जगह नमकीन है ऐसे ही न दीखते हुए भी आत्मा शरीर में रमी हुई है।

वेद महिमाओं का सम्पादन कृष्ण द्वैपायन न किया इसीलिए वेदव्यास कहलाए। ज्ञान वाण्ड का प्रतिपादन करने वाले उपनिषद्, वेद के अन्त में बने, इसलिए उनमें प्रतिपादित विषय को वेदांत कहा गया। उपनिषदों का सार कृष्ण भगवान न आज से तीन हजार या साठे तीन हजार पूर्व में कुरुक्षेत्र में सुनाया। इतना गहन गम्भीर दशनशास्त्र और किसी भी देश में नहीं लिखा गया। पर भारत में फिर भी ऋषि हुए जिन्होंने 'नेति नेति' कहकर और भी आगे जाने का प्रयत्न किया और अन्त ज्ञान को ज्ञान का अन्त नहीं जाना।

विविधता में एकता—भारतवर्ष की एकता उसकी विविधता में छिपी हुई है। यह बात नितांत सही है क्योंकि एकता जितनी स्पष्ट दिखाई देती है उतनी ही उमकी विविधता भी प्रत्यक्ष है। मसालों में दो व्यक्ति, दो जगह दो काटना सब दो ही भिन्न है। दो कभी एक नहीं हो सकते यह आणविक दृष्टि है, इसके पीछे विज्ञान है मनीविज्ञान है और आधुनिक सम्यता है। पर बाहर का होते हुए भी सब एक है, यह हमारी नैतिक दृष्टि है। आधुनिकता हर जगह भिन्नता और असमानता क्यों देखना चाहती है, क्योंकि आधुनिकता न आज भय का रूप ले लिया है। इसमें भौतिक सुविधाओं की आकांक्षा है और उसको प्राप्त करने की होड़ लग रही है। नैतिकता के क्षेत्र में कोई छोटा बड़ा नहीं है यहाँ पर सब कुछ समान रूप में विकसित हो रहा है।

भारत के मानचित्र पर दृष्टि डालने से विदित होगा कि सबसे पहले तो भारत का उत्तरी भाग है जो हिमालय के दक्षिणी भाग से लेकर विन्ध्यचल के उत्तर तक फैला हुआ है। इसके पश्चात् विन्ध्या से लेकर कृष्ण नदी के उत्तर तक का वह भाग है जिससे हम दक्षिण का प्लेटो कहते हैं। इस प्लेटो के दक्षिण में कृष्णा नदी से लेकर कुमारी अन्तरीप का जो भाग है वह प्रायः द्वीप जसा है। यही तीन भाग प्राचीन भारत के त्रीडास्थल रहे हैं। प्राचीन ज्ञान में उत्तर भारत में जो राज्य स्थापित किए गए उनमें से अधिकांश विन्ध्यचल के उत्तरी साम्राज्य तक फैले हुए थे। इसके आगे दक्षिण के राज्यों को मिलान के लिए प्रयत्न तो बहुत किए परन्तु उनमें सफलता नहीं मिली। भगवान श्री रामचन्द्र न सवा पर चढ़ाई करने के

मिलसित्त म विध्याचन वा पार विद्या तथा उत्तरी और दक्षिणी भारत के मध्य में एकता स्थापित की, वह महाभारत काल तक स्थापित रही। महाराज युधिष्ठिर के राजसूययन में दक्षिण के राजा भी भाग लेने आए थे। बुरुधेन के मैदान में जो महायुद्ध हुआ था उसमें भी दक्षिण के राजाओं ने भाग लिया था, इसका प्रमाण महाभारत में मिलता है।

चंद्रगुप्त, अशोक, विजयनादित्य आदि शासकों ने और उसके पश्चात् मुगल सम्राटों ने भी कोशिश की कि किसी प्रकार सारा देश भारत एक शासन के अधीन लाया जा सके। उन्हें इसमें कुछ सफलता भी मिली। जब भी कोई बलवान शासक इस काम में लगा, थोड़ी सफलता मिली परंतु कमजोर शासकों के आते ही यह सफलता टिकाऊ नहीं रह सती व दक्षिण के भाग अलग हो गए।

इस देश में फूट का कारण था—बड़ी बड़ी नदियाँ व पहाड़, इनके अनेक गुण हैं तो इनमें अलग-अलग भी हैं। ये जहाँ भी होते हैं वहाँ दूर के भीतर अलग-अलग क्षेत्र बना देते हैं और इन क्षेत्रों के रहने वाले लोगों में प्रांतीयता या क्षेत्रीय भावना उत्पन्न कर देते हैं। विज्ञान के सुगम साधनों के कारण अब पहाड़ और नदियों को लाघना इतना कठिन नहीं रहा है, प्राकृतिक बाधाएँ समाप्त हो गई हैं। यही कारण है कि आज हमारी एकता इतनी विशाल है कि वह रामायण, महाभारत, मौर्य व मुगल काल में भी कभी नहीं थी।

इस देश की जलवायु भी भिन्न भिन्न है। उत्तर में काश्मीर है जिसकी जलवायु मध्य एशिया की जलवायु के समान है। भारत के दक्षिणी छोर पर कुमारी अक्षांशीय है जिसकी जलवायु, धरा की रचना और लोगों के रंग रूप लका के समान है। धार की मन्सून भी है जहाँ पर वर्षा होती ही नहीं अथवा बहुत कम होती है क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ही लोगों के पहनाव, आटावे और खान पान में भी भेद हो जाता है क्योंकि यह जलवायु क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ही होता है।

उत्तर या दक्षिण वही भी चले जाएँ, आपका जगह जगह पर एक ही सभ्यता के मंदिर दिखाई देंगे। एक ही तरह के आदमियों से मिलना होगा जो अपने-अपने हैं, तीर्थ, धर्म में विश्वास करते हैं। उत्तर भारत के लोगों का जो स्वभाव है, जीवन को देखने की जो उनकी दृष्टि है वही स्वभाव वह दृष्टि दक्षिण वाला की है। यदि भाषा का भेद समाप्त हो जाय तो वे आपस में और भी निकट आ जाते हैं। वैसे भी भाषा की दीवार के अंदर पार बैठे हुए भी वे एक हैं। वे एक ही धर्म के अनुयायी और सभ्यता के भागीदार हैं। उन्होंने देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी और आज उनकी संसद और शासन विधान भी एक हैं।

मुसलमान भी सभ्यता की दृष्टि में हिंदुओं के बहुत निकट हैं क्योंकि अधिकांश मुसलमान ऐसे हैं जिनके पूर्वज हिंदू थे और जो इस्लाम धर्म परिवर्तित हुए हैं।

गमय अपनी हिंदू आदतें अपने गाय ल गय हैं। इस अनिश्चित सबटा वषों तक हिंदू मुसलमान साथ रहत आए हैं, और इस लम्बी गमन के कारण उनके बीच सम्मति और सम्यता की बहुत सी गमान बानें पदा हो गई हैं जो उन्हें दिनानि आपस म निवट जाती जा रही हैं। जो कुछ भी भेद निग रहा है, वह अग्रज भासकों न अपने राजनतिक स्वार्थों के कारण उत्पन्न किया है जो अन्न भी यत्र तत्र देखन को मिलता है।

प्रत्येक देश की एक निजी मासृतिन विशेषता हाती है जो उस देश के प्रत्येक निवासी की चान डाल, बातचीत रहन महन, गान पान, और तरीक और आदता स विदित होती है। अभीना क लोग चान होत हैं परंतु भारतवासिया क बीच नहा गप सकते। भारतवासी यूरोपीय पाशाकों भी पहनन हैं परंतु यदि उनक बीच म अग्रज को गडा कर दिया जावे तो वह आसानी से अलग पहचान लिया जावगा। भारत मे राहर जान बाने हिंदू ही नहीं अपितु मुसलमान, ईसाई पारसी बाहर जाने पर आसानी से पहिचान लिये जात ह कि वे भारतीय हैं। वषों से ही भारतवासिया की एक ससृति के कारण क भारत का एक रने टूए है। यही वह विशेषता है जो उन लोभा म पदा होती है जा एक दश म रहत हैं एक तरह की जिदगी जीत हैं और एक तरह के दशन और एक तरह की आदता का विशाम करके एक राष्ट्र क सदस्य हो जात है।

उत्तर भारत की प्राय सभी भाषाएँ सस्कृत से निकली हैं और उन सभी क शब्दा म पारिवारिक समानता है। दक्षिण की भाषाएँ भी सस्कृत स प्रभावित हुई हैं। उन्होंने भी थोडी बहुत मात्रा म सस्कृत की शब्दावली ग्रहण की। उद्ग को छाड कर प्राय सभी भाषाओं की बणमाळा एक नहीं तो एक सी है। केवल लिपि का भेद है। मराठी और देवनागरी की लिपि भी समान है। सस्कृत की शुद्ध लिपि होने के कारण देवनागरी प्राय सभी प्रांतों म पहचानी जाती है। उद्ग का लिपि भेद होने हुए भी हिंदी के साथ उसकी भाषा मे समानता है। भाषा की जमीन और व्याकरण प्राय एक स हैं केन बूटे फारसी, मरबी के हैं। प्रेमचंद अस्क मुत्तजन, कृष्णचंद्र ने हिंदी म नी लिखा और उद्ग म नी। भारत की प्राय सभी भाषाया का साहित्य भगवान राम और कृष्ण की पावन गाथाया स आप्लावित रहा है सभी न सता और वीरा का स्तवन किया है सभी भाषाया के साहित्य न स्वतंत्रता की लडाईं मे योगदान किया है।

भारत की विभिन्न भाषाया के साहित्य का इतिहास घुला भिला सा प्रतीत होता है। उनक बीच कोई दीवार न थी। मीरा गुजराती और हिंदी म समान रूप स कवियत्री मानी जाती है। मीरा के गीता स बगाल भा प्रभावित हुआ है। भूपण की बाणी का महाराष्ट्र म भी आदर हुआ था। सत तुकाराम आदि महाराष्ट्र मतो

न अपनी कविता में हिन्दी का भी अपनाया विद्यापति गमान रूप से हिन्दी, मैथिली और बंगला में कवि माने जाते हैं। कबीर, दादू आदि गता का व्यापक प्रभाव रहा है। उन्होंने अपने एक तारे की तारा से मारे भारत को बाध दिया। तुलसी कृत रामायण का मराठी और बंगला में भी अनुवाद हुआ। गुरुगुरु का भजना को प्रायः सभी प्रान्तों के गर्वया ने अपनाया। बंगला के बड़े मातरम् और जन गण मन राष्ट्रीय गीत बने

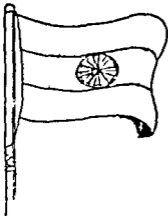
संयुक्त राज्य अमरीका में ही कई भाराएँ बानी जाती हैं, किन्तु एक क्षेत्रीय भाषा सबको मिलाना है। स्वित्जरलण्ड में जर्मन, फ्रांसीसी तथा इतालवी तीन भाषाएँ बोली जाती हैं फिर भी वह सुगठित राष्ट्र है। इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया एक भाषा भाषी होना हुए भी निम्न भिन्न राष्ट्र हैं। जिस देश में भेद नहीं उसको इकाई शून्य या गणितशास्त्र की इकाई की भाँति दरिद्र इकाई है। सम्मानता भेद में ही है किन्तु भेद इतना न हाने चाहिए कि उनमें समन्वय ही न रहे।

शिक्षा द्वारा भावात्मक एकता—भावात्मा एकता को उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि हमें शिक्षा की ओर सबके अधिष्ठा ध्यान देना चाहिए। शिक्षा का वर्तमान स्वरूप ऐसा नहीं है कि भावात्मक एकता को कोई महत्व दे। इसलिए शिक्षा का पुनर्गठन ऐसा हो कि विद्यालयों से निकला हुआ विद्यार्थी जाति सम्प्रदाय से ऊँचा उठकर सोचे। आज की शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश कालीन शिक्षा प्रणाली के आधार पर है, इसमें विद्यार्थियों को शिक्षा का दूर या भी सम्बन्ध नहीं है। भारत सरकार ने शिक्षा क्षेत्र में नवीन परिवर्तन किए हैं, इससे सब परिणाम होते हैं, यह भविष्य ही बतावेगा। अतः यह आवश्यक है कि हम एक दूसरे की सत्कृति को समझें। विभिन्न धर्मावलम्बियों के मेलों, त्योहारों में निष्पक्षता की भावना से भाग लें। धर्मों का अध्ययन ता सद्दान्तिव पण है परन्तु उनका निवृत्त से अश्लील बनना व्यावहारिक पण है परन्तु इन सबमें ऊपर भारत देश है जिसकी कही भी ओर कही भी अवहेलना नहीं हानी चाहिए। सभी भारतीयों का इसकी बलिबेदी पर सकट के समय मरने के लिए सब तत्पर रहना चाहिए।

प्रथम सोपान स्वदेश भक्ति

राष्ट्रीय एकता के प्रतिको के प्रति सम्मानपूर्ण भावना

भावनात्मक एकता के लिए यह आवश्यक है कि युवा वय में तथा समाज के सभी लोगों में राष्ट्रीय एकता के प्रतीका के प्रति पूर्ण सम्मान की भावना उत्पन्न करना। इसके लिए निम्न महापुरुषों का मरना है—



राष्ट्रीय ध्वज

- 1 हमारा मुद्रिषान ।
- 2 राष्ट्रिय ध्वज ।
- 3 राष्ट्र गीत व दश भक्ति पूरुष गायन ।
- 4 स्वतन्त्रता महासभा के राष्ट्रिय ननाथा के वलिदान की कथा ।
- 5 राष्ट्रिय पुरुषों का उत्साहपूरुष आयोजन व उनसे भाग लेना ।
- 6 समस्त धर्मों व पर्वों के प्रति जानकारी व मुद्रिषानुसार सम्मनित हान के लिए उत्साह व सम्मान की भावना ।
- 7 सभी धर्मावलम्बिया व प्रति सम्मान व सहिष्णुता की भावना ।
- 8, राष्ट्रभाषा हिन्दी का गौरवमयी स्थान ।
- 9 अतीत व अमूल्य गौरवों की रक्षा व उनके प्रति सम्मान की भावना ।
- 10 ऐतिहासिक व शक्तिगिक भ्रमण ।

किसी भी देश की प्रगति समृद्धि एवं स्वतन्त्रता राष्ट्र की भावनात्मक एकता से ही सम्भव है। भावनात्मक एकता से ही वश के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रण का सभी के समान समझन की भावना उत्पन्न होती है। अग्रण देश की रक्षा के लिए वहाँ के लोग वलिदान हा जात है। अग्रजों की देश भक्ति के कारण ही उन्होंने सबको

वर्षों तक भारत पर ही नहीं सत्तार के अनेक दशा पर राज्य किया। उनका साम्राज्य म कभी सुख अस्त नहीं होता था। वहाँ का इतिहास वीरा की कहानी स परिपूर्ण है।

भारत के सभी क्षेत्रों के निवासियों, विद्यार्थियों एव राजनीतिज्ञों का चाहिए कि वे भाषावादिता जातीयता, साम्प्रदायिकता, प्रांतीयता आदि तुच्छ विचारों का तिलांजलि दे व राष्ट्रहित का सर्वोपरि समझें। देश की उन्नति के लिए देश प्रेम का चारित्रिक गुण विकसित करें जब ही भारत के वासी अथ देशवासियों के सम्मुख गौरवपूर्ण सर उठाकर चल सकेंगे।

शैक्षणिक सस्याओं का दायित्व—हमारे विद्यालयों म राष्ट्रीय ध्वज व राष्ट्र गीत के प्रति सम्मान करने की आदत डालनी चाहिए। प्रत्येक विद्यालय व महा-विद्यालय म 15 अगस्त व 26 जनवरी को राष्ट्रीय पर्व धूमधाम स मनाना चाहिए। विद्यार्थियों म ऐसी भावना उत्पन्न करनी चाहिए कि अपनी जाति के अलावा अथ धर्मव्यतिरिक्त के उत्तमता म भी उत्साह व आदर की भावना स सम्मिलित है। व भारतवामी जिहान अपने देश की रक्षा व स्वतंत्रता व लिए अपने व वलिदान कर दिया उनके जीवन स शिक्षा ग्रहण करें तथा आवश्यकता हान पर उनके समान ही अपने का वनिदान करने के लिय तत्पर रहें।

हायर सक्ण्डरी स्तर तक के अधिकांश विद्यालयों म प्रतिदिन शिक्षण प्रारम्भ होने स पूव विद्यालय म सामूहिक प्राथना व राष्ट्रगीत गाय जाता है परंतु महा विद्यालय ऐसी व्यवस्था कहीं भी नहीं है। क्या ही अच्छा है यदि इन महाविद्यालयों म भी सामूहिक प्राथना, राष्ट्रीय गायन व देशभक्ति पूर्ण गीत गाए जायें। ऐसी प्रतियोगिताएँ व विचार माण्डियाँ आयोजित है जो देशभक्ति स सम्बन्धित है। पुस्तकालय व वाचनालयों म ऐसी पुस्तकें व पत्र पत्रिकाएँ है जो देशभक्ति स परिपूर्ण है। विद्यार्थियों का ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाव।

शैक्षणिक भ्रमण—विद्यालयों में शैक्षणिक भ्रमण की व्यवस्था की जानी चाहिए। पाठ्य पुस्तकों म ऐसे पाठों का सम्मिलित किया जावे जो प्राचीन कला कृतियाँ, प्राचीन गान्धर्व सभ्यता व प्राचीन ग्रन्थों पर आज के परिप्रेक्ष्य म प्रकाश डाल सकें। जिसस विद्यार्थियों म उनके प्रति राज की दृष्टि उत्पन्न हो सके। शिक्षकों का भी कर्तव्य है कि वे जातीयता व प्रांतीयता की भावना स ऊपर उठकर 'भारत दर्शन' के कार्यक्रम आयोजित करने म सहायक हों। प्रांतीय सरकार है नहीं अपितु भारत सरकार भी अग्रसर है तथा रियायती दरा पर विद्या गारिता व भाग्य भ्रमण की मुक्ति प्रदान करायें।

उसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि इन कायधर्मों को प्रायोजित किया जावे ता लागाम देश के प्रति भक्ति उत्पन्न होगी और अतः म यह उनके चरित्र निर्माण का ठोस आधार बनेगा ।

भारतीय इतिहास जो आज विद्यालय म पढाया जाता है, उसमें हमारी जय-पराजय का भी उल्लेख मिलता है । इसमें भारतीय विजय का पन्ध्र वम प्रभावी व पराजय का पक्ष अधिक प्रभावशाली हाता है । मुस्लिम शासकों की उन घटनाओं का उल्लेख प्रमुखता स किया जाता है, जो उन्होंने अपने समय में हिन्दू प्रजा व दमन के लिये प्रयाग किए । परिणामतः हिन्दू व मुसलमानों म शताब्दियों स एक दूसरे के प्रति घृणा व अविश्वास का वातावरण बना हुआ है जो अक्सर मिलने पर साम्प्रदायिक दंगे व जानमाल की क्षति के रूप में देरान को मिलत हैं ।

भारत के इस मुस्लिम युग के अधकार पक्ष को अधकार म ही विलीन कर दिया जावे । उस युग म धर्माधता के कारण की गई क्षति का जीर्णोद्धार व पुनरुद्धार इस प्रकार किया जावे कि आज की सतति के लिए ही नहीं अपितु भावी सतति के लिए भी भावनात्मक एकता व प्रेरणा के स्रोत बन जावें । अयाध्या म राम जन्मभूमि को लेकर दो सम्प्रदायों में विवाद चल रहा है जो दिन प्रतिदिन गम्भीर हाता जा रहा है । इस विवाद को दशहति म सर्वोपरि मानकर एसा हल निकाला जावे जा सबके लिए सम्मानजनक हा ।

देश व नागरिकों म सविधान व राष्ट्र ध्वज के प्रति सम्मान व उच्चकोटि को राष्ट्रीय भावना हो । भारत म यत्र एसा उदाहरण देरान को मिल है जहाँ पर राष्ट्र ध्वज का अपमान किया गया है । एसा दशद्राहिया का कठोर दण्ड दिया जावे जिसस भविष्य म ऐसी पुनरावृत्ति न हो तथा भारत के करोड़ों देशवासियों को इससे जा घोर वेदना है उसका भी सम्मान हा सवे । दश रहगा तो हम रहग देश उन्नति करगा ता हम उन्नति करेग, देश वा गौरव बढेगा तो हमारा गौरव बढेगा । देश के साथ ही मरेग व दश के साथ ही जीवेंगे, ऐसी दश भक्ति की भावना विकसित करन की आवश्यकता है । देश के बिना हम अपने अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सक्त । देश क साथ गद्दारी करने वाले अलगाव की प्रवृत्ति रखन वाले, मिलावट व तस्करी करने वाले, चोर बाजारी, दुष्प्रवृत्ति व लाल पीताशाही में लिप्त रहन वाले ऐसे व्यक्तियों को भी नहीं बक्षा जावे ।

अगले जन्म की बात जाने दीजिए इसी जन्म म जा घटनाएँ घटित हा रही हैं उससे भारत का भुवक भी जाग्रत हो रहा है । वह इतिहास स तबय ल रहा है । उमक सत्र का उद्गम एसी प्राति लावगा जा सारी व्यवस्था वा हा बदल दगा । एक नय भारत वा जन्म होगा ।

यह सच है कि हमें एक मवधानित नावत-वात्मक प्रक्रियाओं को अपनाया है। लेकिन यह भी सच है कि राष्ट्रीय मविधान हमारे समाज को यही प्रेरणा नहीं देना जो धार्मिक पुरतकों देती हैं। आज भारतीय मविधान व गुरु ग्रंथ साहज म यदि कहीं धास्या का टकराय उत्पन्न हा जाय तो भारत का सिक्ल मविधान व बजाय गुरु ग्रंथ साहज का अधिक् महस्य देगा। आज यदि वेद, पुराण व गीता जैसे ग्रंथ एव मविधान में तनाव उत्पन्न हा जाय तो भारत का हिंदू मविधानवादी नहीं अपना व गीता, वेदवादी सिद्ध करेगा। आज यदि भारतीय मविधान एव कुरान म टकराहट हा जावे तो भारत का मुसलमान कुरानवादी हागा। यद्यपि गुरु ग्रंथ साहज, वेद एव कुरान मावीय मवदनामा एव पान की ममर कृतिया हैं, लेकिन मस्यावद्ध धम व प्रतीक बनकर व ग्रंथ धम पान विपान के विमय ग्रंथ नहीं करन भावुक थडा का अधिप्टान ग्रहण कर चुके हैं। वास्तव म मविधान की प्रक्रिया से इनकी टकराहट हा हो नहीं सकती। लेकिन कई सिरफिरे नेताया व उारी विद्यार्थी भीड न अपना निजी स्वाध व कारण मविधान के हिस्स जलाए हैं जिनका एक दिन इन ही जम म इनका पन मुगतना पडेगा।

मवम धात्म तत्व दगन वाल हिंदू व लिए मुसलमान पराया नहीं हा मवता। मानव की एक जात मानन वाल गुरु ग्रंथ साहज के लिए वदात्त मलग नहीं हा सक्ता। विश्वध्यापी भाइ चार या म दश वाहक माहम्मद पधी कर मुसलम का याफिर नहीं मान सक्ता। प्रेम का स-दण दन वाला इगार्ई ग्रन्थ मताव लम्बिया स घृणा नहीं कर मक्ता। तत्व की अर्चा करन वाला बीतरागी जन ग्रंथ धम वाला का तिरस्कार नहीं कर सक्ता।

विधि व शासन की व्यवस्था करने वाल मविधान म तत्वत धम की उडाई हा ही नहीं सक्ती। लेकिन यह सच है कि हम तत्व व उपामक वग तथा स्वहय के उपामक अधिक् हैं, इगीलिए मवधम समभावी, पथ निरपक्ष एव लौकिकतावादी मविधान अपनाय व पश्चात् भी पथ श्रीर जातियाँ हमार जीवन म अधिक् निर्णायक प्रभाव रखती हैं। हम मविधानवादा राजनीति के साथ ही मविधानवादा मस्कृति का विनास करना हागा। इसक लिए मविधान का सर्वोपरि मानकर चलना पडेगा। इसस ही हम सक्च दशभक्त बनेंगे व हमारा चरित्र निमाण हागा।



द्वितीय सोपान

व्यवहार कुशलता-व मनुष्य स्वभाव

चरित्र निर्माण के लिए व्यवहार कुशलता एक महान् गुण है। अनुकूल परिस्थितियाँ म रहकर तो सपना ही मपनना मिलती है। विपरीत परिस्थितियाँ म नी रहकर भी प्रत्येक व्यवहार का उचित रीति से करना व्यवहार कुशलता है। व्यवहार कुशल व्यक्ति अपने का दूसरे व्यक्तियों के साथ हिता मिता लेता है, चाहे उस लागी की आदतें कैसी ही बुरी क्यों न हों। जीवन म सफलता पान के लिए अनुकूल व्यवहार पटुता व विनयशीलता अनिवार्य गुण हैं। हिल मिलकर रहने वाला व्यक्ति थोड़ा नम्र बन जाता है। थोड़ा मृदुभाषी बन जाता है। कार्यालय कामचारी अपने कायाध्यक्ष के अनुकूल व्यवहार करना नहीं जानता अतः भगड़े म पड़कर नोकरी छोड़ देता है। शिष्य अपने गुरु के अनुकूल व्यवहार नहीं कर पाता अतः दुर्व्यवहार कर गुरु का अपमान कर देता है। उस प्रकार व्यवसायी व्यवहार पटुता के अभाव म अपने चाहने की नागज कर देता है और अपने व्यवसाय का ही हानि पहुँचाता है। सारा समाज केवल हिल मिलकर ही चल रहा है। परस्पर भावमत्त के निष्ठा के अनुसार ही चल रहा है। इसलिए जो व्यक्ति हिल मिलकर रहना जानता है मौका देखकर अनुकूल व्यवहार भी करना जानता है वह इस संसार म आनन्द से जीवन बिता सकता है। इस कला का समुन्नत करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव म कोमलता का अना अनिवार्य है। अहंकार और गव से उन्मत्त व्यक्ति हिल मिलकर रहे ही कस सकता है। व्यवहार कुशलता के भाग म अहंकार धार गव का महान शत्रु है, जिन व्यक्तियों का स्वभाव अहंकार युक्त ही जाता है, वे जीवन म सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। अतः थोड़ा के प्रति सम्मान भी प्रदर्शित करना होगा।

व्यवहार कुशल व्यक्ति का कुछ न कुछ त्याग करने का स्वभाव बनाना होगा। सेवा की भावना उत्पन्न करनी पड़ेगी। उसको निष्ठा अपमान और बटु शब्द सुनकर भी शांत रहना पड़ेगा। उसका धृष्टा और द्वेष का अपने मन से निकालना पड़ेगा। उसका शक्ति भी अर्जित करनी पड़ेगी जिससे वह उसका शरीर स्वस्थ रहे। सावधानी भी बरतनी पड़ेगी जिसम उस कोई ठग न ले। मानव मात्र के प्रति प्रेम भी प्रदर्शित करना पड़ेगा। व्यवहार कुशल व्यक्ति जब हिल मिलकर चलता है तो उसम आत्मविश्वास की भावना जाग्रत होती है। निष्ठा जस दुगुण से दूर रहता है।

व्यवहार कुशल व्यक्ति को अपने सम्पत्ति धन मित्रा साथियों की बटु उक्ति का शांतिपूर्वक मुनन का स्वभाव बनाना चाहिए। उसम धर्म और सहनशीलता

का गुण हाना चाहिए। जब वह हिल-मिलकर रहने का अभ्यास करता है तो यह गुण उसमें स्वतः ही विकसित हो जाता है। वह वातावरण के विषय में शिवाय नहीं करता शीत, गर्मी को शांतिपूर्वक सहन कर लेता है। अपना दैनिक खर्चा समझदारी व मितव्ययता के साथ करता है। उसके मन को कष्ट पहुँचाए शांतिपूर्वक सहन कर लेगा, उसकी निन्दा कीजिए प्रसन्न ही बना रहेगा। उसके स्थान में सबके साथ हिल मिलकर रहने से मदभाव की इतिथी हो जाती है। सबका अपन जसा समझन से विश्व वस्तुत्व की भावना उत्पन्न होती है और घृणा और द्वेष का अन्त हो जाता है। ऐसा ही व्यक्ति सबका प्रिय हो जाता है और सफलता का भागी होता है। परंतु सतृणशील व्यक्ति का समय समय पर यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जो गुण वह अर्जित कर रहा है उसकी प्रकृति या स्वभाव में उसमें अन्त में विपरीत प्रभाव तो नहीं हो रहा है। आगे उन्हीं की विवेचना की जायगी।

मनुष्य स्वभाव-सतुलन व विवृतियाँ

आज ससार में दमना की विधियाँ प्रचलित हैं व बवल उद्योग और विज्ञान के कारण ही नहीं हैं अपितु ये मनुष्य स्वभाव के तथ्या पर आधारित हैं। देखने में यह आया है कि मनुष्य स्वभाव को टुकड़ा में विभाजित करके अध्ययन किया जाता है। "यापारी एक मानव को विभ्रंता की दृष्टि में डाक्टर मानव का अपन धर्म का अंग मानकर, धर्म के प्रचारक उसको अपना श्रद्धालु समझकर वस्तु निमाता अपन श्रमिकों का उत्पादक मानकर उनका अवन करता है। लेकिन कोई भी यह समझकर उसका मूल्यांकन नहीं करता कि मानव एक पूरा इकाई है। उसका अध्ययन उसके विचारों व भावनाओं का मनन वज्ञानिक विधि से करना चाहिए। हम स्वयं भी इतने लड़के व प्राचीन हैं कि हम स्वयं के विषय में भी सही ज्ञान प्राप्त नहीं करते, मानव स्वभाव का जानने से पूर्व यह जानना नितांत आवश्यक है कि हम भौतिक रूप से सब समान हैं चाहे वह राजा हो या रक। हर एक शरीर में 500 मसल्स (Muscles) 200 हड्डियाँ (Bones) 40 लीटर रक्त 25 फीट शिराएँ (Intestine) और एक हृदय है जो एक मिनट में 72 दफा धड़कता है। इसमें पर्याप्त साहस खनिज है जिससे 10 पस की वील बनाई जा सकती है। पर्याप्त मात्रा में हार्डोजन गस है जिससे एक छोटा गुब्बारा भरा जा सकता है। रासायनिकता में भी सब मानव व्यावहारिक रूप से समान हैं दूसरा तथ्य यह है कि हम यांत्रिक रूप से भी समान हैं। हमारी चार्नाद्रियाँ (Sensory) और माटर मोटर विधियाँ और मस्तिष्क की प्रारम्भिक कालप्रणाली यदि डिग्री (Degree) में एक व्यक्ति से दूसरे में भिन्न है तो भी एक जाति से दूसरी जाति में लगभग समान है। नौगरा तथ्य यह है कि हमारा गर ऊपर 3 पाँच नीचे हैं।

चोथा भ्रम जो हममें है वह यह है कि हम अलग ही तरह के प्राणी हैं और दूसरों से भिन्न हैं। इस सबके बारे में जो भ्रम है उसे निवारित करना चाहिए और जो हम वास्तव में हैं उसका अध्ययन करना चाहिए। स्वसिद्ध प्रमाण जो मानव में पाए जाते हैं। उनका विभाजन समाजमूलक व व्यक्ति मूलक है। समाज मूलक प्रमाण वे हैं जो हमका सामाजिक बनाते हैं तथा वे सामूहिकता की मूल प्रवृत्ति से उत्पन्न होते हैं, व्यक्ति मूलक वे हैं जो व्यक्तिगत चेतना से उत्पन्न होते हैं। यह एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

समाज मूलक स्वभाव

- 1 हर व्यक्ति में भय है
- 2 हर व्यक्ति में श्रद्धा है
- 3 हर व्यक्ति में आदर है
- 4 हर व्यक्ति में सम्मान व दाया में मुक्ति का इच्छुक्त है
- 5 हर व्यक्ति में नतस्य की भावना है
- 6 हर व्यक्ति में वामच्छा है
- 7 हर व्यक्ति अनुकरणशील है।

व्यक्ति मूलक स्वभाव

- 1 हर व्यक्ति में इच्छाएँ हैं
- 2 हर व्यक्ति अनुभवशील है
- 3 हर व्यक्ति में विभिन्नताएँ हैं
- 4 हर व्यक्ति विचारशील है
- 5 हर व्यक्ति में परिवर्तन है
- 6 हर व्यक्ति में आदेश हात है
- 7 हर व्यक्ति में चेतना व अवचेतना है

यदि एक मानव में केवल समाज मूलक गुण हों तो वह कोरा कच्चा मानव है अविकसित है उसका कोई व्यक्तित्व नहीं है। यदि उसमें केवल व्यक्तिगत स्वभाविक गुण हों तो वह व्यक्ति कानून का उल्लंघन करने वाला अथवा बुद्धिमान या विक्षिप्त होगा। सामान्य व्यक्ति तो वह है जिसमें मनुष्यत्व व समानता है। मन का नियंत्रित दाना प्रकार की समान शक्ति के बल से किया जाता है। मानव स्वभाव का तत्वाज्ञा है कि उसमें विकास और दबाव दाना ही है। उसकी स्वतंत्रता है तो उस पर राह भी है यदि आप महत्त्वाकांक्षी नहीं हैं तो आपमें कमी है। परंतु यदि यह आवश्यकता से अधिक हो तो इसमें भी कमी है। हमका अति से बचना चाहिए तथा प्रमत्ततापूर्वक व सफलतापूर्वक जीवन बिताना चाहिए। हमका विषयवस्तु रसा और पृथ्वी के दाना ध्रुवों से दूर रहना है। हमका तो Temperate zone परिमित क्षेत्र में रहना है। इस सिद्धांत के अती प्रकार से समझन व लिय मनुष्य स्वभाव का यह बात अधिक उपयुक्त होगा। इससे यह पता लगेगा कि प्रत्येक अच्छा गुण किसी स्थिति तक ही विकसित किया जावे जिसका हम सम्यक की स्थिति कह सकते हैं। यदि यह गुण सम्यक् स्थिति से आगे चला जाता है तो यह विह्वल स्थिति हो जाती है और परिणामतः उभाएँ पवन होन लगता है।

मनुष्य स्वभाव

व

सम्भावनाएं

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14

सम्यक् स्थिति	स्वतंत्रता	शक्ति	अज्ञानता	मायधानी	गाह्य	विनय जीलता	प्रेम	इच्छा	मम्मान	आकांक्षा	मितव्ययता	आत्मविश्वास	निद्रा	भक्ति
विकृत स्थिति	अराजकता	हिंसा	दुःखिता	भय	तापराही	अपटपूण व्यवहार	वामना	जिज्ञासा	चापलुमी	निर्भयता	सालची	ग्रहणार	अपवित्रता की भावना	अंध विश्वास

धन विकृत स्थिति

उत्पाद

मनुष्य स्वभाव मे सतुलन व अति से विकृतियां

(1) स्वतंत्रता (Freedom)— स्वतंत्रता मंग जन्म गिद्ध अधिकार ह, धार में इस सेवर रहेगा । यह शब्द वारागमाधर तिलक न उस समय कह जब वे भारत का अंग्रेजा की गुनामी से मुक्त कराने के लिए स्वतंत्रता संग्राम में जुटे हुए थे । इस युद्ध में वारा भागतीया न अपनी जाति बुझाने कर दी । अतः में भारत स्वाधीन हुआ । देश की स्वाधीनता के लिए अपने को बलिदान करने की भावना सब में ही होनी चाहिए । लिग्न, पढ़न, बोनन व काय करने की स्वतंत्रता भारतीय संविधान में दी गई है । इस स्वतंत्रता का विवेक के साथ उपयोग हा तो यह अति लाभदायक है । यदि इस स्वतंत्रता पर नियंत्रण नहीं हाता ता यह अराजकता (Anarchy) के विकृत रूप में परिवर्तित हा जाती है । भारत जस शांतिप्रिय देश में स्थान स्थान पर ताड़ फाड़ अपराध व गुण्डागर्दी आदि का नग्न रूप से दखन व पढ़न का मिल रहा है । यदि भारत का इस दुष्प्रवृत्ति से नहीं राका गया ता यहाँ भी अराजकता (Anarchy) हा जायगा, जिनके परिणामा की कल्पना से ही हृदय काँप रहा है ता जब वास्तविकता का सामना करना पडेगा ता कसी दुःख स्थिति होगी यह विचारणीय है । अतः Anarchy जसी स्थिति उत्पन्न नहीं हा इसके लिए हर सम्भव उपाय अभी से करने की नितात आवश्यकता है ।

(2) शक्ति—मभी प्राणियों में काय करने की शक्ति (Energy) है । मानव न अपनी शक्ति का प्रयोग विवेक के साथ किया ता सभी क्षेत्रों में उन्नति हुई इसका सदुपयोग निवलो व निघना व देश की रक्षा के लिय किया जावे ता यह अत्यन्त हितकारी है । मी शक्ति का प्रयोग यदि अविवेकता से किया जावे तो यह हिंसा में परिवर्तित हा जाती है । हिंसा प्रति हिंसा को जन्म देती है और जन्मी

परम्परा अविच्छिन्न रूप से चलती रहती है। इसमें भय, घातक, घृणा, वर विराय एव सघप का वातावरण बना रहता है। युद्ध और आयुष्मिन् हानि वाली हत्याएँ इसी का परिणाम हैं। अतः यह सदैव ध्यान रखा जावे कि शक्ति का मतुलन बना रह जिससे यह अति का रूप लेकर हिंसा में परिवर्तित न हो।

(3) नम्रता—स्वभाव में नम्रता (Gentleness) होना आवश्यक है। बालक व युवक जिनको प्रारम्भ से ही नम्र होने का शिक्षण दिया जाता है वे अपने माता पिता एवं गुम्जना का हाथ जाडकर प्रणाम करते हैं, चरण स्पर्श करते हैं। इस प्रकार श्रद्धा व्यक्त करने समय दाना का हृदय सात्विकता से परिपूर्ण हो जाता है। यह ही सात्विकता कालांतर में व्यक्ति की सम्पूर्ण तामसिक वृत्तियाँ का समूल नष्ट कर देती है। श्रद्धा से चरण स्पर्श करना या करण का बरदहस्त सिर पर रखने में श्राव दिया अनुभूतियाँ का सम्प्रेषण, स्वभव हो जाता है। नरत्र जा बाद में विवेकानन्द हुए उन पर जय गुं रामट्टण परमहंम का पावन स्पर्श हुआ तो, वे नास्तिक नरे द्र अस्तिका विवेकानन्द धन चुक ५। माँ की ममता का स्पर्श जब बालक प्राप्त करता है तो वह असीम गुण की प्राप्ति करता है।

इसके लिये यह देखते रहना आवश्यक है कि यह गुण कही विपरीतता की श्रावता नहीं जा रहा है। कृती इससे बालक में दुबलता की भावना ता जाग्रत नहीं हो रही है। केवल मात्र इसकी परम्परा मानकर ता इसका पालन नहीं हो रहा है। एसा हान पर उसके स्वभाव में दुबलता (Weakness) उत्पन्न हो सकती है।

(4) सावधानी (Caution)—सावधानी मनुष्य का गुण है। यदि व्यक्ति असावधान रहता है ता उह जीवन के प्रत्येक क्षण में व्यापार, शिक्षा, क्रीडा, नौकरी, उद्योग आदि में सफलता प्राप्त नहीं हाती है। भूलन वाला और सापरवाह व्यक्ति कभी भी दिल लगाकर काय नहा कर सकता। एस व्यक्ति चाबियाँ, जूत, छाता, पैन आदि खोते रहते हैं। समय पर कायालय में रिवाड प्रस्तुत नहीं करने पर उनको उलाहना सहना पडता है। अतः सावधान रहना अछ्छा स्वभाव है। अति सावधान रहने से यह भय का रूप धारण कर लेता है। इससे व्यक्ति में वहम की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है जो भय का परिवर्तित रूप है। कहावत भी है कि वहम का इलाज बुकमान हकीम के पास भी नहीं है। अति सावधानी से यथासम्भव वचना ही उत्तम नहीं है।

(5) साहस (Courage)—वचपन में साहस के सस्कार डालने चाहिए। इसमें वानका में निभयता का स्वभाव पड जाता है। यदि व्यक्ति में आंतरिक साहस हो ता उसके विचार सात्विक और परिशुद्ध होते हैं। साहसी व्यक्ति जंगला, पहाडो तथा शत्रुओं के शिविर में निश्चर होकर घूमता रहता है। न ता वह किसी में भयभीत हाता है और न वह किसी की हाति करता है। इस स्वभाव की अति हानि

पर ऐसे व्यक्ति में लापरवाही की आदत पड़ जाती है। वह अपने का श्रेष्ठ और दूसरे को नहीं समझन लगता है जो उचित है।

(6) विनयशीलता (Modesty)—व्यवहार में विनयशील बात करने में विनयशील होना, वाय करत ममय विनयशील होना अच्छा गुण है। यदि स्वभाव में व्यक्ति अधिक विनयशील हो जाता है तो इसके कारण कपटपूर्ण व्यवहार करने लगता है। ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व दाहरा हो जाता है। बाहर कुछ भीतर कुछ। उसका मन शुद्ध नहीं रहता है। इसकी प्रति से बचना चाहिए।

(7) प्रेम (Love)—बच्चों से प्रेम कीजिए। पशुओं से प्रेम कीजिए। विधन व असहाय व्यक्तियों से प्रेम कीजिए। मनुष्य जाति में प्रेम कीजिए। यदि इसकी प्रति हो जाती है तो यह प्रेम वासना का रूप धारण कर लेता है। वासना मय प्राणी को भरे-बुरे का ज्ञान नहीं रहता। उसमें विवेक नहीं रहता। रास्ते चलती महिलाओं में छेड़छाड़ करने लगता है। उसका चरित्र भ्रष्ट हो जाता है। प्रेम सामान्यसे अधिक न किया जावे तो ही श्रेयसकर है। प्रति से बचना चाहिए।

(8) इच्छा (Will)—इच्छा शक्ति या सकल्प का होना आवश्यक है। सकल्प से आत्मबल बढ़ता है। नपोलियन की सेना जब आगे बढ़ रही थी तो उससे कहा गया कि आग आल्पस पर्वत है। उसकी इच्छा शक्ति इतनी प्रबल थी कि उसके आदेशानुसार उसकी सेना न आल्पस पर्वत का पार कर लिया। उसे आशा-तीत सफलता प्राप्त हुई। यदि सकल्प युक्ता युक्त नहीं होता तो वह हट का रूप धारण कर लेता है। मानव स्वभाव में जिद्दीपन आ जाता है इसके कारण भली व बुरी सब ही प्रकार की हट को वह पूरा करना चाहता है। यह स्वभाव परिपक्वता की रखा पार नहीं करे इसका सत्त्व ध्यान रखना चाहिए।

(9) सम्मान (Respect)—अच्छे बानव नित्य प्रति अपने माता पिता एवं गुरुजना का नम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर प्रणाम करते या चरण स्पश करते हैं। श्रद्धा व्यक्त करत समय दोनों का हृदय सात्विकता से भर जाता है और यह ही सात्विकता कालांतर में व्यक्ति की सम्पूर्ण मानसिक विवृत्तिया का नष्ट कर देती है। श्रद्धा से चरण स्पश करना या कर्णा का वरदहस्त सर पर रखना इससे उनके दिव्य अनुभूतिया या सम्प्रेरण स्वयमेव हो जाता है। माँ का ममता मय स्पश जब बालक प्राप्त करता है तो वह असीम सुख का कारण होता है। वजानिज भी स्पश के महत्त्व को स्वीकार करते हैं। यह सम्मान यदि श्रद्धा व भावना के माध्यम किया जाता है तो प्रशंसनीय है। यदि इसकी आदत व अनुभार एक क्रिया समझ कर किया जाता है तो वह परम्परा बन जाती है जिसका कोई महत्त्व नहीं होता है। एसा दिया गया है कि जहाँ सम्मान प्रदर्शित करने के लिए किसी व्यक्ति का चरण स्पश किया जाता है वहीं दूसरे श्रेष्ठ मानसिक अथवा शारीरिक रूप से दण्ड

देकर उसका अपमान किया जाता है। इस प्रकार के व्यक्तियों का व्यक्तित्व बाहर होता है, वे बाहर से सज्जनता का मुखौटा लगाए होते हैं परंतु भीतर से उनका मन क्लुपित होता है। अपनी आंतरिक भावना का छिपाने के लिए बाह्य रूप से वे सम्मान दिलाने का प्रयत्न करते हैं जिससे अंत में उनके स्वभाव में चापलूसी आ जाती है। चापलूसी करने वाले अपन स्वायत्त के लिये निम्न प्रकार के हथकड़ अपनाते से भी नहीं चूकते जिन्हें अंग्रेजी में Woman, wealth & Wine कहते हैं। इनके दुरूपयोग से वे अपना तो चरित्र भ्रष्ट करते हैं दूसरा का भी पतन करने में नहीं चूकते हैं।

चापलूसी को आज की प्रचलित भाषा में चमचागीरी करना या मक्लन लगाना भी कहते हैं। जो व्यक्ति इस कला में निपुण होता है वह अपना स्वायत्त सरलता से पूर्ण कर लेता है। परंतु जब उसके स्वायत्त का परदा खुल जाता है तो उस पर कोई भी विश्वास नहीं करता है। परिणामस्वरूप समाज में उस ह्य दृष्टि से देखा जाता है। मानव योग्य व्यक्तियों के प्रति सम्मान की भावना रखे, परंतु उसके स्वभाव में चापलूसी नहीं हो इसके प्रति सावधान रहे।

आकांक्षा (Ambition)—मानव स्वभाव में आकांक्षा भी पाई जाती है। व्यक्ति चाहता है कि जीवन में वह एक अच्छा इंजीनियर, व्यापारी, कलाकार, कवि, शिक्षक, लेखक खिलाड़ी, सैनिक, श्रमिक आदि बन तथा इसमें उसको दक्षता भी प्राप्त हो। उसके लिए कुछ प्रयास भी करते हैं। परंतु उनमें से कुछ को अपन ध्येय की प्राप्ति होती है। यह भी सही है कि दक्षता प्राप्त करने के लिये सबमें आवश्यक क्षमता नहीं होनी इससे वे अर्थ लोभा से पिछड़ जाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि आकांक्षा के कारण एक व्यक्ति कई दफा क्षमता से अधिक काय कर जाता है। दूसरा व्यक्ति जितनी क्षमता होती है उतना ही काय करता है। यहाँ तक तो कोई हानि नहीं है, परंतु आकांक्षा के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होने पर मानव में निराशा व हताशा होने लगती है जिससे उसके स्वभाव में शन शन चिड़चिड़ापन, कठोरता व निदयता के भाव आने लगते हैं। यदि वह निबलता के कारण अमहाय होता है तो क्षणिक भावुकता के आवेश में आत्म हत्या भी कर बैठता है।

आकांक्षी व्यक्तियों ने, शासकों ने किले गुफाएँ, मीनार व प्रसिद्ध महला का निर्माण कराया है। परंतु इतिहास में ऐसे भी उदाहरण हैं जहाँ अपनी आकांक्षा के कारण हीन मन स्थिति में नरमहार, लूटपाट व भ्राजनी द्वारा गाँव व कस्बे उजाड़ दिए हैं। नादिरशाह चंगजवाँ व कुछ अन्य मुस्लिम शासक आज भी सामूहिक नरमहार के लिए भारत में कुर्यात हैं। निजामशाह ने आज स साठे तीन सौ वर्ष पूर्व विजयनगर की सम्पदा व ससृष्टि को, बक्तियार खिलजी ने बारहवीं

शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नालंदा विश्वविद्यालय के छात्रावास, मठ की खण्डहर में परिवर्तित कर दिया व वहाँ के पुस्तकालय का जिम्मा दुर्लभ वृत्तियाँ थीं उसको जलाने का काम कर दिया। आर्वाक्षा के कारण ही चोर, डाकू व आतंकवादी समाज में घनाचार व भ्रष्टाचार करते हैं। आर्वाक्षा रने परंतु यह भी जाँच करते रह कि इसके कारण मानव स्वभाव में निंद्यता की भावना तो नहीं पनप रही है।

मितव्ययता—युवावस्था तथा प्रौढ़ावस्था में निरंतर परिश्रमपूर्वक धन कमाते रहना चाहिए और साथ ही लगातार कुछ न कुछ बचन भी करते रहना चाहिए। यदि मनुष्य बच्चावस्था में निश्चित जीवन व्यतीत करना चाहता है तो उसे ध्वंश ही जीवन में डटकर धन कमाना चाहिए। यह भी सही है कि अत्यधिक धन से मनुष्य में बुराईयाँ आ जाती हैं परंतु इस पर उसे नियंत्रण करना चाहिए। यदि जीवन में धन कमाकर बचत करता रहता है तो वह बच्चावस्था में समाज की कई प्रकार में सेवा कर सकता है। वह अपने मन का स्वस्थ तथा सक्रिय रख सकता है। यदि बच्चावस्था में भी मनुष्य का सारा समय धनोपाजन में ही बीत जाए तो उसका जीवन दयनीय है। इस प्रकार का व्यक्ति जीवन भर धन कमाने में ही लीन रहता है, धन्य करने का उससे पाम अवसर ही नहीं होता। वह माया का दास होता है। कुछ लोग तो धन की पूजा किया करते हैं वे भगवान् की मूर्ति के आगे नहीं, अपितु धन के आगे माथे झुकाया करते हैं। इजरायली लोग सुनहरी बछड़े की मूर्ति की पूजा किया करते थे। यूनानी लोग सुनहले जुपीटर की पूजा किया करते थे। भारतीय जन लक्ष्मी देवी की पूजा दीपावली के अवसर पर करते हैं। यदि कोई मनुष्य परापकारी है गुणी है, योग्य है तो उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देगा परंतु आप कहें कि यह वही मनुष्य है जिम्मे पास नाला, बरांडो की सम्पत्ति है तो उसको आप देखते ही रहेंगे। सम्मान करेंगे। चाहें उसमें सम्पत्ति बेईमानी, तस्करी और लोगों का पेट काट कर ही बुरा साधनो से कमाई हो। यदि धन का संचय करना है तो अपव्यय से बचे। विवाह में धार्मिक मस्वारा में, वेशभूषा पर कुव्यसना व सामाजिक प्रदर्शन पर फिजूलखर्ची करके धन की बरबादी करते हुए कहीं भी देखा जा सकता है। लोग अपना रहन सहन चढ़ बढ़कर रखते हैं। इसी का परिणाम होता है कि कई लोगों के ध्यापार ठप्प हो जाते हैं, दीवाले निकल जाते हैं कई चोरी, डाके के अपराध में न्यायालय से सजा पाते हैं और बहुत से बेईमानी, धोखा भ्रष्टाचार, चार बाजारी और तस्करी में पकड़े जाते हैं। *म लिए अच्छा यह होगा कि आप मितव्ययी बने मरल जीवन बितावें और जितना भी ईमानदारी व परिश्रम के साथ कमाते हैं उगम से थोड़ा बचाकर रखें।

यकान्त से लाला राजपतराय की मामिन आय उम समय लग हजार तक जा पहुँची थी, परंतु वे खर्च के लिए आवश्यक राशि रखकर शेष धन दान कर दिया करते थे। सर गगाराम ने लाला रुपये दान कर दिए। सरदार दयानसिंह ने अपनी

अधिकांश धन सम्पत्ति दान कर दी थी। जज शादीलाल के दान स रिवाड़ी (हरियाणा) मे अस्पताल बना। सेठ धनश्यामदास विरला ने दान के कारण बहुत कीर्ति अर्जित की। इन दानियो की चलाई सस्थाएँ आज भी जन सेवा म लगी हुई है। जो लाग धन सचय नही करत, जो बचत का महत्त्व नहीं जानते, जो आय से कम खच नही करत जा खच को नियमबद्ध नही करते वे समाज के शत्रु हैं।

जां राष्ट्र अपनी सम्पूर्ण उपज अपने सम्पूर्ण उत्पादन का उपयोग कर डालत हैं और भविष्य के लिए मण्डार नही रखते उनसे पास कोई पूँजी नही होती वह राष्ट्र पगु हो जाता है। अत मितव्ययी बनो। परंतु यह भी ध्यान रहे कि इसका अति होने व व्यय नही होने से वे लालची न बन जावे (Greedy) लालची आदमी आवश्यकताओं को पूति नही करता। धन ही उसके लिए सब कुछ हा जाता है स्वभाव से मितव्ययता हो परंतु लालच का दुगुण न आवे यह ध्यान पड़े।

12 आत्मविश्वास (Confidence)—स्वेट माडन न कहा है कि चरित्र या भाग्य सयोग से नही बनता। गणित के गवाल का उत्तर तब ही सम्भव है जब नियम के अनुसार उसे हल किया जावे। आप अपना आदश बनाइय। अपने बारे मे क्या सोचते हैं, आपकी अपनी क्षमता पर कितना विश्वास है इससे हा आपको अपने भविष्य का विश्वास हो जायगा।

‘साहस’, ‘विश्वास’ और ‘आशा’ ही तीन शब्द हैं जो हारने पर भी आदमी को जीवित रखते हैं। केवल विचारों को बदलने की बात है।

डर से हीन भावना का सृजन हाता है, तो विश्वास से समथ होने का।

स्वामी विवेकानन्द न कहा है कि वह बात मन म ही न लागो जो तुम व्यक्त नही करना चाहत। अगर तुम स्वस्थ रहना चाहते हो तो स्वस्थ विचार धारणा करो। अगर सुख समृद्धि, खुश हाली चाहत हो तो खुश हाली और समृद्धि की बात करो।

यदि यह आत्म विश्वास अपनी सीमा का उल्लंघन करता है सम्भव नहीं होता तो यह अहंकार का रूप धारण कर लेता है। इस ही आत्म विश्वास की अति के कारण अपने का आवश्यकता से अधिक महत्वपूर्ण जताने का प्रयत्न करता है। शृणु-क्षण म अपने आह्वे का अहसास कराता चलता है। कोई कोई ता सामान्य रूप से चलने के बदले सीना तान कर चलता दिखाई देता है। किसी से कोई बात करा तो अपने वां अपनी हमियन स बडा ही बतावेँगे। सामान्यरूप स बात करन क बदल जात स बालरर अपना प्रभाव जमान की काशिश करंग। बात चीत या बटस के समय यह बतावेँगे कि उन्हें उस विषय पर बहुत मालूम है जदकि सच यह है कि उनका ज्ञान अल्प है। इन सब व्यवहार स उनका मन का भाव यह है कि

जनम बुद्ध बन्नी है । राय जमान की प्रवृत्ति ता तारण्य भवतात मन ता यह प्रयास है कि अपनी हीन भावना कम की जाय । बचपन के साधियों पर हावी होने की भावना प्राये चउ कर अभिमान की मनावृत्ति पैदा करती है । यदि किसी ऊँचे पद पर पहुँच जान हैं या धन हीन स भवज्ञान बन जात हैं ता वह अपना मित्रा स, बचपन के साधियों म भ्राँय चुरान जात हैं । किसी भायर न ऐम साणा की प्रवृत्ति पर क्या हो मुन्दर बटाग किया है ।

जिनका इक्याज जमान म कमव जाता है
उसको बचपन के हवीबा स हिजाब घाना है ।

गुनीदाग जी ने नी कहा है —

ऐसो को जनम्मो जग माहो ।

प्रमुता पाय जाहि मद नाहो ॥

समार म ऐसा बोन है जिसे प्रनुता पायर घमण्ड न होता हो लेकिन इसके फप्राद नी हैं चिह पद या फन प्राप्न होन पर भी कभी अहकार नही प्राया है । यास्तव मे अहकार आदमी को अपा बना देता है । इसके विपरीत सत्पुरुष जितने ऊँचे चढते हैं उतने ही विनम्र या जाते हैं ।

बिहारी ने क्या ही अच्छा कहा है —

नर को घर नल नीर को, गति एव कर जोय ।

जेतो नीचा हूँ चले, तेतो ऊँचा होय ॥

टकी से नल जितना नीचे जाता है, उसना पानी दूसरी तरफ उतना ही ऊँचा उठ जाता है । इसी प्रकार मनुष्य जितना नम्र हाता है उतना ही ऊँचा उठता है । अत हमम इतना आत्म विश्वास भी नही होना चाहिए कि हम अहकारी हो जावे ।

(13) निंदा Reflection—निंदा करने की भी हमारी आदत पड जाती है । यदि बस या ट्रेन मे यात्रा कर रहे हैं तो हम किसी भी राजनता धर्माचार या अधिवाशिया की बुराई करने लगते हैं । महात्मा गांधी का प्रिय भजन—येत्या जन तो तने कहिए पीर पराई जान रे । इसी की श्रय पति है—

निंदा न करे केनि रे ।"

यह देखने मे आता है कि ताग अपना अधिग गगय दूसरों के बिन्द मे साधन तथा उनसे दाप व निंदा करने म मण्ट कर ता है । ऐमे लोने को स्वय की कमिया को दसने का ध्यान ही नही आता है । *॥ सांग स्वार्थ, स्टोर व*
कह जान है वे भी कुछ ऐमे काम करा देख ॥११ है जिनमे जलन दब

विचार शक्ति प्रजट जाती है। हम यह नयो माचते ह कि दार लाग भी हमारी तह ही सोचे। हम यह क्या साचते ह कि किसी घटना यस्तु या व्यक्ति को देखकर हमारे अदर जमी गहरी अनुभूति होनी है वैसी ही दूरने मे भी हो। ऐसी आशा हम बन कर सबत हैं कि जमा हम मही मोच रह हैं वे भी इसी दिशा म साचे।

किसी विचारक ने कहा ह कि आदमी के अदर एक बच्चा होता हैं। लकिन कुछ लोग उमे मार डानते हैं। इसम वे स्वय भी समाप्त हा जात है। बच्चे को गम्भीरता के मुग्घोटे से डर लगता है, इसस उममे भय समा जाता है तथा एम लोग को वह मादेह की दृष्टि मे देखन लगता ह। अधिग गम्भीर हाना मुखद नहीं ह 'जाप्रा और जीने दा' का मिद्धात प्राणी की हिमा पर ही लागू नहीं होता यह विचार पर भी लागू होता है। जा अपने वात का अपने विचारो को दूरने पर योपन हैं और ममभने ह कि वैसा वे मोचते है वह ही अतिम है वे सही नहीं ह। आपछे अपनी वात बहन का हक है परंतु दूरने उम मान ही ले सके लिए उमे वाय नहीं किया जा सबता। यदि आपमे यह भावना बनी रहती है कि भेरी वात सब स्वीकार की जाय ता अत म दूरने के प्रति अपवित्रता की भावना उत्पन हो जाती है जो हमारे मन को अशुद्ध बनाने का कारण होती है जिसके परिणाम दुप्कर हात ह। यदि यह ही प्रवृत्ति हमारे मन मे चलती रहती है तो अतत यह हमारे स्वभाव का एक अग हो जाती है जो हमार चरित्र पनन मे सहायक हाती है।

(14) भक्ति Reverence— हमारी भक्ति ने भी आज अतद्वत् का स्थान ले लिया है, हजारों विचार एक साथ एक ही मनुष्य के मन मे एकत्रित हो गए हैं। हजारों पीढियाँ एक साथ एक मनुष्य के भीतर जी रही ह। पाच हजार साल पूव का भी विचार उसके मन मे बठा है तथा अत्याधुनिक समय का विचार भी मन के भीतर बठा है। समस्त गुरु समस्त शिक्षक और उपदेशक किसी एक वात पर सहमत नहीं हो रहे है। वे इस वात पर अडे हुए हैं कि आदमी का ममभाने के लिए जो कह रहे है उस पर विश्वास कर लो। ईसाई कहत ह कि जीसस का जम कु झारी बया से हुआ, मुसलमान कहते है कि मुहम्मद साहब सदेह स्वग मे पहुच गए। जन कहत ह कि महावीर का गम ब्राह्मण स्त्री के पेट म आया और उसे राता रात क्षत्राणी के पेट मे बदल दिया गया। सभी धम गुरु कहते हैं कि उनकी मायता पर विवाद करन की आवश्यकता नहीं ह। यदि विवाद कर सदेह उत्पन करागे तो उह नरक जाना पडेगा। गरीब बमजोर आदमी डरता है कि नरक जान की आवश्यकता क्या ह मान लो।

बाई भी यह समभन की चिंता नहीं करता कि ऐसा क्या कहा गया ह। इसके पीछे क्या तथ्य है। अपने धम गुरुओ के प्रात असाधारण शब्दा के कारण लोगो में ऐसी भावनाएँ पैदा होती है आवश्यकता ह इसे समभन की। इसके

पीछे जो भावना है उस जानने की। जनिया के महावीर का गम ब्राह्मण स्त्री के पेट में आया लेकिन उसे क्षत्राणी के पेट में क्या बदल दिया गया। उसके पीछे उनकी मायता यह थी कि ब्राह्मण से क्षत्रिय बड़ा होता है। सारे तीर्थङ्कर क्षत्रीय थे, अतः महावीर का गम रातों रात बदल दिया। जनिया के चौबीस तीर्थङ्कर में एक तीर्थङ्कर थे मन्लीनाथ, दिग्म्बर कहते हैं कि वे पुरुष थे और श्वेताम्बर कहते हैं कि वे स्त्री थे। दोनों ही कहते हैं कि हमारी बात नहीं मानोगे तो नरक में जाना पड़ेगा। दिग्म्बर कहते हैं कि स्त्री तो कभी तीर्थङ्कर हो ही नहीं सकती। इस पर भी विवाद है कि वे स्त्री हैं या पुरुष। इसके पश्चात् आया कम्म्यु-निग्म। उसने कहा सब धर्म अक्षीम का नशा हैं इसमें कोई सार नहीं है, यह बिल्कुल झूठ है। सत्य धर्म तो वह है जो माक्स कहते हैं। इसके पश्चात् आया विनापन एष वैज्ञानिक मर भी नहीं पाया कि दूसरा वैज्ञानिक कहता है कि वह जो कहता है वह सही है। आदमी के मन पर सत्ता के दावेदारों ने उसके चित्त में विचारों का ऐसा जाल खड़ा कर दिया है जो बहुत विरोधी है और सब दिशाओं में खिंचता है। इस जाल को खड़ा करने में भय का उपयोग किया गया है कि अगर आप नहीं मानते हैं तो नरक जाना पड़ेगा। इसी प्रकार विनापन निक्कल रहे हैं कि फला पाऊँडर लगाओगे तो सुन्दर बनोगे अथवा बुरूप। यहाँ भी डर ही काय कर रहा है। वर्षों से यही होता रहा है। यदि कोई भी असत्यवार वार दाहराया जाय तो उसका विश्वास जड़ पकड़ने लगेगा। एक बात निश्चित है कि विश्वास से अधिक आत्मघातक और कोई चीज नहीं है। बिरली रास्ता काट जाती है, छीक आ जाती है, काना आदमी सामने आ जाता है तो वैज्ञानिक या डाक्टर जो जानता है कि इन बातों का कोई महत्व नहीं है, फिर भी आँख मीचकर भी इस पर अध विश्वास कर लेता है। कुछ कहते हैं कि हम ईश्वर के हाने पर अध विश्वास करते हैं, आत्मा के होने पर विश्वास करते हैं।

विश्वास और अध विश्वास दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं विश्वास विधायक श्रद्धा है और अध विश्वास निषेधात्मक श्रद्धा है लेकिन दाना श्रद्धा है और वही आदमी भीतर के जाल से मुक्त हो जाता है जो श्रद्धा और विश्वास में मुक्त हो जाता है, जो दूसरे की तरफ देखने से मुक्त हो जाता है। मैं एक से छूटता हूँ तो दूसरे से बधता हूँ ता तीसरे से बध जाऊँगा लेकिन मेरा बधने से छुटकारा नहीं होगा। इसलिए जो विश्वास कर लेते हैं वे विवेक तक नहीं पहुँच सकते। स्वयं के अनुभव तक नहीं पहुँच सकते। उनकी यात्रा वही बन्द हो जाती है। तीर्थन्तर महावीर को जा दिलाई दिया वह तत्त्वसार में है महात्मा बुद्ध का जा अनुभव हुआ वह त्रिपिटक में है। भगवान् वृष्ण का जो ज्ञान हुआ वह उन्होंने गीता में कह दिया। मुहम्मद साहब का इल्हाम हुआ वह उन्होंने कुरआन में कह दिया। वह पर्याप्त है। उस पर विश्वास कर लो। लेकिन आप इतना बड़ सक्ने ह कि जा आप जानत

हैं जो वृद्ध उम पर मुझे काटि प्राप्ति नहीं है वक्ति अपनी तक में जानता नहीं उमक बाग म जान कर वर्गा। जो श्रद्धा करत है वे ही धार्मिक हैं जो श्रद्धा नहीं करने के अधार्मिक हैं। धार्मिक ता वह है जो मच्चा ह और मच्चे का मतनव है कि ज नहीं जानता उम पर श्रद्धा नहीं करता। हम मध्य बिन्दु पर यदि हम अपने चित्त का न जाने की सामर्थ्य रखते हैं या माहम जुटा करने हैं तो यह विचार का भवन नशम गिर सकता है तथा अधविश्वानों ने हम वच मक्ते हैं। निर्विकार होने का यकी मव में उत्तम रास्ता है। अन्त में यह भी कहना है कि गीता, त्रिपटक, नस्व मार प्राटवत व कुरान का ज्ञान ता प्राप्त किया जावे। परंतु उनका विवेक से अध्ययन भी किया जावे ता उनम नय की प्रतीती होगी। और इसी नय को हम जीवन म टालना है।

अध विश्वास Superstition—इमने भारतीय समाज को आधारहीन भावनाओं से जकड़ रखा है। वसे तो शहर के निवासी भी इनसे बच नहीं पाए हैं। परंतु ग्रामवासी व महिलाएं इनसे अधिक प्रस्त हैं। ग्यान व क्षेत्र के अनुसार इनकी विविध रूपा म देखा जा सकता है। इनम मुख्य है बिल्नी का रास्ता काटना, छीकना जान व लगडे व्यक्ति का सामने आना। गाली पडा लिए हुए सामने आना उन्सू का बोलना निश्चिन्त दिवसा पर दिशा के अनुसार यात्रा करना जिसे 'सामा दिशा झूल' कहते हैं। नमन का बिखरना, चाकू पर चाकू गुणक चिन्ह के अनुसार रखा होना। गधे का रेंकना, एक जूते पर दूसरो जूते का रखा होना सूय ग्रहण व चंद्र ग्रहण पर सूतक लगना, अमुक दिनों पर बाल नहीं कटवाना, न ही नये कपडे पहिनना आदि। यह सब अशुभ लक्षण के सूचक हैं। इन अध विश्वासा के कारण व्यक्ति अपना विवेक खो देता है तथा उसके निराय लेने की शक्ति कमजोर होन के कारण वह अविश्वामी व बहमी हो जाता है। एक गाँव म किसी रोग के कारण कई बच्चों की मृत्यु हा गई। किसी साधु ने गाव वालों को यह विश्वास दिला दिया कि अमुक महिला के कारण ही बच्चे मरते हैं। गाव वालों न उस महिला को पीट पीट कर मार दिया। यह तो बाद में पता लगा कि उस साधु को इस महिला से पुरानी शत्रुता थी जिमका बदला साधु ने उस गाँव वालों के अधविश्वास का लाभ उठाकर लिया।

गाँव में कभी कभी गाय भैंसों आदि पशुओं में खुरसान रोग फैल जाता है। इसका इलाज अजीब ढंग से किया जाता है। एक व्यक्ति जो सयाना या साधु या शनिवार की आधी रात को नग्न होकर शमशान गया और वहाँ से एक अथ जला वास लेकर आया। उसे एक नीले डोरे म बाँध कर ग्राम द्वार पर लटका दिया। इसके पश्चात मारे गाँव के पशुओं को उमने गीने से जिताता गया। उस दिन गाँव म द्विनेरा पिटवा दिया गया कि गाँव म पशुओं को रोग से मुक्ति दिलाने के लिए चक्की पीसने, दही बिलोत तथा गोबर उठाने जसा काम बन्द रहने। परिणाम यह

हुमा कि पशुमा का ता राग स मुक्ति नहीं मिली परन्तु उन्हें दैनिक जीवन के कार्यों से मुक्ति मिलने के कारण कष्ट अवश्य उठाना पडा। राजस्थान में ऐसा विश्वास है कि यदि भाजन के पश्चात् झोंगड़ाई लेन सग ता खाना गध के पट में चला जाता है। कोई व्यक्ति कभी किसी यात्रा के लिए तत्पर हो ता उस समय उसके विदा करने से पहिले घर वाले बिल्ली से दही भूठा करवा कर उस गिलात है। उसी समय यदि कोई बुत्ता वान फड फडाल ता सब उपस्थित लाग धूकते है और उस यात्री की यात्रा रूद कर दी जाती है।

इस अथविश्वास का शिबार राजस्थान प्रशासनिक सेवा की लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण एक युवक हुमा जब वह साक्षात्कार के लिए जान सगा तो उस रात श्रिया गया क्याकि उमी मगय एक बुत्ते ने वान फड फडा दिए थे। इससे उगवे पर वाला का उसमें अनिष्ट नजर मान लगा था। परन्तु इस अथविश्वास के कारण वह युवक एक अच्छी नारी गवा बंठा।

गाँवा में बालका की अस्वस्थाता का कारण यह माना जाता है कि उस किसी की नजर लग गई है। इसे उतारने के लिए चाराह से मुट्ठी भर घूल लाई जाती है। फिर उस घूल में नमक मिलाकर अस्वस्थ बच्चे के मस्तक के ऊपर घुमाकर उस घूल का अग्नि में डाल दिया जाता है। इस क्रिया के पश्चात् बच्चे का चिकित्सा के पाम न जान की आवश्यकता नहीं रहती। इसका परिणाम बहुत बुरा होता है। कई दफा बच्चे की जान भी चली जाती है, फिर भी वे यही समझते हैं कि शायद देवता नाराज हो गए हैं।

देवता का रोप प्रकट करवाने की प्रथा का चलन बडा विचित्र है, इसका श्रांति दखना या ज्योत करवाना कहते हैं। य क्रियाएँ, माता जी, मानडियाजी, हनुमान जी, भैरुजी और पितर पितरानिया के समक्ष अपने विघ्न प्ररन पूछने, समझने के लिए किए जाते हैं। भक्त किसी बडी औरत या भोपे के आगे अपने आरा या ज्योत का घूत ल जाकर धरता है। ऐसा माना जाता है कि दबी देवता अपने पुजारी के सर आकर मुह से बालते है। भक्त उससे अपने प्रश्ना का उत्तर पूछते हैं और पुजारी के बताए अनुमार विश्वास करते हैं।

ये अथविश्वास शहरा की अपक्षा गाँवा में अधिक प्रचलित है, इन अथ विश्वासा कि जेजोर में जकडे गाँव वासी इसी कारण अपना यथाचित विकास नहीं कर पाते। आज गाँव गाँव में चिकित्सालय हैं, स्कूल हैं, पशुचिकित्सक हैं लेकिन ग्राम वासी अपने विश्वासा के सामने इन सब का कोई महत्व नहीं समझते।

मुसलमाना में भी अथविश्वास मिलता है उनको अजूब कहा जाता है। पति पत्नी के एक ही कधी से बाल मवारने में आपस में लडाई हो जाती है। दिन में नगनी करने में मामू रगगा भूत आता है। उमा पढ़ने के पश्चात् जानगा (चाटर

या दरी) का कोना उलट देना चाहिए, नहीं तो उस पर शतान नमाज पढ लेता है। पत्नी के मरने पर मुस्लिम पति उसके जनाजे का हाथ न लगाएँ क्योंकि इस्लामी कानून के अनुसार किसी भी नामरहम का हाथ लगाना हराम है। नामरहम वह है जिसके साथ विवाह हो सकता है और जिससे परदा करना जरूरी है। ध्रुव तारे की ओर पाव करके न सोना। उत्तर की ओर रख करके पशाब, पखाना करना या पैर करके साना उचित नहीं क्योंकि इम ओर बुतुत्र तारा होता है। चारपाई पर नमाज पढने वाला बदर होता है। 8, 18 व 28 चाँद की तारीख का अशुभ मानते हैं। मुहम्मद के चाद म पान नहीं खाते, शादिया नहीं करते, मजाग पर बकरे हलाल करते हैं। शबे बरात के महिने का मुरदा का महिना मानना अंधविश्वास है। मुस्लिम समाज म अंधविश्वास है न कि शरीअत, हदीस और कुरान जैसे पाक ग्रंथों म ऐसा कही लिखा है। किसी भी अंधविश्वास के पीछे यदि जा भावना छिपी है उस भावना को समझ कर काम किया जावेगा तो अंध विश्वास नहीं रहेगा।

ज्योतिष भी अंध विश्वास का कारण हो सकता है।

ज्योतिष कुछ लोगों के लिये विज्ञान हा सकता है और कुछ लोगों के लिये धम भी परंतु विख्यात अमरीकी खगोलविद् नाट जे बोव न इस केवल मूर्खता और अंधविश्वास ही कहा है। ज्योतिष के प्रति लागू की सनक की निंदा करत हुए प्रो वाक ने कहा है कि यह धारणा कि सूर्य, चंद्रमा अथवा अन्य ग्रह शिशु के जन्म तथा उसके भविष्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है बिल्कुल बेहूदा है।

करीब पचास वर्षों म नक्षत्रों व ग्रहों का अध्यापन करने वाले इस खगोल विद् का कहना है कि इस मत के काफी प्रमाण हैं कि ग्रह अथवा नक्षत्रों का मनुष्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। भविष्य वाणिया का प्रारंभिक दन की निंदा करत हुए प्रो वाक ने हम सामाजिक व नतिक दृष्टि से अक्षम्य बताया है। लकिन साथ ही यह भी मानत हैं कि केवल वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर इतने रोकना बठित है। सत्तर के कई अखबार राजाना की भविष्यवाणियों छापत हैं जिससे व्यक्ति के निर्याद लन की क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

ज्योतिष का उद्भव ईसवी सन् की पहली व दूसरी शताब्दी के बीच म हुआ, उस समय लोगो की इस मान्यता पर विश्वास किया जाता कि शक्ति व रूप म मानव जीवन पर प्रभाव पड़ता है। अतः विज्ञान व सामान्य विद्या के युग म जहाँ चन्द्रमा पर उतर गया है व स्पुनतिक अंतरिक्ष विश्वास किया जाव। अतः अंध विश्वास व निर्याद कर अंध जीवन का बनाना ना आयेगी इसके लिए आ भी स्व ताभ्रप्रद ह अथवा यह मा । कर हाग ।

तृतीय सोपान आचरण की अन्य विशेषताएँ

सत्याचरण

सत्य शब्द का अर्थ है "रहने वाला"। सत्य सदा सत्य ही रहता है। इसकी कभी अति नहीं होती। पहिल भी सत्य, सत्य ही था। आज भी सत्य ही है और भविष्य में भी सत्य ऐसा ही रहेगा। महाभारत में इसलिए कहा है "सत्य परब्रह्म है"। महात्मा गांधी भी ऐसा ही मानते थे "सत्य ही ईश्वर है"।

एक दूसरे के साथ व्यवहार वचन द्वारा ही होता है। किन्तु केवल मुँह से कह दूए वाक्य पर ही सत्य निर्भर नहीं है। मन, वचन और कर्म तीनों से जब सत्य का आचरण हा तभी सत्य प्रतिष्ठित रहता है। युधिष्ठिर ने हाथी मारकर 'अश्व त्यामाहृत, नरो वा कुँजरो वा, दवी जवान से कहा नतीजा यह हुआ कि उनका रथ जो जमीन से ऊँचा चलता था, धीरे की तरह जमीन पर चलन लगा। हिमालय पर महा प्रयाण के लिए गए तो हाथ की छाटी उँगली गल गई।



महात्मा गांधी मानते थे सत्य ही ईश्वर है।

जो वचन दूसरा को बच्ये पहुँचाने के उद्देश्य से बाला जाता है, वह सत्य होने पर भी असत्य कहलाता है। जस वान पुरुष का बाना कहना यद्यपि सत्य है, कि तु यदि उसमें उम मनुष्य के दिल का चाट पहुँचती है, या यदि उस पहुँचाने के विचार से बाना कहा जाता है तो वह असत्य में ही गिना जायगा। लगडे का लगडा कहने पर भी उसके दिल का चाट पहुँचती है तो वह भी असत्य ही कहा जायगा। इसलिए कहा है सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्" सत्य बोलना चाण्डि, प्रिय मान्य योजना चाण्डि, अप्रिय मन बानो, अप्रिय मान्य मन बाना।

यदि सत्य बोलने से किसी के प्राणा पर संकट आता है तो उस अवस्था में सत्य का बोलना भी बुरा कहा जायेगा। लेकिन अमृत्यु वानर किसी के प्राणा की रक्षा करने से उसके जुल्म और अत्याचारा से दूर कर प्राणा पर संकट आने की संभावना ही तो ऐसे समय असत्य ही यथेष्ट रहेगा। यदि किसी स्त्री का कोई दुराचारी पकड़ने को दौड़ रहा हो और उस स्त्री के जान का रास्ता पूछें तो ऐसे समय झूठ बोलकर स्त्री को बचाया जा सकता है। यदि व्यक्ति मुँह से सचता है तो उस अवसर देने के लिए झूठ बोला जा सकता है।

अग्नेज विचारका ने कहा कि सर्वोत्तम नीति है सच्चाई (Honesty is the best policy) किंतु हमारे शास्त्रों इससे कहीं आगे की बात कह गए हैं। उनके अनुसार सत्य से परे धर्म ही नहीं है। प्रकृति जन्म प्रगतिशील है, सत्य भी उसी तरह प्रगतिशील है। यह सच्ची की लकीर नहीं। जो एक लकीर को ही सच मानकर बैठ जाता है, वह झूठ का सत्य बनाना चाहता है।

आत्मा दिन दिन आगे बढ़ने की वांछित करती है और उस हम यदि झूठ आवरण से ढक न लें तो वह अपने आप ही सत्य प्रदर्शन करती है। ईसाई सच एवर माउड न कहा है कि सत्य तो हमारे साथ ही जन्म लेता है। इस काटकर फँकने के लिये हम प्रकृति से युद्ध करना पड़ेगा। हाविज न कहा है कि सत्य तो गुलाब की तरह कँटीली डाल पर उगता है। पर सत्य पथ पर चलने वाला न तो प्रकृति से युद्ध करत है और न गुलाब जस फूल की कामना और सुगंध पान के लिए उह काटो का भय रहता है। इसा न तो काटा का ताज ही धारण कर लिया था। महात्मा गाँधी ने तो आग्रह किया स्वतंत्रता के लिये पर उसके साथ भी सत्याग्रह था। अग्नेज का पूव से ही सूचित कर आन्दोलन किया और गिरफ्तारी देते रहे कभी झूठ का सहारा न लिया। सत्य के लिये ही वह शहीद हो गए। महावीर ने तो सत्य की पूर्ण साधना के बल से अधविश्वास के इस प्रगाढ़ अधकारपूर्ण कातरानि में जान सूर्य का उज्ज्वल आलोक फलाया।

सत्य के लिये किसी तयारी की जरूरत नहीं पड़ती। झूठ तो बनाना पड़ता है। जो सत्य पर निर्यावर होता है उस का नाम इतिहास के पट पर अमर हो जाता है। जुलाह के धर जन्म लेकर कबीर अमर हो गए। उनमें सत्य को ही सबसे बड़ा तप बताया।

साच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदे साच है, ताके हिरदे आप ॥

चमार के यहाँ जन्म लेकर रदाम ब्राह्मणों से कहीं अधिक पूजित हुआ हिटलर मुसालिनी सत्यपथ से विचलित हाग्य तो उनकी जान से हाथ धोना पड़ा। महाभारत के शान्तिपथ में गार्ग्य जी का यह कथन आता है—

सत्यस्य वचन श्रेय सत्यन विहित वदत् ।
यद्भूतहितमत्यन्त एतत्सत्य मत मम ॥

सत्यता आचरण पर ही निर्भर करता है । युद्ध की तयारी दोनों तरफ वीरवा और पाडवो ने की । सारे सम्बन्धी और मित्र दाना तरफ जुट । रणक्षेत्र में युद्ध करना क्षत्रिय का पज है और विमुख होना अधम और असत्य है । ऐसे समय लाखों की जीवन हानि भी हो तो भी युद्ध ही सत्य माना गया । यदि न बोलने से छुटकारा मिलता हो तो ठीक है । शेक्सपीयर ने भी लिखा है, "विचारो को जवान पर न लाभा" । Give thy thoughts no tongue किन्तु विचार यदि प्रकट करने ही पड़े और मौन से छुटकारा न मिले तो सत्य के लिए अप्रिय भी कहना पड़ता है ।

हिमालय पर अजु न पहुँचा तपस्या करन और भगवान शंकर से पाशुपत अस्त्र लेन । शंकर न भक्त की परीक्षा लेन की ठानो । मायावी शूकर पर अजु न और किरातराज रूपी शंकर, दाना ने एक साथ बाण छोड़े किरातराज की सेना



साल बहादुर शास्त्री का सत्य आचरण था ।

शूकर को उठा ले जाने के लिए पहुँची । उधर अजु न अक्ला । अप्रिय का जवाब अप्रिय वाणी से न दे तो मन की बात एक और वाणी दूमरी और असत्य मानी जावगी । भारवि कवि आखिर अजु म से कहलवाते है—

वहाँ मुझ जसा धर्माश्रम धर्म की रक्षा करन में योग्य और वहाँ निहृष्ट जाति के जीवा की हिंसा में तत्पर तुम्हारा स्वामी । नीचा के साथ उच्च व्यक्तियों की भिन्नता नहीं हाती, क्योंकि हाथी शृगाला से मन्त्री नहीं कर सकता । राजा हरिश्चन्द्र ने मत्स्य के त्रिणगरम्ब यज्ञदान कर लिया । उत्पीड़ित रहा है ।

आचरण की अन्य विशेषताएँ

समय की पाबन्दी

अप्रेज भारत स चले गए परंतु कुछ अच्छी बातें भी मिला गए जिनमें से एक है समय की पाबन्दी। समय की पाबन्दी न होने से हमारा सारा कार्यक्रम देर से चलता है। हम से रेलगाड़ी छूट जाती है, बस छूट जाती है, इंटरव्यू में समय पर नहीं पहुँचते हैं। हमारी सभाएँ गोप्टियाँ समय पर नहीं होती। न बचता समय पर आता है और न थोता ही। न बरात समय पर आती है न पार्टियाँ समय पर आती हैं। समय की पाबन्दी न हान से सब को परेशानी आती है और जब स्वयं पर बीननी है तो दूसरा की बुराईयाँ करते हैं। समय के पालन करने की सलाह देते हैं परंतु हम स्वयं ही समय का पालन नहीं करते हैं।

मान लीजिए आपन किसी महमान का भाजन करने के लिए निर्मात्रत किया है। आप का यह सशय है कि वह अतिथि समय पर भोजन करने आवेगा या नहीं। अतिथि का यह अदशा है कि आपके वे यहाँ समय पर भाजन तयार हागा या नहीं दाना ही अममजस्य म हैं। परिणामत दोना का ही समय व धन बर्बाद होता है।



पंडित जवाहरलाल नेहरू समय के पाबन्दी थे।

समय पर काम नहीं करने से हमारी आदत खराब हो जाती है। हमारी कुशलता कम हो जाती है। हम हर काम में लेट लतीफ हो जाते हैं। कोई हम पर किसी काम के लिये भरासा नहीं कर सकता, कोई व्यक्ति हम पर उदा नाम या शक्ति तभी गीत सकता है, जब उगे विश्वास हो जाय कि काम समय पर हो

'चंद्र टर मूरज टर टर जगत व्यवहार ।

पंडर हरिणचंद्र व टर न सत्य विचार ॥

एक मुनि प्रयान दे रह थे । प्रयान के गश्चात एक एककर सभी स कोर्द भी त्याग, बुरी आदत छाड़न का प्रत लन का आग्रह किया । सभा म एक चार भी बठा था । मुनि ने उमम पूछा कि आप क्या काम करत हैं । चार न उत्तर दिया में चारी करत हूँ । यदि मैं इस छाटूँ तो भूरा ही मर जाऊँ । मुनि बात तुम भूठ बालना छाड दा । चार न आजीवा भूठ न बोलन की प्रतिगा ली । राजमहल म जब चोर चारी करन गया ता द्वारपाल ने टाका कि तुम योन हा उमन कहा कि म चार हू । द्वारपाल न समभा कि यह मजाक कर रहा ह प्रत उस गुप्ती मे प्रदर जाने दिया । जब उमन सब बहूमूल्य वस्तुएँ इपट्ठी कर ली ता घुडसाल व रगवाले के पास पहुँचा और एक घोडा देन का कहा । उसको पूछन पर भी उसने कहा कि मैं चार हूँ । परंतु रगवाल न यह समझ कर कि चार वभी भी अपन का चार नहीं कह सकता उसे घाडा द दिया और वह आराम से राजमहल मे चला गया । प्रात काल जब चोरी का हल्ला मचा ता व चार का पकडने दीडे पर यह साचकर कि यह चार है उनम बाना फूमी हान लगी । चार की आँखें खुल गई और उमन कहा कि म ही चार हूँ पर चार इस प्रकार खुद का चार घाडे हो कहता है व भाग बड गए । चार पुन मुनि के पास पहुँचा और कहा कि आप चमत्कारी आत्मा हैं आप की एक बात मानन से मुझे सब साहूकार समझन लग ता मुझे अय नियम दिलावे । मुनि न उसका सत्य, अहिंसा, तपस्या का उपदेश दिया । इससे उसन मुनि दीगा ली और कर्मों का बंधन काटन के लिये तपस्या म लीन हा गया ।

एक काना राजा ने चित्र कारो को धपना चित्र बनाने के लिए कहा । किसी न उसको चित्र मे दोनो आँखें बना दी, दूसरे ने उसे काना बना दिया । एक चित्रकार समभदार था उसन उसका तीर मारता हुआ बसा दिया जिमम एक आँख बंद कर तीर चलाया जाता ह । राजा बडा प्रसन्न हुआ । उस ईनाम दी । पहिला चित्रकार भूठा था । दूसर ने कटु सत्य कहा जो भी उचित नहीं था । परंतु तीसरे न सत्य का पालन भी किया और राजा को प्रसन्न भी । बहुत स लोग भूठ बालने की आदत न हान पर भी वभी वभी प्राध म आकर भूठ बोलत ह । कुछ लोग लोभ वश भूठ बोलत हैं । कुछ पुत्रिस के उर स भूठ बालत हैं । कुछ हँसी मजाक म भूठ बालत हैं । प्रत सत्य बोलन वाल का शोध लालच भय और हँसी मजाक म छोटी वाता म भी भूठ नहीं बालना चाहिये । सत्य का मन, वचन व काम तीना स ही निगाहना चाहिए । सत्य गामी वास्तविकता समझकर बिना द्वेष और आसक्ति व उसका यथाथ रूप समझता ह और यथाथ का ही अनुसरण करता है ।

आचरण की अन्य विशेषताएँ

समय की पाबन्दी

अंग्रेज भारत से चले गए परन्तु कुछ अच्छी बातें भी सिखा गए जिनमें से एक है समय की पाबन्दी। समय की पाबन्दी न होने से हमारे सारे कार्यक्रम दर से चलते हैं। हम स रेलगाड़ी छूट जाती है, बस झूट जाती है, इंटरन्यू में समय पर नहीं पहुँचते हैं। हमारी सभाएँ गोष्ठियाँ समय पर नहीं होती। न वक्त समय पर आता है और न थोता ही। न बरात समय पर आती है न पाठियाँ समय पर आती ह। समय की पाबन्दी न होने से सब की परेशानी आती है और जब स्वयं पर बीतती है तो दूसरों की बुराईया करते हैं। समय के पालन करने की मलाह देते ह परन्तु हम स्वयं ही समय का पालन नहीं करते हैं।

मान लीजिए आपन किसी महमान का भाजन करने के लिए निमन्त्रित किया ह। आप को यह सशय ह कि वह अतिथि समय पर भोजन करने आवेगा या नहीं। अतिथि का यह अदेशा है कि आपके के यहा समय पर भाजन तैयार होगा या नहीं दोनों ही असमजस्य म हैं। परिणामत दोना का ही समय व धन बर्बाद् होता है।



पंडित जवाहरलाल नेहरू समय के पाबन्ध थे।

समय पर काम नहीं करने से हमारी आदत खराब हो जाती है। हमारी कुशलता कम हो जाती है। हम हर काम में लेट लतीफ हो जाते हैं। कोई हम पर किसी काम के लिये भरोसा नहीं कर सकता, कोई व्यक्ति हम पर बड़ा काम या दायित्व नहीं गीप सकता है। उन उम्र विश्वास के साथ कि काम समय पर हो

सकेगा। यदि आप किसी कारखाने के व्यवस्थापक हैं आप वहा पर समय पर नही पहुँचते ता आप अपने अधीन कायकर्ताओं को भी समय पर पहुँचने के लिये बाध्य नही कर सकते। परिणाम यह होगा कि उत्पादन कम हो जायेगा और माल का स्तर भी गिर जायगा। भारत से विदेशो का जा माल भेजा जाता है उसमे से कुछ का स्तर इतना गिरा हुआ होता है कि वह माल स्वीकार ही नही किया जाता। इससे उत्पादक को नुकसान पहुँचता है और विदेशो म भारत की साख भी कम हो जाती है, भारत भरोस का दश नही रह जाता है। इस हालत म हमारी स्थिति कभी नही सुधर सकती है। यदि आप कायालय जाते है तो ठीक समय पर कायालय पहुँचें और ठीक समय पर ही वहा से चलें। यदि कभी कोई आवश्यक काम पड जाता है ता पहले स अनुमति लें या आवश्यक काम पड जाय तो फोन या किसी अय माध्यम से सूचना भिजवाएँ। अगर यह छूट भी बार बार लेत है ता आपकी सवा पर भी असर पडता है अथवा इतना ता अवश्य ह कि आपकी साख नही रह जाती। आपकी कुशलता पर प्रभाव पडता ह। अगर आप समय पर काय करत ह ता आप से वाई कुछ नही कह सकता। अपन काम पर आपका अधिकार हागा और अफसर एव सहयोगी आपकी प्रशसा करेग। हा सकता है आपका आर्थिक या भौतिक लाभ नहा, परंतु दूसर की प्रशसा पाना या आपके प्रति प्रशसा भाव हाना भी अच्छी बात ह। इससे आपका आत्म सताप तो अवश्य मिलगा जा आपक भविष्य के लिय आग बढान म समय हागा। जा समय क पाबंद हात ह व मगाज म आदर पात है, दूसर क-भरोस के पात्र हात ह। उनक जीवन म उल्लास हाता है गति हाती है। व जीवन म बहुत कुछ पात है।

आज के जीवन म समय के पाबंद हात है उनकी सरवा नगण्य है। इसलिय हमारा समाज अपगित प्रगति नही कर पा रहा है और अमित मम्पदा के भण्डारा मे युक्त विशाल दश यथाचित प्रगति नहा कर पा रहा ह। हमार चरित्र क हास का भी यह अय कारण म से एक कारण है। आज दश की 99% प्रतिशत जनता समय की पाब दी का महत्व नही दती है। आज का काम बल पर छाड दत है दश प्रचार काम का बाभा बढ़ता ही जाता है जा अत म परगामी य निटविडेपन का कारण हाता ह। वहा भी ह "काल कर सा आज कर आज कर गो अब पल म प्रलय हायगी बहुरि करगा कय। अंतराष्ट्रीय सला म भी हमारी गिथित अच्छी नही है। यह ता सभी जानत है कि तराकी दौड जमनाष्टिक आदि अनर मेला म जीव हार का परिणाम मिनटा से ही नही, गरिण्डा से भी हाता है। हमार तिलाठी ममय मे पीछ रह गए इमलिए हार गए। स्कूला म भी मनुबूद प्रतियागिताएँ आयाजित हानी है, प्रतियागिता के तिन भी तिलाठी ममय पर नही पहुँचत, दमगे हार हा गी है।

जि विद्यालयों में समय पर काम नहीं होता जि विद्यार्थियों व अध्यापकों को विलम्ब से पहुँचने की घादन होती है, वे सभी क्षेत्रों में पिछड़ जाते हैं। ऐसे विद्यालय भी उत्पत्ति नहीं कर पाते तथा इन विद्यालयों में तबसे हुए विद्यार्थी भविष्य में भी जीवन की दौड़ में पिछड़ जाते हैं।

हमारे देश में भी राष्ट्रीय नेता ऐसे हुए हैं जिन्होंने सदैव समय का पालन किया है जस महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, गुभाय चन्द्र बास, डा राजेन्द्र प्रसाद आदि। हम क्या न उतना अनुसरण कर जा समय पर काम करते हैं और आगे बढ़ते हैं। जिन्होंने समय के महत्व को समझा है और समय के साथ ही नहीं अपितु उसमें भी आगे चलें हैं।

विद्यालयों के प्रत्येक काम को समय के अनुसार चलाना चाहिए। यह वे शिक्षा के क्षेत्र हैं जहाँ पर कस के नागरिकों का निर्माण हो रहा है। यदि उनमें विद्यार्थी जीवन में ही समय की पाबन्दी की घादन डाल दी जायगी तो वे जीवन में बहुत आगे जा सकते हैं। भविष्य में आपका कार्यक्षेत्र जो भी हो उसमें समय की पाबन्दी के कारण आप अपने क्षेत्र में निम्नतर तब पहुँच सकते हैं और दूसरे के निये उत्थाहरण बन सकते हैं, इस प्रकार आप अपने लिये ही नहीं राष्ट्र के लिये भी महत्वपूर्ण काम कर सकते हैं। गांधीजीव समाज को भी सही दिशा दे सकते हैं। इस युग में जहाँ पर अधिकांश भारतीयों में समय की पाबन्दी का कोई मूल्य नहीं है बड़े आराम से अपने काम करते हैं। ठीक है सब हो जायगा कि मनोवृत्ति को हमने पाल रखा है। काम पूरा होना चाहिए इसकी कोई परवाह नहीं है। काम जल्दी में हो या देर में हो कोई फर्क नहीं पड़ता है। इस धारणा से दूषित मनोवृत्ति के कारण हमारा दैनिक राष्ट्रीय जीवन विरम्य जाता चला जा रहा है जिसमें जीवन में ही नहीं राष्ट्रीय जीवन में भी हम निराशा प्रतियोगिताओं में निराशा का मुह देगना पड़ता है। य अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में तो हमारा महतव लज्जा से भुज जाता है जब हम प्रत्येक क्षेत्र में अन्य राष्ट्रों के मुकाबल में अपने का पिछड़ा हुआ पाते हैं। अत आज से ही हम निश्चय करें कि हम अपना हर काम ठीक समय पर करेंगे।

आचरण की अन्य विशेषताएँ

बात करने का ढग

भगवान न हमें दो श्राँलें दी हैं दो वान दिए हैं और एक जीभ दी है। इसलिए हम जितना देखें और सुने उमन भावा बोलें। बोलने से ज्यादा महत्वपूर्ण देखना और सुनना है। बच्चा भी पहले देखता, फिर सुनता और बोलना बाद में सीखता है। देखने और सुनने से हम अनुभव प्राप्त हाता है हमें बहने के निये कुछ मिलता है।

किसी जगह, समाज और क्षेत्र का भी बोलने पर प्रभाव पढता है। दिल्ली वाला अदाज कुछ और है, पजाब का अदाज निराला है, हरियाणा का अपना ढग है और उत्तर प्रदेश में लखनऊ का अदाज खास है। तमिलनाडू, गुजरात, बंगाल आदि का अदाज भी निराला ही है। बातचीत के ढग से ही आदमी के क्षेत्र आदि का पता चलता है।



डॉ० राजेन्द्र प्रसाद बात कम और काम अधिक करते थे।

आज जमाना बदल गया है। उमने साथ सारे तौर-तरीके बदल गए हैं। बातचीत का भी तरीका उसके साथ ही बदल गया है। आज के युग में नेता और आम तौर से भारत में लोग सारे दिन बातें करते हैं और काम कम करते हैं, जबकि काम अधिक और बातें कम हैं। बातचीत का अर्थ भी होता है। बातचीत के द्वारा एक दूसरे का जाना जाता है। बातचीत से किसी के स्वभाव एवं विचारा का पता चलता है। बातचीत से ही किसी पर अपनी छाप छोड़ी जा सकती है। साक्षात्कार (Interview) में भी तो बातचीत से ही अभ्यर्थी की योग्यता का अन्दाज लगाया

जाता है। अगली बातचीत यह होती है जिगम व्यक्ति खुलता है उसका असली रूप सामने आता है। यह बात अलग है कि माहिर लोग बातचीत में अपना असली रूप प्रकट नहीं होने देते।

जब दो व्यक्ति बातचीत के समय अपनी अपनी कहते हैं दूसरे की सुनत ही नहीं। एक साथ दोनों बोलत हैं या एक दूसरे की बात को पूरा सुने बिना ही काटत जाते हैं। यह बहम हा मन्ती है बान नहीं। अच्छी बातचीत वह होती है कि एक वही और दूसरा सुन।

बड़े लोग दूसरे को काम नहीं करने देत और अपना काम भी नहीं करते। दूसरे प्रकार के लोग अपना काम करते रहते हैं और दूसरे की नहीं सुनते। यह दोनों ही स्थिति अच्छी नहीं है। सबसे पहला अपना काम है उसने बाद बातचीत। बातचीत सक्षिप्त हो दोनों के अनुकूल हा अध पूरा हो और मनोरजक भी। व्यवसाय स सम्बन्धित बातचीत मक्षिप्त हो बिलकुल उतनी ही जितनी जरूरत हो। बातचीत म अनुकूल रचना अत्यंत आवश्यक है।

बुद्ध लोग बड़े बातूनी होते हैं। वे बातों के चक्कर में अपना जरूरी काम भी छोड़ देने हैं या उद्वेग कम बोलते हैं। यदि पति पत्नी में दोनों विरोधी स्वभाव मिने तो बस ममभिण कि बड़ी मुसीबत है। पति यदि कम बोलता है और स्त्री अधिक बोलती है तो पति तो कहगा तुम बहुत बोलती हा और स्त्री कहगी तुम अनबोने हो, इस प्रकार जीवन बड़ा दुःखर हा जाता है। ऐसी जगह सतुलन बहुत जरूरी है दोनों एक दूसरे के अनुमार थोड़ा थोड़ा बदलें तो म घप टन सकता है। बने तो बोलने म शक्ति होती है पर मौन म उमस भी अधिक शक्ति होती है। परंतु जब दूसरे काग बातचीत कर रहे हा और आप चुप्पी साधनर बठ जाए तो लाग आपका मूख ममभ लेंगे अत बातचीत म भाग लेकर अपना प्रभाव जमाना चाहिए।

बई लोगा की आदत होती है कि वे हर बात म 'मैं' का राग अपनात हैं। "मैंन यह किया" मैंन वह कहा, की भरमार बात बात पर रहती है। अपनी तारीफ के पुल बांधने के लिए लाग दूसरा की बिल्कुन परवाह नहीं करते। व खुद का बड़ा चढा कर दिखात हैं और दूसरे का नीचे गिरात हैं। ऐसी बातचीत न मानवधक हाती है और न मनोरजक ही। सुनने वाला उच जाता है। कई बार लाग अपनी बात पर अड जाते हैं और अपनी ही बात को बार बार दुहराते है। भते ही यह बात गलत हा। हर वक्त हर बात म अपनी श्रेष्ठता अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करन की बांशिश करत है। ऐसी बात व भी रबिकर नही हाती। इसलिए हम अपनी बात पर न अडे। अगर कोई हमारी बात नहीं मानता हा न सही हम उस पर जबरनस्ती नहीं थोप मक्ने।

बातचीत के बीच यह नहीं कहा जा सकता कि आप गरी बात नहीं समझे । इससे तो यह कहना अच्छा रहेगा कि "शायद मैं अपनी बात को ठीक तरह से नहीं यह पाया" । बातचीत में दूसरा पक्ष अप्रसन्न न हो और इमम लोच व्यवहार का ध्यान रहे, यह सही दृष्टिकोण है । जो लोग ऐसा नहीं करते वे नुकसान उठाते हैं । कुछ लोग ऐसे हैं जो हर किसी के सामने अपना रास्ता रोत रहते हैं । मुझे यह बीमारी लग गई, पैसा बहुत खर्च हुआ कोई फायदा नहीं । अपना तो भाग्य ही रोटा है । ऐसी निराशाजनक बात से किसी का क्या लेना देना । यह कभी-कभी तो चल सकती है पर ऐसी बात से अवसर बचना चाहिए ।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो उपदेशक बन जाते हैं । ऐसा करना चाहिए, बसा करना चाहिए । सलाह तब ही देनी चाहिए जब मागी जाए । सलाह देने के कारण ही हमारे यहाँ अच्छी बात का अभाव है ।

हमारी बातचीत मुदा न हो बल्कि जीवित हो । उससे उत्साह हो स्फूर्ति हो उभग हो, नीरस बातचीत किसी को पसन्द नहीं है । हमारे जीवन में बातचीत का बड़ा महत्व है पर वही सब कुछ नहीं है, वह तो साधन है मनुष्य को मनुष्य के साथ जोड़ने वाला पुल है । असली तत्व कम है जो हमें लक्ष्य तक ले जाता है । हमें जीवन में कुछ करे और फिर कहे तो उसका प्रभाव पड़ता है । अथवा काय के बिना बातचीत बेमानी है ।

प्रशंसा करें

एक प्याले में आधा दूध भरा हुआ है । किसी ने पूछा कि इसमें कितना दूध भरा है । एक ने कहा कि आधा प्याली है दूसरे ने कहा कि आधा भरा हुआ है । एक का कहना नकारात्मक है तो दूसरे का सकारात्मक लेकिन सकारात्मक दृष्टिकोण श्रेयस्कर है कानो का भाता है । क्या न हम अपना दृष्टिकोण स्वस्थ बनाए । आपके घर में श्रीमतीजी न परिश्रम व रुचि के साथ साग बनाया है, आपको अच्छा



नेताजी सुभाषचंद्र बोस की कयनी और करनी में अंतर नहीं था ।

सगता है। परन्तु शाय प्रशसा नहीं कर रहे हैं क्योंकि आपको उनके काम में मीन-मेव निवासने की आदत पड गई है। यदि आप घटिया चीज की बुराई कर सकते हैं तो क्यों न अच्छी चीज की प्रशमा करें। वैसे जो चीज मुफ्त मिलती है उसका महत्व घट जाता है इसीलिए हम उचित चीज का सम्मान नहीं कर पाते हैं। कुछ लोग इससे प्रति उपेक्षा करते हैं और कुछ लोग तिरस्कार करते हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी की सीधी प्रशसा करता है भट में दूसरों को उसे खुशामदी, दबू, खूब मखलन लगाता है आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं। यदि मख्य प्रशसा की जावे तो यह खुशामद कभी ?

प्रशसा और खुशामद में बड़ा फर्क है पर अबमर लोग प्रशमा को ही खुशामद समझते हैं। खुशामद के पीछे स्वाध छिपा रहता है उससे पीछे अपना काम बनाना होता है। खुशामद कच्चे दूमरो को उत्तू बनाया जा सकता है। उसे जबर-दस्ती गुण सम्पन्न बना दिया जाता है। प्रशमा का स्तर हल्का नहीं होता, न ही होना चाहिए जब कि खुशामद का स्तर हल्का होता है। प्रशसा से आप अपरिचित को परिचित बना सकते हैं परिचित को अधिक नजदीक ला सकते हैं। अगर प्रशमा न करे तो हमारा काम नहीं चल सकता।

अक्सर हम लोग दूसरे की आलोचना करने के लिये तुने बैठे रहते हैं लेकिन प्रशमा करते हुए हिचकिचाते रहते हैं। हर काम में हर व्यक्ति में नुबय निवासते हैं दोष ढूँढते रहते हैं फिर जम कर बुराई करते हैं। हम अच्छाई देखें और उस आश की प्रशसा करें। बच्चों की यदि प्रशमा की जावे तो वह विगडना नहीं प्रशमा से तो कई गुना उत्साह बढ जाता है।

एक अपसर ने अपने मातहत से पूछा 'कल तुमने सारे दिन क्या किया ?' मातहत ने जा कुछ किया था बता दिया। परन्तु अपसर तो कहता रहा कि तुमने वह क्यों नहीं किया। उसकी नजर हमेशा उस काम पर रहती है जो नहीं किया। वास्तव में अपसर का कभी तो उसकी प्रशसा करनी चाहिए आगिर प्रशसा में इतनी कजूमी क्यों ? मुगी दाम्पत्य जीवन का रहस्य क्या है एक दूमरे की प्रशसा। उन दो मित्रों की मित्रता ज्यादा दिन चल सकती है जो एक दूमरे के गुणा की प्रशसा करते हैं। अपसर मातहा के बीच बडिया सम्बन्धी का रहस्य है एक दूसरे के प्रवगुणा का न देखकर गुणों को देख और उनकी प्रशसा करें, लेकिन अच्छे काम और सद्व्यवहार का सूत्र है ही नहीं।

आज हमारे घरों में भी सद्व्यवहार का सूत्र रखा गया है। कोई एक दूमरे का सम्भता नहीं एक दूमरे का बधास्त नहीं करता, अपनी बीछसाहट उतारता रहता है। मिल जुगल रहने का सूत्र जो गया है, उसीलिए हम एक दूसरे की

प्रशंसा नहीं करते वरिष्क दोष ढूँढते रहते हैं। किसी न कोई काम पाराब कर दिया ता भाड देग अगरे उमन शायशी का काम किया है तो हम चुप लगा जाएँगे।

दूसरे से प्रशंसा पाना भी एक कला है। जिस बहुत लोग नहीं जानते। दूसरे से प्रशंसा पाकर हम गुमसुम हो जाते हैं, जबकि हमें प्रसन्नता एव विनम्रता के साथ उसका आभार स्वीकार करना चाहिए उसे धन्यवाद देना चाहिए। जब कोई व्यक्ति हमारी प्रशंसा कर तो हम यह समझते हैं कि हमारी हैसियत बहुत ऊँची है और वह व्यक्ति हमसे छोटा है, पर यह गलत है हम समझना चाहिए कि वह पारसी है। कुछ लोग गुट बनाकर समझौता करते हैं कि एक दूसरे की प्रशंसा करते रहेंगे। करते भी हैं चाहे कितनी ही खुरापात करें। यह अस्वस्थ दृष्टिकोण है जो आत्मघाती व राष्ट्रघाती है। इससे अवसरवादी पायदा उठा लत है योग्य व सक्षम व्यक्ति वही रह जात हैं।

हम महान व्यक्तियों की प्रशंसा करते हैं पर मामूली व्यक्ति कितना ही अच्छा काम करे उसकी प्रशंसा नहीं करते। हम वरिष्क कलाकारों, नेताओं के भाषणों की प्रशंसा करते हैं पर हमारा धोबी, अखबार वाला, जमादार, चौकीदार, नौकर, चपरासी आदि कितना ही अच्छा काम करें उसकी प्रशंसा नहीं करते। हम हल्के-फुल्के कार्यों की प्रशंसा करते हैं पर उन कार्यों की प्रशंसा नहीं करते जिन्हें करने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है। हम बढाई बुनाई व पक्वान की प्रशंसा करेंगे लेकिन कमरे में रखे सोफे पर्नीचर आदि की सफाई और उसकी सजावट की प्रशंसा नहीं करते। स्कूला में अध्यापक दो चार बच्चा की प्रशंसा करते हैं, दो चार की निंदा करते हैं। वाकी बच्चे उपेक्षित रहते हैं। प्रशंसा पाने वालों का परिणाम अच्छा रहता है। जिनकी निंदा की गई व अध्यापक की चुनौती स्वीकार करके अधिक परिश्रम करते हैं वह पास होते हैं। उपेक्षित विद्यार्थी वही के नहीं रहते। वे फेल होते हैं या तीसरी श्रेणी में पास होते हैं। प्रशंसा से किसी मौके पर प्रशंसा मिलने पर उनमें चमत्कारी शक्ति प्रवृत्त हो जाती है। यह किसी के अदर छिपे हुए गुण को प्रवृत्त कर देती है।

कई माए दूसरे के काम में मीनमेख निकालती रहती हैं और अपना काम ही अच्छा समझती हैं। इसका परिणाम होता है ऐसी मात्रा का काम कोई नहीं करता। कुछ लोग मीठी मार मारते हैं वे लोग मुस्कराते रहेंगे आपकी प्रशंसा करते रहेंगे और अवसर मिलत ही आपकी हानि कर दगे एस लोका से सावधान रहना चाहिए।

प्रशंसा से व्यक्ति का सुधार हाता है उसका सम्बन्धों का विस्तार हाता है। कई दफा जब हमारा मन बहुत भारी होता है इस वीण कोई हमारी प्रशंसा कर तो मन का बोझ उतर जाता है और हम हृत्वापन महसूस करते हैं। दूसरों की

प्रोत्साहन देने के लिए हम उनकी प्रशंसा करनी चाहिए। इस बात को सभी जानते हैं पर पालन नहीं करते। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि प्रशंसा करने में उनकी थोड़ी झिझक है। झिझक छोड़िए और प्रशंसा करने की आदत डालिए। हम दूसरों की प्रशंसा करते हैं, इससे उनकी खुशी तो बढ़ती ही है हमारी खुशी भी बढ़ती है। प्रशंसा करना बुरी बात नहीं है इससे आप अधिक से अधिक लाकप्रिय हो सकते हैं, इसलिए गुणा आदि पर आधारित प्रशंसा को अपनाइये। यह भी हमारे जीवन का एक आवश्यक तत्व है

समयानुसार विचार कर बोलिए

बड़े दया समय के अनुसार बोला पर दूसरों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। जबान एक पुत्र है जिस पर होकर विचार दिमाग में प्रवेश करना है। जब कुन्क्षेत्र में अजु न अपना कर्तव्य भूल कर शस्त्र त्याग कर, बठ गया तो श्री कृष्ण ने प्रारम्भ में ही ज्ञान की बातें न कहकर मन की दुबलता का त्याग करते हुए देह की नश्वरता की ओर उसका ध्यान खींचा और कहा 'तुम मारने से डरते हो।' किन्तु कौन किसे मारता है और कौन मरता है? "आत्मा तो अमर है।" अजु न को इस पर अपने उत्तम्य का पान हुआ और वह युद्ध के लिए तैयार हो गया।

"वाक् वदामि मधुमत"। शत्रु के समान भीठे वाक्य बोलना चाहिए। परन्तु मीठे वाक्य ही उपयुक्त नहीं हैं उपयुक्त के साथ उपयुक्त अवसर भी चाहिए। दुर्घोषन का बहुत समझाया पर उस पर कृष्ण की बात का कोई असर नहीं पड़ा और महाभारत का युद्ध नहीं टना। उपयुक्त शब्दों के साथ यह उपयुक्त अवसर नहीं था।

अवसर की बात कहने के लिए मनोविज्ञान की भी आवश्यकता है। कवेयी बहुत समझदार थी। इतने पर भी मथुरा दामी ने वाक्य चातुय से उस पर ऐसा प्रभाव डाला कि रामचन्द्र को बनवास जाना पड़ा। योली से ही बुद्धिमान और क्षेत्रज्ञ का अंतर नात होता है। शिवाजी ने कल्याण के नवाब पर उसके अत्याचारों के कारण आक्रमण कर दिया। नवाब युद्ध में मारा गया। नवाब की बेगम को पकड़ कर प्रहरिया न शिवाजी के सामने प्रस्तुत किया उसे देखत ही शिवाजी ने कहा "मेरी माँ जीजा बाई आपकी तरह सुन्दर होना। तो मैं भी सुन्दर होता" इससे ही शिवाजी के चरित्र का पान होता है।

चतुर बकना प्रावण का सदा काबू में रहता है। एक बार एक नव युवक वरिष्ठ न जारदार वरुन की परन्तु 'यायाधीश न उसके विरुद्ध फमला दिया। उसके मुह में निकल गया कस आश्चर्य की बात है कि अदालत एमे फसले देती है।

‘यायाधीश ने तुरन्त उस पर मानहानि का दावा कर दिया। उसकी पैरवी करने लाडरीडिंग थाये जो बाद में हिन्दुस्तान के वायसराय हुए। उन्होंने कहा, ‘यायाधीश महोदय यह चैरिप्टर अभी नाजवान है, यह आपके किसी भी फसले पर आपस्य प्रगट नहीं करेगा। मय उपस्थित लोग हँस पडे। ‘यायाधीश भँपकर रह गया।

कई बार कही हुई गत बड़ी अनिष्टकारी होती है द्रोपदी के ताने ने महा भारत युद्ध का बीज बोया और सूपणता के ताने ने रावण की लका ढाई।

विद्वान् अग्रज रोखक जेम्स ब्राश्म लिखते हैं। शब्द मोहर हैं जिसस बुद्धिमान खेल खेलते हैं।” द्वितीय महायुद्ध में अग्रजों की हार हो रही थी। हिटलर का यूरोप पर एक छत्र राज्य होने की सम्भावना थी। ऐस समय लाड लादियन को अमरीका भेजा गया और उन्होंने राष्ट्रपति रूजवेल्ट पर ऐसा प्रभाव डाला कि अमरीका से जोरा से मदद मिलने लगी।

भूठी वाता स काम नहीं बनता। ‘रात्य ब्रूयात प्रिय ब्रूयात’ ही काम देता है। मशहूर फ्रासीसी राजदूत फामवाल कॅलियर न लिखा है कि अच्छा राजदूत न तो झूठा विश्वास दिलाकर और ऐसी न प्रतिज्ञायों से, जो कमी पूरी न हो सक, काम बनाने की कोशिश करता है। यह मानना कि राजदूत ठगाई के बिना काम पूरा नहीं कर सकता, एक भारी भूल है।

कई बार हाजिर जवाबी से भी काम बन जाता है। एक बार एक हलवाई न रास्ते चलते बकील की पकड लिया और पूछा कि यदि कोई कुत्ता चुरा कर मिठाई ला जाता है तो उस पर क्या हो सकता है। बकील ने उत्तर दिया आप उसस हजार्ना बसूल कर सकते हैं। हलवाई न कहा कि आपका ही कुत्ता है जिसन मिठाई लाई हैं उसके मात रुपए चुकाइये। बकील साहब ने जबाब दिया ‘मेरी सलाह की फीस 15 रुपए है, आप उसमे से 7 रुपये काटकर बाकी रुपए मुझे दे दीजिए।’ हलवाई देखता ही रह गया।

महारानी विक्टोरिया अपने प्रधान मंत्री ग्लेडस्टन से प्रसन्न नहीं थी। एक दिन किसी बात पर मतभेद हागया और महारानी ने कहा कि ‘जानत हो आप एक मन्नाजी से बात कर रहे हो।’ ग्लेडस्टन न तुरन्त उत्तर दिया, जो ‘महारानीजी आपने जनता बात कर रही हैं।’ सांम्राज्ञी का चुप हो जाना पडा। यह था समय पर कही गई उपयुक्त बात का प्रभाव।

विवेचन और अनुभव स वाणी में शक्ति आती है। सदा से ही शब्द की शक्ति बराबर रही है। कवि की ये मूर्तिया सदा सच्ची रहेंगी।

नीकी प नीकी तर्ग, बिन अक्सर की बात।

फीकी पे नीकी लग, कहिये समय विचारी ॥

जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण रखें व दोहरे मापदण्ड से बचें

आज हम सोचते हैं कुछ और करते कुछ हैं मगर आप ऐसा करते हैं तो इससे आपका व्यक्तित्व गिर जाता है। आप भूठ बोलने के लिये भी मजबूर होते हैं। मगर आप वह काम नहीं करने जिनमें आपका विश्वास है ता इसका मतलब है कि आप आत्म सघष में लगे रहते हैं जिससे शक्ति और समय का अपव्यय होता है। इसलिए जो आप सोचते हैं वसा ही करें तो आपके विचारों में स्पष्टता आयेगी, जिससे उद्देश्यों में सफलता मिलना निश्चित है।

हम दूसरा पर अविश्वास न करें और दूसरा का विश्वास पाने की कोशिश करें। हम दूसरों को धोखा न दें और दूसरों के धोखे के जाल में न आएँ। कई बार ऐसा होता है कि हम एक दो जगह धोखा खा जाते हैं तो सभी पर अविश्वास करने का नियम बना लेते हैं। यह ठीक नहीं है, सब बुर नहीं हो सकते हैं।

यह देखने में आता है कि लोग अपना ज्यादा समय दूसरे के बारे में सोचने, चिन्ता करने में बिताते हैं उस यह काम करना था यह नहीं करना चाहिये था। इस प्रकार दूसरों के दोष देखने में समय नष्ट हो जाता है। एक कथानक है कि एक महात्मा ने एक पुरुष को जो अपने को सुधारना चाहता था उसका दो थैले दिए। एक में उमरत मर्वा घत बुराईयाँ थी तथा दूसरे में अन्न की बुराईयाँ भरी हुई थी। महात्मा ने कहा कि अपनी बुराईयाँ का थला सामने लटका कर रखना और अपने दायाँ का देखते रहना। अन्न के दायाँ के थले का पीछे लटकाना और उनका नहीं देखना। परन्तु उसने भूल से अपनी कमियाँ के थले का पीछे लटका लिया और दूसरे की भूला के थले का आग। परिणामतः उसने दूसरे के नाप देखने में ही समय बर्बाद कर दिया और अपनी गलतियाँ को देखने का उसे समय ही नहीं मिला। इसलिए हम अपनी गलतियाँ को क्या न देखें खुद का क्या न सुधारे। अधिक से अधिक हम यह कर सकते हैं कि अपने अनुभव के आधार पर उन्हें नक सलाह दे, उनकी सहायता करें पर केवल दुखी हान से तो बात नहीं बन सकती।

हमारा साधने का दृष्टिकोण निश्चयात्मक है। यदि अपना मन निवेधात्मक वृत्ति की ओर भुक्त रहा है और आप चाहते हैं कि आप में निर्माणकारी शक्ति का विकास हो तो इसका अच्छा उपाय यह ही है कि आप अपने मन का इस दुष्प्रवृत्ति से हटाकर हर वस्तु और निश्चयात्मक दृष्टि में देखने का अभ्यास कीजिए। जीवन में निश्चयात्मक दृष्टिकाएँ से ही प्रत्येक वस्तु में अच्छाई देखने की भावना उत्पन्न होती है और यह ही जीवन में सफलता का सूचक है।

कई बार व्यक्ति का अपने ढंग से दम्बते हैं और उस पर अपने अनुमान रख पाने में है। कोई हमारा काम कर देता है तो वह अच्छा है वही दूसरा का काम

नहीं करता ता दूसरा के लिये बुरा घादमी है। यह अच्छे बुरे का भेद अपन हित या स्वाध का मामन रख कर किया जाता है। यह देयना आवश्यक है कि उमकी कितनी मजबूरियाँ ह जा लाग स्वार्थी, कठोर और बजूम कह जात ह व भी कुछ न कुछ ऐसे काम करत दसे जात हैं जिनम उनका दयाभाव और विचार शक्ति प्रकट हाती है।

अपने विचारो को दूसरे पर न धोषे—हम व्यक्ति को ही गलत नहीं समझ लेत, बल्कि यह भी साध लते हैं कि हम जो साधत हैं वह मत्य है। मत्य भी सापेक्ष है। जिम तरह हम साधत हैं दूसरे लाग भी उसी तरह साधें वे दूसरी तरह भी साध सकत हैं। हम जिम्मा और जौन दो व मिद्धात का विचारो म भी रूपनाना चाहिए। लाग अपन विचारो का भी दूसरे पर जबदस्ती धोपत ह। वे समझत है वस जा हम सोचत हैं कहत हैं वह ही अतिम है। मैं अपनी बात कहना हूँ आप सुनलें। आप अपनी बात कह दीजिए मैं मुन लूँगा। यदि मुझे अच्छी लगी ता ग्रहण कर लूँगा यदि ग्रहण नहीं कर सगा ता आप बुरा मत मानिए न अपनी बात का दबाव डालिए न हमारी बात का निरस्कार करिए।

एक दूसरे के साथ सहयोग आवश्यक ह पर यह स्वाध की भावना स नहीं होना चाहिये। “नकी कर और कुण मे डाल। यदि हम इम हद तक परापकारी न बन तो इस हद तक स्वार्थी कसे बन सकत हैं जा हर समय सोचें कि हमन दूसरा के लिए क्या किया परंतु इससे मुकाबल दूसर न आपने लिए कुछ नहीं किया। आपसे बन पडा आपन किना और दूसरे से बन पडे व आपक लिए कर द परंतु इस पर इतना गब क्या।

सधप धीजिए परोपकारो बनिए—जीवन का हम प्रारम्भ म ही टालन का प्रयास करना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति अपन जीवन म अपन ध्येय म अवश्य सफल हा सकता ह। परिस्थितिया और कठिनाईया का टाप देना निबलता का दूसरा नाम ह। यह ससार गुण दाप मय है इमम पाप पुण्य तिन रात, परिहास और रदन सब कुछ है। इस लहलात सागर मे रतन जवाहरात और माती भी है और मनुष्य का साधित निगल जान वाले मगर और घडियाल भी। जीवन म दिन प्रति दिन जोलम दुख, रहस्य, सधप, परेशानिया है तो दूसरा आर मधुर मिलन, हास परिहास, प्रेमा लाप, सादय, उत्साह, मधुर गीत भी हैं। एस ससार म हमारा क्या क्तव्य है। क्या हम मुँह धिपा कर भाग जायें या जीवन स पलायन कर जगल म रहन लग जायें। जीवन म भागन स हम अगर रदन व विलाप, जाक्षम, दुख, सधप, परेशा नियों स बचन हैं ता हास विलास से भी बचित रहन हैं। सधप स यदि हम भागत है ता ससार म बुराई की शक्तियाँ आर प्रबल हा कर हमारे सामन आयेगी और आराम स न सान दगी। इमलिए हमारा क्तव्य ह कि हम जीवन का परिस्थि
। के हाथ म न साप दे। परंतु परिस्थितिया से लडकर एम तराज की भक्ति
पर विजय पात हूँ अपन का कठिनाईया के पार ले जायें।

जीवन जिस रूप में हमारे सामने आता है उसे उसी रूप में स्वीकार कर इसका आनंद लें। यदि दुःख आता है तो उसे स्वीकार करें क्योंकि इसके पश्चात् सुख आवेगा। कवि ने ठीक ही कहा है—

दुःख भी मानव की शक्ति है, तू क्यों दुःख से घबराता है।
 दुःख आया है तो जायगा, सुख आया है तो जावेगा।
 दुःख जावेगा तो सुख देकर, सुख जावेगा तो दुःख देकर,
 सुख देकर जाने वाले से रे मानव क्यों भय पाता है ?
 सुख में व्यसन प्रमाद भरे, दुःख में पुरुषाय चमकता हूँ,
 दुःख की ज्वाला में पडकर ही, कुंदन सा तेज दमकता हूँ।
 सुख में सब भूल रहते हैं, दुःख सब की याद दिलाना है,
 सुख साध्य का वह लाल मित्तिज जिससे पश्चात् अंधेरा है।
 दुःख प्रातः का झुटपटा समय, जिसके पश्चात् सवेरा है,
 दुःख का अम्यासी मानव ही सुख का अधिकार जमाता है।
 दुःख के सम्मुख जो सिहर उठे, उनको न इतिहास जान सका,
 जो दुःख में कमठ धीर रह, उनको ही जग पहचान सका।
 दुःख एक कसौटी है जिस पर, यह मानव परखा जाता है।

इस दुनियाँ में देखने और खोजने वाले के लिए पथ पथ पर सौंदर्य गुपमा है। पक्षियों के कल कुंजन में, हिरना की चंचल चौकड़ी में, पक्षियों की ऊँची उड़ान में, मछलियों की गति में, सरिताम्रा के कलकल प्रवाह में काले बादल की सुतली भाषा में, वाद्य यंत्रों पर ताल पर खिरकने वाले नृत्य में, श्रमिक के परिश्रम में, साहसी लोगों की समुद्र यात्राम्रा शल शिलारा की चढाई, व नई नई राजों में, यात्रियों के धार्मिक ऐतिहासिक, कला कृति बोध यात्राम्रा में, जहाँ देखा वहाँ ही सौंदर्य की झलक है। इस सौंदर्य के जीवन सागर का छोडकर घर की चारदीवारी में निष्क्रियता की सुख निद्रा में सोना कायरता नहीं बरन् मृत्यु ही है।

महाकवि शेक्सपीयर, मिल्टन ने, जहाँ भी किसी से कुछ सीखने का मिला उ हान सीखा। प्राचीन काल में दत्तात्रय में चौबीस गुरु बनाए। पृथ्वी में उठोने धेय, क्षमा और परापकार सीखा। पृथ्वी से कुछ सहन करके भी प्रतिशोध की भावना नहीं रखती। सभी को कुछ न कुछ प्रदान ही करती है। वायु ने सिलाया जहरत से ज्यादा सप्रह न करना वायु एक जगह से दूसरी जगह बरतु पहुँचा देती है किन्तु अनचाही वस्तु उमम टिकती नहीं, गिर पडती है। आकाश ने शिक्षा दी अलिप्त रहने की। बादल, धुआँ या आकाश के उपर पदों की तरह आच्छादित हो जाते हैं किन्तु आकाश का अपन में लिप्त नहीं करत। इसी तरह मधुमक्खी सेसीया झूमरो के निमित्त काम करना माने शहद एकत्रित करना। यह सब बच्चे से स्वच्छ निर्विकार हृदय रखना सीखा। हम भी प्रकृति से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

जीवा म दुख और सघय अधिक ह किन्तु उसक साथ सुग और शांति का भी अभाव नही ह । अस्पताला की अपशा होला की सख्या अधिक है । जेला की अपेक्षा कलबा और सिनेमाघरा की बहुतायत ह और अब ता टेलीविजन न मनो रजन की सुविधाएँ घर म ही उपलब्ध करादी है । कडुवे व तीखे खाच पदार्थों के स्थान पर मीठे व पाण्डित्य पदाथ अधिक है । जैसे जस विज्ञान उन्नति करता जा रहा है वसे वसे खान पाा, रहन सहग मत्तोरजन, वाहन, यातायात औपधिया व प्रत्येक स्तर पर सुविधाओं की भरमार है । इम ममार को जमा हमन पाया है उस उससे अधिक सुखमय बनावें । इसके लिए परिश्रम और समय की आवश्यकता है । हमे जीवन मे सब को समझन की आवश्यकता है, अपना क्तव्य निश्चि करन की आवश्यकता है । जिस मनुष्य को हम समझ लत ह वही मिन बन जाता है और जिसको नही समझ पात वही शत्रु बना रहता है । समझन के लिय हम अपन अभिमान को तिलाजली देनी पडेगी । तब ही जीवन में सफलता प्राप्त हागी ।

Words of Wisdom Lear & Act accordingly

Read	Selectively
Think	Constructively
Work	Efficiently
Talk	Briefly
Serve	Willingly
Act	Fearlessly
Risk	Cautiously
Judge	Charitably
Invest	Prudently
Argue	Tactfully
Dress	Smartly
Listen	Attentively
Pay	Promptly
Earn	Honestly
Save	Regularly
Spend	Intelligently
Speak	Gently
Behave	Courteously

शुद्धि-पत्र

प्रथम-भाग

पृष्ठ स	पंक्ति स	अशुद्ध	शुद्ध
2	2	समथ	सम्बन्ध
3	9	चरित्राणी	चारित्र्याणी
4	2	खाज	खोज
28	31	बकं	पूवक
32	1	आयोजन	निराकरण
46	7	कुपुत्री	सुपुत्री
47	3	भक्तासर	भक्तामर
47	16	विद्याप्रो	विद्याधियो
47	25	ब्रह्म	पर ब्रह्म
57	1	ध्यान दिए	ध्यान के उदाहरण दिए
62	31	Trial	Tribal
59	1	सतकम	सतकम
69	1	सीसा	शीशा
95	8	धायिका	धायिका
100	27	अधिनियम 1955 में सशोधन द्वारा आयु 18 व 21 हो गई है।	
109	"	राधा कृष्ण	राधाकृष्णन
114	7	सालब	बसाल
126	8	भारति	भारवी
126	14	भाज्य	त्याज्य
126	4	वन्यातमन	ध्व-यात्मक
126	15	जीवे	जीवेत
126	15	कृत्वा	कृत्वा
127	31	मोहन	मोह
128	8	द्वेयापन	द्वेयापन
137	30	मस्तिस्क	मस्तिष्क
138	7	दूसरे	दूसरे
141	2	उचित है	उचित नहीं
141	27	सम्प्रेरण	सम्प्रेरण
160	17	बेमानी	बेईमानी
168	6	सहग	सहन
168	13	Lear	Learn

